॥ श्रीः ॥

जर्राहीप्रकाश।

* चारों भाग *

जिसको

मथुरा निवासी श्रीकृष्णलाल ने जर्राहों के उपकारार्थ
जर्राही संबंधी उर्दू संस्कृत डाक्टरी आदि के
अनेक ग्रंथों का सारभाग लेकर लिखा।

—— :o: ——

इसको

बाबू किशनलाल ने
अपने "बंबईभूषण" छापेखाने में छापकर
प्रकाशित किया।

—— :o: ——

Printer B. Kishanlal
Bombay Bhushan Press
MUTTRA.

All Rights reserved

निवेदन ।

मित्रवर !

यदि कोई यह कहे कि भारतवर्ष में जर्राही (शस्त्रचिकित्सा) के विषय में कोई ग्रन्थ ही नहीं है, यह केवल उसकी भूल और अनभिज्ञता है । चरक, सुश्रुत, वाग्भट, सब प्राचीन ऋषियों ने अपनी अपनी संहिताओं में इस विषय पर अध्याय के अध्याय लिखे हैं, यंत्र और शस्त्रों के नाम उनकी आकृतिं, बनाने की विधि, उनका उपयोग, प्रयोग की रीति, चिकित्सा आदि सबही ज्ञातव्य बातें उनके ग्रन्थों में लिखी हैं, पर हां उन बातों के अध्यापक वा अध्येता दोनों ही का अभाव होने से जो कुछ दोषारोपण किया जाय वही थोड़ा है ।

हिन्दी भाषा में ऐसे ग्रन्थ की बड़ी आवश्यकता थी इसलिये मैंने बहुत से उर्दू, फारसी संस्कृत व अंग्रेजी ग्रन्थों से उद्धृत करके यह ग्रन्थ लिखा है, इसमें फोड़े, फुंसी, सुजाक, वातशूल, प्रमेह, नपुंसकत्व, नेत्ररोग आदि की चिकित्सा लिखी है एक एक विषय पर अनेकानेक नुसखे लिखे हैं । दूसरे भाग में उपयोगी अस्त्र शस्त्रों के चित्र भी दिये हैं । ग्रन्थ के आदि में नस, हड्डी, रग, पसली, कपाल आदि दिखाने के लिए हैं बड़े ढांचे के चित्र भी दिये हैं, जिनके मनन करने से बहुत लाभ प्राप्त होजाने की संभावना है ।

यह ग्रंथ मेरी इच्छा के अनुकूल नहीं हुआ है, अवकाश मिलने पर एक बड़ा ग्रंथ लिखूंगा, जिसमें सर्वोपरि उपयोगी विषयों का समावेश होगा ।

भवदीय—

श्रीकृष्णलाल मथुरा ।

पुस्तक मिलने का पता—

श्रीकृष्णलाल

बम्बई भूषण छापाखाना

मथुरा ।

॥ जर्राहीप्रकाश की अनुक्रमणिका ॥

श्रीकृष्णलाल मथुरा ।

पुस्तक मिलने का पता—

किशनलाल

बम्बई भूषण छापाखाना

मथुरा ।

पृष्ठभागप्रदर्शक अस्थिपंजर
अग्रभागप्रदर्शक अस्थिपंजर
क कंठास्थि
ख अंशास्थि
ग भुजदंडास्थि
अ कूर्परास्थि
घ श्रोण्यस्थ
च वंक्षणआस्थि
छ हस्तङ्गुल्यास्थि
ज जान्वास्थि
झ जंघास्थि
ट गुल्फसंधि
ठ पार्श्वास्थि
प पृष्ठवंशास्थि

शिराप्रदर्शक चित्र
धमनीप्रदर्शक चित्र
हस्तशिराप्रदर्शक चित्र
१-मस्तिक मज्जातन्तु
२ निम्नमस्तिष्क मज्जतन्तु
३ ग्रीवातन्तु
४ नासिकान्तु
५-स्कन्धरूपतन्तु
६-पार्श्व तन्तु
७-नितम्बतन्तु
८-जानुतन्तु
९ नासिकातन्तु
१०-दक्षिण जानुतन्तु
११-दक्षिण जंघातन्तु
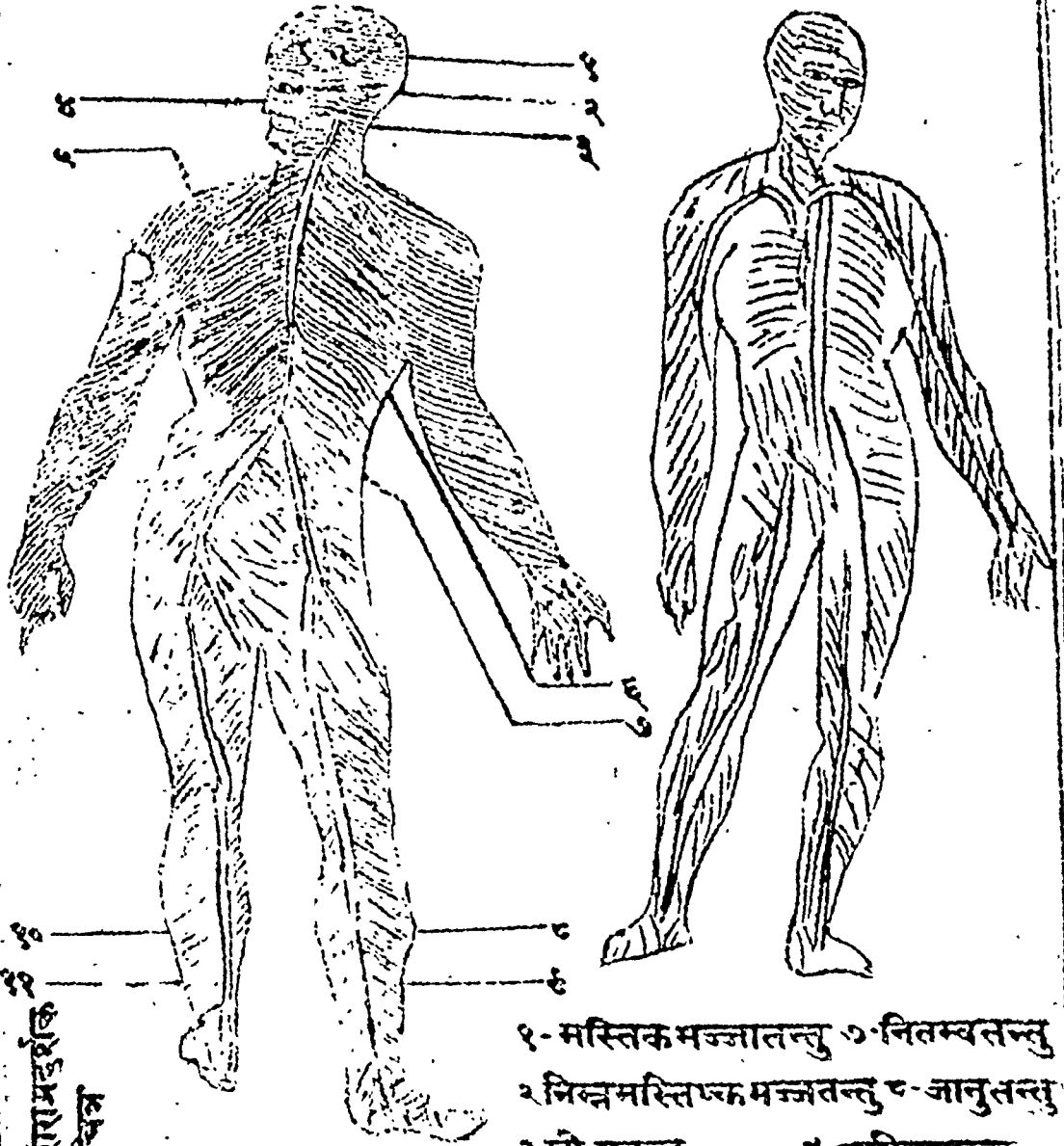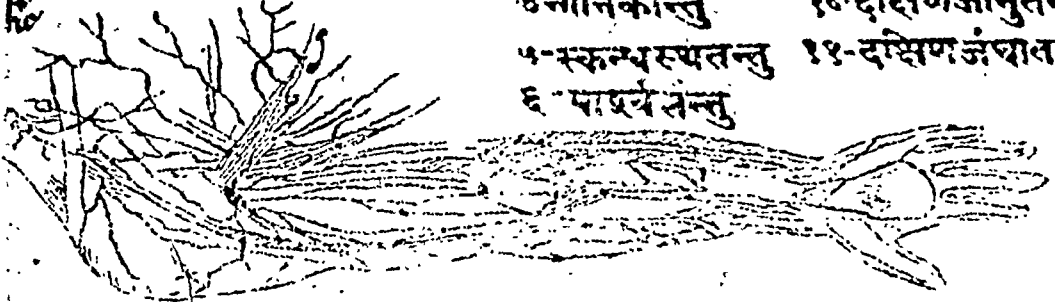
पार्श्व प्रदर्शक अस्थि पंजर

शरीर का मुख्य आधार अस्थि पंजर है इस ही से
शरीर का आकार, दृढ़ता गमन शक्ति उत्पन्न होती है इस ही पर सम्पू
र्ण कार्य का व्यवहार निर्भर है शरीर में सम्पूर्ण अस्थि संख्या इस
प्रकार है खोपड़ी में ८ चहरा में १४ गर्दन के ऊपर १ करवट में २६ उर में
१ पांसू में २४ सम्पूर्ण हाथ में ६४ सब पांव में ६२ इस तरह मिल कर २०० हैं
दांत ३२ और प्रत्येक कान में तीन तीन छोटी अस्थि हैं सब मिलकर
२३८ होती हैं।
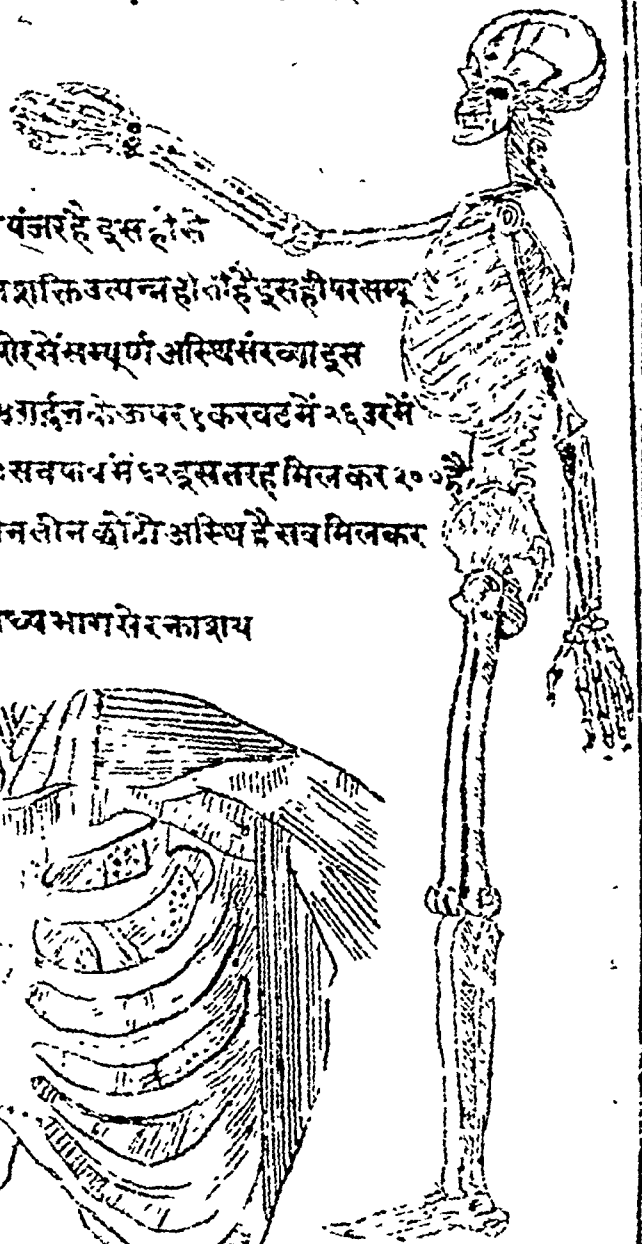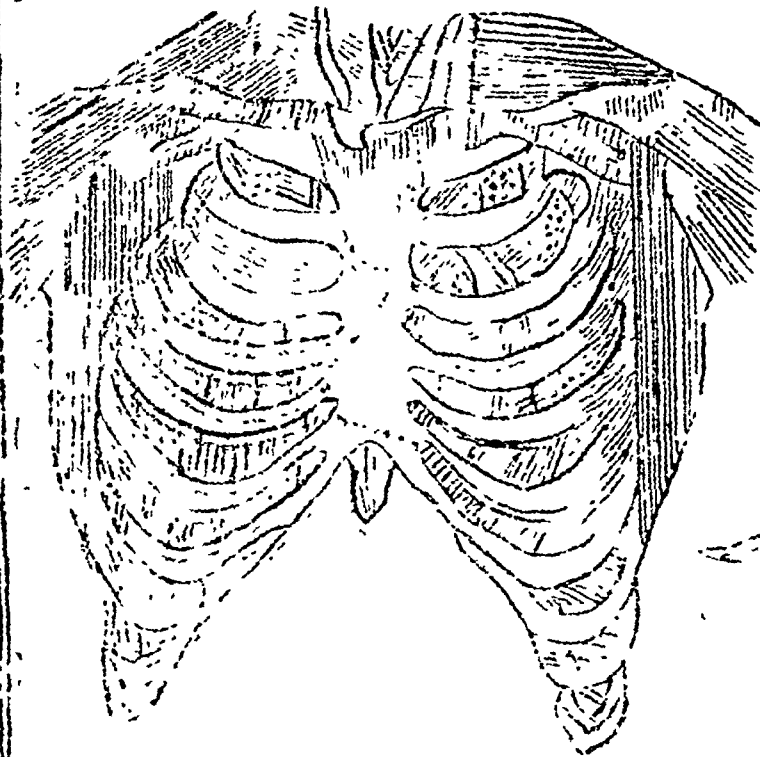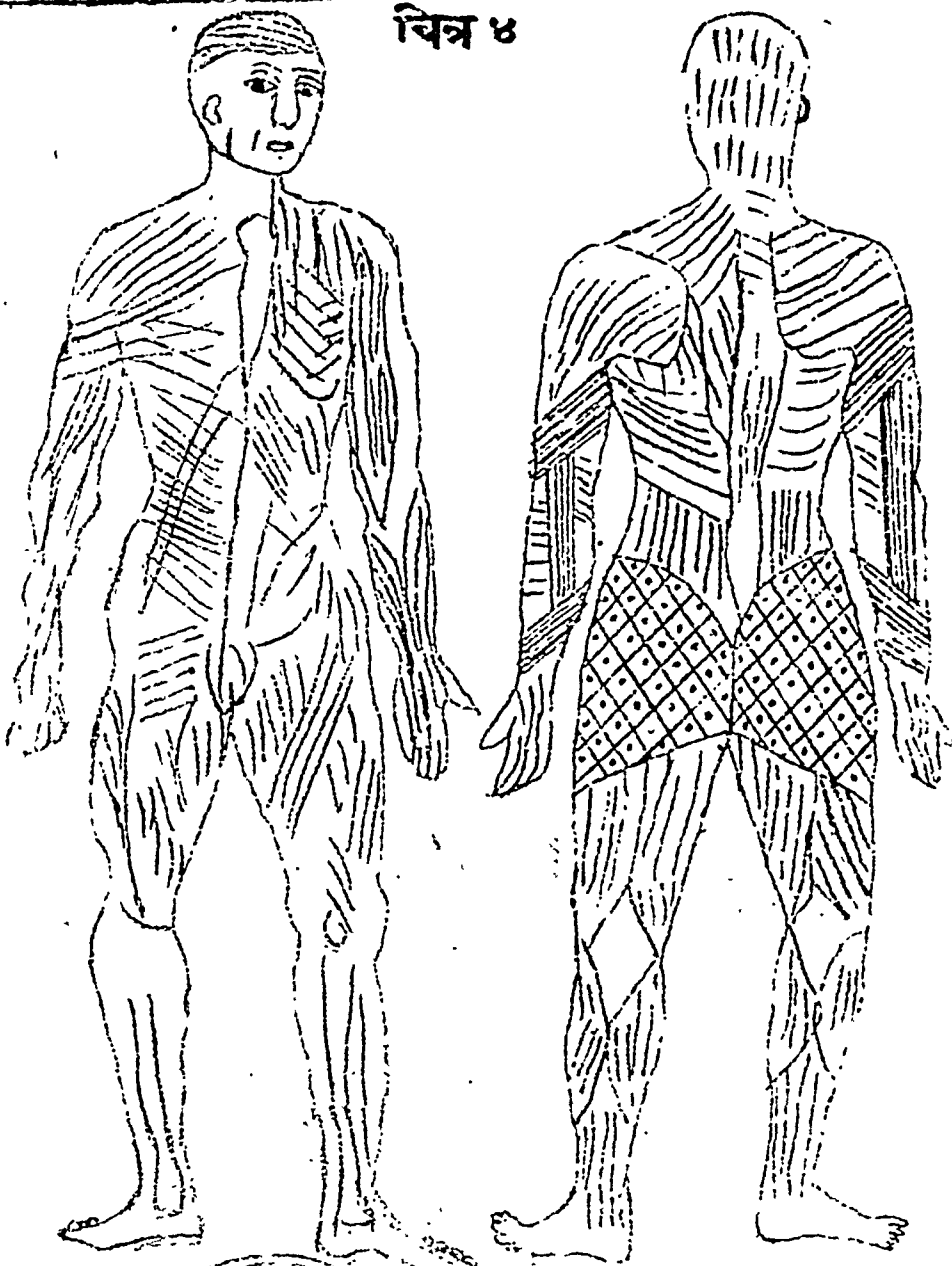
छाती के मध्य भाग से रकाशय

चित्र ४
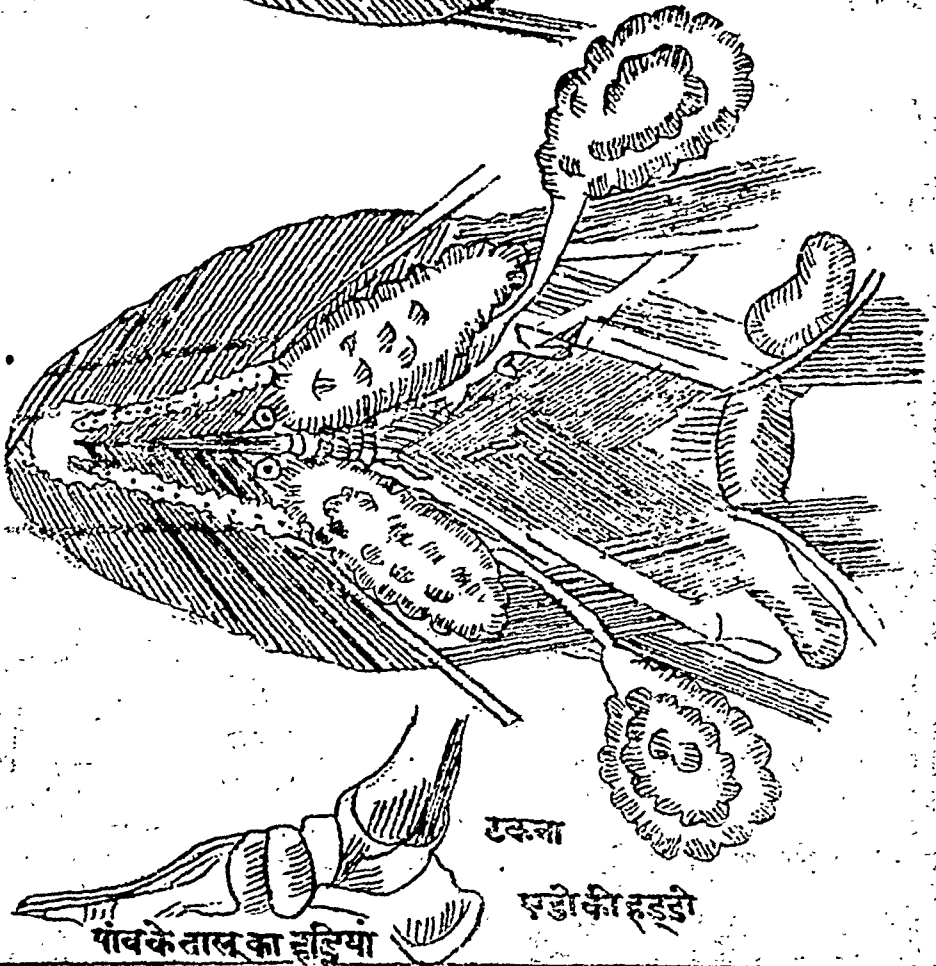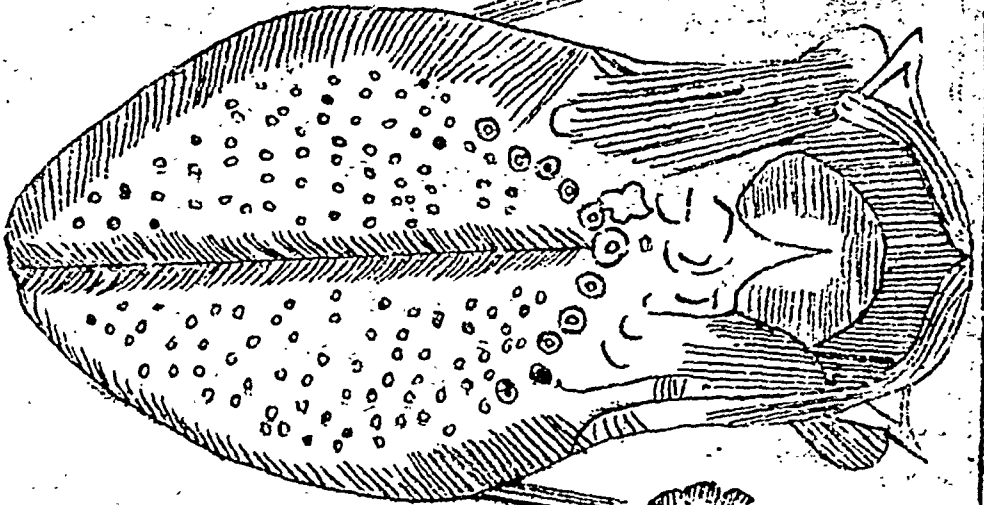
जिह्वाप्रदर्शक चित्र
टखना
एड़ी की हड्डी
पांव के ताल का हड्डियां
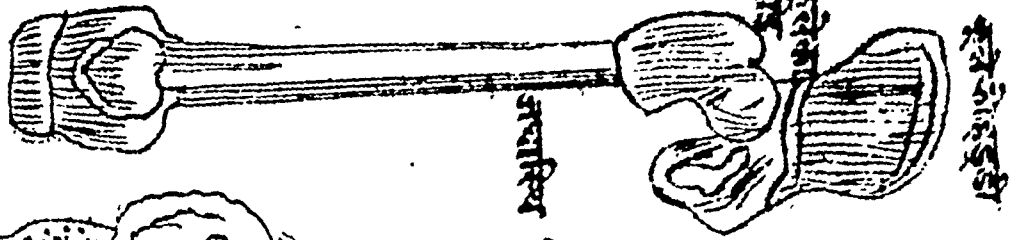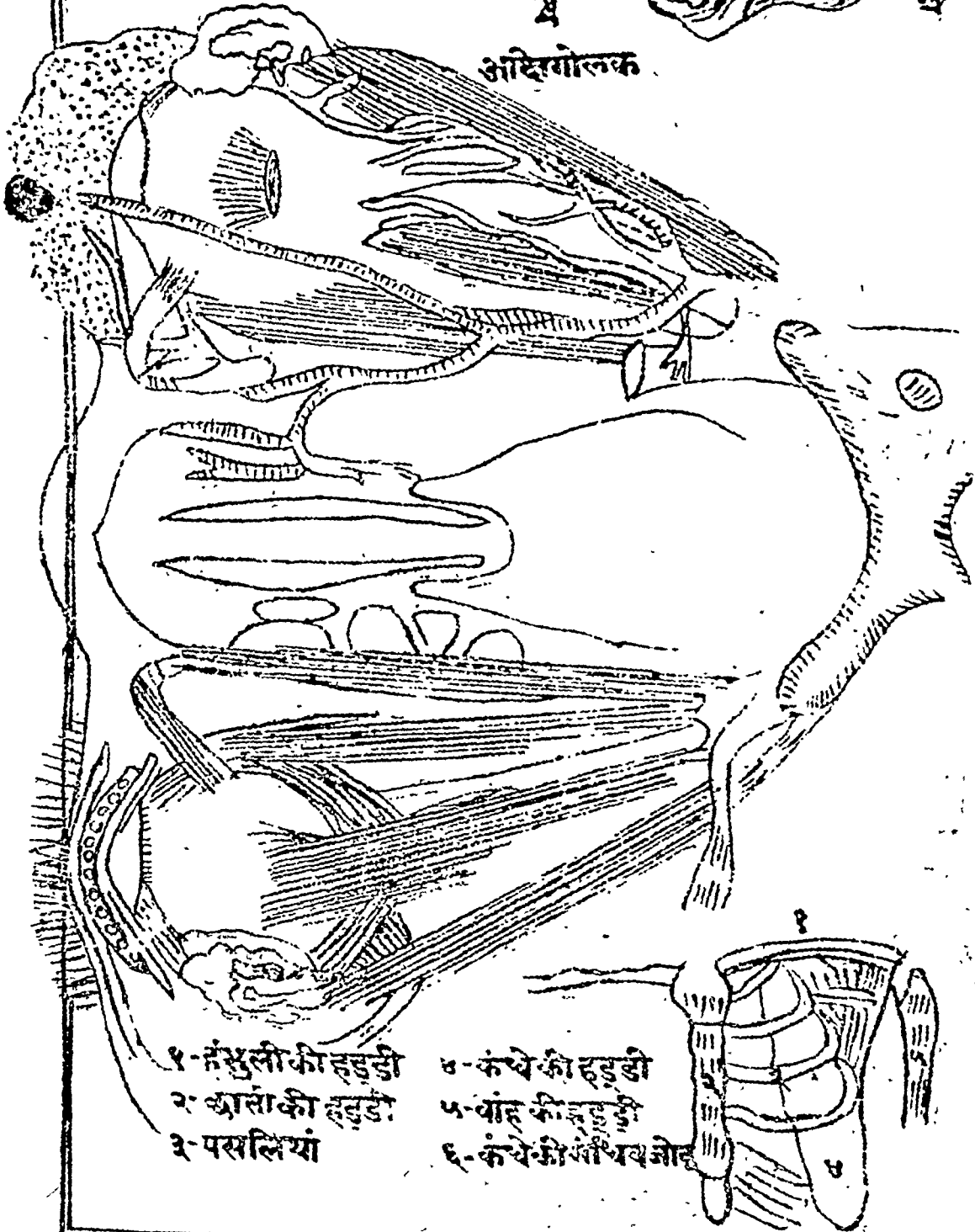
अस्थिगोलक
१-हंसुली की हड्डी
२-छाती की हड्डी
३-पसलियां
४-कंधे की हड्डी
५-बांह की हड्डी
६-कंधे की संधि व जोड़

मुख की
गर्दन की
हृदय स्थान
बांह की
नब्ज या नाड़ी
जांघ की
अंगुलियों की हड्डियां
टांग की
शरीर की प्रधान नाड़ियां
पैर की
कलाई की संधि
व गांठ
रान की हड्डी के ऊपर
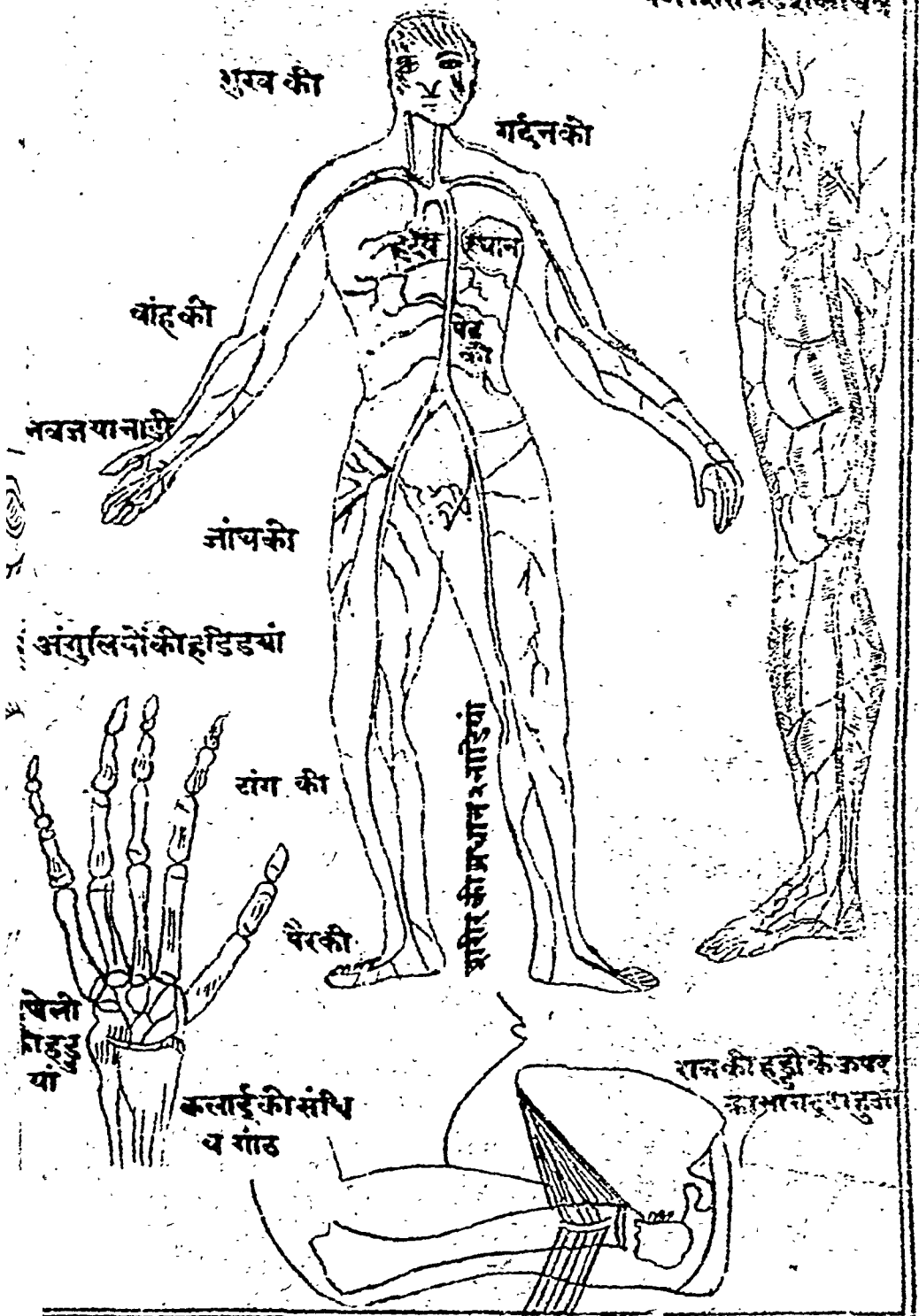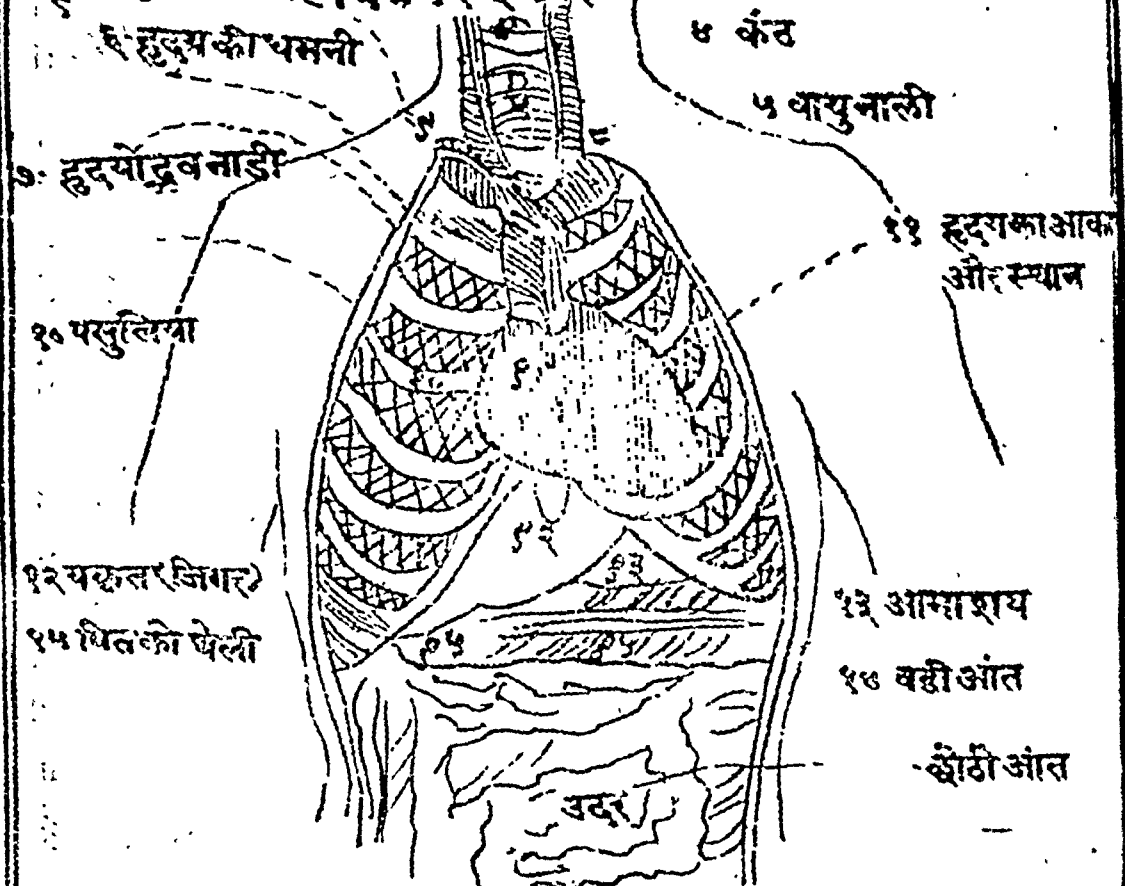
चित्र १२
६ हृदय की धमनी
४ कंठ
५ वायु नाली
७ हृदयोद्भव नाड़ी
११ हृदय का आकार और स्थान
१० पसुलियां
१२ यकृत (जिगर)
१५ पित की थैली
१३ आमाशय
१७ बड़ी आंत
छोटी आंत
उदर
(१) खुली हुई छाती और उसके भीतर हृदय और फेफड़ों के स्थान और आकार।
(२) खुला हुआ उदर और आमाशय यकृत आंतों के स्थान और आकार।
१-जंघास्थि (कटी हुई) २-घुटना
३-टांग की मोटी और बड़ी हड्डी
४-कुहनी की संधि जो बांह की हड्डी के साथ मिलने से बनती है।
५- Radius रेडियस
६- Ulna अलना
(शीर्ष तन्तु प्रदर्शक चित्र)

बन्दूकों की किस्वें
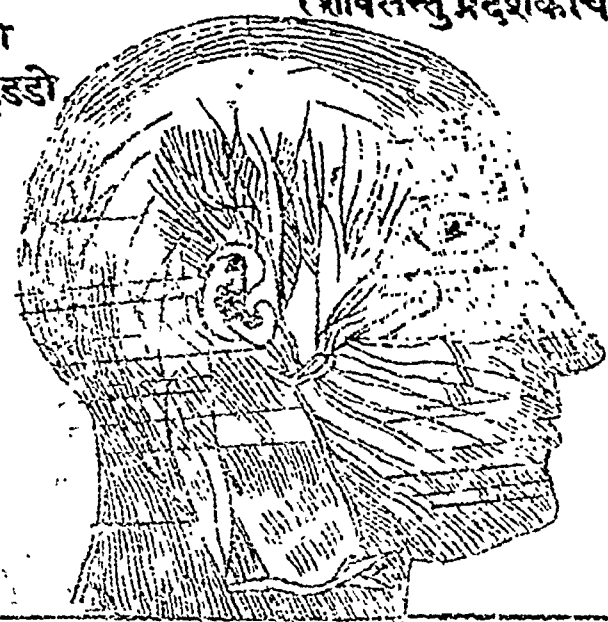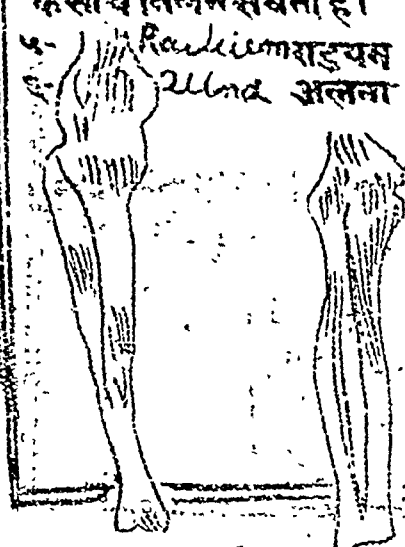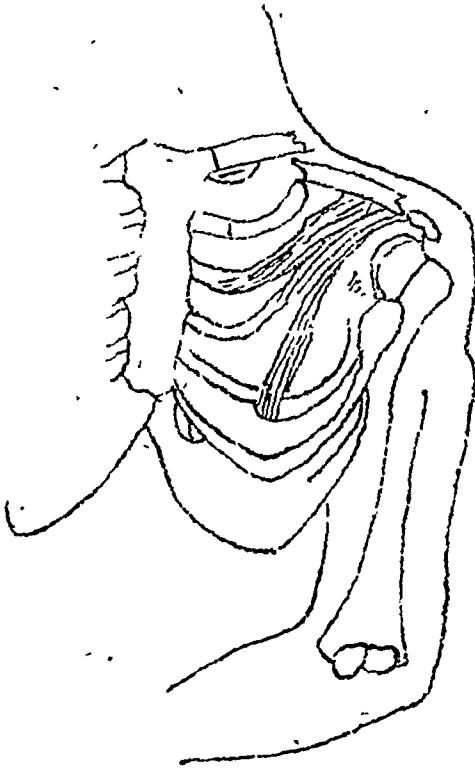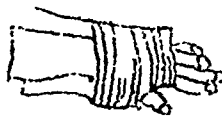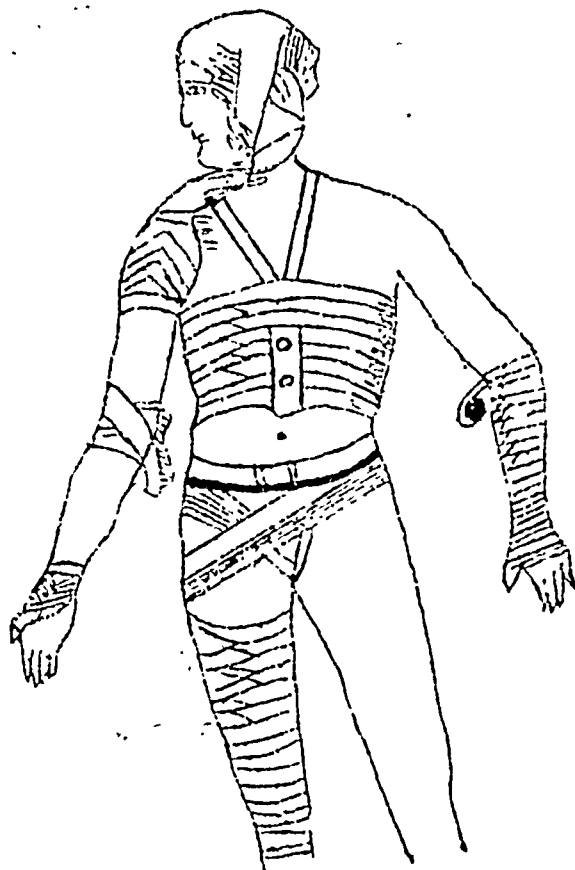
भिन्न भिन्न स्थान के बंधन
तिकौनिया बंधन से सिर बांधना
तिकौनिया बंधन से हाथ बांधना
द्विगुण कटि बंधन
फोरटेल्ड बैन्डेज
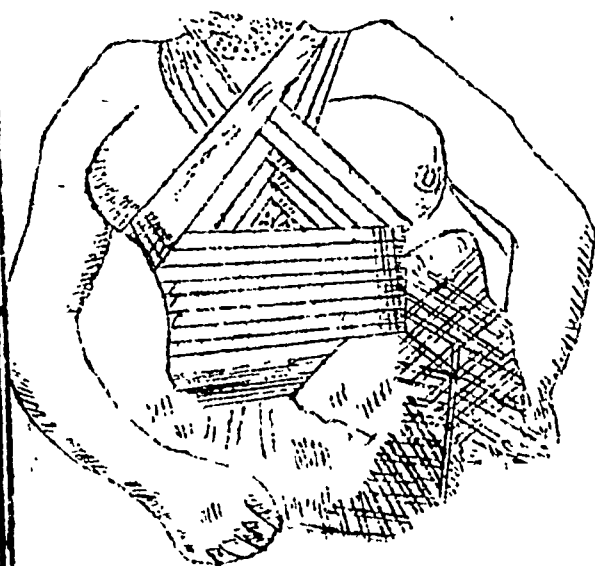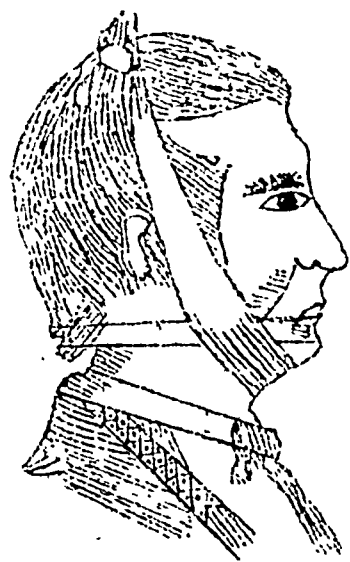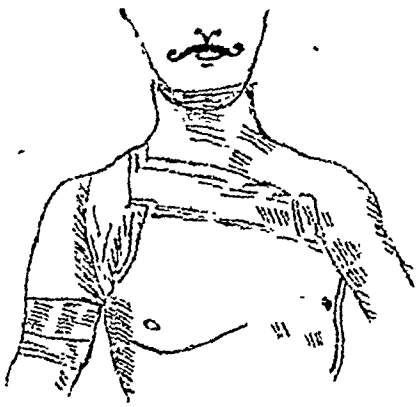
कक्षाबंधन
द्वितीय शंखबंधन
बहुबंधनविधि
शंख बंधन
मणिबंध बंधन विध
ग्रीवा के पश्चिम भाग का बंधन
उष्णीषबंधन
नासिका बंधन
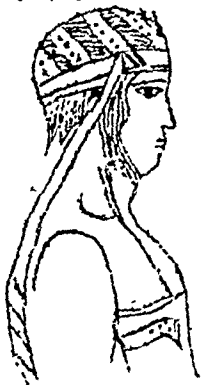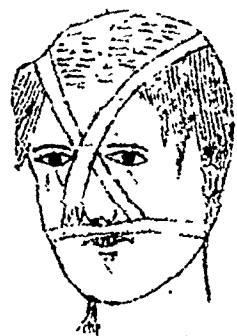
तलवार के कब्जे से रुधिर बंद करना
टोरनी कीट से रुधिर बंद करना
दोनों अंगूठों से रुधिर बंद करना
एड़ी और जंघा का बंधन
हस्ताग्र बंधन
जंघा बंधन
अंगुलीय बंधन
अंगुष्ठ वटिका
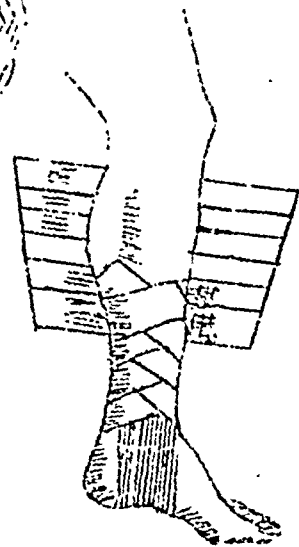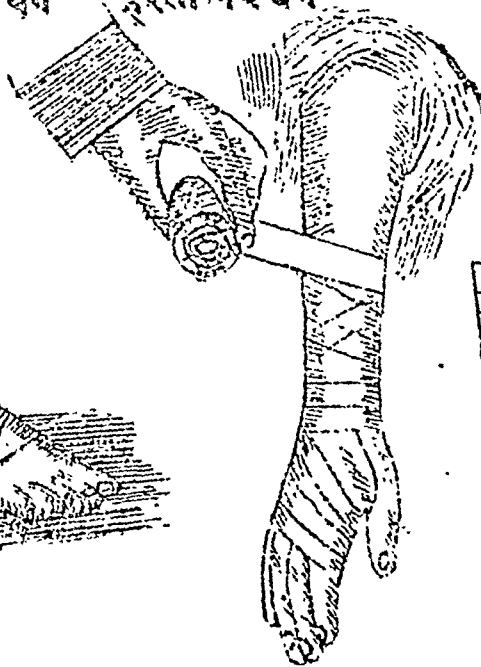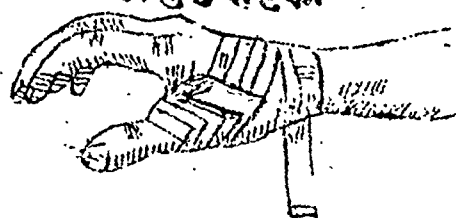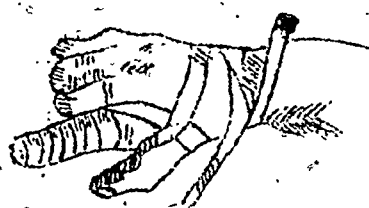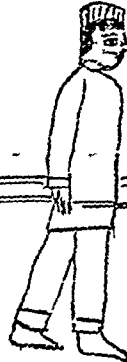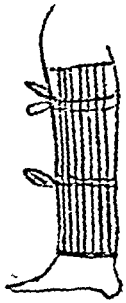
चरखी भाड़
का सीवब
टूटी टांगों के लिये
सहायक काष्ट
बांस व
बड़ी लाठी
कुर्सी
बाईं टांग टूट गई है टांग में सहायक काष्ठ
बांधकर कुर्सी पर बैठा कर घायल को
दो साथी उठा ले जाते है
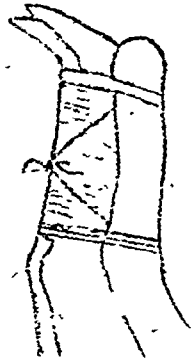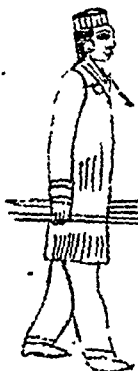
एक आदमी इस तरह धीरे २ रोगी व घायल को दूर तक ले जासक्ता है
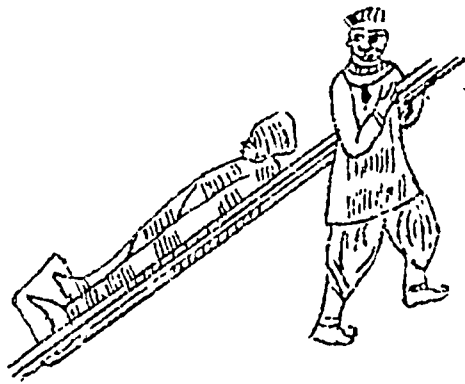
टांग की चोट में इस तरह उठा कर दूर घायल को ले जासक्ते है
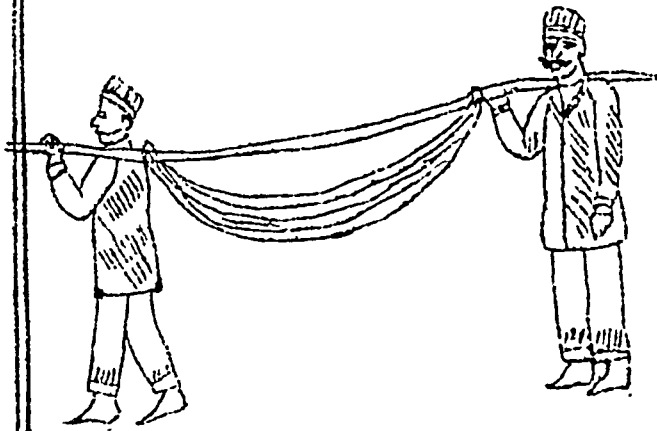
बांह की हड्डी की बीच का भाग टूट गया है बांस का परचा लपेट कर कपड़ा बां-धदो और हाथ गले में लटका लो
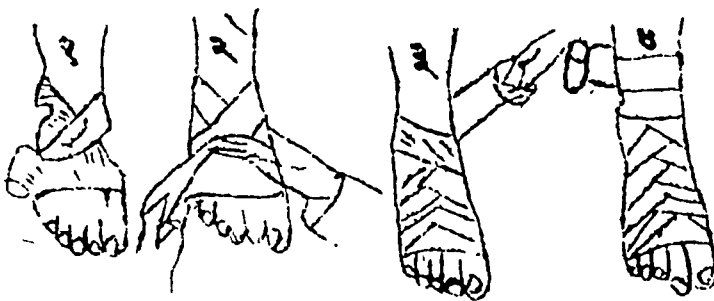
पांव के ऊपर से टांग तक लम्बी पट्टी बांधना

चित्र ५८

वामकूले की हड्डी
इस चित्र में जांघ की हड्डी की गर्दन टूटी हुई दिखाई गई है
वामकूले की हड्डी
जांघ की टूटी हड्डी
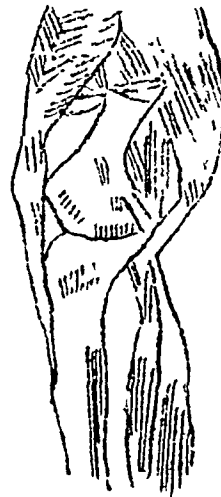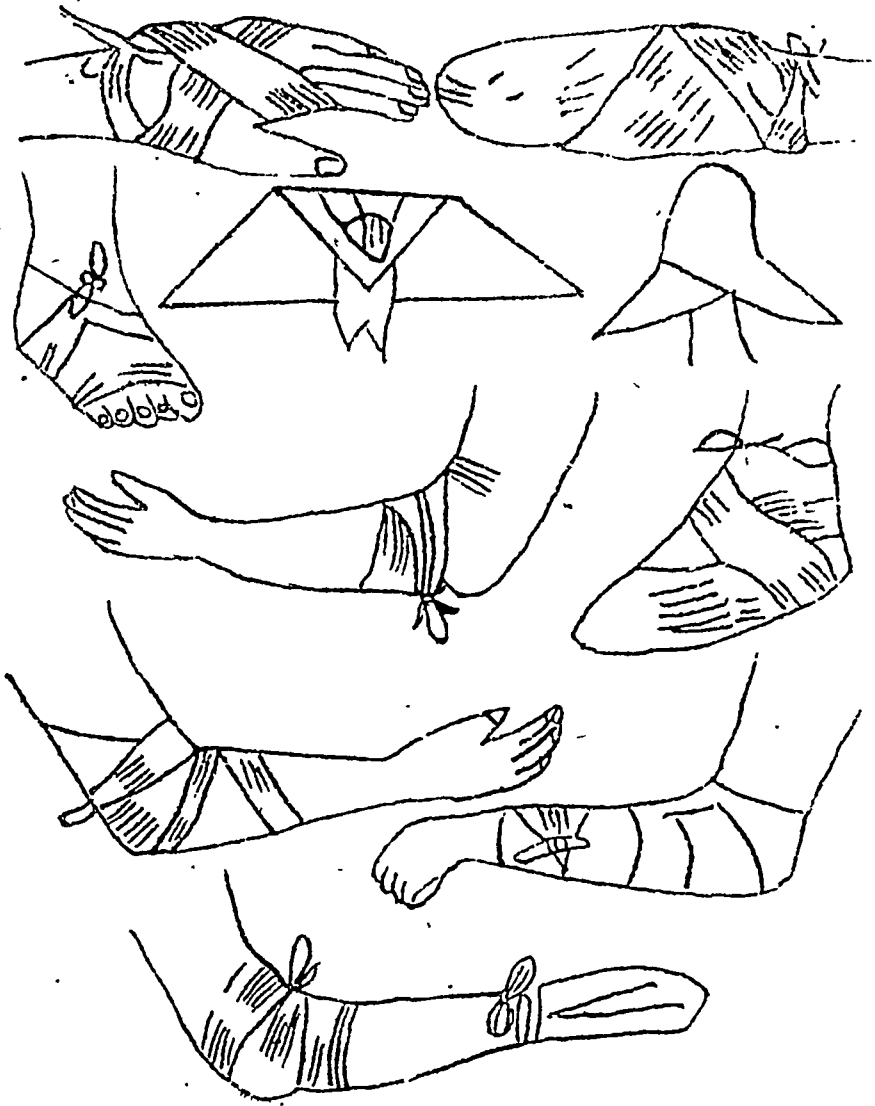
चित्र में दिये हुए स्थानों के घाव को भी रूमाल इत्यादि
ऐसे चोकोर वस्त्र से बांध सके है

श्री परमात्मनेनमः ।
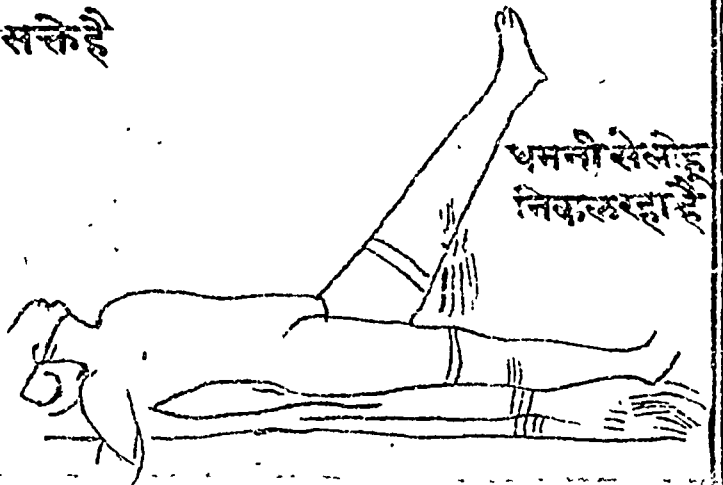
जर्राही प्रकाश ।

प्रथम भाग ।

॥ मस्तक के फोडे का उपाय ॥

एक फोडा सिरके तालु पर होता है उसकी सूरत यह है कि पोस्त के दाने की बराबर होता है और उसके आस पास हथेली के बराबर स्याही होती है और वह स्याही हवाके सदृ-श दौडती है और जहरबाद से संबंध रखतीहै यहां तक ये फैलती है कि सब शरीर स्याह होजाता है और वह रोगी चार पहर या आठ पहर के पीछे मृत्यु के निकट पहुँच जाता है ॥ परंतु कोई इलाज करनेवाला अच्छा जर्राह मिल जाता है तो निस्संदेह आराम होजाता है यह स्याही कंठ से नीचे न उतरी होय तो चिकित्सा करने से आराम हो जाता है और जो स्याही कंठ से नीचे उतर आई होय तो इलाज करना न चाहिये और फोडेका निशान नीचे लिखी तसबीर में देखलो इसकी चिकित्सा इस प्रकार से की जाती है कि पहले सरेरू नस की फस्त खोले

इस तसवीर के तालु में फोडा है और जो इस तसवीर के माथे में महीन स्याही की बूंद है वही फोडेका निशान है और जो सफेदीहै वही काली सूजन जानो।

और पन्द्रह तोले रुधिर निकाले और फस्द के बाद वमन करावे क्यों कि यह रोग दिल अर्थात हृदय को हानिकरने वाला होताहै ऐसा नहो कि नीचे उतर आवे इस रोगमेंवमन कराना उचित है ॥

नुसखा वमन कराने का

सिरका १० तोले, लाल बूरा २ तोले, मेंनफल ६ माशे इन सबको दोसेर जल में औटावै जब आधा जल बाकी रहजाय तब ठंडा कर रखले फिर इसको दो तथा तीन बारमें पिलादे तौ वमन हो जायगी औरउस फोडे पर तथा उस स्याही पर तेज़ाव लगावे तथा प्लास्टर रक्खेजब छाला पडजाय तौ दूसरे दिन प्रातःकाल केसमय काट डाले फिर ऐसा मरहम लगावे कि जिसमें घाव भर जाय और खूब मवाद निकल जावे ॥

नुसखा मरहम

नीलाथोथा १ तोला, जंगाल हरा १ तोले, तबाकिया हरताल ६ माशे, इन सब को महीन पीसकर सुहागा चौकिया १ तोले बिरोज़ा तर ४ तोले, फिटकिरी १ तोले, आंबाहलदी १ तोले, इन सबको भी पीसकर फिर सबको बिरोजे में मिलावे फिर उसमें गौका घृत ४ तोले थोडा २ करके मिलावे फिर ब्रांडी शराब तथा तेज सिरके से इस मरहम को खूब धोकर घाव पर लगावे जब वो घाव सुरखी पर आजाय तब दूसरी मरहम लगाना चाहिये ॥

दूसरी मरहम

काले तिलका तेल ऽ। सेर लेकर गरमकरे फिर आदमी के सिर की हड्डी २ तोले, नीमके पत्ते २ तोले इन दोनों को तेल

में डाल कर जलावे जब जल जाय तब निकाल डाले पीछे दो तोले मोम मिलावै और मुर्दासंग ६ माशे सफेदा काशकारी ६ माशे, इन सबको पृथक् पृथक् पीस छानकर पृथक् पृथक् उस तेलमें डाले और मंदी आगपर पकाकर चाशनी करे जब उस चाशनी का तार बंधने लगे तो अफीम छः माशे मिलावै जब अफीम उसमें मिलजावे तब उतार कर ठंडा करकेरख छोडफिर इस मरहम को उस घाव पर लगावै और देखे कि किसी ओर सूजन तो नहीं है और जो सूजन होय तो उस सूजन पर यह लेप लगावे।

लेपकी विधि

सोरंजान कडवा ६ माशे, नाखूना १ तोले, अमलतास का गूदा२ तोले, बाबूने के फूल १ तोले. अफीम दो माशे इन सब को हरी मकोय के रसमें पीसकर गुनगुना कर के लगावे फिर दो चार दिनके पीछे फिर उसको देखे कि उस घावमें से पीव निकलता है या पानी निकलता है जो पानी निकलता हो तो मरहम लगाना चाहिये॥

अन्यमरहम

पहिले गुलाब के फूलों का १२ तोले तेल गरम करे और पीला मोम २ तोले उसमें डालकर पिघलावै फिर सेलखडी २ माशे, रसकपूर २ माशे, सफेदा काशगारी २ माशे, मुर्दासंग २ माशे, मुर्गी के अंडेके छिलके की भस्म ३ माशे, नीलाथोथा जला हुआ २ रत्ती, इन सबको पीस छान कर उस तेल में मिलावै जब थोडी चाशनी हो जाय तो नीचे उतार लेवे और ठंडा करके घावपर लगावै और जो यह फोडा मुसलमान के

माथे में होय तो उसको हलवान के मांस का शोरबा और रोटी खिलाना चाहिये और हिन्दूको मूंगकी दालरोटी खिलानी चाहियेऔर खटाई लालमिर्च आदि सबसे परहेज करना चाहिये और जो इस दवा के लगाने से पानी निकलना बंद न हो तो इसकी चिकित्सा करनी छोडदेऔर जानले कि यह फोडा जहर बाद का है। आदि में छाला प्रगट होवे तो उसमें चीरादेवे और दो तीन दिन तक नीमके पत्ते बांधें पीछे यह मरहम लगावे।

❀ मरहम की विधि ❀

पाहिले ११ तोले गुलाव के फूलों का तेल गरम करै फिर उसमें नीम के पत्तों का रस ४ माशे. वकायन के पत्तों का रस ४ माशे, बरके पत्तों रस ४ माशे हरे अमलतास के पत्तों का रस ४ माशे हरे आमले का रस चार माशे इन सब रसोंको उस तेलमें मिलावे जब रस जलजाय और तेल मात्र रहजाय तब पीला मोम २ तोले, सफेद मोम १ तोले डालै फिर सफेदा १ तोले, मुरदासंग ४ माशे; दम्मुल अखवेन ४ माशे; नीला थोथा ४ रत्ती इनसबको महीन पीस कर उस तेल में मिलावै जब चाशनी हो जाय तब उतारले फिर उसको घाव पर लगावे और एक फोडा माथे परतथा कनपटी पर तथा गुदा पर ऐसा होताहै कि उसमें कुछ भय नहीं होता याती वो आपही फूटकर अच्छे हो जातेहैं या चीरने वा मरहम लगाने से अच्छे होजाते

ऊपर लिखे फोडों का निशान यह है कि इसके दाने अर्थात् फून्सी घोटी से लेकर सब तालूको घेरलेते हैं वह इस तसवीर में देखलो।

हैं ऐसे सब प्रकार के फोडों के वास्ते वहुतअच्छीअच्छी दोचार मरहम इस ग्रंथ के अंतमैं लिखेंगे जो सबप्रकार के फोडों और घावों को वहुत जल्दी अच्छा कर देती है और एक रोग सिरमें यह होताहैकि वहुतसी छोटी२फुन्सी होकर सिरमेंसे पानी निकलता है और जहां वह पानी लगजाता है वहां छत्तासा होजाता है और वह पानी चेपदार गोंद के पानी के सदृश होताहै इन फुंसियों का स्थान इस नीचे लिखी तसवीर में समझ लेना उक्त रोग पर नीचे लिखी मरहम लगाना चाहिये ॥

❋ मरहम की विधि ❋

गौका घृत धुला हुआ आधपाव, कवेला ६ माशे कालीमिर्च २ माशे, सिंगरफ २ माशे, इन सबको पीस छानकर उस घीमें मिलावै फिर उस घी को एक रातभर ओसमें धर रक्खे दूसरे दिन उन फुंसियों पर लगावै परंतु इस दवा के लगाने से पहिले उस स्थान को गरम जलसे सांभर मिलाकर धोडाले फिर उस मरहम को लगावै इसी तरह सात दिन तक मरहम लगावैतो आराम होजायगा औरजो इससे आराम न होवै तो पारा छः माशे, अजवायन खुरासानी; पान वंगला मसाले सहित चारनग पहिले मरहम की दवाइयां उसमें मिलावै फिर सांभर नमक और गरम जलसे धोके यही मरहम लगावै और नीचे लिखी दवा पिलावै

❋ नुसखा पीनेका ❋

गुलावके फूल ४ माशे, मुनक्का ७ दाने, वनफशा के फूल ६ माशे, सूखी मकोय ६ माशे, इन सबको रात को पानी में भिगोदे और सबेरेही औटाकर छानले फिर इसमें १ तोले मिश्री मिलाकर पिलावे और चौथे दिन यह दवाई देवै ॥

❃ नुसखा दूसरा ❃

सफेद चीनी का सत २ माशे लेकर एक तोले गुलकंदमें मिलाकर पिलावे इसके पीनेसे बमन होगी और दस्त भी होगें और दोपहर के बाद ऐसा भोजन करावे कि जो अवगुण नकरै फिर दूसरे दिन यह दवाई देवै ॥

❃ नुसखा ❃

बीह दाना २ माशे, रेशा खतमी ४ माशे,मिश्री एक तोले इनका शर्बत तथा लुआव वनाकर पिलावे जब मवाद निकल जावे तव आराम होजावेगा ॥

❃ गलेके फोडेका यत्न ❃

एक फोडा गले में होता है सूरत उसकी यह है कि पहले तो सूरत सी मालूम होतीहै उसवक्त उसके घरके लोग तथा अन्य पुरुष अपनी मतके अनुसार सुनी सुनाई दवाई तथा सेकादिक करतेहैं जब ये पांच चार दिन काहो जाता है तबउसमें पीडा और जलन पैदा होती है तब हकीम के पास जाते हैं जब उस पीडा के कारण ज्वर होता है तब बहुत से मूर्ख हकीम उसको अमल देते हैं जब उससे कुछ नहीं होता तव जर्राह को बुलाते हैं और कोई जर्राह भी ऐसा मूर्ख होता है कि उस सूजन पर तेल लेप लगा देता है तो उससेभी रोगी को कष्ट पहुंचता है और जब यह सूजन पैदा होती है उसवक्त इसकी सूरत कछुए कीसी होतीहैफिर भिंडकेछत्तेके समान होजाताहै इसका निशान इसनीचे लिखी तसबीर में समझ लेना इस रोगपर ऐसा लेप लगाना चाहिये जो इस सूजनको नरम करै और इसको फोडकर मवाद निकालै वह दवा यह है ॥

नुसखा लेप ।

इस के गले में फोडा है प्रथम सूजनसी होकर फोडा हो जाता है ।

वाल छड १ तोले, नागरमोथा ६ माशे, रेवंद खताई ६ माशे नान ६ माशे, उस्क रूमी ६ माशे अमलतासका गूदा २ तोले इन सबको हरी मकोय के अर्क में पीसकर गुन गुना लेप करै और सरेरू नसकी फस्त खोलें जब उस फोडे की सूरत बदल जावै तब वह मरहम लगावे जो पहिले वर्णन की गई है ॥

नुसखा

नानपाव का गूदा ५ तोले लेकर बकरी के दूध में भिगोदे फिर उसको निचोड कर खरल करे और उसमें दम्मुल अखवैन केसर अंजरूत, अफीमये सब दवा छः छः माशे और शहत ४ तोले मुर्गीके ३ अंडेकी जर्दी इनसबको एकत्र कर खरल करे और फोडा जहां तक फैला हो उतना ही बडा एक फाया बना कर उसपर इस दवाको लगाकर इस फाये को फोडे पर लगादे जब उसमें छीछडे दीखें तो काटकर निकाल देवे जबफोडाला हो जाय और उसमें से दुर्गंध न आवै तब इस दवाको बंद और ये मरहम लगाना शुरू करै ॥

मरहम की विधिः

गुलाब के फूलों का तेल गरम करके उसमें रत्न जोति २ तो

ले डाले जब उस्का रंग कबूतर के रुधिरके समान हो जावै तब उस्को छानले फिर उस्में मोम २ तोले, नीला थोथा १ रत्ती मिलावै और इस्में १ तोले जैतून का तेल मिलाकर रखछोडे और उसघाव पर लगावै और इस रोगवाले मनुष्य को धोवा मूंगकी दाल और रोटी खिलाना चाहिये एक सेर पानी को औटावै जब आधापानी जल जावै तब ठंडा करके रखछोडें फिर प्यास लगे जब इसी पानी को पिलावै कच्चा पानी न पिलावै ॥

❀ कानकी लौके फोडे का यत्न ❀

एक फोडा कानकी लौके पास होता है इसमें केवल सूजन की गांठसी होती है पीछे पककर फोडा होजाता है इस फोडेका निशान नीचे लिखी तसवीर में है देखलेनाइस फोडेकी चिकित्सा इस प्रकार करनीचाहिये कि पहिले इसपै ऐसी दवालगावेजिससेये फोडा नरम होजावे क्यों कि जो इस कच्चेफोडेमेंचीरालगाया जावेतो अपयश होता है अर्थात् रोग बढजाता है इस लिये चार दिनकी देरी होजाय तो कुछ डरनहीं परन्तु पकेपर चीरादेनेसे रोगकी बहुतजल्द शान्ति होतीहै और पहले लगाने की दवा यह है ॥

इसतसवीरके कानकी लौके नीचेफोडा है जोकि कानके पास स्याही का निशान है ।

❀ नुसखा ❀

शहतूत के पत्ते २ तोले, नीम के पत्ते २ तोले, सफेद प्याज १

तोले, सांभर नौंन ६ माशे इन सबको महीन पीस गरम करके लगावे जो इस दवा के लगाने से फटजाय तौ बहुत अच्छा है नहीं तो इसको नश्तर से चीरदेवे अथवा जैसा समय पर उचित समझे वैसाकरै, फिर यह मरहम लगावै—

मरहम की विधि

सरसों का तेल ७ तोले लेकर आग पर गरमकरै फिर इसमें पीला मोम १ तोले, खपरिया २ तोले, उरद का आटा २ तोले इन सबको उस तेल में मिलाकर खूब रगड़े और ठण्डा करके फोडेपर लगावें और जो इस मरहम से आराम नहो तो वह मरहम लगावे कि जिसमें रतनजोत मिली है और जब मांस बराबर होजावे तब नीचे लिखी काली मरहम लगावै ॥

काली मरहम

कड़वा तेल १० तोले, सिंदूर ४ तोले, इन दोनों को लोहे की कढाई में गेरकर आगपर पकावे और नीम के घोटे से घोटतारहै जब इसका तार बँधनेलगे तब उतारकर ठण्डाकर रखछोड़ फिर समय पर लगावे और फोडे में चीरा देना हो तो चौडा चीरादेवै क्योंकि कम चीरा देने से इसमें मवाद रहता है इस वास्ते चौडा चीरा देना अच्छा होता है।

आंख का फोड़ा

नेत्र के फोडे का यत्न

एक फोडा आंख के कोने में होताहै यह अपने आप फटजाताहै इस फोडे का निशान इस तस्वीरमें समझ लेना।

इस फोड़े की चिकित्सा यह है कि पहले वो मरहम लगावे जिसमें नीलाथोथा और जंगाल पडा है वह इस पुस्तक के पत्र में बर्णन करदीगई है जब इसका मवाद निकलजाय तब यह मरहम लगावे ।

मरहम की विधि

ऊँट के दाहिने घुटनों की हड्डी दो तोले लेवे, घुटने जलाकर निकालडाले और मोम सफेद ६ माशे, सिन्दूर गुजराती चार माशे मिलाकर खूब रगड़ और लगावे और नाक में यह दवाई सुँघावे ।

सूँघने की दवा

नकछिकनी १ तोला, सूखा तमाखू ६ माशे, कालीमिर्च ३ माशे सबको पीसकर सुँघावे क्योंकि माद्दा ऊपर की ओर झुक जायगा तो शीघ्र आराम होगा क्योंकि यह स्थान नासूर का है और जो इस दवासे आराम नहो तो ऊंट के दाहिने घुटने की हड्डी बासी पानी में घिसकर उसकी बत्ती रक्खे और उसका फाया बनाकर रक्खे क्योंकि यहचिकित्सा नासूर कीहै और यहफोड़ा भी नासूरही के भेदों मेंसे है दूसरे उपाय से कम आराम होता है ।

नेत्रों की बाफनी का यत्न

एक रोग पलकों में ऐसा होताहै कि वह पलकके सब बालोंको उड़ादेता है और पलक लाल पड़जाते हैं इसका इलाज यह है—

नुसखा

तिल का तेल पौने छः छटांक लेकर काच के पात्र में धरे और उसमें गुलाब के ताजा फूल ५ तोले मिलाकर ४० दिन तक रखा रहनेदे अगर ताजा फूल न मिले तो सूखे फूलों को

दोसेर पानी में औटावे जवआधा पानी रहे तव छान कर फिर एक सेर तिल का तेल डाल कर औटावै जव पानी जल जाय और तेल मात्र रहजाय तव ठंडा करके सीसीमें भर रक्खे इस को हकीम लोग रोगन बोलते हैं और अकसर बना बनाया अत्तारों की दुकानपर मिलताहै ऐसागुलरोगन दोमाशे, मुर्गी के अंडे की सफेदी, दोमाशे, कुलफा के पत्ते दोमाशे, इन सबको मिला कर पलकों पर लेप करै ॥

॥ नुसखा ॥

बादाम की मींगी औरत के दूध में घिस कर लगाया करै॥ अथवा अजमोद को मुर्गी के अंडे की सफेदी, में घिस कर लगाया करै अथवा धतूरे के पत्तोंका अर्क और भांगरेके पत्तों का अर्क इन दोनों को मिलाकर इस में सफेद कपडा भिगो-कर सुखा ले और गौके घी में उस कपडे की बत्ती बनाकर जलावे और मिट्टी के बरतन में उसका काजल पाड कर नित्य प्रति लगाने से सब पलक ठीक होकर असली सूरत पर आजांयगे ॥

दूसरा रोग

इस में नेत्र के ऊपर की बाफनी में खपटासा जम जाता है इस रोग के होनेसे पलक भारीहो जातेहैं और भेंडे आदमीकी तरह देखने लगताहै ऐसेरोगमें आंखोंमें सलाईका फेरना बहुत गुण करता है ॥

नेत्रके नासूर का यत्न ।

यह फोडा आंखके कौनेमें वहां होताहै जहांसे गीड अर्थात् आंखका मल निकलता है और इस फोडेकी यह परीक्षा है कि

पहिलेतो इसकीरंगत लाल होतीहै फिर इसका मुख सफेद हो जाताहै फिर पक कर घाव होजाताहै फिर घाव के होनेपर नेत्रों को बडा दुःखदाई होता है इसको पहिले हकीमों ने नासूर वर्णन किया है और इस फोडेमें और पहिले लिखे हुए आंखके फोडेमें इतनाही भेदहै किइसका मुख सफेद होता है और पहिले फोडेका मुख लाल होता है यह फोडा रिसने लगताहै औरकभी फिर भर आताहै इसकी चिकित्सा यहहै ॥

इसतसवीरकीआंखकेकोनेमेंजोस्याही की बूंद मालूम होतीहै उसको नासूर समझना चाहिये ॥

इलाज ।

अलसी और मैथी का लुआब निकालकर आंखोंमें टपकाने से यह रोग जाता रहताहै [अथवा] मुर्गीके अंडेकी जर्दी और केशर इन दोनों को पीसकर घावपर लगावे [अथवा] अफीम और केशर इन दोनों को पीस कर नेत्रों के ऊपर लगावे ॥

॥ नाकके दूसरे घाव का वर्णन ॥

एक घाव नाकके भीतर ऐसा होताहै कि उसमें से कभी २ तो राध निकलती है और कभी बंद होजाती है इस घाव पर यह दवा बहुत गुण करती है ॥

और जो यह रोग बहुतही दुख देने लगेतो कुत्तेकी जीभ को जलाकर उस मनुष्यकी लार में घिसकर नेत्रों में लगाने

से नासूर बहुत जल्दी अच्छा होता है और जो आंख के कोने के फोडा का इलाज हम लिखआये हैं वेभी इसमें गुण करते हैं अथवा एलुआ, लोवान, अनार के फूल, सोना मक्खी, दंमुल अखवेन, फिटकरी ये सब दवा तीन तीन माशे, ले और इनको महीन पीसकर गुलाब जल में मिलाकर इसकी लंबी गोली बनाले फिर नासूर के मुख को पोंछकर उस में टपकावे तो रात दिन के लगाने से बिलकुल आराम हो जायगा ॥

। नेत्र के घाव का यत्न ।

एक फोडा इस प्रकार का होता है कि नेत्रों में गेहूँ के आकार का सा दिखाई देने लगता है उसके निशान नीचे की तसवीर में समझलेना चाहिये ॥

नुसखा गोली ।

सोनामक्खी को गधा के दूध में आठ पहर भिगोकर छाया में सुखावे और अफीम ३॥ माशे, कतीरा ३॥ माशे, दरयाई १॥ माशे, कुदरू गोंद १॥ माशे, सुफेदा २ तोले चार माशे, बबूल का गोंद १४ माशे इन सबको कूट छानकर मुर्गे के अंडे की सफेदी में मिलाकर गोलियां बनावे और एक गोली को पानी में घिसकर नित्य आंखों में लगायाकरे तो यह घाव तुरन्त अच्छा होजायगा ।

इस तस्वीर में नेत्र का घाव उँगली के पास है ।

पलकों की सूजन का यत्न ।

नुसखा ।

(१) मोम को गरम करके लगावे । [२] किसमिस को चीरकर उसे गुन गुना करके सूजनपर लगावे । [३] बडी कौडी पानी में पीसकर पलक की सूजन पर लगावै । [४] मक्खी के सिरको काटकरसूजनपर लगावेतो सूजन अच्छी होजाती है [५] रसौत को पानी में घिसकर पलक की सूजन पर लगाया करै तो जाती रहती है ।

एक यह रोग होता है कि नेत्रों के किनारे पर सूजन होती है । इस की चिकित्सा यह है ।

प्रकट हो कि नेत्रों के रोग तो बहुत है इस लिये उन सब के इलाज बिस्तार पूर्वक अन्यत्र लिखेंगे. यहां तो केवल घाव और फोडों का इलाज लिखा है ॥

नाक के फोडों का यत्न ।

एक फोडा नाक में होता है उसको नाकडा कहते है ॥ इस फोडे का निशान नीचे लिखी तसवीर में समझ लेना ॥ इसरोग की चिकित्सा यह है कि पहिले यह सूँघनी सुंघावे ॥

सूंघने की दवा ।

सेंधा नमक, चौकिया सुहागा, फिटकरी, कच्चा जंगाल

जलाहुआ इन सब औषधियों को बराबर ले महीन पीसकर सुँघावे जब वह फोडा चारों ओर से नाक की त्वचा को छोडदे यातो उस सडेहुए मांस को सुई से छेदकर निकालडाले फिर यह मरहम लगावे ।

मरहम की विधि ।

गौ का घी २ तोले, नीलाथोथा २ माशे, जंगाल २ माशे, पीली राल २ माशे सफेदा कासकारी ६ माशे, इन सब को महीन पीसकर उसको घृतमें मिलाकर पानीसे खूब धोके लगावे तो ईश्वर की कृपा से बहुत जल्दी आराम होगा ।

नाक के भीतर घाव की दवा ।

मोम पीला एक तोला, गुलरोगन ३ तोले लेकर इसमें मोम पिघलावे फिर उसमें मुरदासंग २ माशे, वंग ४ माशे, ये सब मिलाकर नाक में भरे तो घाव शीघ्र अच्छा हो जायगा अथवा वनशान के फूल ९ माशे, बीहदाने ६ माशे, इन दोनों को थोडे पानी में औटावे फिर मसलकर छान ले फिर इस को २ तोले गुलरोगन में मिलावै, और एक तोले सफेद मोम मिला कर मरहम बनाकर घाव पर लगावे ॥

नाक के घाव की दवा ।

मुरगी की चर्वी और मोम इन दोनों को बराबर लेकर घीमें पकावे जब ठंडा होजाय तब उसमें सफेद कपडेकी बत्ती बनाकर नाकमें रक्खे अथवा सफेद कत्था और मुरगीकी चरबी इन दोनों को पीसकर नाक के भीतर लेप करें अथा मुरदा संग, भैंस के सींग का गूदा, मुर्गे की चरबी इन सब को गुल रोगन में

पकावै जब मरहम बनजाय तब फिर उसमें रुई की वत्ती भिगो कर नाक में रक्खें ॥

(२) मोम ३॥ माशे, कपूर ३॥ माशे, सफेदा १॥ तोले, गुल रोगन १५ माशे पहिले गुलरोगन को गरम कर फिर उसमें मोम को मिलावै और सफेदा के पानीसे धोकर मिलावै फिर इसे गरम कर खूब घोटे जब मरहम के सदृश होजाय तब रख छोडे फिर उस घाव को देखै जो घाव नाक में बहुत भीतरा होवै तो इसकी वत्ती बनाकर नाकमें रक्खै और जो घाव पास होतो वैसे ही लगादे इन घावों का निशान नीचे लिखी तसवीर में समझ लेना चाहिये ॥

❀ नकसीर की चिकित्सा ❀

जोनाकसे रुधिर वहा करताहै उसे नकसीर कहतेहैं यहदो

प्रकार की होती है एक तो बोहरान से, दूसरी खून की गरमी से जो नकसीर बोहरान के कारणसे होतो उसके लक्षण ये हैं कि चौथे सातवें नवे ग्यारहवें और चौदहवें दिन गरमीके दिनों में उत्पन्न होती हैं उसे बंद न करे क्योंकि इसके बंद करने से जान का भयहै और जो बोहरानके कारणसे न हो तो कुदरू गोंदके द्वारा बंद करदेवे ॥

॥ अन्य नुसखा ॥

जहर मोहरा खताई; बंशलोचन सफेद कत्था बडी इलायची के बीज सेलखडी इन सबको बराबर लेके पीसकर सुखावै ॥ और माथेपर तथा कनपटी पर ये दवाई लगावै ॥

॥ अन्य नुसखा ॥

बबूलकी फली १ तोले, बबूल के पत्ते १ तोले, हरी महदी १ तोले, सूखे आमले १ तोला, सफेद चन्दन १ तोले इन सबको पीसकर लगावै और जो इससे भी बंद न होतो यहलगावै ॥

॥ दूसरा नुसखा ॥

नाजके बीज सफेद चंदन एक एक तोले, कपूर ६ माशे, इनको महीन पीसकर हर धनियेके अर्कमें मिलाकर लेपकरे ये चिकित्सा याद रखने योग्यहै ॥

॥ पीनस की चिकित्सा ॥

एक दूसरा रोग भी नाकमें होताहै उसे पीनस कहते है यह उपदंश से सम्बन्ध रखता है जोरोगी उपदंशको प्रगट न करै और वह कहै कि मुझैउपदंश नहीं हुआ तो कभी विश्वास न करै क्योंकि उपदंश बापदादे से भी हुआ करते हैं क्यों-कि बहुत से हकीम और डाकटरों ने पुस्तकों में लिखाहै और कोई २ कहते हैं कि पीनस गरम नजले से भी होता है॥ और अपनी आंखों सेभी देखाहै॥ इस रोगमें प्रथम सुगंधि और दुर्गंधि कुछ नहीं जानी जाती फिर मस्तक और ललाटमें पीडा हुआ करती है और वाणी में भी कुछ विक्षेप होजाताहै और उसकी चिकित्सा यह है उस रोगी को जुल्लाब देवे और फस्दखोले और वमन करावे और नीचे लिखीहुई नाससुंघावे।

॥ नासकी विधि ॥

पलास पापडा कंजाकी मिंगी; लाल फिटकरी; नकछिक

नी, सूखी तमाखू इन सबको बराबर ले पीसछान कर सुंघावै, जो छींक बहुत आवेंतो शीघ्र आराम हो जायगा नहीं तो नाक के बीचमें की हड्डी जाती रहती है उस्के लिये देवदारू का तेल और तारबीन का तेल बहुत गुणदायक होता है॥ अथवा कदूका तेल व काहू का तेल वा पेठे का तेलगुणकरता है और जो सामर्थ्य होतो चोवचीनी का या उस्की माजून का सेवन करावे अंतको हड्डी निकलकर नाक बैठजाती हैऔर बाणी बदल जाती है ऐसी दवाइयों से घाव अच्छा होजाताहै परंतु रूपतो बिगडही जाता है औरजो येरोग उदंशके कारण से होतो उसकी चिकित्सा इस प्रकार से करे कि पहिले तो जमालगोटा का जुलाब देवे फिर वे गोलियां खिलावे॥ जो उपदंश की चिकित्सा में लिखी हैं और यह गोली देवे॥

॥ गोली ॥

काली मिर्च, पीपल बडी, सूख आमले ये दवा एक२ तोले ले और सबको कूटछान कर सात बर्षके पुराने गुडमें मिला के जंगली बेर के प्रमाण गोलियां बनावे और प्रातःकाल के समय एक गोली मलाईमें लपेट कर खिलावै और ऊपर से दहीका तोड पिलावै और दाल मूंगकी और रोटी खवावे और औटाहुआ जल पिलावै इसगोलीके सेवन करनेसे नाकके सबरोग अच्छे होजांयगे॥

नाक की नाक के फोडे का इलाज

एक फोडा नाक की नौक पर होता है उस्की सूरत काली होती है और वह जोंकके सदृश बढजाता है॥ परन्तु उसका कटना कठिन है क्योंकि इसका रुधिर बंद नहीं होता है। मैंने एक बार एक मनुष्यके यह रोग देखा है उस्की चिकित्सा अपनेहाथसे की परन्तु ठीक न बनी अंतको मैंने और मेरेमित्र

डाक्टर बाबू जमुना प्रसाद साहबने उसके कुटंब के लोगोंसे

एक फोडा मुख के भीतर काक के पास होता है।

कह दिया कि रोग असाध्य है आराम होना वा न होना ईश्वराधीन है हम जिम्मे-दार नहीं यह कह कर उसकी चिकित्सा बहुत प्रकारसे की परन्तु कुछवस न चला येवातें इस लिये वर्णन की हैं कि यदि कोई सज्जन मनुष्य इस फोडेवाले मनुष्य को देखे तो एकहीबार इसकी चिकित्सा का प्रयत्न करें क्योंकि मेरी बुद्धि में यह रोग असाध्य हैं। एक फोडा मुखके भीतर काकके पासहोता है। उसको खुनाक कहते हैं उसका इलाज यह है कि पहिले सेरू नस की फस्द खोले फिर यह जुल्लाब देवे।

कुल्लों की विधि।

शहतूत के पत्ते ४ नग, कोकनार ४ नग असवंद १ तोले, सावत मसूर २ तोले; इन सब चीजोंको दोसेर पानीमें औटावै जब आधा पानी रहजाय तब छान कर इसके कुल्ले करावे. और जो आराम न हो तो यह आगे लिखा नुसखा देवै।

नुसखा ।

गेहूं की भुसी ६ माशे, नाखूना १ तोले खतमी के फूल १ तोले, तूमर १ तोले सूखा जूफा १ तोले, सेंधानमक ६ माशे इन सबको तीन सेर जल में औटावै जब एक सेर पानी जल

जावे तब कुल्ला करावै. और जो इस दवाके करने से फोडा न फूटजावै तो अच्छा है, नहीं तो नीचे लिखे हुए तेजाव के कुल्ले करावै ।

तेजाव की विधि ।

अनार की छाल ६ माशे, मूलीके बीज ६ माशे, सफेद जाज ६ माशे, नौसादर २ माशे. इन सवको आधसेर तेज सिरके में औटाकर कुल्ले करावै. जव फोडा फूटजाय तो देखना चाहिये घाव है वा पुरगया जो पुरजाय तो यह दवाई करना चाहिये ।

नुसखा ।

कोकनार नग २ गेहूं की भुसी ६ माशे, खतमी के फूल ६ माशे, गुलनार ६ माशे; इन सवको पानी में औटाकर कुल्ले करावै, और जो घाव हो तो नीचे लिखी दवा करै ।

घाव की दवा ।

खतमी १ तोला; खतमीके फूल १ तोला, वनफसा के फूल १ तोला, लिसोडा १ तोला, मेथी के वीज १ तोला, इन सव को जौकुट करके एक सेर नदी के जल में एक पहर भिगोकर औटावै. फिर काले तिलों का तेल मिलाकर औटावै जव पानी जलजाय और तेल मात्र रहिजाय तव छान कर उसे घाव पर लगाया करै ।

और एक फोडा मुखमें जीभके नीचे होता है उसकी सूरत छाते कीसी होती है । और एक फोडा कोने की ओर को झुका हुआ होता है कारण बाहर की ओर एक गुठली सी होती है उस गुठली पर यह लेप लगावै ॥

लेपकी विधि ॥

निर्विसी हरी मकोय इन दोनों को पीसकर गरम करके लगावै ॥ और जो छालासा होता है उसकी चिकित्सा इस रीति से करै ॥

नुसखा ॥

वायविडंग. माई छोटी, माई वडी हरा माजूफल; सेंधा-नमक इन सबको बराबर लेके पानी में औटाके कुल्ले करै और जो फूट जावै तो उसकी चिकित्सा यह है ॥

नुसखा ॥

धानियां: सूखा कत्था सफेद. माजूफल इन सबको बराबर ले महीन पीसकर लगावै और इन्हीं को जल में औटाकर कुल्ले करावै और उसमें बुरामांस उत्पन्न होजाता है और सब जाभपर छा जाता है तो उसको- बीसबाईस वर्षके उपदंश का मवाद समझै इसकी चिकित्सा वहुत कठिन है और बहुत से फोडे इसी के कारण होते हैं इसी सवब से ऐसी चिकित्सा की जाती है कि उस बुरे मांसको जाभपर से अलग काट डाले तव उसमें से रुधिर बंद करने की यह दवा करै ॥

नुसखा ॥

बनात की भस्म. सीपका चूना. साखूका कोयला सेल खडी. रूमीमस्तंगी. खरगोश की खाल. गोमाका रस छायल के पत्तों का रस इस सबको पीसकर लगावै जब रुधिर बंद हो जाय तव जुल्लाव देवे और प्रकृति के अनुसार दवाई खिलावै और ये औषधि घावपर लगावै ॥

नुसखा ॥

फिटकरी कच्ची ४ माशे: नीलाथोथा सुना ४ माशे. गौका घृत ४ तोले इन दोनों दवाइयों को पीसकर घी में मिलावै

और जलसे खूब धोकर लगावे. और जो रोगी माने तो यहां चिकित्सा करै और समय पर जैसा मुनासिब समझै वैसाकरै।

दूसरा फोडा जो मुखके कोने की ओरको झुका हुआहोता है और उसकी गुठली बाहर को होती है- उस गुठली पर तो वह लेप करै जो पहिले इस रोग पर वर्णन कर चुके हैं और भीतर को नीचे लिखी दवा लगावे ॥

नुसखा ॥

रूमीमस्तगी, सफेद कत्था भुना हुआ, माजूफल, बंसलोचन, गाजवां की भस्म ये सब दवा चार चार माशे ले इन सबको महीन पीसकर लगावे और मूंगकी धोवादाल और बिना चुपडी गेहूं की रोटी खाने को दे ।

होठके फोडे का इलाज ।

एक फुंसी होठें पर होती है उसपर शुद्ध करने वाला मरहम लगावे कि जिससे वह मवादको शीघ्र ही निकाल देता है और केलेके पत्ते घृतमें चिकने करके गले में वांधें इससे सूजन दूर होजाती है इसका इलाज शीघ्रही करना चाहिये क्योंकि ये फोडा पेटमें उतर जाताहै इसका मुख बाहर कीओर करने के लिये नीचे लिखी हुई मरहम काम में लावे ॥

नुसखा ।

बिरोजा दो तोले. रेवतचीनी छः माशे. अंजरूत चारमाशे. इन सबको पीसकर बिरोजेमें मिलावे और फिर इस मरहमको जलमें धोकर लगावे जब फूट जावे और मवाद निकल जावे तो यह दवाई लगावे ॥

नुसखा ।

रसौत १ माशे. तगर की लकडी तीन माशे इन सबको पीसकर गौ के घी में मिलावे और जो कढाई में डालकर खूब

घोटे तो वहुत उत्तम है इस दवा के दस पांच वार लगाने से आराम होजाता है ।

डाढके फोडा की दवा ।

नीम के पत्ते, वकायन के पत्ते संभालू के पत्ते; नरम्मा के पत्ते इन चारों को वरावर लेकर जलमें औटाकर वफारा देवे और उसी को वांधे और उसी के जलसे कुल्ले करावे ॥ और जो भीतर ही फूट जावे तो उत्तम है और वाहर फूटे तो दांत के उखाडे विना आराम न होगा और जो यह फोडा वाहर हुआ हो और वाहर ही फूटे तो उसको चीर डाले और चार फांक करै तथा नीम के पत्ते और नमक वांधे और जो मरहम ऊपर वर्णन किये गये हैं उन में से कोई भी मरहम लगावै । और जो इन से आराम न होतो उसपर ये मरहम लगाना चाहिये ।

नुसखा ।

काले तिलोंका तेल मुर्दासंग ५ माशे नीला थोथा एक माशे पहिले तेल को गरम करके फिर उसमें मोम डाल कर पिघलावे पीछे सव दवाईयों को पीस कर मिलावे जव मल्हम खूव पक जावे तवखूव रगडे और ठंडा करके काममें लावेऔर जो भीतर फूटतो वह कुल्ले करावे जो खुनाक रोगमें वर्णन कियेगये हैं और जो घाव भीतर से शुद्ध हो जाय तो वह तेल भरदे जो ऊपर कहआये हैं । और यहां भी लिखते हैं कि वह तेल तारवीन या जलपाई का तेल है और जो मुख के भीतर छोटे२ छाले होंय तो वरफ के पानी से कुल्ले करावे तो निश्चय आराम हो जायगा ॥

ठोडी के फोडे का इलाज ।

एक फोडा ठोडी पर होता है उसके पास लाल सूजन होती है ॥ इस फोडेका निशान आगे लिखी तसवीर में समझ लेना

॥ इलाज ॥

एक फोडे पर जंगाली मरहम लगाना चाहिये और जं

गाली मरहम वह है जिसमें रेवतचीनी और विरोजा मिला है जब मवाद निकल जाय तब स्याह मरहम लगावे और जो उसके नीचे गुठली हो जाय तो उसपर नीम के पत्ते अथवा जैतूनके पत्ते और नोंन पीसकर बांधे जब वह पक जावे तब वे मरहम लगावे जो लिखे गये है ।

॥ कानके फोडेका इलाज ॥

कानके भीतर एक छोटासा फोडा होताहै उसकी चिकित्सा यहहैकि फिटकरी सफेदतथा समुद्र फेन पीसकर कानमें डालदेवे

और ऊपर से कागजी नीबूका रसडाल देवे जबमवाद बंद होजाय और पीडा शांत हो जाय तो मूली के पत्त मीठे तेलमें जलाके छानले और उस तेलको कान में डालेतो आराम हो जायगा औरइसका निशान इस तस्वीर में समझलेना चाहिये

दांतोंकी पीडा का इलाज ।

जो दांतों में पीडा हो अथवा हिलते हों या उनमें से रुधिर वहताहो तथा दांतों से दुर्गंधि आती हो तो ये दवाई करै ।

॥ नुसखा ॥

जाज सफेद ३ माशे; अनार का छिलका तीनमाशे इनदोनों को एक सेर पानी में औटाकर कुल्ले करावे और जम्हीरीके पत्ते दांतों पर मले अथवा हरा धनियां तेज सिरके में पीस कर मलै

अथवा ताडके वृक्षका छिलका कचनार का छिलका, खजूर का छिलका महुए की छाल इन सब को एक एक तोले लेकर जलावे अथवा इन सबकी राख एक एक तोलले और रूमी मस्तगी चार माशे सफेद मूंगे की जड छः माशे सोना माखी तीन माशे इन सबको पिस कर मिस्सी के सदृश दांतों परमले अथवा सफेद कत्था एकतोले फिटकरी सफेद छः माशेमाजूफल छः माशे इनतीनों को जौकुटकरके एक सेर जलमें औटावेजव आधा पानी जलजाय तव कुल्ले करावै । अथवालोहचूर८तोले हरा माजूफल ४ तोले नीला थोथा भुना हुआ १ तोले सफेद कत्था २ तोले छोटी इलायचीके दाने ६ माशे इन सबको महीन पीसकर मिस्सीकी तरह दांतों पर मले अथवा लोहचूरा१पाव सेर विना छेदके माजूफल आधपाव छोटीइलायची छिलकेसमेत

१तोले नीलाथोथा १ तोला लाल कत्था १ तोला रूमी मस्तंगी ४ माशे हरा कसीस ४ माशे सोनामाखी ४ माशे इन सबको महीन पीसकर दांतों पर मलै अथवा तांबे का बुरादा १ छटांक अनारका छिलका १ छटांक माजूफल २॥ तोले फिटकरी १ तोले इनसबको महीन पीसकर दांतों पर मले अथवा रूमी मस्तगी माजूफल हरा कसीस माई वडी हर्डका छिलका फिटकरी भुनी लीलाथोथा भुना मौलसरी के पेड की छाल सब को बराबर लेके महीन पीसकर दांतों पर मंजनकरै और मुखको नीचाकरके लार टपकावै फिर पानखाकर लारको बंद करै अथवा कपूरको गुलाब जलमें और सिरके में मिलाकर इन तीनोंको गौके दूधमें मिलाकर कुल्ले करावे अथवा कपूरऔरनमक दोनोंको पीसकर दांतों परमले अथवा फिटकरी भुनी एक भाग शहत दो भाग सिरका १ भाग इन तीनों को आगपर पकावै जब गाढा होजावै तब दांतोंपर मले तो दांतका हिलना बंद हो ॥ अथवा सुपारी की राख कत्था सफेद काली मिर्च रूमी मस्तंगी सेंधानमक इन सब दवाओं को बराबर ले महीन पीसकर दांतों को मले तो दांतों का हिलना बंद होय अथव माजूफल कुलफाके बीज इनको पानी में पीसकर कुल्ले करावै तो दांतऔर मसूडोंसे खून निकलना बंद होय अथवाबारहसींगे के सींग की भस्म सेंधानमक इन दोनों को महीन पीस कर दांत और मसूडों पर मलने से खून निकलना बंद होय अथवा पुराना लोहका चूरन हवुल्लास रूमीमस्तंगी इन तीनों को बरा बर ले महीन पीसकर दांतोंपर मलने से खून निकलना बंदहो ताहै। अथवा माजूफल फिटकरी इन दोनों को बराबर ले

और सिरके में जोश करके कुल्ले करनेसे मसूडों का घाव अच्छा होता है अथवा कुदरू गोंद मस्तंगी इनको पीसकर मसूडों के घाव पर लगाना चाहिये ॥

गंजे का इलाज ।

जो सिरमें गंज होतो उसकी यह चिकित्सा करे काली मिर्च छः माशे कलोंजी एक तोले इन दोनो दवाईयों को गौ के घीमें जलावे और घोटे जब मरहम के सदृश होजावे तो पानी में धोले और मुकत्तर करे अर्थात् नितार लेवे पहले उसके जलसे सिरको धोवे फिर उस मरहम को लगावे और जो इससे आराम नहोतो यह दवाई लगावे ॥

नुसखा ।

काली मिर्च छःमाशे केवला हरा छःमाशे मेंहदी के पत्ते हरे छःमाशे सूखे आमले छःमाशे नीमकेपत्ते छःमाशे नीला थोथा छः माशे सरसों का तेल पांचतोले पहिले तेल को कढाई में गरम करे फिर इन सब दवाइयों को डाले जब जलजाय तब घोट कर ठंडा करके लगावे । अथवा हालम दो तोले लेकर जलावे जब जलकर कोयला होजाय तब पीसकर कडवेतेलमें मिलावे फिर इसको दोपहर तक धूपमें धरे रक्खे फिर इसको लगावे तो गंज निश्चय अच्छी होय जानना चाहिये कि सिरके फोडों के भेदतो बहुत है जो सबको वर्णन करता तो ग्रंथ बहुत बढ जाता इस लिये संक्षेप से लिखी है परन्तु जो फोडे सिर में होते हैं उनसब की चिकित्सा इन्हीं मरहमों से करना चाहिये क्योंकि ये सब मरहम बहुत ही गुण कारक है ॥

कंठके फोडे का इलाज ।

एक फोडा कंठमे होता है उसे कंठमाला भी कहते है उस्की सूरत पहिले ऐसी होती है कि बांई ओर वा दाहिनी ओर गले में गुठली सी होजाती है फिर बढकर बडी गांठ होजाती है ॥

इस फोडे की चिकित्सा इस प्रकार से करना चाहिये कि पहिले तो तहलील अर्थात् बैठाने वाली दवाइ लगाना चाहिये क्यों कि जो यह बैठ जावै तो बहुतही अच्छा है और बैठाने वाली दवा यह है ॥

खाकसी पांच तोले शोरंजान कडवा एक तोले कुदरूगोंद एक तोले इनसब को हरी कासनी के रसमें पीसकर लगावै और उस्के पत्ते अर्थात् मकोयके पत्ते गरम करके बांधे जब वे गुठलियां न दीखे तौ फस्त खोले और बमन करावे और जो इससे आराम न होयतो उक्त दवाइयों को सोये के अर्क में पीस कर लगावै और जो वर्णन की हुई दवाओं से गुठलियां न वैठेंतो लेप करे।

लेप

गुलाब के फूल, गेरू, गुलनार, सूखी मकोय, दम्मुल अखवै न, मूरिद के बीज इन सब दवाइयोंको एक एक तोला ले महीन पीस मुरगी के अंडेकी सफेदी में मिलाकर गोलियां बनाकर छाया में सुखावै फिर एक गोली अंगूर के सिरके में पीसकर लगाबै और जो इसके लगाने से भी न बैठे और पक जाबै तो यह दवा करे ॥

नुसखा

कडवा तेल आध पाव और रविबार वा मंगलवार को मारा हुआ एक गिरगट आक के पत्ते नग७ भिलाये नग७इनसबको तेलमें जलाकर खूब घोटे और ठंडा करके लगावै और कदाचित्त इस घाव के आसपास स्याही आजाय और घाव में पानी निकलता होतो बहुत बुरा है ॥

अथवा जो स्याही नहो और गांठ फूटी भी न हो तो उसके बैठाने को और दवा लिखते हैं ।

छुहारेकी गुठली, इमलीके पत्ते इमली के चीथा, महंदी के पत्ते इन सबको बराबर ले महीन पीस कर गुनगुना करके पतला पतला लेप करै ॥

अथवा एक मूसेको तिलके तेलमें पकावे फिर उस तेलको लगावे तो गांठ बैठ जायगी ॥

अथवा दो मुख के सांपको मारकर जमीन में गाढदे जब उसका मांस गल जावे तब हड्डीको डोरे में बांधकर गलेमें बांधना अथवा बूंदार चमडा बांधना अच्छा होता है ॥

अथ धुकधुकी का यत्न।

एक घाव कंठमें होता है उसको लौकिक में धुकधुकी कहते हैं उसकी सूरत यह है कि उसमें से दुर्गंध आया करती है और कंठसे लेकर छाती के नीचे तक घाव होताहै जो घाव में गढ्ढे हों तो इसकी चिकित्सा न करै क्योंकि महान वैद्यों ने लिखा है कि ये फोडा अच्छा कम होता है और जो चिकित्सा करनी अवश्य होतो ये करें और इस घाव का निशान आगे लिखी तसबीर में समझ लेना ॥

इलाज।

समुद्रफेन पावसेर को पीस छानकर एक तोले नित्य पकावै और उसके ऊपर जामुन के पत्ते पानीमें पीसकर पिलावै और उस घाव पर ये दवा लगावे मनुष्य के सिरकी हड्डी को बासी जलमें पीसकर लगावे अथवा सूअरका बिष्टा कन्या के मूत्र में पीसकर लगावे। अथवा एक चूंसको मारकर शुद्ध करे और छछूंदरको मारकर शुद्ध करै फिर इनको आधसेर कडवे तेलमें जलावे फिर इस तेलको छानकर लगावे ॥

अथ कखलाई का इलाज ।

एक फोडा कांखमें होताहै उसको लौकिक में कखलाई कहते हैं ॥ उसकी सूरत यह है कि किसी २ मनुष्य के बगल में कई गुठलियां होती है और एक उनमें से पकजाती है जब तक

वह अच्छी नहीं होने पाती तबतक और दूसरी पकजाती है इसी प्रकारसे कईबार करके छः सात हो जाती है और एक सूरत यह है कि एक गुठली सी होकर पकजाती है फिर वह पक कर शीघ्र ही फूटजावे तो बहुत अच्छा है चीरा देना पडता है बिना चीरने के अच्छी नहीं होती जो रोगी बलहीन हो तो फोडे की यह सूरत होतीहै जो ऊपर कह आये हैं और जो बलवान हो तो यह सूरत होती है कि पहिले कांखमें सूजन सी होती है और बहुत कडी होतीहै वह बहुत दिनों में पकती है देर होने के कारण नशतर वा तेजाब लगाते हैं तो रुधिर निकलता है बस यही हानि है जब नीमके पत्ते बांध चुकते हैं तो मरहम लगाने के पीछे पानी निकला करता है वस इसी प्रकार से रोग बढ जाता है इस फोडे का निशान नीचे की तसबीर में समझ लेना।इस फोडेकी चिकित्सा यह है कि पहिले वे पत्तियां बांधें जो डाढ के फोडे के वास्ते वर्णन कर चुके हैं ॥ जब नरम होजाय तब वह मरहम लगावे जिसमें नान पाव का गूदा लिखा है अथवा यह औषध लगावे।

नुसखा

गेहूंका मैदा· शहत· और मुर्गी के अंडेकी जर्दीइन तीनों को मिलाकर लगावे इस दवाके लगाने से वहुत जल्दी फूट जावेगा और जो नरम हो तो चीर देवे फिर नीम के पत्ते नमक और शहत बांधे और यह मरहम लगावे ।

मरहम ।

नीलाथोथा तीन माशे· कोकनार जला हुआ एक तोले इन दोनों को पीसकर इसमें थोडा निखालिस शहत मिलाकर रगडे जब मरहम के समान होजाय तब लगावे और जो इससे आराम न हो तो यह दवा लगावे ॥

नुसखा

सूअर की हड्डी और सूअर के बाल जलाकर दोनों एक २ तोले लेकर सूअर की चरवी में मिलाकर खूब रगडे औरलगावे और घावन सूखा हो तो सूअर की हड्डी की भस्म उसपरबुरके तो घाव सूख जावेगा और जर्राह को चाहिये कि घावपर निगाह रक्खे कि घाव पानी न देवे जो घावमेंसे पानी निकलता होतो उसके कारण को जानना उचित है कि किस कारण से उसमें से पानी निकलता है ॥ प्रकृति मनुष्य की चार प्रकारकी होती है। पानी तो रतूबतके कारण से निकलता हैऔर रुधिर पित्तके कारण से और पीली पीव कफके कारण सेऔरअसल पीव खुश्की के कारण से निकला करता है और उचित है कि जो मरहम योग्य समझे वह लगावे ॥

छाती के फोडे का इलाज

एक फोडा छातीसे तीनचार अंगुल ऊपरहोता है उसकीसूरत यह है किपहिले तो ददोडासा होता है और फिर वढजाता है फिर अपना बिकार फला देता है इस फोडा को तहलील अर्थात् वैठाना अच्छा नहीं क्यों कि दाहिनी ओर को होता है तो इसमें वडा भय रहता है कि फोडा पेटमें न उतर जाय और जो वांई ओर होवे तो कुछ डर नहीं और जो आदि में वैठ जाय तो भी कुछ डर नहीं और पकजावे तो चार डालै और नीम के पत्ते बांधे फिर उसके घावपर यह मरहम लगावै ॥

॥ मरहम की विधि ॥

राल सफेद २ तोले, नीलाथोथा १ रत्ती, विलायती साबन एक माशे इन सबको पीसकर गौके पांचतोले घीमें मिलावे फिर इसको पानीसे धोकर घावपर लगावै इसी सूरतका फोडा बालकके हो अथवा तरुण के होतो बुद्धिमानी से चिकित्सा करे और इसफोडे का बीज सफेद पीलापन लिये निकले तो शीघ्र आराम होजायगा और जो पीव सफद लाल रंग मिला हो तो इसी मरहम मेंजो अभी ऊपर वर्णन की है- काशगरी सफेदा चार माशे मिलावे और इसीघाव पर लगावे ईश्वरकी कृपासे बहुतजल्दआराम हो जायगा इस फोडे वाले रोगी का तसवीर यहै ॥

स्त्रीकी छाती के फोडे का इलाज।

एक फोडा स्त्री के स्तन पर होता है उसकी चिकित्साभी इसी प्रकार से होसक्ती हैं जैसी कि ऊपर छाती के फोडे में अभी लिख चुके हैं और उस फोडेपर पहिले वोही मरहम लगावे जिसमें अंडेकी जर्दी लिखी है अथवा वह मरहम लगावे जिसमें नानपाव का गूदा लिखा है इन मरहमों के लगाने से फोडा फूट जाय तो उत्तम है और इनके लगानेसे न फूटे तो वह मरहम लगावे जिसमें आंवा हल्दी लिखी है और जो इससे भी नफूटे तो इसमें चीरा देवे औरजो आपही फूटजावे तो बहुतही उत्तम है और जो फूटे फोडे के घावका मुख ऊपर को हो और दवानेसे पीव निकलती होतो उसके नीचे नश्तर देवे वा गुदीके नीचे बांधे और बालक को दूध पिलाना बंदन करै और जो दूध पिलाने में हानि समझै तो न पिलावे और यह मरहम लगावे ॥

मरहम

सुपारी अध भुनी ६ माशे; कत्था अधभुना सफेद ६ माशे; सिंदूर गुजराती ६ माशे, सफेदा काशगारी ६ माशे, गौकाघृत सात तोले पहिले घीको गरम करके उसमें एक तोले पीला मोम पिघलावे फिर सब दवाईयों को पीसकर मिलादे और खूबघोटे जब ठण्डा होजायतब छःमाशे पारा मिलाकर खूब रगडे फिरइस को लगावे तो घाव शीघ्र अच्छा होय।

एक फोडा दूध रहित स्तनों में होताहै उसकी सूरत यह है कि पहिलेएक फुन्सी मसूरकी दालकी बराबर होतीहै और भीतर एक गुठली चनेके प्रमाण होतीहै वह दिनप्रति दिन बढती जाती है और वह फुन्सी अच्छी होजाती है और वह गुठली तरुण

के होतो एक अथवा दो वर्षके पीछे आम की बराबर होजाती है और जो वृद्ध स्त्री के होय तो आठ नौ महिनोंके पीछे आमकी बराबर होजाती है जब गुठली इतनी वढजाती है तब सूजन हो जाती है और उसमें पीडा होती है और ज्वर भी हो आता है और दवाइयां पिलाने से तपजाता रहता है और उस गुठली पर घरकी अथवा उन लोगों की दवाई लगाते हैं जो कुछ भी नहीं जानते जब किसीसे आराम नहीं होता तब जर्राह को बुलाते हैं यह पाषाण के भेदों में से है इस को कंकण वेल कहते हैं यह काटेसे भी नहीं कटता इसकी चिकित्सा में जर्राह को उचित है कि हकीम की सम्मति भी लेता रहे क्योंकि दवाओं की प्रकृति को वे लोग खूब जानते हैं और लेप करने को यह औषधि है पहिले नीचे लिखा वफारा देवे ॥

वफारे की दवा

संभाल्ह के पत्ते महुए के पत्ते इन दोनों को पानी में औटा कर वफारा देवे और यही पत्ते बांधे जो कुछ आराम हो तो यह करते रहना चाहिये नहीं तो सोवे का साग औटाकर बांधे और जो इससे भी आराम न हो तो यह लेप लगावे ॥

लेपकी विधि ।

नाखूना एक तोला, खुब्बाजी के बीज एक तोला, खतमी के फूल एक तोला, खतमी के बीज एक तोला, अमलतास का गूदा दो तोले, शोरंजान कडवा बनफसा के फूल. उश्करूमी. अलसी ये सब दवा छः छः माशे. इन सबको पीसकर गरम करके लगावे ॥ जो इससे आराम हो जाय तो उत्तम है और हकीम को चाहिये कि इस रोगी को जुल्लाब देवे तथा फस्त खोले और जो आराम न हो तो वह दवाई लगावे कि जिसमें

खाकसी है जिनका वर्णन ऊपर कर दिया गया है और एक नुसखा लेप का यह है ॥

लेप की विधि

मुर्दासंग, शोरंजान, कडवा, गेरू; सुर्खीमकोय, सब बराबर ले, इन सबको पानी में पीसकर लगावे जो इससे भी आराम न होवे तो देखे कि फोडा कहां से नरम है ॥ उस परजैतके पत्ते, नीम के पत्त और सांभर नमक पानी से पीसकर बांधे और आसपास वह लेप लगावे जो ऊपर कह आये है और जो इनपत्तों से भी न फूटे तो नीम की छाल पानी में घिसकर लगावे· और जो किसी से आराम न होवे तो ये फायालगावे

फाहे की विधि ।

लालमैंनफल, बबूल का गोंद, लौंग, बिलायती साबुन, मैंसागूगल इन सबको बराबर ले पानी में पीसकर कपडेमेंजमाकर रखछोडे और समय पर फोडे की बराबर फाया कतरकर लगावे. जो इसके लगाने से फूट जावे तोजैत केपत्ते औरनीम के पत्ते बांधे जब फोडेमें शक्ति न रहे तो ऊपर कहे हुये मरहमो में से कोई तेज मरहम लगावे और जो फोडे के फूटने के पीछे उसमें सडा हुआ मांस उत्पन्नहोजावे तो चिकित्सा न करे और जो चिकित्सा करना अवश्य होतो संपूर्ण स्तन को कटवा डाले तो आराम होगा और हकीम को चाहिये किदवाईप्रकृति के अनुसार करे और जर्राह को उचित है कि वह मरहम लगावे जिससे घाव पानी न देवे ॥ और जो स्तन न काटा जावे वह मरहम यह है ॥

मरहम

जंगाल एक तोला; शहद एक तोला, सिरका दो तोला

इन सबको मिलाकर पकावै जब तार बँधने लगे तब ठण्डा करके लगावै और घाव को देखना चाहिये कि घाव में रुधिर निकलता है या पानी निकलता है और असाध्य का लक्षण यह है कि घाव के चारों ओर स्याही होतीहै और दुर्गंध आती है और पीव काली निकलती है और फफोदा के सदृश सफेदी होती है। फिर उस घाव की चिकित्सा न करे क्योंकि उसको कभी आराम न होगा। और साध्य का यह लक्षण है किघाव चारों ओर से लाल होता है और पीव गाडा और पीलापन लिये निकलता है जो घाव की सूरत ऐसी हो तो निःसन्देह चिकित्सा करे परमेश्वर के अनुग्रहसे निश्चय आराम होगा।

एक फोडा छाती पर कौडी के पास अथवा कौडीकेस्थानपर होतीहै जैसा इस तसबीरमें देखलो इलाज इसको तेजमरहमसे

पकाकर फोडे अथवा चीर-डाले उसकी भी चिकित्सा शीघ्र करनी चाहिये क्योंकि यह फोडा रहजाता है। और जो घाव में सामने बत्ती जावे तो चिकित्सा न करै. और जो दांहीं तथा बाईं ओर बत्ती जावे तो इसी प्रकार से चिकित्सा करे। जैसे कि ऊपर वर्णन कर आये हैं, और एक फोडा पीठ पर होता हैं उसकी भी चिकित्सा उसी रीति से करनाचाहिये जैसा कि छाती के फोडे का वर्णन कर आये हैं, और वह मरहम लगावे जिसमें जलाहुआ कोकनार लिखा है॥

और एक फोडा नाभि के ऊपर होताहै उसकी चिकित्सा

वैसी करनी उचितहै जैसी कि पेटके फोडेमें वर्णनकी गई है और वह मरहम लगावै जिसमें रसौत और तगर की लकडी लिखीहो इन तीनों फोडों की एकही चिकित्सा की जाती है एक फोडा पेडू के ऊपर होता है उसकी लंबाई और चौडाई बहुत होती है यहां तक बढता है कि तरबूज की बराबर होजाताहै इसकी चिकित्सा भी शीघ्र करनी चाहिये कि स्याही न आने पावे और जो स्याही आजावे तो चिकित्सा न करै क्यों कि असाध्यहै परन्तु जोकरनी अवश्य होतो इसकी चिकित्सा इस प्रकारकरै। और आगेलिखी मरहम लगावें ।

मरहम ।

नीम के पत्ते एक सेर आंवाहलदी आधपाव हलदी कच्ची आधपाव काले तिलों का तेल एक सेर पहिले तेल को तांबे के वर्तन में गरम करै फिर उसमें नीमके पत्ते डाले जब नीम के पत्ते जलकर स्याह होजावे तो उनको निकाल कर दोनों हलदियों को जौकूट करके तेल में डाले जबवे भी स्याह होने लगें तब तेल को छानकर रक्खे और फोडे पर लगावे और जो इसके लगाने से कुछ आराम न होतो वही करे जो ऊपर वर्णन किया गया है। और समय पर जैसी सम्मति होवे वैसा करै परन्तु जहां तक हो सके इसको असाध्य कहकर छोडदेना चाहिये ।

एक फोडा पेडू और जांघ के वीच में होताहै । वह भी कंठ माला के भेदों में से हैं और लौकिक में उसका माम (बद) विख्यात है । उस की सूरत यहहै कि पहिले एक गुठली सी होती है और लोग उसको उपदंश के संदेह में छिपातेहैं यद्यपि वह बालकों के भी होजाताहै और जो उसको न छिपावें तो शीघ्र आराम हो सकता है और फिर इसकी चिकित्सा कठिन पड जातीहै और इसके इलाज बहुतसे हकीमों ने अपनी अपनी

किताबों में लिखा है अब अपनी बुद्धि के अनुसार इसको चिकित्सा लिखते हैं बुद्धिमानों को चाहिये कि पहिले वे दवा लगावै जिससे यह बैठ जावे बैठालने की दवा यह है।

नुसखा।

चूना एक तोला लेकर उसे मुर्गी के एक अंडे की सफेदी में मिलाकर लेपकरे।

अथवा मनुष्य के सिरकी हड्डी पानीमें घिसकर लगावे।

अथवा ईसबगोल को पानी में पीसकर वदके ऊपर लेपकरे।

अथवा सफेद कत्था कलमी तज कबेला बबूलका गोंद छः छः माशे इन सब को पानी में पीसकर गाढा-गाढा लेपकरे और जो न बैठे तो पकानेकी दवाई लगावे वह दवा यह है।

नुसखा।

एक अंडे की जर्दी निखालस शहत एक तोले गेहूं का मैदा एक तोले उनको मिलाकर लगावे। और जो न फूटे तो नश्तर देवे और जो नश्तर देने में कच्चा निकले तो नीम के पत्ते हरी मकोय नरमा के पत्ते जैत के पत्ते और बकायन के पत्ते इन सब को पानी में औटाकर बफारा देवे और इन्हींको बांधे सात दिन तक यही करते रहें इससे खूब नरम होकर मवाद निकल जावे फिर यह मरहम लगावे।

मरहम।

प्रथम गौका घृत आधपाव लेकर गरम करै फिर उसमें दो तोला पीला मोम पिघलावे फिर सफेद राल सात तोले मिलावे जब खूब मिलजावे तब एक सकोरे में रखकर पानी से धोवे और चार तोले भांगरे का रस मिलाकर घाव पर लगावे और एक लेप यह है जो आदि में फोडेको तहलील करके फोड देता है और कच्चे फोडे को पका देता है॥

॥ नुसखा लेप ॥

हालों, तज, अलसी, मैथी के बीज, ये सब एक एक तोले, एलुआ कमंगरी, साबुन, भैंसागूगल, रेवत चीनी; लाल सज्जी ये सब छः छः माशे इन सबको पानीमें पीसकर गरमकरगाढा लेपकरै और ऊपरसे बंगला पान गरम करके बांध देवे औरइस लेपके बहुतसे गुणहैं और जो इस लेपको चोटपर लगावै तो सज्जी न डाले किन्तु सज्जीकेबदले सैंधा नमकमिलावै ॥ और जो चोटसे हड्डी टूटगई होतो आंवा हल्दी और मिलादेवै तो परमेश्वर के अनुग्रह से आराम होजायगा ॥

एक फोडा अंडकोशों के नीचे होताहै उस्को भगंदर कहते हैं उस्में सूजन होतीहै और ज्वरभी होताहै उस्की चिकित्साबदकी चिकित्सा के अनुसार करना योग्यहै और उन्ही पत्तियों का बफारा देवें और वह मरहम लगावै जिसमें अलसी और मैथी लिखी है जब नरमहो जावेतो चीरनेमें देरीन करें फिर पीछे नीम के पत्ते और नमक बांधे और यह मरहम लगावे ॥

मरहम की विधि ॥

पहिले गौकाघृत सात तोले लेकर गरम करे फिर एक तोले सफेद मोम उस्में डालकर पिघलावे फिर सिंदूर गुजराती दो तोले सिंगरफ रूमी सफेदजीरी सेलखडी काली मिर्च कत्था सफेद सुपारी ये सब एक एक तोले ले और लीला थोथा एक माशे ले इन सबको महीन पीसकर उसी घृतमें मिलावे और आगपर रक्खै जब खूब चासनी होजावे तो ठंडा करके लगावै औरजो इससे आराम न हो तो वह मरहम लगावे जिसमें बेरके पत्ते हैं और जो रह जावे तो तेजाब लगावे जिसमें गिरगट है ॥

॥ गुदाके फोडेका यत्न ।

एक फोडा गुदामें होता है इस्को बवासीर कहते हैं यह

फोडा कई तरहका होताहै एक वहहै जिसमें घावहो और उसे आराम नहो वह फिर पकेगा और फूटेगा और इसी प्रकार से रहैगा और जो बहुतसे घाव होतो सबको अच्छा करदेवै और एक घावको रहने देवै जिससे मवाद निकलता रहे इस फोडे को हकीम और डाकटर लोग असाध्य कहते हैं और इसीसे इसपर ये मरहम लगाना मुनासिब है ॥

॥ मरहम ॥

काले तिलोंका तेल छः माशे कच्चामोम चारमाशे सूअरकी चरवी दोतोले; राल विलायती एक तोले इन सबको मरहमकी बिधिसे मरहम बनावे और मूत्र से धोकर लगावे ॥ अथवा ॥ सांपका सिर नग १ छछूंदर नग १ सूअर का बिष्ठा सात तोले सूअरकी चरबी दो तोले हुक्का नारियल पुराना दो तोले काले तिलोंका तेल १ सेर इन सबदवाइयों को तेलमें जलाकर तेलको छानकर लगावै जब उस ओर से मल और बायु निकलनेलगे तो चिकित्सा न करे इस घावमें से पीव नहीं निकलती है किन्तु पानी निकला करता है और जर्राह को उचित है कि कोई बात ऐसी निकाले कि चिकित्सा करना छूटजावै ॥

गर्दन के फोडेका यत्न।

एक फोडा दोनों कंधों के बीच में होता है जिसको बडे२ ग्रंथों में खञ्जरवेग लिखता है और सुनाभी है और सूरत उसकी यह है कि पहिले सूजन के साथ सखती होती है जव वह फूटता है तो खराव मांस होजाता है दोनों ओर से उसके पुट्ठे एक जंतु के सदृश होतेहैं और लोग उसको न्योला कहते हैं और मैंने भी सुना था कि वह रोगी का कलेजा

खाता है। परन्तु निश्चय किया गया तो मालूम हुआ कि ये वात झूँठ है जब उसको गौर कर देखा तो खराव मांस मालूम हुआ परन्तु इस फोडे को अच्छा होता कहीं नहीं देखा है। अगर खराब मांस कटजाय तो कुछ आराम होना कठिन नहीं परन्तु उस मांस को जहां तक वनें वहां तक दवा से काटना चाहिये। इसके काटने की दवा आगे लिखते हैं।

❋ नुसखा ❋

संखिया सफेद, नीलाथोथा; नौसादर. फिटकरी भुनी, कच्चा सुहागा, गुलावी सज्जी, हल्दी जलीहुई इन सबको पीसकर लगावै। अथवा कास्टिक की वत्ती लगावे, कास्टिक एक अंग्रेजी दवाई है; इस फोडे को छुरी से काटना अच्छा नहींहैं क्योंकि नित्य घटता बढता है इस लिये नश्तर से नहीं काटतेहैं इसीकारणवहफोडा खराव होजाताहै और अच्छा नहीं होताहै। इसी से सबको मुनासिब है कि इस फोडे को दवा के जोर से काटना चाहिये और उसके आस पास यह लेप लगाना चाहिये

❋ लेप ❋

त्रिवी खताई. जहरमोहरा खटाई. मूरिदके बीज. गुलेनार. गुलाव के फूल. दंम्बुल अखवेन. इन सबको बराबर ले हरी मकोय में पीसकर लगावै। परन्तु इस रोग वाले की फस्त अवश्य खोलनी चाहिये। और बमन भी करावे; यदि मुसलमान के यह रोग हो तो बकरे का शोरवा और रोटी खिलावै और हिन्दू के होय तो जर्राह अपनी समझ के अनुसार पथ्य देवे।

❋ कन्धे के फोडे का यत्न ❋

एक फोडा कंधे पर होता है और यह भी नासूरका स्थानहै उसको भी चीरडाले अथवा तेजाब लगावै औरफोड डाले इस फोडा का निशान नीचे लिखी तसवीर में देखलो!

जो यह फोडा आपही फूट जावे तो वह मरहम लगावे, जिसमें सुहागा और नीलाथोथा है जब वह घाव अच्छा होजाय और बती जाने के माफिक स्थान रहजावे तो चीरडाले वा तेजाब लगावे और जो चारों ओर से बराबर अच्छा होजाय तो सुखाने के वास्ते यह मरहम लगावे ।

मरहम की विधि ।

पहिले शीसे की गोली को कुश्ता करे और उसकी भस्म ६ माशे लेवे और सफेदा काशगरी ६ माशे, सिन्दूर ६ माशे. राल सफेदा २ माशे, गौ का घी ६ माशे- इनसबको पीस कर गरम करके मिलादेवे फिर मोम पीला ६ माशे मिलाकर खूब रगडे फिर उसको घाव पर लगावे ॥

॥ बांहके फोडेका यत्न ॥

एक फोडा बांहपर होताहै इसका निशान आगेकी तसवीर मे देखलो और चिकित्सा इस प्रकार से करो जैसाकि कंधे के फोडे में वर्णन की गई है और कंधसे घुटने तकसातफोडेहोतेहैं और एक फोडा कोहनी पर होताहै उसमें से पानी निकलताहै उस पर यह मरहम लगावे ॥

॥ मरहम ॥

काले तिलोंका तेल पावभर, सफेद मोम दो तोले नीला थोथा दो माशे सोनामाखी दो माशे, मस्तंगी रूमी छः माशे,

विरोजा हरा छःमाशे माजू दो तोले. फिरोजा सूखा एक तोला नौसादर पांच माशे मुर्दा सं... ५ माशे; सेल खडी ३ माशे ... लाल २ माशे सुहागा चौकिया भुना २ माशे जंगाल एक तोले प्रथम तेलको गरम करै फिर उस्में मोम को पिघलावे फिर ये सब दवा महीन पीसकर डाले जब मरहम के सदृश होजावे तवठंडा करके लगावै॥औरघुटने से नीचे सात फोडे होते हैं इनके निशान तसवीर में समझो॥

॥ उंगलीके फोडेका यत्न ॥

एक फोडा उंगली में होताहै उसको विषभरी कहते हैं और वहुतसे मनुष्य इसको बिसारा कहतेहैं जो उसमें बुरामांस होतो चीर डाले और जो न चीरे तो तेजाव लगावे जब मांस कट जावेतो वह मरहम लगावे जिसमें शीशे का कुश्ताहै॥

हथेली के फोडे का यत्न।

एक फोडा हथेली में होताहै उसकोभी चीर डालना चाहिये और जो तुम फूटने की राह देखोगे तो उंगलिया जाती रहैगी और जो उँगलिया सीधी न हो तो भेडों की मेंगनिया पानीमें औटाकर वफारा देय और भेडों केदूध का मर्दन करै अथवार आतशी शराब मेंले॥ और कंधेसे अंगुली तक चौदह फोडे होतेहै जिनकी चिकित्सा बहुत कठिनाईसे होती है और बहुत से ऐसे फोडे होते है वो शीघ्र अच्छे होजाते हैं॥

॥ पीठके फोडेका इलाज॥

एक फोडा पीठ में होता है उपको अदीठ कहते है॥ और

उसके आसपास छोटी २ फुंसियां होतीहै और वह फोडापीठ के बीचमें होताहै वह केकडे के सदृश होताहै और लम्बाव तथा चौडाव में बहुत बडा होता है और उस फोडे के पकजाने के पीछे एक छिद्र होताहै और उसमें पानी निकलता है अथवा पका पीव निकलता है और छीछडा नहीं निकलता है इस फोडेका निशान ऊपर लिखी तसवीर में देखलो।

इस फोडे की चिकित्सा इस प्रकार से करना चाहिये कि उसकी चारफांक करके चीरडाले और उसपर सांभर नमक नीमके पत्ते फिटकरी और शहत बांधते रहे कि मल आदि से शुद्धरहे ॥ परन्तु ध्यान रक्खे कि इसकी सूजन वांई ओर को न आजावे और जो दैव योग से सूजन वांई ओर को हो आवेतो दाहिने हाथकी बासलीक नसकी फस्त खोले और पन्द्रह तोले रुधिर निकाले औरजो इतना रुधिर न निकले तो चार दिनके पीछे वांये हाथकी भी बासलीक नसकीफस्त खोले और फोडेपर मरहम लगावे।

॥ मरहम की विधि ॥

चूक चून सज्जी नीला थोथा साबुन राई सुहागा आक का दूध ये सब दवा २ तोले गौका घृत १२ तोले प्रथम घृत को गरम करके साबुन मिलावे जब खूब चाशनी होजाय तबठंडा करके लगावे और जो घाव भर आने के पीछे सूजनहो आवे और सूजन के पीछे पेचिश होजावे तो उसकी चिकित्साकरना छोडदे और ये दवाई पिलावे ॥

❀ नुसखा ❀

खतमी के बीज, खतमी का रेशा छःछः माशे इनदोनोंको रात्रिको पानीमें भिगोदे और सवेरे ही छानकर फिर पहलेचार माशे नाजबू के बीज फकाके ऊपर से इसे पिलादे और जोइन चारों फोडों मेंसे दाहिनी ओरका फोडाहोवे तोभी इस प्रकारसे चिकित्सा करै जैसाकि अभी वर्णन कीयाहै औरजो फोडा बांई ओर होतो उसके अनुसार चिकित्सा करनी चाहिये और ये तीन फोडा कुछ बहुत भयानक नहींहै जैसी चाहैं तैसी चिकित्सा करैं ॥

❀ पसली के फोडेका यत्न ❀

एक फोडा पसलीयों पर होता है इसका निशान नीचे की तसबीर में समझलो क्योंकिये भी स्थान नासूर का है और बांई ओर की पसली का फोडा पेटमें उतर जाता है उसमेंसे आहार निकलता है और ये फोडा बडी मुशिकिल से अच्छा होता है वरने अच्छा नहीं होता ॥

❀ कोख के फोडे का यत्न ❀

एक फोडा कोखपर होता है उसकी चिकित्सा इस प्रकार से करनी योग्य है जैसी कि ऊपर वर्णन करी है और इन दोनों फोडों का निशान इस तसवीर में समझलेना ।

नाभिके फोडे का यत्न ।

एक फोडा नाभिमें होता है इसका निशान भी आगे लिखी तसबीरमें समझ लेना और चिकित्सा इसकीइस प्रकार से करै कि पहिले उन पत्तियों का वफारा देवे जो ऊपर अंड कोशों क फोडे की चिकित्सा में कही गई है और नीमके पत्ते सफेद प्याज के पत्ते खारी नमक इन सबको पीसकर के गरम करके लगावै और जो फोडा ठीक ठीक पकजावे तो चीरडाले और जो आपही फूट जावे तौभी नश्तर देना अवश्य है क्यों कि बिना नश्तर लगाये इसका मवाद निकलता नहीं किन्तु गुदा के द्वारा होकर निकलने लगता है इसी लिये नश्तर से चार फांक करके ये मरहम लगावै ॥

मरहम ।

काले तिलोंका तेल आधसेर. सफेद मोम दो तोले मुर्दासंग छः ताल सफेद कत्था एक तोले कपूर छः माशे नीला थोथा चार रत्ती. अरंड के पत्तोंका रस चार तोले. प्रथम तेलकोगरम करेफिरमोम डालकर पिघलावेफिर इनसव दबाइयोंकोमिलाकर जलावे और सब दवा पीसकर मिलाके चाशनी करे फिर ठंडा करके काममें लावे और गाढा और बुरी पीव निकले तो ये दवाई पिलावै ॥

॥ नुसखा ॥

पित्त पापडे के पत्ते, सफेद चंदन; रक्त चन्दन, गाजवां, मुलटी छिलीहुई; खतमी के फूल, बनपशा के फूल, ये सब छः छः माशे ले और इनसबको रात्रिसमय जलमें भिगादेफिर सवेरेही मलकर छानले और उसपरगेहूंका सत्त, वंशलोचन. जहरमोहरा खताई, दम्मुल अखवेनः ये सब एक एक माशे लेकर महीन पीसकर उस पानी में मिलाकर पिलावै और फोडे के आसपास यह लेप लगावै ॥

॥ नुसखा ॥

पित्त पापडे के पत्ते, चिरायते के पत्ते, पित पापडे के बीज ये सब एक एक तोला; निर्विसी छः माशे रक्तचन्दन १ तोला सफेद चन्दन १ तोला, अफीम १ तोला मिश्री १ तोला; नीम की छाल १ तोला. इन सब को जलमें पीसकर गरम करके लगावे । और जितने फोडे पीठ की ओर होते हैं उन सबकी चिकित्सा करना बहुत कठिन है उन सब पर लेप लगाना गुण करता है ॥

चूतड के फोडे का इलाज ।

एक फोडा चूतड के ऊपर होता है चाहैं दांही ओर हो या वांही ओर हो उसकी चिकित्सा भी इन्हीं मरहमों से करना चाहिये क्योंकि कुछ डरका स्थान नहींहै और जो इन मरहमों से आराम न हो तो यह मरहम लगावे ॥

नुसखा

काले तिलोंका तेल १५ तोला. विलायती साबुन ३ तो० सफेदा काशकारी २ तोला सफेदा गुजराती २ तोला. प्रथम तेल को गरम कर उसमें साबुन को पिघलाकर चाशनी करै जब मरहम ठीकहो जाय तब उसे ठण्डा कर घाव में लगावै ।

अथवा सफेद राल २ तोला. महीन पीस छानकर तिली का तेल ४ तोला. लेकर मिलावै और नदी के जल में धोवै जब खूब सफेद होजाय तब उसमें कत्था सफेद ४ माशे. नीलाथोथा २ माशे. रसकपूर ३ माशे. सबको पीसकर घाव में लगावै ।

चूतड के नीचे के फोडे का इलाज ।

एक फोडा चूतड से नीचे उतरकर होताहैलोग उसको भी बवासीर कहते हैं, परन्तुये फोडा बवासीर के भेदों में से नहींहै लेकिन यह स्थान नासूर का है उसकी सूरत यह है कि पहिले

एक गुठलीसी होती है और आपही आप रिसने लगती है उसकी चिकित्सा इस प्रकार से करना चाहिये प्रथमउसमें चीरा देकर उसको चार फांक करै क्योंकि उसके भीतर एक छीछडा होता है सो वगैर चीरने के उसका निकलना कठिन है इस लिये इसमें चीरा देकर छीछडा निकालकर फिर मरहम लगावे।

॥ नुसखा ॥

पहिले काले तिलोंका तेल पांच तोले गरमकरै फिर उसमें छः माशे मोम डाले और सोंफ, गेरू, मुर्दासङ्ग नीला थोथा ये सब एक एक तोला लेकर महीन पीसकर मिलावे और आग मंदी कर देवे जब चाशनी ठीक हो जाय तब ठंडा करके लगावै ॥

॥ जांघके फोडे का यत्न ॥

एक फोडा जांघमें होता है उसको गम्भर कहतेहैं इसमें भी एक बडीसीगुठली होजातीहै औरवह सातमास के पीछे प्रगट होताहै इस फोडेमें डरहै इसफोडेका निशान आगेलिखीतसवीर में समझ लेना और चिकित्सा उसकी यहहै कि उसको ठीकर चीर डाले और सब मवाद निकाल देवै पीछे उसके बुरेमांस को इतना काटेकि चार चार अंगुल गढा होजावे फिर उसपर नीमके पत्ते सफेद बूरा फिटकरी इन सबको एक सप्ताह तक बांधे फिर ये मरहम लगावै

❁ मरहम की विधि ❁

राल सफेद दो तोला, नीलाथोथा एकरत्ती, इन दोनों को महीन पीसकर छः तोला घृतमें मिलावैं फिर उसमें एक माशे साबुन डाले फिर उसको नदीके जलसे अथवा वर्षाके जलसे

अथवा वर्षा के जल से या वरफ के जल से खूब धोकर लगावै और एक फोडा जांघ के नीचे की ओर को होता है वह भी इन्हीं मरहमों से अच्छा होता है ।

घोंटू के फोडे का इलाज ।

एक फोडा घुटने के जोड पर होता है उसकी चिकित्सा बहुतही कठिन है क्योंकि पहिले एक पीली फुन्सी होती है । उसकी तसवीर आगे देखलो ।

जब वह फुन्सी फूट जाती है तो उसके चेप से बहुत घाव होजाता है अन्त को उसमें बत्ती जाने लगती है फिर वह असाध्य होजाता है और जो मनुष्य उसकी चिकित्सा करै तो इस प्रकार से करै. पहिले तेजाव लगाकर घाव बढादे और उसमें एक सफेदसा मांस होता है उसको निकाल डाले जव घाव कडा होजाय तो वह मरहम लगावै जिसमें रतनजोत है और जो उसके लगाने से आराम न हो तो ये आगे लिखी मरहम लगावै ।

❋ मरहम विधि ❋

कुदरूगोंद १ तोला, पारा ६ माशे, काले तिलों का तेल २ तोला इन सवको एक कढाई में डालकर खूव रगड़ना चाहिये जव मरहम के सदृश होजाय तवलगावै

पिंडली के फोडे का इलाज ।

एक फोडा पिंडली पर होता है उसकी सूरत यह है ।

पहिले इसकी चिकित्सा यह हैं कि तहलील करने वाला लेप लगावैं तो तहलील होजावे. और वासलीक नसकी फस्तखोलें और यह आगे लिखा लेप लगाना चाहिये।

लेप

अमलतास २ तोला, बाबूना के फूल १ तोला खतमी के फूल १ तोला, सूखी मकोय १ तोला. नाखूना १ तोला. गेरू १ तोला. सूरिद के बीज ६ माशे, अफीम २ माशे, शोरंजान कडवा ६ माशे निर्बिसी ६ माशे इन सब को पानी में पीस कर गरम करके लगावे और अरण्ड के पत्ते बांधे औरजो घाव लाल होजाय तो वह मरहम लगावे जिसमें नानपाव का गूदा है और जो वह फूटजाय तो देखें कि घाव के नीचे सखतीहैवा नरमी जो नरमी होतो नश्तरदेवैं और वह मरहम लगावै-जिस में वर्षा का जल लिखाहै। येतसवीर पिंडलीकेफोडेकीहैदेखलो

दूसरी सूरत इस फोडे की यह दिखलाई है कि पहिले एक छालासा होता है और उस घावसे २ अंगुल नीचे मवाद होता है जब वह छाला फूटजावे और मवाद निकल वा दवाने से निकलता है तो नश्तर देवे उसपर नीम के पत्ते और नमक बांधे फिर यह नीचे लिखी मरहम लगावे।

❀ नुसखा ❀

पहिले काले तिलों का तेल पाव सेर लेकर गरम करे फिर

सफेद शलगम २ तोले भिलाये गुजराती नग २ नीमके पत्तों की टिकिया २ तोला उसमें जलाकर फेंकदे और सिंदूर मिलाकर मंदी मंदी आगपर औटावै परन्तु सिंदूर पांच तोला डाले जब चाशनी होजाय तब ठंडा करके लगावै।

❀ पिंडलीके दूसरे फोडेका यत्न ❀

एक फोडा पिंडली से छः अंगुल नीचे होताहै और वह बहुत कालमें पकता है एक वर्ष वा दो वर्षके पीछे फूटता है तो उसमें से पानी निकलताहै और कभी कभी रुधिर भी निकला करताहै ॥ उसपर वह मरहम लगावे जिसमें सफेद जीरा है ॥ अथवा यह मरहम लगावै ॥

❀ नुसखा मरहम ❀

लाल मैंनफल, बबूल का गोंद, लोंग फूलदार, साबुन विलायती भैंसा गूगल, इन सबको बराबर ले जलमें महीन पीसकर एक कपडे पर जमावे और उसको मोम जामा बना रक्खे और समयपर फाया कतरकर लगावे ये लेप बहुत ही उत्तम है। इस फोडेको बीढा कहते है। और जब वह पकजावै तब उसपर वह मरहम लगावे जिसमें साबुन है अथवा यह मरहम लगावै ॥

❀ नुसखा ❀

जंगाल सुहागा, चौकिया, कच्चा आमाहल्दी, तीन तीन माशे बिरोजा पांचतोले, साबुन छः माशे, इन सबको मिलाकर और पानी से धोकर लगावे ॥

❀ गट्टेके फोडे का यत्न ❀

एक फोडा पांवके गट्टेपर होता है जो वह शीघ्र अच्छाहो जाय तो उत्तम है नहीं तो उसमें से हड्डियां निकला करती हैं

और हमने अपनी आंखों से भी देखा है कि ऐसा फोडा वर्षा मेंहीं अच्छा होता है और इस फोडेकी वही चिकित्सा करे जो अभी वर्णन की है ॥

❋ पांवके तलुएके फोडे का यत्न ❋

एकफोडा पांवके तलुएमें होता है इस्की भी यही चिकित्सा है जो अभी ऊपर वर्णन की है ॥

❋ पांवकी अंगुलीके फोडे का यत्न ❋

एक फोडा पांवकी अंगुलियों पर होता है ध्यान करै कि वह उपदंश के कारण करके तो नहीं है जो उस्का यह कारण नहीं तो वही चिकित्सा करै जो हाथकी अंगुलियोंके फोडोंकी है और जो यह फोडा उपदंश के कारणहो तो उस्की यह सूरत होती है कि पांवकी अंगुलियां गलकर गिरपडती है और चि-कित्सा करने से घाव होजाता है और पांव बेकार होजाताहै।

अब जानना चाहिये कि शरीर में बहुत से फोडे होतेहैं उन सबकी व्यवस्था वर्णन करूं तो बहुत ग्रंथ बढजाता इस लिये दो चार नुसखे मरहम और तेलके लिखदेता हूं जो सब प्रकार के फोडों को गुणदायक हैं ॥

❋ नुसखा ❋

गुलाबकी पत्तियों को गुलाबजल में पीसकर गरम करके गाढा गाढा लेपकरै और ऊपर से बंगलापान बांधे तौ सब प्रकार के फोडों को तहलील करै और जो मवाद तहलील होनेके योग्य न होगा तो पका देवेगा ॥

अथवा-बबूलका गोंद, कवेला, एक एक तोले इनको पानी में पीसकर लगावे और उसपर बंगलापान गरम करके बांधे ॥

अथवा-पहिले घृतको गरम करके उसमें चार माशे कालीमिरच और इतनी ही कलोंजीपीसकर डाले इन

सबको मिलाकर पकावे जब दवा जलजावे तब लोहे के घोटे से खूब रगडे जब मरहमके सदृश होजावै तब काममें लावै ॥

अथवा–कडवा तेल पांच तोला; कबेला कालीमिर्च, महंदी के पत्तेहरे, नीमकेपत्ते सूखे आमले ये सब दवा छःछः माशे नीला थोथा चारमाशे इन सबको तेलमें जलाकर लोहेके दस्ते से खूब रगड कर लगावे ॥

॥ दादका यत्न ॥

जो दाद रोग थोडे दिनोंका होयतौये दवा लगाना चाहिये।

❀ नुसखा ❀

सूखे आमले. सफेद कत्था. पंवाडके बीजइन तीनोंकोबराबर लेकर दहीके तोडमें पीसकर महंदी के सदृश लगावै ॥

॥ अथवा ॥

पलास पापडा, नीलाथोथा; सफेद कत्था; इन सबको बराबर ले कागजी नीबू के रसमें पीसकर दादपर लेप करै और थोडी देर धूपमें वैठा रहै सात दिनके लगानेसेबिलकुल आराम हो जायगा ॥

❀ अथवा ❀

कपास के बीजौको कागजी नीबू के रसमें पीसकर रक्खे पहिले दादको कंडेसे खुजाकर फिरइस लेपको लगावे ॥

❀ अथवा ❀

अफीम. पमांडके बीज.नौसादर.खैरसार. इनसबदवाओंको बराबर ले नीबूकेरसमें पीसकर दादमें लेप करे तो दाद बहुत जल्द आराम होजायगा ॥

❀ अथवा ❀

राल- माजफूल, नीलाथोथा- इनतीनोंको बराबरले हुक्केके पानीमें तथा कागजी नीबूके रसमें पीसकर लगावै ॥

❀ अथवा ❀

राई २२॥ माशे कूटछानकर सिर्के में मिलाकर लेपकरै तो दादजाय ॥ ये दवा उसवक्त करनाउचितहै कि जब दादखाल-के नीचे पंहुच गयाहो ॥ और जो खालके नीचे न पहुचाहोतो ये लेप करै ॥

❀ नुसखा ❀

गंधक पीली छः माशे लेकर कूटछान कर उसमें थोडापारा कपडे में छानकर गंधककी बराबर ले और गौकाघी औरबकरे की चरबी तीनबार जलसे धोई हुई इन दोनोंको साढ सोलह२ माशे ले इन सबको मिलाकर खूब मथे कि पारा मरजावे फिर इसके दोभाग करले और इसका एक भाग धूपमें वा आगके सामने बैठकर मलै फिर एक घडी पीछे गरम जलसे स्नानकरै ये दवाई खुजली कोभी दूर करती है ॥ और किसी मनुष्य के दाद बहुत दिनके होगये होंतो उसकी ये दवा करै ॥

❀ नुसखा ❀

पवांडके बीज एक तोले पानीमें पीसकर और तीन माशे पारा मिलाकर खूब खरलकरै जब मरहम के सदृश होजावे तौ दादको खुजाके इसदवाको लगावैतौ निश्चय आराम होय ॥

❀ अथ खुजली का यत्न ❀

जानना चाहियेकि खुजली रोगदो प्रकारका होताहै एकतो सूखी दूसरी तर अबहम पहिले तर खुजली के यत्न लिखतेहैं॥

नुसखा ।

खाल कबेला एक तोले. चौकिया सुहागा भुना एक तोले फिटकरी एक तोले इन तीनों को महीन पीसकर दोतोले कडवे तेल में मिलाकर शरीर में मर्दन करै इसी तरह तीन दिन तक करै फिर तीन दिनके बाद लौनी मिट्टी शरीर में मलकरस्नान करडाले तो खुजली जाय ॥

अथवा ।

कबेला, सफेद कत्था, महंदी ये तीनों दवा एक एक तोले भुना सुहागा तीन माशे कालीमिर्च एकमाशे इनसबको महीन पीसकर छानकर गौके धुले हुए घृतमें मिलाकर चार दिन तक मर्दन करे फिर लौनी माटी को शरीर पर मलकर स्नानकरेतो खुजली निश्चय जाय ॥

और जो खुजली सूखी होतो हम्माम में स्नान करना गुण करता है ॥ और जुल्लाब लेना फायदा करताहै तथा शातरेका अर्क पीना फायदा करताहै और करूत का लेप करनाभीलाभ दायक होता है ।

करूत के लेपकी विधि ।

करूत को पीसकर दो घडी तक गरमजल में भिगोरक्खोफिर इसको खूब मले जब मरहम के सदृश होजाय तब उसमें खट्टा दही वा सिरका १२ तोले; और गंधक आमलासार ३॥ तोले कूट छानकर इन सबको २२॥ माशे तिलके तेलमें मिलाकर तीन भाग करै और सवेरे ही एक भाग को शरीर पर मलकर फिर हम्माम में जाकर गेहूं की भुसी और सिरका बदनपर मलकर गरम जलसे स्नान कर डाले तो खुजली निश्चय जाय ये लेप दोनों तरह की खुजली को गुण करता है ॥

॥ अथवा ॥

पित्तके उत्पन्न करने वाली वस्तु पिस्ता मदिरा और शहत नखाय और नित्य रातको नीबूका रसवा अंगूर कारस अथवा सिरका थोडा गुलाबजल औररोगन अथवा मीठेतेलमें मिलाके गुन गुना करके मालिश करै तो सूखी खुजली जाय ॥

और जो खुजली थोडे दिनकी होयतो यह, दवालगावै ॥

॥ नुसखा ॥

सिरसों ४ तोला लेकर जलमें महीन पीसकर गुन गुनाकरके उवटना करै फिर गरम जलसे स्नान करैतो सूखी खुजलीजाय

॥ घावोंका यत्न ॥

अव हर प्रकारके घावोंका यत्न लिखते है ॥

जानना चाहिय कि मनुष्य के शरीर में घाव वहुत प्रकार से होता है। सबों का यथा क्रम से नाम लिखूं तो ग्रंथ वहुत बढ जायगा इस सबबसे सूक्ष्म घावों के नाम लिखताहूं ॥

॥ घावोंके नाम ॥

(१) अग्निसे जला (२) तेल घृत आदिसे जला (३) चोट लगनेका (४) लाठी आदिकी चोटका (५) पत्थर ईंट की चोटका (६) तलवार का (७) वंदूककी गोलीका (८) तीरका इत्यादि आठ प्रकारकेघावहैं और बहुतसे हिन्दुस्तानी ग्रंथोंमें घाव और सूजन छः प्रकारका लिखा है वादीका १ पित्तका २ कफका ३ सन्निपात ४ रुधिरके दुष्टपनका ५ किसी तरहकी लकडी आदिकी चोट लगनेका ॥ ६ ॥

॥ अथ वायुके घावका लक्षण ॥

वायुका घाव और सूजन विषम पकताहै पित्तकाब्रणतत्का-

भी तत्काल पकता है ॥
एक फोडा कंधे पर होता है और यह भी नासूरका स्थान है ॥

सूजन के घाव का लक्षण ।

जिस ब्रणमें घाव गरमी और सूजन थोडी होय और कडी होय और उस्का त्वचाके सदृश वर्ण होय और दर्द कम होतो जान लेना चाहिये कि अभी ब्रण कच्चा है ब्रण उस्को कहते हैं कि प्रथम शरीर के किसी मुकाम पर सूजन हो और फिरपके फोडे के सदृश हो जाय फिर फूटकर घाव होजाय ॥

ब्रणकीसूजनकेलक्षण ।

जिस मनुष्य की सूजन अग्निकी तरह जले और खारकी तरह पके और चेंटी की तरह काटे और ववका होंय और हाथ से दावने पर सुई छिदने कीसी पीडा हो और उस्में दाह बहुत होय उस्का रंग बदल जाय ॥ और सोने के समय शान्त हो और उस्में विच्छू के काटने कासा दर्द होय और सूजन गाढी होय और जितने उस्के पकने के यत्न करे तोभी पके नहीं और उस सूजन में तृषा ज्वर अरुचि होय ये लक्षण जिस में होय तो जानिये कि यह सूजन पक गई है ॥ और जो सूजन पक जाती है तो उस्की पहिचान यह है कि उसमें पीडा होय नहीं ललाई थोडी होय बहुत ऊंचा न होय और सूजन में तह पड जाय और पीडा होय खुजाल बहुत चले सब उपद्रव जाते रहें पीछे वह सूजन न जाय खाल फटने लगे और उस में अंगुली लगाने से पीडा होय राद निकले इतने लक्षण होंय तो जानिये कि सूजन पक गई है इन कच्चे पक्के घावों को जर्राह भली प्रकार से पहचान कर उपाय करे ॥ और जो जर्राहकच्ची सूजन को तथा फोडे को चीरे और पके का ज्ञान न हो ऐसे

जराई से यत्न नहीं कराना चाहिये ॥ ये तो व्रणकी सूजन के लक्षण कहे बहुत से हिन्दुस्तानी वैद्यों ने घाव ८ प्रकारके लिखे हैं यथा वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज, वात पित्तज, वात कफज, पित्त कफज आगन्तुक अर्थात् चोट लगना ।

घावों का यत्न ।

अब जो हिन्दुस्तानी ग्रंथों को देखता हूँ तो अकल बडी हैरान होती है क्योंकि जिस २ किताब को देखता हूँ उसीउसी किताव में हर किस्म की न्यारी २ बात पाई जाती है इस सबब से मैंने हरएक ग्रंथकार का मत नहीं लिया क्योंकि उनमें क्रम ठीक २ नहीं लिखा इस लिये अपने और अपने उस्ताद के अजमाये हुए नुसखे लिखता हूं कि जिनके लगाने से हजारों रोगियों को आराम किया है ।

अग्नि से जले हुए का इलाज ।

(१) जो मनुष्य अग्नि से जलजाय तो उसको अग्नि से तपावे तो शीघ्र आराम होय ॥

जायगा इस सबबसे ... का लेप करै ॥

(२) अगर आदि गरम वस्तुओं के

(३) औषधियों के घृतको अथवा इसी घृतको गरम करै फिर ठंडा करके लेपकरै ।

(४) तवासीर बडकी जड रक्त चन्दन, रसोत, गेरू, गिलोय इनको महीन पीसघृतमें मिलाय लेपकरै ॥

(५) मोम, महुआ, राल, लोध, मजीठ, रक्तचंदन, मूर्वा, इनसबको बराबर लेकर महीन पीसकर गौके घृतमें पकावेपीछे इस घृत का लेप करै ॥

(६) पटोल का पंचांग लेकर उसे पानी में औटावे जब पानी जल कर चौथाहिस्सा रहजावे तबकडवे तेलमें मिलाकर

पकावे जब पानी जल जाय और तेल मात्र रहजाय तब ठंडा करके लगावे ॥

(७) पुराना खाने का गीला चूना लेकर इसीको दही के तोड में मिलाकर लेप करै ॥ और जो तेल से जला होगा तो उसके फफोले दूर हो जांयगे ॥

(८) जौ को जलाकर इसकी राखको तिलोंके तेलमें मिला कर लेप करे ॥

(६) भुने जीरे को महीन पीसकर उसकी बराबर मोम-राल घृत मिलाकर लेप करै ॥

अथ तेल आदि से जले हुए का उपाय ।

तिलका तेल पावभर. और खाने का चूना गीला पुराना ४ पैसेभर इसको हाथ से तीन घंटे तक मसले जब मरहम के सदृश हो जावे तब रुई के फाये से जले हुए स्थान पर लगावे तौ अच्छा होय ॥

तलवार के घावों का यत्न ।

जिस मनुष्य के तलवार आदि शस्त्रों की धार लगानेसे खाल फट जाय अथवा त्वचा की नाना प्रकार की आकृति होजाय तो जर्राह को उचित है कि ऐसे रोगी को ऐसे मकान में रक्खें जिसमें हवा न लगे फिर पट के सूतसे टांके लगावे उन टांकों के घाव के स्थान में गेहूं की मैदा में पानी और घृत मिलाय पकाले जब पानी जल जाय घृतमात्र रह जाय तब उसकी लोई बनाय सुहाता सुहाता सेककरैं तोघाव तत्काल अच्छा होजायगा

अथवा

कुटकी-मोम-हल्दी-मुलेठी-कणगच की जड और कणगच के पत्ते और कणगच के फल. पटोलपत्र. चमेली. नीमके पत्ते.

इन सबको बराबर ले के घृतमें पकावे जब सब दवा जल जाय तब इस घृतका सुहाता सुहाता लेप करै ॥

अथवा शस्त्र के लगने से जिस मनुष्य का खून बहुत निकल गयाहो और उसके वायुकी पीडाहो आवे उसके दूर करने के वास्ते उस रोगी को घी पिलाना चाहिये और जिस मनुष्य का तलवार आदि से शरीर कटजाय उसके गंगेरन की जडका रस घावमें भरदे तो घाव तत्काल भरजाय ॥ इस घाववाले का शीतल यत्न करना चाहिये ॥

और जो घावका रुधिर पेडूमें चला जायतो जुल्लाब देना चाहिये

वांस की छाल-अरंड का बक्कल- गोखरू- पाषाणभेद इन सबको बराबर कर पानी में औटावे फिर इसमें भुनी हींग और सेंधानमक मिलाकर पिलावे तो कोठे का रुधिर निकल जाय ॥

॥ अथवा ॥

जव, कुलथी सेंधानोन रूखा अन्न इनको खाना भी बहुत फायदा करता है ॥

अथवा- चमेली के पत्ते- नीमके पत्ते, पटोल कुटकी, दारूहलदी, गौरीसर, मजीठ, हडकी छाल- मोम, लीला थोथा सहत कणगच के बीज, ये सब बराबर ले और इन सबके बराबर गौकाघृत ले और इनसे अठगुना पानीले- इन सबको इकठ्ठा कर मंदी आगसे पकावे जबपानी जलजाय और घृत मात्र रह जावे तब उतार कर ठंडा करेफिर इस घृतकी वत्ती करके लगावे

अथवा-चमेली, नीम, पटोल- किरमाला- इनचारों के पत्ते, मोम- महुआ- कूट दारू- हलदी- पीली हलदी- कुटकी- मजीठ हालोंकी छाल- लोध- तज कमलगट्टे- गौरीसर- नीलाथोथा- किरमालाकी गिरी-ये सब दवा बराबरले इनको पानीमें औटावे- फिर इनके पानी में मीठा तेल मिलाकर मंदी आगसे पका

वे जब पानी जलजावे और खालिस तेल रहजावे तब इसतेल की बत्ती बनाकर घावपर लगावे तो घाव बहुत जल्द अच्छा होजायगा ॥

अथवा-चीता. लहसन. हींग. सरपुंखा. औ कलिहारी की जड. सिंदूर. अतीस. कूट इन औषधियों को पानीमें औटावे. जब चौथाई. पानी रहजावे तब उसपानीमें कडवा तेल मिलाकर मंदी आंचसे पकावे जब पानी जलजायऔर खालिस तेल रहजाय तव इस तेलकी रुई तथा कपडे की बत्ती आदि किसी तरह से घावपर लगावे तो घाव शीघ्र अच्छा होजायगा ॥

अथवा-गिलोय. पटोल की जड. त्रिफला. वायविडंग इन सबको बराबर ले महीन पीसके इन सबको बराबर गूगल मिलाकर धर रक्खे. फिरइस्मेंसेएक तोला पानीके साथ नित्यखायतो घाव निश्चयभर आवेगा ॥

अबये तो हमने शस्त्रादिकका मिलाहुआ यत्न लिखा इसमें कुछ स्थान भेद नहीं लिखा चाहे सब शरीर में किसी जगह शस्त्र लगाहोतो इन्हीं दवाओं से यत्न करना चाहिये. अब हम स्थान २ के घावोंका यथाक्रम यत्न लिखतेहैं ॥

जो किसी मनुष्य के सिर में तलवार लगीहो औरघावगहरा होगयाहो. और हड्डी तक उतर गई हो और चोटसे कई टूक होगये होतों सब टुकडोंको असल के अनुसार मिलावे ॥ और जो चूरा होतो निकालडाले और उस घावपर गौकारस लगावे फिर घावमें टांके भरदेवे फिर इस दवाईसे सेकै ॥

॥ सेककी दवा ॥

आमां हल्दी. मैदालकडी. कालेतिल. सफेदबूरा. गेहूंकीमैदा घी इन सबका हलुआ बनाकर सेके और उसीको बांधे ॥

और जो तलवार आडी पडीहो और सिरकी खोपडीजुदी

होजावे तो इसकी चिकित्सा इस प्रकार से करनी चाहिये कि प्रथम दोनोंको मिलाकर बांधे और पूर्वोक्तरीति से सेकके यह मरहम लगावे ॥

❋ मरहमकी विधि ❋

सफेदा कासगरी, मुर्दासन, रसकपूर, अकरकरा, गुजराती माजू; ये सब दवा एक एक तोले सिंगरफ चार माशे. इन सबको पीसकर चारतोले घृत में मिलाकर नदीके जलसे धोकर घावपर लगाया करे और ध्यान रक्खें कि घाव में स्याही न आने पावे ॥

और जो किसी के गलेपर तलवार लगे और उस्के लगने से घाव वहुत होजावै तो जर्राहको उचित है कि पहिले रुधिर से घावको शुद्ध करे फिर टांके लगादे और केवल आंवाहल्दी से अथवा हलुए से सेककर वो मरहम लगावे जिसमें चौकिया सुहागा लिखा है । जब पीव गाढी और सफेद निकले और पीलापन लियेहो तो बह मरहम लगावे जो अभी ऊपर वर्णन कर चुके हैं ।

और जो तलवार कांधे पर पडे और हाथ लटक जाय तो उसको मिलाकर टांके भरदेवे और उसमेंभी यही मरहम लगावे जो अभी ऊपर कह आये हैं । और एक सांचा लकडीका वना कर कांधेपर बांधे तो आराम होजायगा ।

और जो किसी मनुष्य के गले से लेकर कटि तक तलवार लगे और घाव चार अंगुल गहरा होतो डरना न चाहिये और इस रोगी की मन लगाकर चिकित्सा करे जो टुकडे होगये होंय तो देखे कि रोगी में सांस है वा नहीं जो सांस होतो चिकित्सा करे और जो सांस वलके साथ आता हो तो और घामलकी बुद्धि और औसान ठीकहोतो समझना चाहिये कि येही

रोगी की केवल धीरताहै औरकोईपलका महमानअर्थात्जीवन है ॥ परन्तु यहां मेरी बुद्धि यह कहती है कि जो हृदय में. गुर्दे में. और कलेजे में घाव न आया हो निःसंदेह टांके लगा कर चिकित्सा करे जो परमेश्वर अनुग्रह करेगातो घायल मृत्यु से वचजायगा. और जो हृदय.गुर्दे और कलेजे में घाव होगया होतो उस घायल की चिकित्सा न करै और जो इनमें घाव न होतो चिकित्सा करे और उक्त मरहम को वनाकर लगावै. अथवा जैसा समय पर उचित जाने वैसा करै अथवा यह तेल वनाकर लगावे ॥

❋ तेलकी विधि ❋

दारू हल्दी; आवाँ हल्दी; भडभूजे की छानसकाधूमये तीनों दोदो तोले इन सवको जौकुट करके नदीके जलमें अथवा वर्षा के जलमें, भिगोदे और सवेरे ही काले तिलोंका तेल पाव सेर मिलाकर मंदमंद आगपर औटावे जव पानी जलकर तेल मात्र रहजाय तो छानकर धररक्खे ॥

और उसमें पुराना कतानका कपडा भिगोकर घावपर रक्खे और जो यहां पर वस्त्र प्राप्त नहो सकेतो विलायती सूतकाममें लावे और खूबबांधे और मकोयका अर्क पिलावे वा गोमा का साग पकाकर कभी २ खिलायाकरे और यथोचित्त पथ्य करावै और घावपर ध्यान रक्खें कि पीव पीवही के सदृश हो और स्याही नहो और ऐसे घायलको ऐसे एकांत स्थानमें रक्खें कि जहां किसी का शब्द भी पहुंचने न पावे ॥ और जो किसी मनुष्य के हाथपर तलवार लगी हो और दो घडी व्यतीत होंय तो वो घायल अच्छा न होगा और जो काल दोघडी से कम हो सक्ता है और जो हड्डी बरावर कटगई होतो उसी समय चि कित्सा करैतो आराम होजायगा ॥ और जो कुछभी विलंवहो

जायगा तो आराम न होगा किस वास्ते कि जबतक कटाहुआ हाथ गरम है तब तक साध्य और ठंडा होगया तो असाध्य है और जो तलवार से अंगुलियां कट जावें और गिर न पड़ें तो अच्छी हो सकती है और किसी के चूतड पर तलवार लगे तो उसकी चिकित्सा जर्राह की सम्मति पर है क्योंकि यह स्थान बहुत भयानक नहीं है और किसी के अंडकोशों पर ऐसी तलवार लगे कि अंडेतक कटजावें तो जर्राह को उचित है कि भीतर दोनों टुकडे मिलाकर ऊपर से शीघ्र टांके लगा देवै और इस प्रकारसे बांधे कि भीतरसे अंडेमिलेरहे औरउसपर वह मरहम लगावै जो अंग्रेजों के यहां लडाई पर लगाते हैं ॥ और जो समय पर वह प्राप्त न होसके तो देवदारू का तेल वाछियूटा का तल लगावै और जो चूतडसे पांव के नख तक घाव होतो उसकी चिकित्सा उसकेअनुसार करनी चाहिये और जो सिरसे पांव तक कोई घाव बहुत कठिन होतो उसकी वह चिकित्सा करै जो कमर और हाथकेघावकी वर्णनकीगईहैऔर इन स्थानों के सिवाय शरीरमें किसी जगह तलवारके लगनेसे घावहोतो सब जगहकी चिकित्सा इसी तरह इन्हीं औषधियोंसे करनी चाहिये. और तलवार.सेल.फरसा. चक्र. इतने शस्त्रों के घावोंका इलाज इन्हीं दवाओं से होताहै ॥

॥ अथतीर लगने के घाव का यत्न ॥

जो किसी मनुष्य के बदन में तीर लगा हो और घाव के भीतर अटक रहा होतो घावको चारों ओर से दबाकर निकाले और घावको चौडा करै कि हाथसे तीर निकलसके औरभीतर के तीर की परीक्षा यह है कि वह घाव दूसरे तीसरेदिन रुधिर दिया करता है और तीर जोड की जगह जाता है

और जो मांस में लगताहै तो पार होजाता है उसके घाव

पर दोनों ओर मरहम लगावै और बीचमें एक गद्दी बांधै इस प्रकार की चिकित्सा में परमेश्वर अपने अनुग्रह से आराम कर देता है ॥

❀ अथवा ❀

किसीकी छातीवा नाभिमें तीर लगे और पार होजावे वा भीतर अटक रहे जो तीर लगकर अलग निकल जावे तो पूर्वोक्तानुसार चिकित्सा करै और जो भीतर अटक रहैतो औजार से निकाल कर यह रोगन भरे ॥

❀ नुसखा रोगन ❀

भांगरे कारस, गौमाका रस, नीमके पत्तोंका रस छियूंटाका रस, ये चारों रस दो दो तोला; गेरू, अफीम एक २ तोले, सब को पावभर मीठे तेलमें मिलाकर चालीस दिवस तक धूप में रक्खे और समय पर काममें लावै ॥ ये तेल सब प्रकारके घावों का फायदा करता है ॥

अथवा–किसीके पेटमें तीर लगाहो तो बहुत बुद्धिमानी से चिकित्सा करै क्योंकि यह स्थान बहुत कोमल है जो इस स्थानमें तीर लगकर निकल गयाहो तो उत्तम है और जो रहगया होतो कठिनतासे निकलताहै क्योंकि यह स्थान न तो घाव चीरनेकाहै और न तेजाब लगाने काहै बसजो वहां मकनातीस पत्थरका पहुंचावेतो उत्तमहै ॥ क्योंकि लोहा मकनातीसका अनुरक्त है और जो तीर निकलगया होतो वह चिकित्सा करै जो ऊपर वर्णन की गईहै और घावमें वह तेल भरे जिसमें भांगरे का रस लिखा है ॥

अथवा–किसीकी जंघाके तीर लगेतो वह स्थान भी तीर के भीतर रहजाने काहैं क्योंकि मांस और हड्डी यहां की गहरी हैं ॥ उचितहै कि घावको चीरकर तीरको निकाले इसमें कुछ डरनहींहै

परन्तु डर यहहै कि घाव रहजाय तो बहुत कालमें अच्छा होताहै और जोडोंकी व्याख्या ऊपर वर्णन हो चुकी है इसलिये घावको चौडाकरके ८ तीर निकाले तो हड्डी का हाल जानाजावे कि हड्डी में कुछ हानि पहुंची वा नहीं जो हड्डी पर हानि पहुंचीहो तो हड्डी की किरचें निकालकर चिकित्सा करे ॥

❀ अथवा ❀

किसीके घुटने में तीर लगेतो उसकी भी यही व्याख्या है जो जंघाके घावमें वर्णन कीगई है ॥ और मैंने तीरके घाव घुटनेसे पांवतक में देखे यदि दैव योग से तीर लगभी जायतो उसी प्रकार से चिकित्सा करे जैसाकि ऊपर वर्णन करते चले आये है ॥

॥ घावकी परीक्षा ॥

जिस घावमें तीर आदि शस्त्रकी नोक रहजाय उस की पहचान यह है कि घाव काला और सूजन से युक्तहो फुंसियों को लियेहो और उस घावका मांस बुद् बुद समान ऊंचा होय और उसमें पीडा होयतो उसघावको शस्त्र समेत जानिये ॥

॥ कोठेकी परीक्षा ॥

जिस मनुष्य के कोष्ठमें तीर रह गयाहो उसकी पहचान यह है कि शरीर की सातों त्वचा और शरीर की नसोंको नांघ कर पीछेउन नसोंको चीरकर और कोष्टके भीतर रहा हुआवह शस्त्र अफरा करें और घावके मुखमें अन्न और मलमूत्र को ले आवे तब जानले कि इसके कोष्ठमें शस्त्र रहाहै ॥

। अथ गोली के घावका यत्न ।

जो किसी मनुष्य के सिरपर गोली लगती हुई चलीगई होय और दूसरा पंछ कि गोली दूसरे लगी हो ऐसी गोली सिरकी

त्वचा में रहजाती है इस कारण करके सिरमें सूजन आजाती है और मूर्ख लोग कहते हैं कि गोली सिरके भीतर से निकाल लावैं परन्तु ठीक व्यवस्था तो यह है कि जो गोलीपाससे लगी हो तो दोनों ओरकी हड्डी को तोडकर निकल जाती है और जो कुछ दूरसे लगी होतो भेजे के भीतर रहजाती है और निकालने के समय रोगी के बलको देखना चाहिये की गोली निकालने में वह मर न जाय और जो उसका मरजाना संभव होतो चिकित्सा न करै और जो देखे कि रोगी इस कष्ट को सहसक्ता है और उसके बंधु लोग प्रसन्नता पूर्वक आज्ञा देते है तो निःसंदेह भेजे में से गोली को निकाले और सिरके घाव को कम सेकते हैं ॥ और चिकित्सा के समय पहले यह मरहम लगावे जिससे जला मांस निकल जावे ॥

मरहम की विधि ।

जंगाल हरा- निखालिस शहत- एक एक तोले सिरका दो तोले- इन सबको मिलाकर कलछी में पकावे जब चासनी होने पर आवे तब ठंडा करके लगावे ॥

अथवा

मुर्गी के अंडेकी सफेदी, दो आतशी शराब चारतोले दोनों को मिलाकर लगावे ॥

अथवा-जो गोली गले में लगी हो तौ उसकी भी चिकित्सा इसी प्रकार से करे जैसा कि ऊपर वर्णन की गई है ॥

अथवा जो गोली किसी की छाती में लगी हो तो उसकी व्यवस्था यह है कि जिस ओर को मनुष्य फिरता है तो गोली भी उसी ओर को फिरजाती है यदि कोई बलवान होगा तो गोली निकल जायगी ॥ और निर्बल होगातो रह जायगीइस

पर खूब ध्यान रखना चाहिये क्योंकि उसका घाव टेढा होताहै और छाती की बराबर में दिल यानी हृदय उपस्थित है उसका ध्यान भी अवश्य रखना चाहिये और बाजी गोली कपडे से लिपटी हुई होती हैतो वह गोली निकल जातीहै और कपडा रहजाता है और जिस ओर को गोली निकल जाती है उस ओर को घाव चौडा हो जाता है कि घावको चीरकर वा पका कर पहिल कपडे को निकाल लेवे और कपडे रहजाने की यह पहिचान है कि घावमें से पतली और स्याह पीव निकला कर ती है पहिले घावको शुद्ध करले क्योंकि जब घाव शुद्ध होजाय और जला हुआ मांस निकल जाता है तो घाव शीघ्र अच्छा हो जाता है और धीरज से उसकी चिकित्सा करै घबराहट को काममें न लावे ॥

❋ अथवा ❋

किसीकी छाती से पेडूतक गोली लगी हो तो उसकी भी चिकित्सा इसी प्रकार से करना चाहिये जैसा कि ऊपर वर्णन कीगई है ॥

❋ अथवा ❋

किसीके अंडकोषों में वा जंघासे पिंडली तक कहीं गोली लगी हो तो चिकित्सा के समय देखे कि गोली निकलगई वा नहीं निकलगई होतो उत्तम है और जो रहगई होतो गोली को निकालकर घावको देखे कि हड्डी तो नहीं टूटी यदि हड्डी टूटगई हो तो छोटे टुकडोंको जमादे और उसपर बिलायती रसोत मलदे ओर स्टिकिन एक अंग्रेजी दवा है उसका फाया लगादेवे और खूब कसकर बांधे और तीनदिन के पीछे खोल कर देखे कि हड्डी जमी वा नहीं जो जमगई होतो उसको

भी निकालडाले अथवा समय पर जैसी सम्मति हो वैसा करै और देखता रहै कि घावमें सफेदी और उसके आसपास स्याही तो नहीं हुई और घावमें से दुर्गंधि तो नहीं आती और पीव तो नहीं निकलता क्योंकि यह लक्षण बहुत बुरे होते हैं ॥ और गोलीके हरएक घावमें वह दवाई लगावे जो सिरके घावमें वर्णन की है अथवा उस दवाई को लगावे जिसमें अंडेकी सफेदी है उस दवाई में रुईको भिगोकर घावपर रखना चाहिये और सब शरीर में किसी मुकाम पर गोली लगीहो उन सब गहरे घावोंका इलाज इन्हीं औषधियों से होता है ॥

॥ अथवा ॥

किसीके विषकी बुझी तलवार, तीर, बरछा, कटार, फरसा, चक्र, आदि शस्त्र लगेहों तो उसकी यह परीक्षा है कि घाव तो ऊपर दवता जाता है और मांस गलता जाता है और दुर्गंध आती है और प्रतिदिन घावका रंग बुरा होता जाता है और वहांका मांस तथा रुधिर स्याह पडजाता है बस उचित है कि पहिले सब स्याह मांसको काटडाले जो रुधिर जारी होजाय तो रुधिर बंद करनेवाली दवाई करे और दूसरे दिन गेरू नमक फिटकरी गुनगुनी करके बांधे और यह मरहम लगावे।

मरहम की विधि।

पहिले गौका घी आधपाव लेकर गरम करे फिर उसमें एक तोला मोम डालकर पिघलावै पीछे कवेला १ तोले. रालसफेद १ तोले. रतनजोत. १ तोले इन तीनों को भी पीसकर उसमें मिलादे फिर थोडासा औटावै फिर ठंडा करके एक फाया घाव के अनुसार बनाकर उसपर इस मरहम को लगाकर घावपर रक्खे और जो कोई कहै कि यह जहरबाद है तो उत्तर देवे कि यह सत्यहै परंतु उसमें मैला मैला पानी निकलता है जो लाली

लियेहुए है जिसको कल्लोड्ड कहते हैं और जहरबाद का घाव शीघ्र बढता है और यह घाव देरमें बढता है और जहरबाद शीघ्र गलता है और यह देरमें जहरबाद के घावमें मनुष्य शीघ्र मरजाता है और इसमें देरमें मरता है और जहरबाद के रोगी को किसी समय कल नहीं पडती और ऐसे घायलको जितनी पीडा होतीहै उससे न्यूनाधिक नहीं हो सक्ती ॥ उचित है कि चिकित्सा बुद्धिमानी से करै और जो सूखजाने के पीछे कोई किर्च हड्डीकी फिर दीखपडे तो फिर तेजाब लगावै कि घाव चौडा होजावे तब हड्डीको निकाल डाले ॥

तेजाब की विधि ।

लहसन का रस॰ कागजी नीबुका रस॰ चार चार तोले सुहागा चौकिया एक तोला॰ इन दोनों को महीन पीसकर पहले दोनों अर्कोमें मिलाकर चारदिवस पर्यंत धूपमें रक्खें और एक बूंद घाव पर लगावै ॥ फिर किसी मरहम का फाया रक्खे ॥

अथ डाढ टूटने का यत्न ।

जानना चाहिये कि टूटी हड्डियों के बारह भेदहैं सो यथा क्रम लिखते हैं तो ग्रंथ बहुत बढजाता है और कुछ मतलब हासिल नहीं होताहै इस वास्ते बहुतसा बखडा नहीं लिखा केवल जो जो मतलब की बात हैं सोई लिखते हैं ॥

अथ डाढटूटने की पहिचान ।

अंगशिथिल होजाय और उस जगह हाथ लगाना न सुहावै और वहां शरीर फडके और शरीर में पीडा और शूल होय रात दिन कभीभी चैन नहीं पडे ये लक्षण होंय तब जानिये कि इस मनुष्य की किसी प्रकार से डाढटूटी है ॥

जिस मनुष्यकी अग्नि मंद होजाय औरकुपथ्य कियाकरे वायु-का शरीर होय और जिसमें ज्वर अतिसार दिकभी होय ऐसे ऐसे लक्षणों वाला रोगी कष्टसे बचताहै ॥ औरजिसमनुष्यका मस्तक फटगया हो कमर टूटगई होय औरसंधि खुलजाय और जांघ पिसजाय ललाटका चूर्णहोजाय हृदय. गुदा. कनपटी.माथा. फटजाय जिसरोगीके ये लक्षण हों वह असाध्य है और डाढको अच्छे प्रकार बांधे. पीछे कडाबांधे. और वह बुरीतरह बंधजाय और उसमें चोट आजाय मैथुनादिक करतारहै तो उस रोगी का टूटाहाडभी असाध्य होजाताहै ॥ अबशरीरके स्थान२ के हाडोंमें चोट लगीहो उनके लक्षण कंठ. तालू कनपटीकंधा. सिर, पैर कपाल,नाक, आंख, इन स्थानोंमें किसीतरह की चोट लगजावेतो, उस जगहके हाडनवजांयऔरपहुँचा, पीठ आदिके सीधे हाडहैं सोटेढे होजांय;कपालको आदिलेजो गोलहाडहै सो फटिजाय और दांतवगैरह जो छोटे हाड़ हैं सो टूटजायइनसब हाडों का यत्न लिखताहूं जो किसी मनुष्यके चोट आदिकिसी तरहसे हाड और संध टूट जावेतो चतुर जर्राह को चाहिये कि उसी समय उस जगह चोटपर शीतल पानीडाले पीछे उसके औषधियों का सेक करे ॥

अथवा–पट्टी बांधे और उस जगह जो लेप करे सो शीतल इलाज करे और बुद्धिमान जर्राहको चाहिये कि उस मुकाम पर जो पट्टी बांधे तो ढीली न बांधे और बहुत कडी भी न बांधे अच्छी तरह साधारण बांधे क्योंकिजो पट्टी ढीली बँधेगी तो हाड जमेगा नहीं और बहुत कडी बांधने से शरीरकीखाल में सूजन होजावेगी और पीडा होगी और चमडी पकजायगी इसी कारण पट्टी साधारण बांधना अच्छा होताहै बसाजिस म-नुष्यके चोट लगी हो उसके यह लेप लगावै ॥

लेप की विधि ।

मैदा लकडी. आंवले. आंवाहलदी. पंवार के बीज सावुन. पुरानी ईंटये सब बराबर लेके महीन पीसकर और इसमेंथोड़ा काले तिलोंकातेल मिलाकर आगपर रखकर गरमगरम लेपकरै

अथवा—मुगास. गेरू. खतमी के बीज. उरद. एलुआ। ये सब दवा एक एक तोले लेकर और हल्दी छः माशे सोया छःमाशे लोवान छः माशे. इन सबको पीसकर लेपकरै ॥ २ ॥

अथवा—गेरू. ६ माशे. झाऊके पत्ता नौ माशे. गुलाबकेपत्ता नौ माशे. वरके पत्ता नौ माशे इनको महीन पीसकर लेपकरने से लाठी आदि की चोट. गिरपडने की चोट और पत्थरआदि से कुचल जाने की चोट को आराम करता है ॥ ३ ॥

अथवा—हल्दी. हरीमकोय के पत्ते. गेरू. ये तीनों दवा एक२ तोले. खिली सरसों दो तोल इनको महीन पीसकर लेप करने से सब प्रकार की सूजन को दूर करता है ॥ ४ ॥

अथवा—गेरू. कालेतिल. आंवांहल्दी. हालों के बीज. ये सब बराबर लेकर थोडी अलसी का तेल मिलाके लेप करने से सब प्रकार की चोट अच्छी होती है ॥

अथवा—मटर का चून. चनाका चून छै तोले. अलसीकेबीज ये सब दवा नौ नौ माशे ले. लालबूरा छै माशे. काली मिर्च तीन माशे इन सबको पीसकर थोडे सिरकेमें मिलाकरलेपकरै॥

अथवा—गेरू एक तोले. सुपारी एक तोले सफेद चन्दन एक तोले रसोत छः माशे. मुर्दासंग छः माशे. एलुआ छः माशेइन सबको हरीमकोय के रसमें पीसकर लगावें तो सब प्रकार की चोट जाय ॥

अथवा—एलुआ तीन माशे. खतमी के बीज छः माशे. बनप्सा के पत्ते छः माशे. दोनों चन्दन बारह माशे. भटवास छः माशे.

नाखूनी छः माशे इन सबको चूरण करके मुर्गी के अंडे की सफेदी में मिलाके गुन गुना करके लगावै।

अथवा-खिले कालेतिल, खिली सरसों; गेरू एक एक तोले, संभालू के पत्ते डेढतोला, मकोयके पत्ते; डेढतोले, इन सब को पानी में महीन पीसकर गरम २ लेप करेतो सब प्रकार की चोट अच्छी होजाती है।

❋ अथवा ❋

बारह सींगे के सींग की भस्म तीन माशे लोबान तीन माशे भटवांस का चून दोमाशे, नौसादर छः माशे बाकलाका चून दो माशे बबूलका गोंद छः माशे कडवे बादाम की गिंगी एक तोला इन सबको पानी में पीसकर लगावै तो सब प्रकार की चोट दूर हो जाती है।

❋ अथवा ❋

कडवे बादाम की गिंगी पुरानी हड्डी एक २ तोले सीपकी भस्म समुद्र फेन, पीली फिटकरी छः छः माशे इन सबको पानी में पीस कर लगावे तो सब प्रकार की चोट को फायदा होता है।

❋ अथ टूटी हुई हड्डी का यत्न।

इस हड्डी टूटजाने की चिकित्सा इस रीति से करै जैसाकि पट्टी वगैरह पहले लिखआये हैं सो करे और चोट की जगह गीली प्याज लगावे तो टूटा हुआ हाड अच्छा होजाता है।

❋ अथवा ❋

मजीठ महुआ इन दोनोंको ठंडेपानीमें पीसकर टूटे हुए हाड पर लेपकरे तो अच्छा होय॥

❋ अथवा ❋

बेर; पीपल की लाख; गेहूं काहू वृक्ष का बक्कल इन सबको

महीन पीस घृतमें मिलाय १॥ तोले नित्य खाकर ऊपर से दूधपीवे तो टूटा हुआ हाड अच्छा होजाता है।

❁ अथवा ❁

लाख, काहूका वक्कल, असगंध, खरैटी, गूगल ये सब बराबर ले इन सब को कूट पीस कर एक जीव कर १॥ डेढ तोला दूध के साथ नित्य खायतो टूटाहाड अच्छा हो जायगा।

❁ अथवा ❁

गेहूं को ठीकरे में धरकर अधजले करले पीछे इन्हें महीन पीस तीन तोले लेकर उसमें छः तोला शहत मिलाकर सातदिन तक नित्य चाटे तो टूटेहाड निश्चय अच्छे होंय॥

❁ अथवा ❁

मेदा लकडी आमला तिल इन सबको बराबर ले ठंडे पानी में महीन पीस उस जगह लेपकरै और उसमें घृत भी मिलावै तो टूटा हुआ हाड और टूटी संधी येदोनों अच्छे होजाते हैं।

❁ अथवा ❁

मनुष्यके मांसकी चरवी मिमाई अनुमान माफिकले और शहत मिलाकर उसे चटावे तो टूटा हाड अच्छा होय।

❁ अथवा ❁

चोटवाले मनुष्य को मांस का शोरबा दूध, घृत, पुष्टाई की औषधि देना अच्छाहै। और चोटवाले मनुष्यको इतनी चीजों से परहेज कराना चाहिये सो लिखते हैं॥

नमक कडवी वस्तु खार खटाई मैथुन धूप में बैठना रूखे अन्न का खाना इन चीजों से परहेज जरूर करना चाहिये। बालक और तरुण पुरुषके लगीहुई चोट जल्दी अच्छीहोजाती

है और वृद्ध रोगी तथा क्षीण मनुष्य की चोट जल्दी अच्छी नहीं होती ॥

अथवा—लाख १॥ तोलेलेकर महीन पीस गौके दूधके साथ पंद्रह दिन पीवै तो टूटा हाड अच्छा होजाता है ॥

अथवा-पीली कौडियों का चूना २ तथा तीन रत्ती मिलाकर दूधमें पिये तो टूटा हाड जुड जाता है ॥

अथवा-बेरकाबक्कल,त्रिफला;सोंठ. मिरच पीपल इन सबको बराबर ले और इन सबको बराबर गूगल डाल सबको एक जीव कर १ तोले १५ दिन तक दूधके साथले तो शरीर वज्र के समान होजायगा और शरीर की सब वेदना जाती रहेगी ॥

अथवा बेरका बक्कल १ तोले महीन पीस शहत में मिलाय एक महीने तक चाटे तो शरीर की सब प्रकार की चोट और टूटीहड्डी अच्छी होजायगी और शरीर वज्र के समान होजायगा

और जो किसी मनुष्य के मुगदर आदि किसी तरह की चोट लगी होय उसके वास्ते यह दवा बहुत फ़ायदा करती है।

नुसखा।

मैथी; मैदा लकडी; सोंठ, आंवला, इन सबको महीन पीस गौ मूत्रमें मिलाय जहां चोट लगी होय वहां लेप करै तो चोट अच्छी होय ॥ औरजो किसी मनुष्य को पशुने मारा हो तथा किसी ऊंचे मकान से गिरा हो तथा भीत आदि के नीचे दब-जाय और इस कारण से घायल होगया होतो उसपर यह लेप लगाना चाहिये ॥

लेपकी विधि।

पुराना खोपडा, आंबाहल्दी; मैदालकडी कालेतिल; सफेद

मोम, ये सब दवा एक २ तोले पीसकर चोट पर लेपकरे और
जो उसपर घाव आगया होतो पहिले कहे हुए मरहमों का
फाया बनाकर लगावै ॥

अथवा-प्याज एक तोले, गेहूं की मेदा २ तोले. प्रथम प्याज
का छील उसकी मीगी निकाल कर तेलमें छोंकले. फिर उसमें
मैदा को डाल थोडा पानी मिलाकर लूपरी बनावै और चोट
को सेके फिर इसी को बांधे तो चोट अच्छी होय ॥

और जाडेके दिनों में शीतकाल में घी बासन में जम जाता
तीन तोले [illegible] लने से हाथ के नखों में घी की फांस लगजाती
[illegible] तो टू [illegible]
है उसके निक [illegible] पकजाता है तो उस की चिकित्सा यह है कि प
है और हाथ [illegible] ाग पर सेके फिर यह दवाई लगावे ॥
हले हाथको अ [illegible] खुरासानी, भैंसागूगल. विलायती साबुन
अथवा अ [illegible] इस जगह [illegible] ल पानी में महीन पीसे. जब
संधानमक; गु [illegible] हाड और [illegible] संधा [illegible] र लगावै और इससे
मरहम के सदृश होजावै तब उस घी [illegible]
आराम न होतो यह मरहम लगावे ॥

नुसखा ।

साबुन, गुड; गेहूं, की मैदा. एक२ तोले पानी में पीस इसका
फाया बनाकर लगावै. और इसके ऊपर एक पान गरम करके
बांधे और सेके और जो घाव सब अच्छा हो और पानी नि.
कलना बंद न होताहो तो नीचे लिखा तेजाब लगाकर घाव
को चौडा करै ॥

नुसखा तेजाब ।

गंधक दो तोले; नीलाथोथा दो तोले, फिटकरी सफेद दो
तोले. नौसादर दो तोले. इन सबको महीन पीसकर आधापाव
दही में मिलाकर एक हांडी में भरकर चाय के सदृश तेजाब

खेंचे और एक बूंद घावपर लगावै तो घाव गहरा हो जायगा पीछे इसपर वही मरहम लगावे जो तेजाब के नुसखे से पहले लिखी है ॥

यहां तक सब घावों का इलाज तो लिखा जा चुका है परंतु अब दो चार नुसखे मरहम के यहां इकट्ठे लिखे जाते हैं ये मरहम सब प्रकार के घावों को फायदा करती है ॥

मरहम १

राल एक पैसेभर, सफेदमोम दो पैसेभर' मुर्दासन एक पैसे भर-इन सबको महीन पीसकर रक्खे प्रथम गौका घृत छःपैसेभर लेकर गरमकरै फिर उसमें मोमडाले जब मोम पिघल जाय तब सब दवाईयों को मिलावै फिर इसको कांसी की थालीमें डालकर १०८वार पानीसे धोवै पीछे इसको घावपर लगावै तो सब प्रकार के घाव अच्छे होंय इसको सफेद मरहम कहते हैं ॥

मरहम २

शोधाहुआ पारा १ तोलेः आंवलासार गंधक एकतोले, मुर्दासंग दोतोले; कवेला चारतोले, नीला थोथा ४ माशे, गौका घृत पावभर और नीमके पत्तों का रस अनुमान माफिक डालकर इन सबको मिलाकर दो दिन तक खूब पीसे जब मरहम के सदृश होजाय तब घावपर लगावे तो सब प्रकार के घाव अच्छे होंय ॥

मरहम ३

सफेद मोम, मस्तगी, गोंद, मेंढल, नीलाथोथा; सुहागा, सज्जी, सिंदूर, कबेला' मुरदासंग, गूगल, कालीमिर्च, सोनगेरू' इलायची; बेर, सफेदा, सिंगरफ' शोधी गंधक ये सब दवा बराबर ले और मोम को छोडकर सब दवाओं को न्यारी न्यारी

महीन पीसकर रक्खे प्रथम घृतको गरमकर उसमें मोम पिघलावे फिर सब औषधियों को मिलाय खरल में गेर दोदिनतक खूब घोटे जब एक जीव होजाय तब धररक्खे और घावोंपर लगावे ये मरहम चोटके घाव, शस्त्रादिक के घाव फोडे आदि के घाव, और सब प्रकार के घावों को फायदा करता है ॥

❋ मरहम ❋

नीलाथोथा, मुरदासंग; सफेदा; खैरसार, सिंगरफ; मोम, केशर, गौकाघृत ये सब बराबर ले फिर घृत को गरमकर नीचे उतार, इसमें पहिले, नीलाथोथा पीसकर डाले, पीछे उसीसमय उसमें मोम डालकर पिघलायले फिर इसमें सब औषधि महीन पीसकर डाले इन सबको एकजीव कर कांसेकी थाली में डाले और उसमें ज्यादापानी डालकर एक दिनभर हथेली से रगडे फिर इसको घावोंपर लगावै तो सब प्रकारके घाव अच्छे होंय ॥

❋ मरहम ❋

सिंगरफ तीन पैसे भर, सफेदमोम तीन पैसे भर, नीमके प. त्ते की टिकिया तीनपैसे भर; मुर्दासंग १ पैसेभर प्रथम घृतको औटाय उसमें नीमकी टिकिया पकाकर उन टिकियों को जलाकर फेंकदे फिर उस घृतमें मोमको पिघलावे फिर सब औषधियों को महीन पीसकर मिलावै जब मरहम के सदृश होजावै तब लगावै तो घावमात्र अच्छे होंय ॥

❋ मरहम ❋

जिस मनुष्य के हाथपांवों में बिवाई फटी हो उसके वास्ते ये मरहम अच्छा है ॥

राल एकपैसे भर, कत्था १ पैसेभर' चमेलीका तेल चारपैसे

भर, कालीमिर्च १ पैसेभर, गौका घृत दोपैसे भर इन सबको महीन पीसकर लोहेके करछलेमें मरहम बनावे पीछे इस्को लगावे तो हाथपांवों की बिवाई अच्छी होय ॥

❀ मरहम ❀

नीमके पत्तोंका रस एकसेर ले और गौका घृत पावसेर ले प्रथम घृतको लोहेके बरतन में गरमकर उसमें नीमके पत्तोंका रस मिलावे जब ये दोनों खूब गरम होजांय तब उसमें राल चारपैसे भर डालकर पिघलावे जब वह पत्तोंका रस जलजाय और गाढा होजाय तब कत्था एकपैसे भर, नीलाथोथा एक पैसेभर; मुरदासंग एकपैसे भर इनसबको महीन पीसकर उसमें डाले एक जीवकर पीछे कपडे में लगाय घावके ऊपर लगावै तो घाव निश्चय अच्छा होय ॥

❀ मरहम ❀

रांगकी भस्म छः माशे, सफेदमोम, एकतोले, गुलरोगन दो तोले, इन सबको पीसकर गुलरोगन में मरहम बनावे, और घावपर लगावै तो घावको बहुत जल्दी सुखा देती है ॥

मरहम ९

जिस घावमें से पानी निकला करता है उसके लिये यह मरहम लगाना अच्छा है ॥

गूगल चार माशे, रसौत १ माशे, इन दोनों को पानी में खूब घोटे पीछे चार माशे; पीला मोम मिलाके घोटके मरहम बनावै और घावपर लगावे तो घावसे पानी निकलना बंद होय

मरहम १०

उसुक पावभर, गूगल पांच माशे इन दोनों को चार तोले सरसों के तेलमें घोटकर एक तोले पीला मोम मिलाके आग-

पर धरै. और राई समुद्रफेन जरावंद तवील, गंधक आंवला-सार, पांच पांच माशे चूरन करके मिलावै और जिस स्थानपर फोडे को शीघ्र पकाया चाहे वहां पर इसी मरहम में गुलखतमी और उसके पत्ते दो दो तोले लेकर महीन पीसकर मिलावेऔर गुन गुना करके फोडेपर लगावे तो फोडे को बहुत जल्दीपका कर फोडदेगा ॥

॥ मरहम ११ ॥

मीठातेल, और कूएका पानी पांच पांच तोले मिलाकर कांसीके पात्रमें हाथ से खूबघोटे कि महदीके तुल्य होजावै पीछे फिटकरी, नीलाथोथा, लालकत्था, सफेद राल, सवा २ तोले महींन पीसकर उसमें मिलावै और हथेली से खूब रगडे जब मरहम के सदृश होजाय तो चीनी के बर्तन में रखदेवै और जब इस मरहम को काममें लावै तब नमक की पोटली से घावको सेकाकरै यह मरहम बंदूक की गोली के घावको नासूर के घाव को और बुरे २ बादी आदिके, घावोंको अच्छा करती है ॥

मरहम १२

आधपाव कडवे तेलमें पांच तोले पीला मोम पिघला के उसमें एक तोले बिरोजा मिलाके पीछे दो तोले सफेद राल, फिटकरी भुनी छः माशे मस्तगी छः माशे इनको भी चूरनकर के मिलावै और खूब घोटके मरहम के सदृश बनाकर घावोंपर लगावै तो सब प्रकारके घाव अच्छे होंय ॥

अंडकोषों के छिटक जाने का यत्न ।

जानना चाहिये कि फतक रोग अंड कोषों के बढजाने को कहते हैं और यह रोग अंडकोषोंमें तीन प्रकार से होता है ॥

एकतो यहीकि किसी कारण चोट लग जाने से भीतर अंडावढ जाताहै ॥ उसकी चिकित्सामें वहुतसे लेप और बफारे काममें आते हैं और यह रोग इस दवाई से बहुत जल्दी आराम हो जाताहै ॥

नुसखा

हरीसोंफ, सूखीमकोय, खुरासानी अजमायन, बाबूने के फूल, मूरिद के बीज; गेरू ये सब दवा एक २ तोले ले इन सब को पानी में पीसकर रक्खे और इसके पहिले अंडकोषों पर सोये के सागका बफारा देकर यह लेप जो बना रक्खी है लगावै और फिर ऊपरसे वही साग बांधे जिसका वफारा दिया गयाहै ॥ इसपर पानी न लगने दे ॥

एक कारण इसरोग के होनेका यहहै कि पहिले किसी की प्रकृति में तरी और सरदी की विशेषत होतीहै ! इससे हरएक जोडमें बादी उत्पन्न होजाती है और पेटके सब अवयवों को बादी भरपूर कर भीतर से अंडेको बढ़ा देतीहै ॥ तो अज्ञान लोग उसकी चिकित्सा पूछते फिरतेहैं ॥ और किसी जर्राह से नहीं पूछते कि वह फस्त वा जुलाब वतलावे वा कोई लेपतथा वफारा वतावे ॥ वहुतसे मूर्ख लोग उसके तमाकू के पत्ता, तथा टेसूके फूल बतला देतेहैं उन दवाइयों के करनेसे रोग औरभी बढजाता है उचितहै कि हकीमहो या जर्राहहो रोगी की प्रकृति के अनुसार इलाज करै और पहिले फस्त खुलवावे अथवाजुल्लाव देवै और यह लेप करै ॥

॥ नुसखा ॥

नाखूना, सूखी मकोय, कछुएके अंडेकी जर्दी ४ नग, हरी

सोंफ, मूसेकी मेंगनी, एकतोले. इन सबको पानीमें पीसकर गरम करके लगावे और जो जर्राहकी सम्मति होतो पहिले बफारा देवै और बफ़ारेकी यह दवाहै ॥

॥ नुसखा ॥

सोयेके बीज, सोयेके पत्ते. चमेलीके पत्ते. इमलीके पत्ते. हरी मकोय; पित पापडा, ये सब दवा दोदो तोले ले कर पानीमें औटाकर भफारादेवे. इसीका फाकबांधे जो कुछ आराम दीख पडेतो यही करता रहे और जो इससे आराम नहोतोयही बफारा देवै ॥

॥ नुसखा ॥

संभालूके पत्ते; सूखे महुवे, दोदो तोला इन दोनों वस्तुओंको जलमें औटाकर बफारा देवै ॥ और ऊपरसे इसीका फोक बांधदेवे ॥

तीसरा कारण इस रोगका यहहै कि बहुतसे मनुष्य जलपीकर दौडतेहैं और यह नहीं जानते कि इसमें क्या हानि होगी यह काम बहुतही बुराहै और इसके सिवाय एक बात यहहै किकिसी प्रकृति में रतूवत अर्थात् तरी अधिक होतीहै और ज्वरकीविशेषतामें बाजे मनुष्य पानी रुककर पीतेहै और कोई कोई बहुतजल पीतेहै इस बहुत जलपीनेसे दोवातीन रोग उत्पन्न होतेहै एक तो यहीके नले बढजाते है और दूसरा यहीके अंडकोषों में पानी उतर आताहै तीसरा यह कि तिल्ली फूल जातीहै ऐसा करने से कभी २ अंडकोष बढजाताहै इसकी चिकित्सा हकीमोंने बहुत पुस्तकोंमें लिखाहै और हमारे मित्र डाकटर साहबने इसकी चिकित्सा इस प्रकारसे लिखाहै कि पहिले इसमें नश्तर देवै और उसका सब पानी निकाल कर घाव में कोई ऐसी वस्तु लगावे

कि घाव बहता रहे और सात आठ दिनके बाद अच्छा होनेकी महरम लगावै और यह दवाई खिलावै क्योंकि भीतरसे पानीका विकार दूरहोवेतो घाव सूखकर जल्दी अच्छा होजाताहै ॥ और फिर कभी रोग उभरने नहीं पाता और वह खानेकी दवाई यहहै॥

❁ नुसखा ❁

कुदरूगोंद, वंसलोचन, लीला जहर मोहरा, खताई, केशर रीठा, मुलैठी, ये सब दवा एक २ तोले, अलसी छः माशे, ख तमा के बीज छः माशे; इन सबको पीसकर चार माशे सवेरे खिलावे और ऊपर से एक तोला शहत और चार तोले पानी मिलाकर नित्य पिये ॥ यह रोग इस कारण से भी होता है कि किसी मनुष्य के सोजाक होता है इससे उसकी गुह्यन्द्रिय में पिचकारी लगानी पडती है तो अंडकोषों में पानी उतर आ ता है और वह पानी अंडकोषों के भीतर तेजावके समान मा स को काटता है जब वह मनुष्य सीधा सोता है तो पानी पेडू की ओर ठहरता है तो इस से भीतर का मांस कट जाने से आतें उतर आती है फिर यह रोग असाध्य होजाता है ॥

यह रोग इस कारण से भी होता है कि कोई मनुष्य भो जन करके और जल पीकर बल करे वा किसी से कुश्ती लडे अथवा दीवाल पर चढे और कूदपडे इनके सिवाय और भी कितने ही कारण है कि जिनसे आतें उतर आती हैं पहिले पेडूपर एक गुठली सी होती है फिर मनुष्य के चलने फिरने से कुछ दिनों के पीछे वह आतें अंडकोषों में रहती है जब वह मनुष्य सोता है तो वही आतेंपेटमें चली जाती है और उठते लोटते तथा वैठते समय उसका शब्द होता है उस रोग की चि कित्सा यह है कि एक लंगोट वा अंग्रेजी कपडा बांधा करे

अथवा वे उपाय करें जो पानी के कारण अंडकोषों के प्रकरण में वर्णन कर आये हैं कुछ आश्चर्य की बात नहीं है परमेश्वर की कृपा होतो आराम हो जावे ॥

सफेद दागका यत्न ।

जिस मनुष्य के शरीर में फोडा तथा शस्त्रादिक के घावहुए हो और वे मरहम आदि के लगाने से अच्छे हों गये हों फिर उन घावों के निशान सफेद होगये हों तो उसके यह दवा लगाना चाहिये ॥

❀ नुसखा ❀

मैनसिल, मजीठ; लाख, दोनों हल्दी ये सब दवा बराबर ले महीन पीस घृत और शहत मिलाय दाग के ऊपर लेप करे तो घाव का दाग मिटकर शरीर की त्वचा के सदृश हो जाय ॥

सीप और झांई का यत्न ।

जो किसी मनुष्य के मुख छाती या शरीर पर किसी जगह सफेदी लिये दाग हो तो बहुत से मनुष्य उसको बनरफ कहते हैं उसका इलाज यह है ॥

॥ नुसखा ॥

सफेद सनाय. ककरोंदा की जड, मूली बीज, चौकिया सुहागा कच्चा इन सबको जलमें पीसकरलेपकरै औरजो उससे आराम न होतो यह दवा करै ॥

॥ नुसखा ॥

मूलीके बीजों को पानीमें पीसकर लगावै और धूपमें बैठे इसी प्रकार से सात दिन करै ॥

विदित होकि इस पुस्तक में मैने फोडा फुन्सी शस्त्रादिक के घाव

आदि अनेक रोगोंके यत्न यथा क्रम लिखेहैं परन्तु आंख बनाने की बिधि और हड्डी जोडनेकी विधि और तलवार के उस घावको जो चार अंगुल गहरा हो और उसघावको जो सवेरे हुआ और सायंकाल को अच्छा होगया और गोलीके लगने की वह विधि कि जिससे घाव चीरा न जावे और गोली निकल आवे येइलाज मैंने इस पुस्तक में इस वास्ते नहीं लिखे कि येकाम विना उस्ताद से सीखे नहीं आते क्योंकिये काम बहुत कठिनहै इसमेरे न लिखने का कारण यहहै कि इस पुस्तक में हरेक प्रकार के फोडों का इलाज लिखाहै इस वास्ते मुझको यकीनहै कि इस पुस्तक को हरेक ग्रहस्थी गरीब तथा अमीर अपने २ घर रक्खेंगे क्योंकि इससे बहुत फायदा होगा और जो इसमें वेरोग जिनेंहम निषेध कर चुके हैं उने लिख देते और कोई मनुष्य उन इलाजों को लिखा देख विना समझे इलाज करता और उसरोगी को हानि पहुंचती तो अच्छा नथा क्योंकि ये नेत्रादिक के स्थान बडे नाजुक होतेहैं और उसके सिवाय यह भी वात प्रत्यक्षहै किइस सब शरीर में नेत्रही सुखके दाताहै इस वास्ते हरेक मनुष्य को नेत्रका इलाज करना मुनासिब नहीं है और इन नेत्र रोग के इलाज चतुर क्रियाकुशल जर्राह को करना उचित है ॥

॥ फस्तका प्रकर्ण ॥

अब फस्तका बर्णन कियाजाताहै मनुष्यों को उचितहै कि जिस दिन निराहार हो उसदिन फस्त खुलवावै अब फस्त खोलनेकी तारीखों के गुणागुण लिखतेहैं. दूसरी तारीख कोफस्त खुलवाने से मुखका पीलापन दूरहोता है ॥ २ ॥

तीसरी तारीख को फस्त खुलवानेसे मुखपर पीलापन छा जाता है । ३ ॥

चोथी तारीख को फस्तसे शरीरके दाग धब्बे दूर होजातेहै॥४॥

पांचमी तारीख को फस्त खुलवाने से मनुष्य प्रसन्न रहताहै।
छटी तारीख को मुखकी जोति तेज होती है ॥ ६ ॥
सातवीं तारीख को शरीर मोटा होता है ॥ ७ ॥
आठवीं तारीख को शरीर में निर्बलता उत्पन्न होती है ॥ ८ ॥
नवीं तारीख को शरीर में खुजली होजाती है।
दसवीं तारीख में बल होता है ॥ १० ॥
ग्यारहवीं तारीख कंपन बायु दूर होती है ॥ ११ ॥
बारवीं तारीख को फस्त खुलवाना निषेध है ॥ १२ ॥
तेरहवीं तारीख को शरीर में पीडा उत्पन्न होती है ॥ १३ ॥
चौदहवीं तारीख को नींद नष्ट होजाती है ॥ १४ ॥
पन्द्रहवीं तारीख को वीमारी नहीं होती ॥ १५ ॥
सोलहवीं को बाल सफेद नहीं होता ॥ १६ ॥
सत्रहवीं कोमन अप्रसन्न नहीं होता ॥ १७ ॥
अठारहवीं को हृदय बलवान नहीं होता ॥ १८ ॥
उन्नीसवीं को मस्तक प्रबल होता है ॥ १६ ॥
बीसवीं को सब प्रकार के रोग दूर होते हैं ॥ २० ॥
इक्कीसवीं को प्रसन्नता प्राप्त होती है ॥ २१ ॥
बाईसवीं को कंठ पीडा और दम पीडा दूर होती है ॥ २३ ॥
तेईसवीं को निरबलता अधिक होती है ॥ २३ ॥
चौवीसवीं को शोक नहीं होता है ॥ २४ ॥
पच्चीस को खपकान रोग दूर होता है।
छब्बिसवीं को गुरदे की तथा पसली की पीडा दूर होती है२६
सत्ताइसवीं को बवासीर जाती है ॥ २७ ॥
अट्ठाईसवीं को सब प्रकार की पीडा नष्ट होती है ॥ २८ ॥
उनतीसवीं को भी शुभ जानो ॥ २६ ॥
और तीसवीं तारीख को फस्त खुलवाने से मनको भ्रम और

बेकली नहीं होती ॥३०॥ तीसों तारीख में फस्त खुलवाने का यह भी शुभ-फल कहा ये तारीख मुसलमानी जाननी चाहिये ।

अथवार फलानि ।

शनिबार को फस्त खुलवाना जनून आदि रोगों को दूर करता है रविबार को फस्त खुलवाना सब प्रकार के रोगों को दूर करता है ॥

सोमवार को फस्द खुलवाना रुधिर विकार को शांत करताहै बुद्धवार को निषेध कहा है ।

बृहस्पतिबार को फस्त खुलवाना खफकान रोग को उत्पन्न करता है और शरीर में बादी बढाता है ।

शुक्रबार को फस्त खुलवाना भी जनून रोग को उत्पन्न करता है । इति बार फलम् ।

फस्त नामानि ।

और जिन नसों की फस्त खोली जाती है उन प्रसिद्ध नसों के नाम लिखते हैं ॥

कीफाल.१ बासलीक.२ अकहल.३ हवलुल जरा, ४ असीलम ५ साफन,६ अर्कुन्निसा; ७ ये सात हैं ॥

प्रगटहो कि जो लोग प्रतिवर्ष फस्त खुलवाते वा जुल्लाव लेतेहैं तो उनको अभ्यास वैसाही पडजाता है और यह अभ्यास अच्छा नहीं और फस्त का न खुलवाना उत्तम है, क्योंकि वर्षकी असल ऋतु तीन है और रुधिर भी तीन प्रकारपर होता है ॥ जो फस्त खुलवाने की आवश्यक्ता होतो शीतकाल में मध्यान्हके समय खुलवावे कि उस ऋतुमें रुधिर उसीसमय चक्कर में होताहै फिर ठहर जाताहै और कोई २ हकीम

योंभी कहतेहै किरुधिर जमजाता है ॥ सो वात झूठहै क्योंकि जो मनुष्य के शरीर में रुधिर जम जावे तो मनुष्य जीवे नहीं किन्तु भीतर गरमी होतीहै और रुधिर निकलने में यह परीक्षा नहीं होती कि रुधिर अच्छा है वा बुरा और उस समय में फस्त खुलवाने से मनुष्य दुर्वल होजाता है क्योंकि बुरे रुधिर के साथ अच्छा रुधिर भी निकलता है और ग्रीष्म कालमें रुधिर प्रथक् २ होता है इस ऋतुमें संध्याके समय फस्त खुलवाना उचित है और सवेरे खुलवाने से रुधिर कम होजाता है किंतु खुशकी भी अधिक होती है जिन मनुष्योंको फस्तका अभ्यास पडजाता है और फिर फस्त न खुलवावे तो उनको एक न एक रोग सताता रहता है और वर्षाकाल में रुधिर माहिल होजाता है उस ऋतुमें फस्त खुलवाना योग्य नहीं और गोहकीम की सम्मति होतो खुलवा लेवे और जिन दिनोंमें रुधिर कम होता है तब खुश्की के कारण से कईरोग होजाते हैं और पीडा भी हरएक प्रकार की होती है और जब फस्त खुलवाने की आवश्यकता होतो उसवक्त दिन तारीख ऋतु और समय का कुछ बिचार नहीं किया जाता ।

इति प्रथमभाग ।

॥ श्री ॥

जर्राहीप्रकाश

दूसरा भाग

यंत्रों का स्पष्ट विवरण ।

अनेक प्रकार के शल्य कांटा, पत्थर, बांस आदि जोशरीरके भिन्न भिन्न स्थानों में घुसजातेहैं उनको खींचकर निकालने के लिये यथा उनको देखने के लिये जो उपाय है यंत्र कहलाता है। तथा अर्श, भगंदर, नाडी व्रणादि में शस्त्र; क्षारऔरअग्निकर्मादि के प्रयोग करने पर उनके पास वाले अंगोंकी रक्षा करने के निमित्त तथा वस्ति और नस्यादि कर्म के निमित्त जो उपाय किये जाते हैं वे यंत्र कहलातेहैं तथा घटिका अलाबु· शृंग, [सींगी] जांववोष्ट आदि को भी यंत्र कहते हैं।

यंत्रों के रूप और कार्य ।

यंत्रों की सूरत और उनके कार्य अनेक प्रकारके हैं, इसलिये अपनी बुद्धि से बिचार बिचार कर जैसा काम पडे उसीके अनुसार यंत्र निर्माण करै। इस जगह हम स्थूल स्थूल यंत्रों का वर्णन करते हैं। समझदार वैद्य इनके नमूने के अनुसार अन्यान्य यंत्रों को भी बना सकता है।

स्वस्तिक यंत्र ।

यंत्रों के मुख कंक, सिंह, उलूक,काकादि पशुपक्षियों के मुखके सदृश बनाये
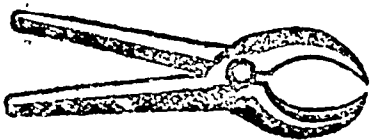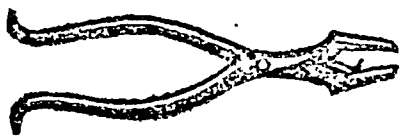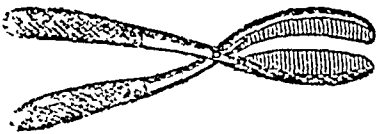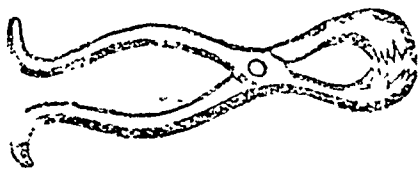
जातेहैं तथा इन यंत्रोंके नामभी आकृति के अनुसार ही रक्खे जाते हैं, जैसे कंकमुखयंत्र, सिंहास्ययंत्र और

इनकी लंबाई प्रायः अठारह अंगुल की होती है और बहुत करके ये लोहे के बनाये जाते हैं (कहीं कहीं हाथीदांत केभी देखेजाते हैं) इनके कंठमें मसूर की दाल के आकारवाली लोहे की कील जडी जाती है। इस के पकडने का स्थान अंकुश की समान टेडा होता है इन्हें स्वस्तिक यंत्र कहते है। इनके द्वारा अस्थिमें लगे हुए शल्य निकाले जाते हैं।

संदंश यंत्र ।
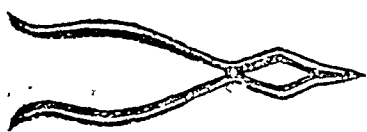
संदंश यंत्र सोलह अंगुल लंबे होते हैं, ये दो प्रकार के होते हैं एक तो ऐसे होतेहैं जिनके अग्रभाग में कील लगी होती है. दूसरी तरह के मुक्ताग्र अर्थात् खुलेहुए मुखवाले होते हैं। इस संदंश शब्द का अपभ्रंश संडासी

मालूम होता है संदंश यंत्रों द्वारा त्वचा शिरा, स्नायु, और मांस में घुसा हुआ शल्य निकाला जाता है। दूसरी प्रकारका संदंश छः अंगुल लंबा होताहै इसको चिमटी कहना बहुत संभवमालूम होता है और यही मुक्ताग्र है, यह छोटे २ शल्य और नाकके बाल, और आंखके पलकों के परवाल खींचने के काम में आता है।

मुचुंडीयंत्र तालयंत्र।

मुचुंडी नाम एक प्रकार का यंत्र होता है; इस में छोटे छोटे दांत होते है। सीधा होता है और पकडने की जगह पर अंगुली यक रूप होता है। यह गहरे घावों में मांस तथा बचेहुए चर्मको निकालने में काम आता है।

तालयंत्र दो प्रकार का होता है. एक द्वितालक, जिस के दोनों ओर मछली के ताल के सदृश और एकतालक इसके एक ओर मछली के तालके आकार का होता है। इसकी लंबाई बारह अंगुल की होती है। यह यंत्र कान; नाक औरनाडीव्रण से शल्यों के निकालने में काम आता है॥

नाडीयंत्र।

वस्ति नेत्र के सदृश नाडी यंत्र सछिद्र होतेहै इनमें प्रयोजनानुसार एकवा अनेक मुख होते है। ये कंठादि स्रोतों में प्रविष्ट हुए शल्योंके निकालने तथाउन्हीं स्थानों में होनेवाले रोगों के देखने में काम आते हैं। तथा शस्त्रकर्म.क्षारकर्म और अग्निकर्म किये हुए स्थानों की औषध का प्रक्षालन के निमित्त सुगमता करतेहै तथा विषदग्ध अंगोंका विष चूसने में उपयोगी होते हैं। इन नाडीयंत्रों की लंबाई. चौडाई, मोटाई, शरीरके स्रोतों के अनुसार कल्पनाकी जाती है।

अन्[illegible] [illegible]।

कंठ के भीतर लगे हु[illegible] [illegible]खने के निमित्त दस

अंगुल लम्बा और पांच पांच अंगुल परिधिवाला नाडीयंत्र उपयोगी होता है ॥

चार कर्णयुक्त वारंग के संग्रहार्थ पंचमुख छिद्रऔर दोकर्णों से युक्त वारंग के समूहार्थ त्रिमुखछिद्रा नाडी यंत्र उपयोगी होता है। वारंग के प्रमाण के अनुसार नाडी यंत्रका प्रमाण होताहै। शरादि दंडके प्रवेश योग्य शिखाके आकार के सदृश कीलक को वारंग कहते हैं।

शल्यनिर्घातनी नाडी
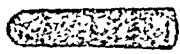
सिरसे ऊपर वाले भागमें जिनका आकार कमल की कर्णिका के समान है और बारह अंगुल लम्बी और तीन अंगुलके छिद्रवाली नाडी शल्य निर्घातनी कहलातीहै।

शल्यदर्शनार्थ अन्यनाडी

वारंगकर्ण के संस्थान आनाह और लंबाई के अनुरोध से और नाडी यंत्र भी शरीरके भीतर प्रविष्ट हुये शल्यों के देखने के लिये बनवाने चाहियें।

अर्शोयंत्राणि।

अर्शोयंत्र (बवासीर का यंत्र) गौके स्तनो के सदृश चार अंगुल लंबा और पांच अंगुल गोलाई में होता है. स्त्रियों के लिये इसी यंत्र की गोलाई छः अंगुलकी होती है क्योंकि उनकी गुदा स्वाभाविक ही बडी होती है। व्याधिके देखनेके लिये दोनों ओर दो छिद्रवाला यंत्र होता है तथा शस्त्र और क्षारादि प्रयोग के निमित्त एक छिद्रवाला यंत्र होता है। इस यंत्र के बीच में तीन अंकके पल और परिधि अंगूठेकेसमान होती है। इस यंत्रके ऊपर आधे अंगु-

ल ऊंची एक कर्णिका होती है जिससे यंत्र बहुत गहराई में नहीं जा सकता है।

अर्शके पीडनके निमित्त एक और प्रकारका यंत्र होताहै उसे शमी कहतेहैं यहभी ऐसा ही होता है, इसमें छिद्र नहीं होते हैं।

॥ भगंदर यंत्र ॥
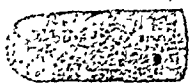
भंगदर यंत्रभी अर्शोयंत्र के सदृश होता है। इसकी कर्णिका छिद्रसे ऊपर दूर करदी जाती है कोई कोई कहते है कि कर्णिका हीन अर्शोयंत्रको ही भगंदर यंत्र कहते है॥

॥ नासायंत्र ॥

नासिका के अर्बुद और अर्शकी चिकित्सा के निमित्त नासायंत्र उपयोग में आता है। इसमें एक छिद्र होता है। छिद्र की लंबाई दो अंगुल और परिधि तर्जनी उंगलीके समान होती है। नासायंत्र भगंदर यंत्रके तुल्य होता है।

अंगुलित्राणक यंत्र।

अंगुलित्राणक यंत्र हाथीदांत वा काष्ठ का बनाया जाता है, इसका प्रमाण चार अंगुल होता है। यह अर्शयंत्र के सदृश गौके स्तनके आकार वाला दो छिद्रों से युक्त होताहै, इससे मुख सहजमें खुल जाता है। इस यंत्रसे अंगुलियों की रक्षा दांतों से होजाती है। इसी से इसका नाम अंगुलित्राणक है।

योनिव्रणेक्षण यंत्र।

यह यंत्र योनिके व्रणोंके देखनेमें काम आताहै इससे इसेयोनिव्रणेक्षण यंत्र कहते है। इस यंत्रके मध्यभागमें छिद्र होतेहै, इस की लंबाई सोलह अंगुल होती है तथा मुद्रिका से बद्ध होता है,

इसमें चार पत्ते होतेहैं इसका आकार कमलके कुसुम के सदृश होता है. इन चारों को मिलादेने से यह नाडी यंत्र के तुल्य होजाताहै। मूल देशमें चतुर्थ शलाका के लगाने से यंत्रका अग्रभाग खुल जाता है।

षडंगुल यंत्र।

नाडी व्रणके अभ्यंग और धोने के लिये छः अंगुल लंबातथा वस्तियंत्र के सदृश गोल गौकी पूछके आकार वाला दो प्रकार का यंत्र काममें लाया जाता है। इसके मूल भाग में अंगूठे के तुल्य और मुख भागमें मटर के तुल्य छेद होता है, इसके मूलमें कोमल चमडेकी पट्टी लगी होतीहै। वस्ति यंत्रमें और इसमें इतना ही अंतरहै कि वस्ति के अग्रभाग में कर्णिका होती है। इस में नहीं होती
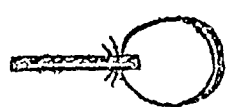
उदकोदर में नलिका यंत्र।

दकोदर में से जल निकालने के लिये दो मुखवाली नली का वा मोरकी पूछकी नाल काममें लाई जाती है। इस का नाम दकोदर यंत्र है॥
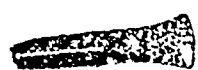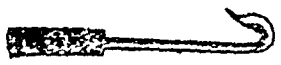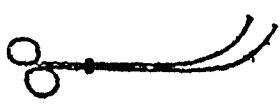
शृंगीयंत्र।

तीन अंगुल के मुखवाला शृंगी यंत्र दूषित वात, विष. रक्त, जल, बिगडा हुआ दूध आदिके खींचने में काम आता है इसकी लंबाई अठारह अंगुल की होती है इसके अग्रभाग में सरसों के समान छेद होताहै। इसका अग्रभाग स्त्री के स्तनोंके अग्रभाग के सदृश होता है।

तुंबीयंत्र।

तुंबी यंत्र १२ अंगुल मोटा होता है, इसका मुख गोलाकार

मूढ गर्भ को निकालने में काम आता है। इसे गर्भ शंकु यंत्र कहते हैं ॥

सर्पफण यंत्र।

अग्रभाग में सर्प के फण के समान यंत्र से पथरी निकाली जाती है इसे सर्प फणास्य यंत्र कहते हैं ॥

शरपुंख यंत्र।

यह वाजपक्षीके सदृश मुखवाला चार अंगुल लंबा होताहै इस से कीडोंके खाये हुए वा हिलते हुए दांत निकाले जाते हैं।

छः प्रकार की शलाका

क्षार और क्लेदादि को दूर करने के लिये छः प्रकार की शलाका काम में आती है इनका अग्रभाग कपास की पगडी के सदृश होता है। पास और दूरके अनुसार गुह्य देश में दस और बारह अंगुल लंबी दो प्रकार की शलाका कामआतीहै। छः और सात अंगुल लंबी शलाका नासिका के लिये तथा आठ और नौ अंगुल लंबी दो प्रकार की शलाका कानकेलिए होती है। कानका शोधन करने में मुख स्रुवा के सदृशहोताहै।

क्षाराग्नि कर्मोपयोगी शलाका

शलाका और जांववोष्ट यंत्रोंमे मोटे पतले और लंबे तीन प्रकार के शलाका और जांववोष्ट यंत्र होते हैं॥ ये क्षार कर्म और अग्नि कर्म में काम आते हैं॥ अंत्र वृद्धि में जो शलाका काम आती है
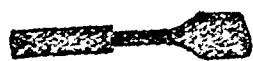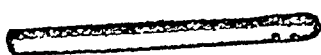
तीन वा चार अंगुल चौडा होता है। इसके बीच में जलती हुई वत्ती रखकर रोग की जगह लगा देने से दूषित श्लेष्मा और रक्त खिंच आता है।

घंटी यंत्र।

यह घंटी यंत्र गुल्म के घटाने बढाने में काम आता है। अलाबु यंत्रके सदृश ही इसमें भी जलती हुई वत्ती रक्खीजातीहैं।

शलाका यंत्र।

शलाका यंत्र अनेक प्रकार के होते हैं इनकी आकृति भी कार्यके अनुसार भिन्न२ प्रकार की होतीहै। इनमेंसे गिडोये के तुल्य मुखवाली दो प्रकारकी सलाइ नाडी ब्रणके अन्वेषणमें काम आती है। और दोप्रकार की शलाका आठनौ अंगुल लंबी मसूर के दल के समान मुखवाली होती हैं ये स्रोतों के मार्ग में प्रविष्ट शल्यों के निकालने में काम आती है॥

शंकुयंत्र।

शंकुयंत्र छः प्रकार के होतेहैं। इनमें से दो सर्प के फण के आकार वाले सोलह वा बारह अंगुल लंबे होतेहैं ये व्यूहन अर्थात् शल्य निकालने के काम में आते हैं। दो शरपुंख (बाज) के मुख वाले दस और बारह अंगुल लंबे चालन कार्य के निमित्त व्यबहार में आते हैं शेष दो बडिशका आकृतिवाले आहरणार्थ शल्य के निकालने में काम आते हैं॥

गर्भशंकु।

आठ अंगुल लंबे अंकुश के समान टेढे मुखवाला स्त्रियों के

उसका बेंटा बीच से ऊपर तक गोल और तले में अर्द्धचन्द्राकार होता है। नासार्श और नासार्बुद को दग्ध करनेके लिये

बेरकी गुठली के मुख वाली सलाई काम आती है।

क्षारकर्ममें शलाका।

क्षार औषध लगाने के लिये तीन प्रकार की सलाई होतीहै। इनका मुख नीचे को झुका होता है। ये आठ अंगुललंबी और कनिष्ठका, मध्यमा तथा अनामिका केनखके समान परिमाणयुक्त होती है।

मेढ्रशोधन शलाका।

मेढ्र शोधन और अंजनादिमें उपयोगी शलाकाओं का वर्णन अपने अपने प्रकरण में कर दिया है।

उन्नीस प्रकारके अनुयंत्र।

अयस्कांत (चुंवकपत्थर),रज्जु वस्त्र,पत्थर,रेशम,आंत,जिह्वा, बाल, शाखा, नख, मुख; दांत; काल, पाक, हाथ, पांव, भय और हर्ष ये १९ प्रकार के अनुयंत्र हैं। निपुण वैद्य अपनी बुद्धि से विवेचना करके इनसे भी काम ले सकता है।

यंत्रोंका कर्म।

निर्घातन (ताडना और परिपातन), उन्मथन (उखाडना) पूरण, मार्ग शोधन, संव्यूहन (निकालना) आहरण, बन्धन; पीडन, आचूषण उन्नमन (उठाना), नामन, चालन भंग, व्यावर्तन और ऋजुकरण (सीधा करना) ये यंत्रों के कर्म हैं।

कंकमुखयंत्रों को प्रधानता।

कंकमुखयंत्र सुखपूर्वक निर्वर्तित होता है, शरीरमें प्रवेश कर जाता है। ग्रहणयोग्य-शल्यादि को खींचकर निकाल लाता है

तथा शरीरके सब अवयवों में उपयोगी होता है। ऐसे निवर्तनादि चौदह कारणों से कंकमुखयंत्र सब यंत्रों श्रेष्ठमें है।
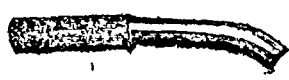
शस्त्रों का वर्णन।

शस्त्र बहुतायत से छः अंगुल लंबे होते हैं तथा बीस प्रकारके होते हैं। ये शस्त्र बहुत निपुण कारीगर से बनवाये जाते हैं, ये बहुत सूक्ष्म, पैने और ऐसे बनवाने चाहियें जो लगाने वा निकालने में टूट न जावें। इनकी सूरत बहुत सुन्दर.धार पैनी, रोगोंके दूर करनेमें समर्थ अकराल (भयकर नहो) सुग्रह(सुखपूर्वक पकडी जाय), हो तथा शस्त्रका मुख बहुत ही सावधानी से बनाया जाय। सब शस्त्र नील कमल की कान्ति के समान चमकील और नामानुसार आकृतिवाले हों, इनको सदा पास रक्खे,शस्त्रों के फल कुल लंबाई से अष्टभाग होने चाहिये। इन शस्त्रों में से स्थान विशेष में एक एक करके दो वा तीनभी उपयोग में आते हैं।

मंडलाग्र शस्त्र।

मंडलाग्र शस्त्र के फल की आकृति तर्जनी के अन्तर्नख के समान होती है। यह शस्त्र पोथकी, शुंडका और वर्त्मरोगादि में लेखन छेदन में काम आता है।

वृद्धिपत्रादि शस्त्र।

वृद्धिपत्र शस्त्र का आकार छुरे के समान होता है यह छेदन भेदन और उत्पाटन में काम आता है। सीधे अग्रभाग वाला वृद्धिपत्र ऊंची सूजन में काम में लाया जाता है। गंभीर सूजन में वह वृद्धिपत्र काम में आता है जिसका अग्रभाग पीठ की तरफ झुका होता है। उत्पलपत्र लंबे मुखका और अध्यर्धधार शस्त्र

छोटेमुखकाहोताहै। ये दोनों छेदन और भेदनमें काम आतेहैं।

सर्पास्य शस्त्र।
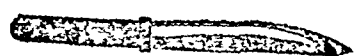
सर्प के मुख के सदृश सर्पास्यशस्त्र नाक और कान के अर्श को छेदन के काम में आता है. फलकी और इसका परिणाम आधे अंगुल होता है
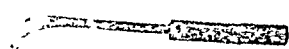
एषण्यादि शस्त्र।

नाडीव्रण की सूजन का अन्वेषण करने के लिये एषणी शस्त्र उपयोगी होता है यह छूने में कोमल और गिडोये के मुख की आकृतिवाला होता है।

नाडीव्रण की गति का भेदन करने के लिये एक प्रकार का दूसरा एषणीशस्त्र होताहै इसका मुख सूची के सदृश और मूल सछिद्र होता है।

बेतसयंत्रनामक एषणी बेधने के काम में आताहै तथाशरारी मुख और त्रिकूर्चक नामक दो प्रकार के एषणी स्रावकार्यमें काम आते हैं। शरारी एक प्रकारका पक्षी होताहै।
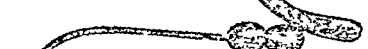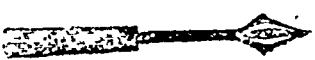
कुशपत्रादि।

कुशपत्र और आटीमुख नाम के दो शस्त्र स्राव के निमित्त काम में आते हैं। इन के फलका परिणाम दो अंगुल होता है।

कुशपत्र और आटीमुख के समान अन्तर्मुख नामक शस्त्र स्राव के निमित्त उपयोगमें लाया जाता है इसका फल डेढ अं-

गुल होता है। कुशाटा के सदृश ही एक अर्द्धचन्द्रानन शस्त्र होता है यह भी स्राव के निमित्त काम आता है। एक ब्रीहिमुखनामक शस्त्र होता है यह भी शिराव्यध और उदरव्यध में काम आता है इसके फलका प्रमाण भी डेढ अंगुल है।

कुठारी शस्त्र।

कुठारी नामक शस्त्र का दंड विस्तीर्ण होताहै इसकामुखगौ के दांत के समान और आधा अंगुललंबा होता हैं। इससे अस्थिके ऊपर लगी हुई शिरा बेधी जातीहैं।

शलाका शस्त्र।

शलाकाशस्त्र तांबे का बनाया जाताहैं इसके मुखकी आकृति कुरुवक के फूल के मुकुल के समान होता हैं इससे लिंगनाश कफसे उत्पन्न हुए पटल नामक अर्थात् नेत्र रोग का वेधन किया जाता है॥

अंगुलि शस्त्र।

एक प्रकार का शस्त्र अंगुलिनामक होता है। इस का मुख मुद्रिका के सदृश निकला हुआ होता है. इसके फलका बिस्तार आधा अंगुलहै।यह वृद्धिपत्र वा मंडलाग्रकेसमान होता है। इसका परिमाण वैद्यकी तर्जनी अंगुली के अगलेपोरुए के बराबर रक्खा जाता है, इसको प्रयोग के समय डोरे से बांधकर मणिबंध (पहुंचा वा कलाई)से बांधलेना चाहिये। यह कंठ के स्रोतों में उत्पन्न हुए रोगों के छेदन और भेदन में काम आता है॥

वंडिश शस्त्र ।

वडिश नामक शस्त्रका मुख अंकुश के समान अच्छीतरह टेढा होता है । यह शुंडिका,अर्म और प्रतिजिहूवादि रोगों को ग्रहण करने में काम आता है ।

करपत्र शस्त्र ।

करपत्र इसे करौत वा आरीभी कहते हैं, यह दस अंगुल लंबी और दो अंगुल चौडी होती है । इसमें छोटे छोटे दांत होते हैं जिनकी धार वडी पैनी होती है । इसका मुष्टिस्थान सुंदररूप से वद्ध होता है, यह अस्थियों के काटनेके काम में आता है ।
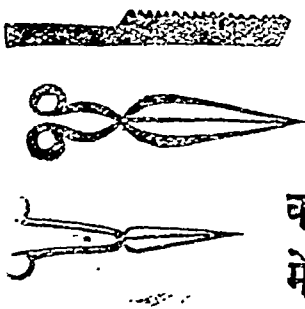
कर्तरी शस्त्र ।

कर्तरीको कैंचीभी कहते हैं । यह नस सूत्र और केशोंके काटने में काम आता है ।
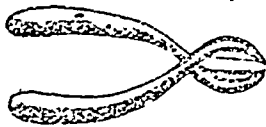
नखशस्त्र ।

नखशस्त्र इसे नहरनी भी कहते हैं । यह दो प्रकार की होती है, एककी धार टेढी और दूसरी की सीधी होती है । यह नौ अंगुललंबी होती है । इस से कांटे आदि छोटे छोटे शल्य निकालेजातेहैं । नख काटे जातेहै । भेदन भी कियाजाताहै ।

दंतलेखन शस्त्र ।

दंतलेखन शस्त्रमें एक ओर धार होती है और दूसरी ओरप्रवद्ध आकृति होती है । इसमें चार कोने होतेहैं, इससे दांतोंकी शर्करा निकाली जातीहै ।

सूचीशस्त्र ।

सीवन अर्थात् सीनेके लिये तीन प्रकारकी सुई बनाईजाती है, ये सुईयां गोल, पाशमें गूढ और दृढ होतीहै । जहांमांस मोटा होता है वहां त्रिकोण मुख वाली तीन अंगुललंबी सुई उपयोग में आती है जहां मांस कम होताहे, तथा अस्थिऔर संधिमें स्थित व्रणोंके सीनेके लिये दो अंगुललंबी सुई काममें लाई जाती है, और तीसरी प्रकारकी सुई जो ढाई अंगुललंबी धनुष के समान टेढी, और व्रीहिके समान मुखवाली पक्वाशय आमाशय और मर्मस्थान के व्रणों के सीने में काम आती है॥
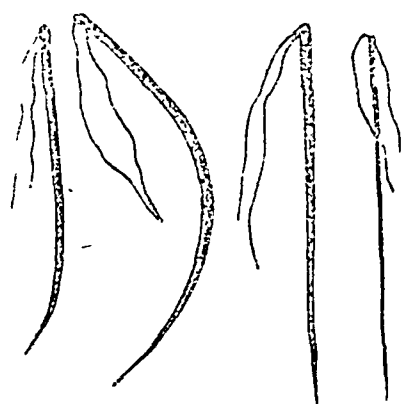
कूर्चशस्त्र

ये सुईयां जो चारों ओरसे गोल, और लंबाई में चार अंगुल होती है। तथा सात वा आठ एक काष्ठमें दृढरूप सेलगी हुई सूची कूर्च कहलाती है। ये नीलिका व्यंग और केश बातादिरोगों में कुट्टन के लिये प्रयुक्त की जाती है।

आधे आधे अंगुलवाले गोलाकार आठ कंटकों से युक्तशस्त्र को खज कहते हैं इसको हाथ से बिलोडित करके नासिकासे रक्तस्राव किया जाता है।

कर्णव्यधशस्त्र

कान की पालियों के वेधने के निमित्त मुकुल के आकार वाला यूथिका नामक शस्त्र काममें लाया जाता है।

आराशस्त्र ।

यह आरा नामक शस्त्र अर्धांगुल गोल मुखवाला, तथा उस गोलाकार के ऊपर का भाग अर्धांगुल युक्त चतुष्कोण होताहै।

पक्व और अपक्व का संदेह हो ऐसे स्थान में इस आरा शस्त्र द्वारा ही सूजन का वेध किया जाता है। अत्यन्त मांसयुक्तकर्णपाली वेधन में यही शस्त्र काम आता है।

कर्णवेधनी सूची।

चार प्रकार की और सुइयां होती हैं जो कर्णवेधमें कामआती हैं, ये तीन अगुंल लंबी होती है और इनके तीन भागछिद्रों से युक्त होते हैं यह बहुत मांसवाली कर्णपाली के वेधमें काम आती है।

अलौह शस्त्र

यहां तक प्रधान लौह निर्मित यंत्र और शस्त्रों का वर्णन हो चुका है; वैद्यको उचित है कि बुद्धिसे योग्य और अयोग्य को विचार करके इन शस्त्रों को काम में लावे। अब लोह वार्जित शस्त्रोंका वर्णन करते हैं जोक, क्षार अग्नि, केश, प्रस्तर [पत्थर], नखादि अलौह शस्त्रों द्वारा तथा अन्याय यंत्रों द्वारा भी शस्त्र कर्म किया जाता है, इसी से इन्हें अनुशस्त्र कहते है।

शस्त्रों का कार्य।

उत्पाटन में ऊर्धनयन यंत्र, पाटन में वृद्धि पत्रादि, सेवन में सूची, लेखन में मण्डलाग्रादि, भेदन में एषणी व्यधन में वेतसादि, मंथन में खज; ग्रहण में संदंश और दाहमें शलाकादि शस्त्रों का प्रयोग होता है।

शस्त्रों का दोष।

भोंतरापन, टूटापन, बहुत पतलापन, बहुत मोटापन, बहुत छोटापन, बहुत लम्बापन, टेढापन, बहुत पैनापन ये आठ दोष शस्त्रों में होते हैं।

शस्त्रों के पकडने की विधि ।

छेदन; भेदन और लेखन कर्म के लिये बेंटे और फल के लिये बीच में तर्जनी. मध्यमा और अंगूठे इन तीन उंगलियों से शस्त्र को पकडना चाहिये परन्तु शस्त्र कर्म करने के समय सब ओर से ध्यान खींचकर इसी में लगादेना चाहिये । विस्रावण के लिये शरारी मुखादि शस्त्रों को बेंटे के अग्रभाग में तर्जनी और अंगूठा इन २ उंगलियों से पकडे । व्रीहिमुख शस्त्र के बेंटे के अग्र भाग को हथेलीमें छिपाकर उसको मुख के पास पकड कर काम में लावे । सब प्रकार के आहरण यंत्र मूल में पकडकर उपयोग में लाये जाते हें इसी तरह अन्य शस्त्रों को भी प्रयोजन के अनुसार यथोपयुक्त स्थानों में पकड कर काम में लाना चाहिये ॥

शस्त्रकोश ।

शस्त्रोंके रखनेके लिये नौ अंगुल चौडा औरबारह अंगुललंबा कोश रेशमी वस्त्र. पत्ता.ऊनकौषेय या कोमलचमडेका बनवाना चाहिये कोशके भीतर शस्त्रोंके रखने के लिये जुदे जुदे सुन्दर शस्त्रानुरूप घर (खाने) बनवाने चाहियें जिनमें ऊन आदि बिछादिये गये हों इनमें सब प्रकार के शस्त्रों का संचय होना चाहिये ॥

रुधिर निकालने के उपाय ।

रुधिर निकालने के तीन उपाय हैं, जोक. सींगी या नशतर इनमेंसे सींगी लगाना बहुतलाभ कारकहै क्योंकि इससे जितना रुधिर निकालना हो,उतना ही निकलता है,जिसस्थानसे निकालनाहो वहीं से निकालता है और रोगी भी निर्बल नहीं होने पाता है ॥

जोक द्वारा रुधिर निकालने में कर्तव्य ।

जोकों के गिरपडने के पीछे रुधिरको जारी रखनेका यह उपाय है कि प्रथम ही जमे हुए रुधिर को स्पंजसे साफ करे फिररोटी और पानी की पुलटिस बनाकर गरम गरम बांधदेवे औरजब तकरुधिरके निकालनेकी आवश्यकताहो तब तक आधे आधे घंटे में पुलटिस वदलता रहे ।

अगर जोक के डंक से देर तक रुधिर जारीरहेऔर साधारण उपायों से बन्द नहो तो डंक लगने की जगह के एकओर खालमें एक बारीकसुई घुसाकर दूसरी ओरसे निकालले और एक पक्काडोरा वा रेशम सुईके दोनों सिरोंके नीचे बांधदे वा लपेट दे । ऐसा करनेसे रुधिर बंद होजायगा । फिर तीन चार दिन पीछे डोरे को काट डाले और सुई को सावधानी से निकालले ।

इस उपायसे भी यदि वंद नहो तो लोहे के बारीक तार को इतना गरम करोकि वह सफेद हो जाय फिर इस तार को उसमें घुसा दिया जाय इस उपायसे रुधिर निकलना बहुत जल्द बंद हो जाता है ।

सींगी का वर्णन

सींगी लगानेके मामूली असबमौजूद नहोनेपर एक छोटासा आबखोरा या प्याला चाहका, एक टुकडा जलते हुए कागज वा सन का और एकपैना उस्तरा वा चाकू काममें लावो।इसकी यह तरकीब है कि जलते हुए सन वा कागजको उक्तप्यालेमें रखदे और जिस समय वह वर्तन गरम हो जावे और उसके भीतर की वायु पतली हो जावे तब उस वर्तन को उस स्थान

पर उलट कर लगादे जहांसे रुधिर निकालना है; जिस समय उस बरतन के भीतर की खाल रुधिर के मुंजमिद होने से लाल रंग की होजाय तब बरतन को हटाकर उस्तरे वा छुरी से खाल में शिगाफ़ (चीरा) लगादे और उक्त बरतनकोपाहिले की तरह फिर उसके ऊपर ढकदे । इसी तरह बार बार करता रहे जब तक कि उतना रुधिर न निकल चुके जितने कीनिकाल ने की आवश्यकता है ।

फस्द का वर्णन ।

फस्द खोलन की जगह कोहनी के खम पर से और पंजे के पांवके ऊपर ऊपर से होती है परंतु यह डर अवश्य रहताहै कि नश्तर लगाने के समय कहीं किसी रग पर घाव न हो जाय ।

रगों की स्थिति ।

बांह के ऊपर से नीचे तक और बांह की तरफ एक बडीरग अंगूठ की जड से कंधे तक है और बांह के भीतर की तरफ एक और रग उतनी ही बडी उँगली से कोहनी तक है और एक तीसरी रग अंदाजन उतनी ही बडी अगले हाथ के ऊपर कोहनी के नीचे ही दिखाईदेतीहै वहां से आगे उसकी दो शाखा हो गई है,एक शाखातोभीतर की रगकी तरफऔर दूसरी बाहरकी रगकी तरफ उसजगहपर है जहां जोड होता हैबीच वाली रग के बाहर की शाखा में फस्द खोलना चाहिये ।

उक्त रग के खोलने की विधि ।

अपनी उंगली के किनारे को उस रग पर रक्खे अगरउसरग के नीचे कोई नस हो जो फडकन से मालूम हो सकतीहै और कोई दूसरी रग भी होतो बहुत सावधानी से उस रग की फस्द

खोले। औरबीच की रगके भीतर वाली शाखामें इस लियेफस्द नहीं खोलते कि बांह की बड़ी शिरियान ऊपर से नीचे तकउस रग के पीछे होती है ॥

बांह से रुधिर निकालने की तरकीब ।

बांह में जिस जगह रुधिर हो वहांसे कुछ ऊपर चौडी निवाड या फीता बांधे और एक हाथ के फासले पर ऊपर की तरफ नीचे को दो फेर देकर बांध दिया जाय इसमें डेढ गांठ लगानी चाहिये जिससे खोलने में सुगमता रहे! इससे तीन लाभ हैं एक तो रुधिर उलटा नहीं गिर सकता है; दूसरे रग फूलने नहीं पाती, तीसरे रुधिर अच्छी तरह निकल जाता है।

जब रुधिर आवश्यकतानुसार निकल जाय तब लगे हुये रुधिर को स्पंज से साफ करे और एक कपडे की चार तहकरके गद्दी बना कर एक पट्टी से आठ [8] की तरह बांधदे पर बहुत खींच कर न बांधे। कस कर बांधने में यह हानि है कि रुधिर उन्हीं रगों में उतर जाता है जिनमें चीरा नहीं लगाया गया है तथा रगें फूल जाती हैं और इस कारण से वह रग फिर फट जाती है जो बांधदी गई है।

पांव में फस्द खोलने के लिये टांग के नीचे एक पट्टी खैंच कर टांग में बांधदे और रगों के फूलने पर सब से बडी रगमें जो पांवके ऊपर हो उसमें लंबाईकी तरफ नश्तर लगाया जावे। आवश्यकतनुसार रुधिर निकलने के पीछे उस पट्टी को खोल कर रोगी को पांव फैला कर लिटादे और घावको लिंटकीगद्दी और स्टिकनिंग प्लास्टर का फाया लगा कर बांध दिया जाय।

चोट का वर्णन ।

देह के किसी अवयव पर भारी बोझके गिरने से अथवा अकस्मात किसी ऊंची जगह से गिर पडने से, प्रथम ही जिस जगह चोट आती है वहां सूजन हो जाती है, फिर उसकारंग काला पड जाता है, इस का कारण यह है कि चोट के लगने से खाल के भीतर की छोटी रगें फट जाती है और उनमें से रुधिर निकल कर खाल के भीतर दौडता है फिर दो दिन पीछे उसका रंग स्याही लिये हुए हरा हो जाता है और यदि रुधिर वाहर निकलने लग जाता है तो घाव होजाता है ॥

चोट पर लगाने का सर्वोत्तम औषध ।

गरम तर पुलटिस वा भीगी हुई फलालेन प्रति दिन बांधी जावे । अगर चोट अधिक लगी हो और किसी जोड के पास हो और वह मनुष्य युवा हो तो दर्द कम करने के लिये बारह जोक लगावे और उसके पीछे गरम तर पुलटिस वा फलालेन बांध दे ।

नकसीर का वर्णन ।

नाक से यदि अपने आप रुधिर निकलने लगे तो उसके बंद करने का यह उपाय है कि रोगी को सीधा बैठा कर उस की नाक को ठंडे पानी से वा सिरका और पानी मिला कर ठंडा करे वा नथनों के द्वारा सुंघावे वा कुटा हुआ वर्फ लगावै । यदि इस उपाय से नकसीर बंद न हो तो २० ग्रेन फिटकरी को मेज के दो ग्लास भर पानी को वर्फ में मिला कर पिचकारी से नाक में डाले । इसमें यहभी उचितहैकि गर्दन का कपडा ढीला कर दे और ठंडे पानी का तरेरा सिर और

नाक पर डालो। जो मनुष्य लेट रहा हो उसे एक करवट कर देना चाहिये यदि इससे भी रुधिर बंद न हो तो नाक पकड कर हाथ से दाब देनी चाहिये यदि रुधिर बंद न हो तो साफ रुई वा कपडा नाकमें भर कर हाथ से दबाना चाहिये। यदि किसी तरह भी रुधिर बंद न हो डाक्टर को दिखाना उचित है।

मोचका वर्णन।

मोचको अंग्रेजी में स्प्रेन (Sprain) कहते हैं, यह चोट बहुधा चलते चलते पांवके ऊंची नीची जगह में पडने से, या यकायक मुडजाने से हाथ की कलाई में झटका लग जाने से हुआ करती है, प्रायः पांवके टकने (Ankle Joint) और पहुँचे या कलाई (Wrist Joint) के जोडों में आया करती है। इसके आजाने से दर्द बहुत होने लगताहै धरती पर पांव नहीं टेका जाताहै सूजन भी पैदा हो जाती है।

मोच का उपाय।

मोच आजाने पर उस देहके अवयवको हिलने झुलने नदे और रोगीको चार पाई पर लिटा दे तथा गरम और तरफलालेन वारवार कई घंटों तक उस पर बांधतारहै और गरम रोटी और पानी की पुलटिस सोते समय बांधदे और कई दिन तक उससे काम न ले। जो दर्द की अधिकता हो तो दो एक दिन ऊपर लिखे उपाय को काम में लाता रहे। दर्दमें कमी होनेपर सिरकेकी पुलटिस या वाश गोल्ड एक्सट्रक्स लगावै। जब दर्द बिलकुल जाता रहे तबभी चलने फिरनेकी जलदी न करै क्यों कि अकसर ऐसा होताहै कि मोच आनेके कुछ समय पीछे सूजन आ जातीहै उस समय बहुत सावधानी से स्ट्रेप प्लास्टर की पट्टी लपेट कर लिनिन का रोलर बांध दिया जावै॥

यदि हाथ में मोच आई होतो गले में रुमाल बांधकर उस हाथ को लटका दो ॥

हड्डी टूटने का कारण ।

हड्डी अधिक चोट लगने से टूटा करती जैसे लाठीकीचोटसे, किसी छत वृक्षया ऊंची जगह पर से गिरने से, गाढी के नीचे दब जानेसे, ऊपर से कोई भारी पत्थर आदि देहपर गिरनेसेतथा ऐसे ही और और कारणों से हड्डी टूट जाया करतीहै इसे अंग्रेजी में फ्रेकचर आँफ वोन्स कहते हैं ।

रोगी को ले जाने की विधि ।

यदि जांघ वा टांग की हड्डी टूट गईहोतोएकडोलालाकर रोगी के पास रखदे और रोगी को अधर उठाकर उसमें लिटा दे इस काम के लिये वहुत आदमी दरकार होते हैं क्योंकि जितने आदमी अधिकहोंगे उतनाही रोगीआसानीसेविनाहिलायेचलाये उठाया जायगा यदि डोला न मिलसके तो चार डंडों को इधर उधर बांधकर बीच में कंबल फैलाकर कंबल के किनारे उन डंडों से बांधकर चारपाई के सदृश करले उसपर रोगी को ले जाते समय अच्छी टांगको टूटी हुई टांग से मिलाकर रूमाल से वांध देवे ऐसा करने से टूटे हुए अवयवको बहुत सहारा हो जाताहै।

हड्डी टूटने के भेद ।

हड्डी टूटने के दो भेद हैं एक साधारण अर्थात् सिम्पिल फ्रेक्चर (Simple Fracture) दूसरा घावयुक्त अर्थात् (Compound Fracture) कम्पाउन्ड फ्रेकचर ।

साधारण उसे कहते हैं जिसमें किसी लाठी आदि की चोट से हड्डी तो टूट गई होपरन्तु खालफटकर रुधिर न निकलाहो

घावयुक्त वह है जिसमें से रुधिर निकलने लगताहै और हड्डी का मुंह खुलकर घाव होजाताहै इस दूसरी प्रकारमें मवादवहुत जल्द पड जाता है हड्डीके जुडने में भी देर लगती है दर्द सूजन ज्वर उत्पन्न होजाते हैं यहां तक कि रोगी मर भी जाता है ।

बालकों की टूटी हुई हडियां शीघ्र जुड जाती है वृद्ध मनुष्य की हड्डियों के जुडने में देर लगती है ।

पसलियों का वर्णन ।

जिस आदमी की हडी टूट जाती है उसको सांस लेनेमें छाती के पहलू में कसक मालूम देती है । और स्थान पर हाथ रखकर रोगी के श्वास खीचने के लिए कहा जावे तो पसली के टूटे हुए सिरे इधर उधर को हिलते हुए मालूम होते हैं ।

पसली टूटने का इलाज ।

जो एक ओर की एक से अधिक पसलियां टूट जावें तो फलालेन वा लिनिन का रोलर छः गज लंबा और चार इंच चौडा छाती के ओर पास खेंच कर बांधदे जिससे सांस खींचते समय पसलियां हिलने न पावें और रोलर के दोनों सिरे सींदेना चाहिये अगर हर लपेटा सीं दिया जाय तो बहुत अच्छा है, यह रोलर महिने में दो वार खोलना उचित है ।

और जब तक रोगी को दर्द की शिकायत हो तब तक कुछ न करना चाहिये जुलाव देकर आंतों को खूब साफ करदेना चाहिये तथा ऐंटीमोनियम वाइन की वीस बूंद और लाडनमकी दस बूंद एक ग्लास पानी में मिलाकर दिनभर में चार चार वार पिलावे ।

हंसली की हड्डी के टूटने का वर्णन ।

हंसलीकी टूटी हुई हड्डीका साबत हड्डीके साथमिलानाकिया

जायतो उस एक गुमटी सी मालूम होती है और उस टूटी हुई हड्डी पर हाथ रखने से एक भिन्न प्रकार की हरकत मालूम होती है। पीछे को कंधा झुकानेसे रोगीका मुख बद सूरत हो जाता है इसी तरह पर ढीला छोडने पर भी बद शकली दिखाई देती है। इन लक्षणों से हंसली की हड्डी टूटने का अनुमान होता है।

हंसली टूटने का इलाज।

हंसली के टूटने पर बगल के भीतर ऊंचेकी ओर दो मुट्ठी मोटी और चार मुट्ठी चौडी एक गद्दी दोनों तरफ बांधदीजावै और एक फीता दोनों सिरों पर बांध कर एक सिरेको पीठ पर निकालकर दूसरे सिरे को छाती के साम्हने लाकर उसगद्दी पर बांधाजावे कि जिससे गर्दनके साम्हने की ओर कुछ तक लीफ नहो फिर एक पट्टी के एक वा दो लपेट देकर कोहनी के कुछ ऊपर बांह में बांध देवे और उस पट्टी के दो सिरों में से एक सिरा छाती के आगेसे और दूसरा पीछे लेजाकर बांधदिये जावें और कोहनी तकहाथ गलेमें रूमाल बांधकर रक्खेजिससे कंधा उठा रहे। यह पट्टी एक महिने में खोलनी चाहिये।

कोहनी से ऊपर की हड्डी का वर्णन।

बांह की हडीके टूटने की यहपहचानहै कि उस टूटे हुए स्थान में विपरीत हरकत होने लगती है और रोगी कोहनी और अगले हाथ को उठा भी नहीं सकता है॥

टूटी बांहका इलाज॥

बांहकेलिये गद्दी और तीनतीन अंगुलचौडे इसप्लिंट (Splint) लेकर एक तो कंधेसे कोहनी के झुकाव तक एक कंधे के पीछे

से कोहनी के किनारे तक, एक बगल से कोहनी की भीतर वाली नोंक तक और एक कंधे से कोहनी की बाहर वाली नोक तक बांधी जावे गद्दियां स्लिपन्ट से दो इंच अधिक लंबी होनी चाहिये. जिससे उनको उलट कर स्लिपन्ट के किनारे सीं दिये जावें जिससे स्प्लिन्ट फिसलने न पावै।इसका विशेष वर्णन अन्य ग्रंथों में लिखा है लकडी का स्लिपन्ट न मिलेतो कागजकी कापियां, मोटा बोर्ड, बांसका पंखा, चिकऔर गेंहू की नाली आदि काम में लाये जाते है।

कोहनी से नीचे की हड्डी का टूटना।

कोहनी से नीचे दो हड्डी हैं इनमें से अगरएक टूट जायतो यह अनसमझ आदमी को मालूम भी नहीं देती है क्योंकी दूसरी सावत हड्डी स्प्लिन्टकी तरहकाम देती है और उस टूटीहुईहड्डी को अपनी असली सूरत पर स्थित रखतीहै अगरदोनों हड्डियां टूट जाय तो स्पष्ट मालूम होने लगता है। इस दशा में गद्दी लगे हुए दो स्प्लिन्ट ऐसे लंबे लावै कि उंगली की नोक से कोहनी के झुकाव तक साम्हनेकी और कोहनी की नोंक तक पीछेकी ओर पहुँच जावे अगले हाथको झुकाकर एक स्प्लिन्ट आगे और एक [illegible] लगाया जावै और उंगली से कोहनी के झुकाव तक रोलर से कसकर बांधदिया जावे।

उंगलियों के टूटने का वर्णन।

जो उंगली टूटगई हो तो पतली लकडी का एक टुकडा, या कडा टुकडा कागज के पट्ठे का उंगली के बराबर लेवे और सीधी तरफ उंगली पर रखकर एक इंचचौडे रोलरसेएक सिरेसेदूसरे

सिर तक बांध देवै, हाथ एक महिने तक गलेमें लटका रहने दे और उस हाथ से काम न लेना चाहिये ।

उंगली को बहुत दिन तक सीधी रखने से जो उसमें से च लने फिरने की शक्ति जाती रहती है उसका यह उपाय करे कि प्रति दिन हाथ को गरम पानी में रखकर उंगलियों को धीरे, धीरे आगे पीछे को मोडता रहे जिस से वह अच्छी तरह मुडने लगे

जांघ की हडी का वर्णन ।

अगर जांघ कूल्हे वा घुटने से कुछ दूर पर टूट जाय तोउसका मालूम हो जाना सुगम है क्योंकि टूटी हुई जगह टेढी पड जाती है और रोगी भी टाग को उठा नही सकता है, हड्डी के मांस में घुसजाने से वहां दर्द भी होने लगता है और रोगी अपनी टांग को हिलाना नहीं चाहता।

अगर स्पिलन्ट मिल जाय तो वह जांघ मे बांध दी जाय. अगर न मिले तो रोगी को एक तख्त पर लिटा दिया जाय और दो मोटी गद्दी ऐसी लंबी चौडी बनवाई जावेंकि एक तो अच्छे घुटने के भीतर और दूसरी उसीके टखने के नीचे अच्छी तरह से आजावैं और देह की तरह दोनों अवयव सीधे [illegible] पास रक्खे जावें और दोनों जांघ उन गद्दियों पर अच्छी [illegible] फैली रहें। एक आदमी दोनों कूल्हों को ऐसी रीति से पकडले कि हिलने न पावे, दूसरा आदमी टूटी जांघको दोनों हाथोंसे तख्त पर पकडे रहे और धीरे धीरे उसको नीचे उतारे पर वह जांघ टेढीन होने पावे। इस तरह दोनों जांघों को मिलाकर तीन गज लंबा रोलर धीरे धीरे लपेट दिया जावे ।

पांवकी उंगली का वर्णन ।

पांवकी उंगली के टूट जाने पर कागजका एक मोटा पट्ठा उंगली के भीतर की ओर कम चौडे रोलर से वांध दिया जावे और रोगी को चार पाई पर लिटाकर उसको हिलने चलनें नदे

उतरे हुए पांवके अंगूठे का चढाना ।

जो अंगूठा उतर गया होतो एक नरम चमडा अंगूठ कीगांठ पर लपेट दे और उसके ऊपर एक मजबूत निवाड के टुकडकी डेढ गांठ लगादे अथवा अंगूठे और उंगालियों के बीच मेंसेखें-चा जावै, जव अंगूठा चढ जाय तव गद्दी बनाकर बंधेज बांध दिया जाय ।

जहरीले कीडों के काटने का इलाज

मच्छर मक्खी आदिके काटने से एक बहुत छोटी गुमटी सीहो जाती है और उसमें ऐसी जलन होती है कि जोर से खुजाना पडताहै ।

मच्छरों के काटने से मैलरिया फीवर अर्थात्—जूडी तिजारी एकातरा आदि ज्वर पैदा हो जाते हैं ।

इसमें काटे हुए स्थान को पकड कर मसल डालना चाहिये जिससे उसका डंक निकल जाय । अथवा एक कपडे को नमक और पानी में भिगोकर उसजगह पर रखदे । जो दर्द की अधिकता होतो आधी मटरको बरावर पारे की मरहम उंगली पर लगाकर काटे हुए स्थान पर रिगडदे ।

वर और शहद की मक्खी ।

इनके काटने से सूजन पैदा हो जाती है और जलन भी बहुत ही होती है। इस पर हिरन का सींग घिसकर तेलमें मि-

लाकर लगाना चाहिये अथवा पिसा हुआ ऐपीकाक्यूऐना और पानीके साथ पुलटिसवना कर काटने की जगहपर रखदेने से सूजन मिट जाती है।

इस पर लिकर एमोनिया (LiquorAmonia) का मलना भी गुणदायकहै। पर इस दवा से आंख और होटों को बचाना चाहिये, क्योंकि इन स्थानों के आर पास इसके लगनेसे बडी जलन पैदा होजाती है। काटनेकी जगह प्याज काटकर मल देने से भी दर्द मिट जाता है।

विच्छू का इलाज।

जब बिच्छू काटता है तब अपनी दुमकी नोक मारता है, इसमें बडी जलन होने लगतीहै और रोगी हायहाय पुकारनेल गता है। अगर कास्टिक मौजूद होतो डंककी जगह को इससे जला देना चाहिये। अथवा एपीकाक्यूएना का जडका पीसकर लिकर ऐमोनिया में मिलाकर गाढागाढा लेप करदेना चाहिये। इस पर एक या दो गलास शराब या ब्रांडी के जलमें मिलाकर पिलाने चाहिये।

पागल कुत्तों का इलाज।

कुत्ते वा शृगाल बहुधा जूनके महीने में पागल हो जायाकर ते हैं। पागल कुत्तों की गर्दन झुकजाती है, मुँह से राल टपक ने लगता है और आंखें भयावनी हो जाती हैं; यह शराबीकी तरह गिरता पडता चलता है इससे जहांतक हो बचना चाहिये जब पागल कुत्ता काट खाय तब यातो काटी हुई जगह के आर पास तेज छुरीसे छील डालना चाहिये अथवा तेजकास्टि क (तेजाब) से उस जगह को जलादेना चाहिये अथवा लोहे

लाकर लगाना चाहिये अथवा पिसा [illegible] कर भर देना और पानीके साथ पुलटिसवना कर का
से सूजन मिट जाती है।

इस पर लिकर एमोनिया [illegible] (Bandaging)
मलना भी गुणदायक है। [illegible] सीखना चाहते हैं उनको पट्टी बचाना चाहिये, क्योंकि सबसे पहिला काम है।
बडी जलन पैत मलमल की होती है जैसा अकसर शिफा-
मल देने से [illegible] में आता है कभी कभी फलालेन की पट्टी भी उपयोग में लाते हैं।

पट्टा बांधने के लाभ स्थान विशेष और रोगी विशेषके अनुसार बहुत होते हैं ॥ जैसे देह के किसी अवयव पर बाहरी सदमा पहुँचने से उसे सरदी गरमी से बचाती है। मरहम और पुलटिस ठीक जगह पर रहने देती है, संधियोंका हटजाना हड्डियों का टूटना आदि पर लाभ पहुँचाता है छोटी रग नस औरघाव से बहते हुए रुधिर को रोकने में लाभ पहुँचाती है।
पट्टियां तीन प्रकार की होती हैं सिंपिल, शाल और कम्पाउण्ड।

सिम्पिल अर्थात् सादा पट्टी—यह शरीर के अवयव और आवश्यकता के अनुसार अलगअलग लंबाई चौडाई की होती है जैसे उगली के लिये तिहाई वा चौथाई इंच चौडी और गजव डेढ गज लंबी होती है। ऊपर के भाग और सिर के लियेदोसे लेकर ढाई इंच तक चौडी और तीनसे पांच छः गज लंबीऔर टांग आदि [illegible] चे के हिस्से तथा धड के लिये ढाई से छः इंच तक चौडी और [illegible] र छः गज लंबी होती है।

शाल बैंडेन्ज. यह चौकौन रूमाल होता है, इसे कोनों की तरफ दुहेरा करके त्रिभुजाकार बना लिया करते हैं।

कम्पाउंन्ड बेन्डेज-यह पट्टी कई कपडों से मिला कर बनाई जाती है जैसे मेनीटेल्ड बेन्डेज अर्थात् कई सिरवाली पट्टी।

पट्टी बनानेकी तरकीब—आवश्यकताके अनुसार लंबी चौडी पट्टियां कपडेमें से फाडकर चौडाई की तरफ से लपेट कर गोला बना लेते हैं, इसको रौलर कहते हैं। जो पट्टी एक सिरे से लपेट कर दूसरे सिरे पर खतम कर दी जाय तो एक रौलर यानी गोला बन जाता है, इसे सिंगिल हैडेड कहते हैं, जैसे हाथ पांव की पट्टी। जब दोनों सिरों से लपेटना आरंभ करके बीचमें खतम करते हैं तो उसे डबल हैडेड बैंडेज कहते हैं जैसा सिर के लिये। पट्टी बांधने के समय बांधने वालेको जिस अंग पर बांधना है उसी के अनुसार जुदी जुदी ओर को खडा होना चाहिये। जैसे हाथ पांव और धड पर बांधनेके लिये साम्हने, सिर पर बांधने के लिये पीछे और कनपटी पर बांधने के लिये बगल की तरफ खडा होना उचित है।

इस बात पर सदा ध्यान रखना चाहिये कि पट्टी के जो लपेट लगाये जांय उनकी नौक बाहर की ओर तथा समान दूरी पर होनी चाहिये इसको इस्पाइरेलबैंडेज कहते हैं। (इन सबके चित्र पुस्तकके आदिमें दिये गये हैं वहां हाथ और पांव दोनों लपेट देखो)

इस्पाइरल बैंडेज वह है कि जिसमे पट्टी तिरछी चक्कर खाती हुई नीचे ऊपरको जाती है।

फिगर आफ एट वह है कि जब पट्टी जोडों पर लपेटी जाती है तो उसकी सूरत अंग्रेजी के अंक आठ (8) कासी हो जाती है। पर मोडकी तरफ रक्खी जाती है,

जैसे कोहनी पर साम्हने और घुटने पर पीछे। करैन्ट वैंडेज उसे कहते हैं कि पट्टी बीचमें से शुरू होकर दोनों तरफ चक्कर खाती है जैसा कि कीपवैंडेज होता है।

लूप यानी फंदादार वैंडेज वह है जो कि टूटी हुई हड्डियों के स्प्लिन्टको ठीक जगह पर रखता है अर्थात् एक गज लंबी पट्टी लेकर दुहरी करें। परंतु दोनों सिरे एक से न हों, फिर रोगीको नीचे लेजाकर बंडे सिरेको साम्हने वाले फंदेमें पिराकर दोनोंमें ढंढ गांठ लगा देते हैं।

शौल वैन्डेज।

यह पट्टी एक गज या सवा गज वर्गाकार मारकीन व मलमलकी बनाई जाती है क्योंकि इसका आधार स्थिर रखने और नौक सहारा देनमें काम आती है। और यह जिस जिस मुकाम पर काम आती है उसीके नाम से बोली जाती है। जैसे रोगवाले अंगको झूलता रखना होतो सिंगल यानी हिमायल अंड कोष और स्तन के सहारे के लिये ससपेन्सरी और सिर पर सिम्पिल के बदले काम में आने से शाल वैंडेज कहते हैं।

कम्पाउन्ड वैंडेज।

यह पट्टी कई टुकडों से बनाई जाती हैं और नाम भी जुदे जुदे हैं जैसे चार दुम वाली होने से फोर टेल्ड बहुत सी दुम होने से मैनी टेल्ड टी की सी सूरत होने से टी बन्डेज और डबल टी की सी सूरत होने पर नौज बैन्डेज कहते हैं। इन पट्टियों के चित्र इस पुस्तकके आदि में दिये गये हैं उनको देख लीजिये। इनमें से, हर एक पट्टीका विस्तार पूर्वक वर्णन स्वतंत्र ग्रन्थ में दिया जायगा।

इति द्वितीय भाग।

ओ३म्

परमात्मनेनमः ।

जर्राही प्रकाश ।

तीसरा भाग ।

उपदंश रोग का वर्णन ।

गुह्येन्द्रिय पर हाथकी चोट लग जाने से वा अनुराग से स्त्री द्वारा नख विद्ध होने वा दांत लगने से वा धोने से अथवा अत्यन्त स्त्री संसर्ग करने से. अथवा गरम जलसे धोने से, किसी उपदंश रोगवाली स्त्री के साथ संभोग करने में पेडू, गुह्येन्द्रिय वा अंडकोश पर एकपीली फुंसी पैदा होजाती है; उसमें खुजली के साथ जलन होती है, ज्यों ज्यों खुजाया जाता है त्यों त्यों घाव बढता चला जाता है। रोगी लज्जा के कारण इस रोग को छिपाता है और यह दिन दूना रात चौगुना बढता चला जाता है। मूर्ख लोगों के कहने से सेलखडी वा पत्थर पीसकर लगा देता है, जब घाव वहुत बढ जाता है तब इधर उधर कहने लगता है; कोई नीम हकीम इक्के में पीने की दवाई दे देते हैं उससे मुंह आजाता है वा वमन अथवा दस्त होने लगते हैं। कोई पीने के लिये दूधभी बता देते हैं। इन इलाजों से कुछ आराम तो होजाता है पर रोगकी जड नहीं जाती है।

यह रोग बडा भयंकर होता है इसके जुदी जुदी भाषाओं में जुदे जुदे नाम हैं जैसे संस्कृत में उपदंश, देश भाषा में गरमी फारसी में आतशक और अंगरेजी में इस सिफलिस कहते हैं।

रोगकी उत्पत्ति में आयुर्वेदिक मत ।

आयुर्वेदिक विद्वानों ने इस रोग को पांच प्रकार का लिखा

है यथा वातज, पित्तज; कफज, सन्निपातज और रक्तज।

वातज उपदंश के लक्षण।

वात से उत्पन्न होने वाले उपदंश रोग में लिंगनालके अग्र भाग में, लिंगमणि के ऊपर वा लिंगमणि के वेष्टन करनेवाले चर्म के अग्रभाग में वा नीचे को अनेक प्रकारकी वेदनासे युक्त अनेक प्रकारकी फुंसियां पैदा होजाती है। इस वातज उपदंश में लिंगनाल में कंपन होता है।

पित्तज उपदंश के लक्षण।

पित्तके उत्पन्न होने वाले उपदंश रोग में लिंगनाल के अग्रभाग के पूर्वोक्त स्थान में क्लेदतायुक्त और पीले रंग वाली फुंसियां पैदा हो जाती हैं, इन फुंसियों में जलन होने लगती है इन लक्षणों से युक्त उपदंश को पित्तज उपदंश कहते हैं।

कफज उपदंश के लक्षण।

कफसे उत्पन्न होने वाले उपदंश रोग में लिंगनाल के अग्रभाग के पूर्वोक्त स्थान में जो फुंसियां पैदा होजातीहै उनमें से गाढा गाढ़ा मवाद झरने लगताहै, मणिस्थान अत्यन्त फूल जाता है इस रोग में पेशाब के साथ वीर्य आने लगताहै। इन लक्षणोंसे युक्त रोगको कफज उपदंश कहते हैं।

त्रिदोषज उपदंश के लक्षण।

त्रिदोष अर्थात् कफवात पित्त के उत्पन्न होने वाले उपदंशमें लिंगनालीके अग्रभागके चमडेके नीचे एक मांसके पिंड और फोडे आदि हो जाते हैं। इसमें कफज वातज और पित्तज तीनों प्रकारके उपदंशोंके कहे हुए लक्षण मिलकर होते हैं। इस प्रकार से उपदंशको त्रिदोषज वा सान्निपातिक कहते हैं॥

रक्तज उपदंशके लक्षण।

जो उपदंश रुधिर से होता है उसमें लिंगमणिके अग्रभागके

ढकने वाले चमडेके नीचे अथवा ऊपर मांस के रंग से युक्त अथवा काले रंग की फुंसी पैदाहो जातीहै इनमें से रक्तस्राव होने लगता है तथा पित्तज उपदंश के जो जो लक्षण कहे गये हैं वे भी सब इसमें होते हैं इन लक्षणों से युक्त रोग को रक्तज उपदंश कहतेहैं।

असाध्य उपदंश के लक्षण।

जिस उपदंशमें संपूर्ण लिंग नाल को कीडे खा जाते हैं केवल अंडकोश मात्र शेष रह जातेहैं वह किसी प्रकार से अच्छा नहीं होता है इस लिये उसकी चिकित्सा करना वृथा है।

मृत्यु लक्षण।

जो मनुष्य उपदंश रोग के होते ही चिकित्सा न करके स्त्री संसर्ग में रत रहता है तो कुछ दिनमें उसके लिंग में सूजन और ज्वाला होने लगती है लिंगनाल के अग्रभाग के घूंघट के चमडे के नीचे जो फुंसी होती हैं वे पककर घाव बन जातीहैं। इस घाव में कीडे पडकर लिंगनाल को खाते रहते हैं और धीरे धीरे रोगी के जीवन तक को नष्ट कर देते हैं॥

लिंगवर्ती के लक्षण।

अंकुर की तरह कुछ ऊंचा ऊपर ऊपर और गिलगिला मांस का जाल लिंग नाल में उत्पन्न होकर धीरे धीरे मुर्गे की चोटी के सदृश होकर अंडकोषके भीतर वाली रगमें प्रवेश होता है इन लक्षणों से युक्त रोगको लिंगवर्ती वा लिंगार्श कहते हैं॥

गर्मी अर्थात् उपदंशकी चिकित्सा॥

(१) पर्वल नीमकी छाल, गिलोय, आमला हरड और वहेडा इन सबको दोदो तोले लेकर आधसेर जलमें औटावै जब आध पाव रह जाय तब छानकर पीले इस क्वाथके पीनेसे सब प्रकारका उपदंश जाता रहता है (२) पापडी खैर और साल इन वृक्षोंकी छाल दो दो तोले लेकर ऊपर कही हुई रीति से औटाले इस क्वाथको गूगलके साथ पीनेसे उपदंश जाता रहता है। अथवा

इसी क्वाथ में त्रिफलाका चूर्ण मिलाकर लेप करने से भी अनेक प्रकार के उपदंश जाते रहते हैं ॥

[३]त्रिफला के क्वाथ अथवा भांगरेके रससे उपदंशके घावों को धोने से भी कभी कभी उपदंश जाता रहता है।

[४] हरड बहेडा और आमला इन तीनों को समान भाग लेकर काली मधु के साथ लोहे की कढाई में डालकर खूब घोटे। इस लेप के लगाने से एक ही दिन में उपदंश के घावों में आराम होजाता है।

[५] रसौत को पीसकर सिरसके बीजों के साथ; अथवा हरड के साथ अथवा शहत के साथ पीसकर लेप करे तो पुरुष गुह्येन्द्रिय संबंधी सब रोगों को आराम होजाता है।

[६] सुपारी अथवा कचनार की जड को पानीमें पीसकर उपदंशकी जगह लेपकरे, तथा प्रतिदिन जौकी रोटी आदि खा कर कूए का जल पीता रहे। इससे अनेक प्रकार के उपदंशजा ते रहते हैं।

[७] उपदंश में पसीने देकर लिंगकी बीच वाली सिरा का वेधन करके जोक द्वारा रुधिर निकालडालना विशेष उपयोगी है। इस रोग में बमन और विरेचन कराने वाली औषधें देकर देहको शुद्ध कर लेना उचित है। इनसब क्रियाओं द्वारा दोषों का हलकापन होनेसे सूजन और वेदना कम होजाती है पक जाने पर गुह्येन्द्रियका नाश हो जाता है, इसलिये उन उपायों का करना चाहिये जिससे गुह्येन्द्रिय पकने न पावै।

[८]सूखे हुए अनार का छिलका अथवा मनुष्य की हड्डी का चूरा उपदंश के घाव पर लगानेसे बहुत जल्दी उपदंश के घावों में आराम हो जाता है।

(९) चिरायता, नीमके पत्ते त्रिफला, पर्वल, चमेली के

पत्ते, कचनार के बीज खैर और शाल वृक्ष की छाल इन में से हर एक द्रव्य को एक एक सेर लेकर ६४ सेर पानी में औटावे, चौथाई शेष रहने पर उतार कर छानले। ऊपर लिखी हुई सब दवाओंको चार चार तोले ले कर पीसकर लुगदीकरले फिर ऊपर लिखे क्वाथमें यह लुगदी और गौका घी चार सेर डालकर यथोक्त रीति से पाक करे। इस घी को दोषानुसार सेवन करने से उपदंश रोग बहुत शीघ्रजाता रहता है।

(१०) समान भाग त्रिफला को शहत के साथ पकाकर लेप की रीति से लगाने पर उपदंश में विशेष गुणकारी होता है।

११सिरस, आम और शहत इन तीनों मेंसे किसी एक के साथ रसौत मिलाकर उपदंशयुक्त गुह्येन्द्रिय पर लेप करने सेउप दंश रोग तथा अन्यान्य उपस्थके रोग जाते रहते हैं।

(१२) पारा दो रत्ती. अफीम बारह रत्ती इन दोनों को लोहे के पात्र में तुलसी के रस के साथ नीमकी घोटसे घोटकर दो रत्ती सिंगरफ मिलाकर फिर तुलसी कारस डालकरघोटे पीछे जावित्री, जायफल; खुरासानी अजवायन और अकरकराप्रत्येक बत्तीस रत्ती, इनसबसे दूना खैरसार मिलाकर फिर तुलसी के रसमें घोटकर चने के बराबरगोलिया बना लेवे इनमें से दे दो गोली प्रतिदिन सायकाल के समय सेवन करे इस से उपदं-शादि अनेक प्रकार के घाव वाले रोग दूरहो जाते है। यह एक प्रसिद्ध औषध है।

उपदंश रोग पर पथ्य।

वमनकारक द्रव्यां का आहार वा पान द्वारा सेवन, विरचक औषधियों का अहार वा पान द्वारा सेवन, शिश्नमें सिरावधन, जोक लगाना परिछेदन; प्रलेप, जौ, शालीधान्य, धन्वदेशज पशुपक्षियों का मांस; मूंग का यूप और घृत. ये सब द्रव्य उपदंश रोग में विशेष हितकार जानने चाहिये।

पुनर्नवा, सहजना; पर्वल, कच्चीमूली, सब प्रकार के तिक्त द्रव्य; सब प्रकार के कषाय द्रव्य मधू, कूए का जल, किसी प्रकारका तेल। ये सब द्रव्य उपदंश को शांत करने वालेहैं इस लिये इनको विशेष पथ्य रूप समझना चाहिये।

उपदंश पर कुपथ्य।

दिनमें सौना मूत्रके वेग के रोकना, भारी पदार्थोंकासेवन, स्त्रीसंग, गुड खाना; कसरतकुश्ती करना, खट्टी वस्तुओंका खाना पीना; मठा पीना, ये सब द्रव्य उपदंश रोगको बढानेवाले है इस लिये इनको सर्वथा त्याग कर देना चाहिये.

हकीमी मतसे (उपदंशकी चिकित्सा) में

जुलाब की गोली

जमालगोटेकी मिंगी, चौकियासुहागा, मुनक्का, इन सब को समान भागले कर महीन पीस एक एक मासे की गोलीया बनावें परंतु इस गोली के खानेसे पहिले नीचे लिखे हुई दवा पिलानी चाहिये।

नुसखा मुंजिज

गुलाबके फूल तीन माशे, मुनक्का सात नग, सौंफ छः माशे, सूखी मकोय छः माशे सनाय मक्कई दोमाशा; इन सब को पावभर जलमें औटावे जब एक उफान आजाय तब उतार कर छानले फिर इसमें एक तोले गुलकंद मिला कर पिलावे पश्चात खिचडी भोजन करावे फिर चौथे दिन ऊपर लिखी हुई गोली केदो टुकडे करके खिलावे ऊपर से गरम जल पिलावे औरजब प्यास लगे तब गरमही जल पिलावे और सायकाल के समय घृत डाल कर खिचडी दही के संग भोजन करावे फिर तीन दिन तक नीचे लिखी हुई दवा पिलावे।

ठंडाई का नुसखा

बिहीदाना दो माशे; रेशाखतमी ४ माशे; मिश्री एक तोले

इन सब का लुआब निकाल कर उसमें मिश्री मिलावे पहिले छः माशे ईसवगोलको फांक कर ऊपर से उस लुआब को पीवे इसी तरह तीन दिन तक करता रहे तदनंतर नीचे लिखी गोली देना उचित है ॥

भिलावेकी गोली।

खुरासानी अजमायन, देशी अजवायन, शक्करा गुजराती, छोटी इलायची प्रत्येक नौ २ माशे, भिलाये सातमाशे, काले तिल दो तोले, पारा छः माशे, पुरानागुड़ एक तोले इन सबको मिला कर तीन दिन खूब घोटे और माशे माशे भर की गोली बना कर प्रति दिन एक गोली सेवन करावे और नीचे लिखी हुई मरहम घाव पर लगावे ॥

मरहमकी विधि

प्रथम गौका घृत एक तोले लेकर खूब धोवे फिर सिंगरफ एक माशे, रसकपूर तीन माशे, मुरदासिंग तीन माशे; रसोत तीन माशे गुजराती शक्करादो माशे सफेदी कासगरी तीनमाशे इन सबको महीन पीस कर धुले हुए घी में मिला कर लगावें और देखै कि जुलाब देने से रोगीकी क्या दशा है॥ जो रोग कम हो तो मरहम लगाना बन्द कर दे और ऊपर लिखी हुई भिलावेकी गोलियां सात दिन तक खिलावे नहीं तो औषधीको ऐसीरीति से बदल देवे कि रोगीको मालूम न हो सके॥

दूसरी गोली।

रसकपूर नौ माशे, लौंग फूलदार; २१ नग, कालीमिरच २१ नग, अजवायन खुरासानी एक माशे इन सबको महीन पीस मलाई में मिलाकर नौ गोली बनावे इनमें से प्रति दिन एक गोली सेवन करे और खट्टी तथा बादी करने वाली बस्तुओं से बचना चाहिये।

घावका अन्यकारण ।

कभी कभी ऐसा भी होता है कि यह रोग तो होने वाला हो और बाल साफ करते समय अचानक उस्तरा लगकर घाव हो जाय और उसको उस्तरेका घाव समझ कर औषधियांकी जांय जब इस तरह आराम नहो तो मूर्खोंसे पूछकर धोया हुआ घृत आदि सुनी सुनाई दवाई लगा देनेसे अधिक हानि हो जाती है फिर उसकी दवाई चतुर जर्राह से करावे और जर्राह को भी चाहिये कि प्रथम रोगीके घावको देखे कि किनारे उस घाव के मोटे हैं और घावके भीतर दाने हैं वा नहीं और घाव कितना चौडा है और रोगीकी प्रकृतिको देखे जो वह विरेचन अर्थात् जुलाब के योग्य होतो जुलाब देवे नहीं तो नीचे लिखी हुई औषधि देवे ।

गोली ।

नीलाथोथा ढाई माशे, कालीहडै २॥ माशे, सफेद कत्था २ तोले; सुपारी ७ माशे इन सबको महीन पीस कर दो सेर नीबू के रसमें खरल कर फिर जंगली बेर के प्रमाण गोली बनावे और दोनों समय एक एक गोली खिलावे खट्टी और बादी करने वाली वस्तुओं से परहेज करे ।

दूसरा नुसखा ।

अजवायन खुरासानी सातमाशे काली मिरच सवा माशे । कालेतिल छः माशे । जमाल गोटा तीनमाशे पुरानागुड १॥ तोले. इन सबको तीन दिन तक घोटकर जंगली बेरके प्रमाण गोलियां बनावे और एक गोली दहीकी मलाईमें लपेटकर खिलादे और मूंगकी दाल और मीठा कदूदू न खवावे इस औषधि के खाने से एक दो दस्त हुआ करेंगे और जो वमन भी हो जाय तो कुछ डर नहीं है क्योंकि ये रोग विना निकाले मवाद

नहीं दूर होसक्ता प्रायः देखा है कि इस रोगमें सिर से पांव तक घाव हो जाते हैं बस उचित है कि प्रति दिन मरहम लगाया जावे जो एक दिन भी न लगाया जावेगा तो खुरंड जम जावेगा और जहां यह रोगी बैठता है कीच हो जाती है और सफेद सा पानी निकलता है अथवा सुरखी और जरदी लिये दुर्गंध होतीहै और हाथ पांवकी अंगुलियोंमें भी घाव होजाते हैं इन सब शरीर के घावोंके वास्ते यह औषधि करना चाहिये ।

मरहम ।

माखन आधपाव, नीला थोथा सफेद छः माशेः मुर्दासन छः माशे, इन दोनों दवाओंको पीस कर घृतमें मिलाकर घावों पर लगावे और खानेको यह दवा देवे ।

गोली ।

छोटी इलायची, सफेद कत्था, तुलसीके पत्ते हरे एक एक तोले मुर्दासन छः माशे, पुराना गुड १॥ तोले इन सबको कूट पीस कर गोलियां बनावे और नित्य प्रति सवेरे ही एक गोली खिलावें खटाई और बादी से परहेज करै और किसी वस्तु से परहेज नहीं है और यह रोग शीघ्र अच्छा नहीं होता दवाको सात दिन खिलाकर देखे जो कुछ आराम होतो इसी दवाको खिलाते रहैं और जो इस्से आराम न होतो ये गोली खिलावें

अन्य गोली ।

सिलाजीत काली मिरच कावली हर्ड सूखे आमले, रस कपूर, सफेद चिरमिटी गुल बनफशा सफेद कत्था ये दवा चार २ माशे ले इन सबको कूट पीसकर रोगनगुलमें खरल करे फिर इस की चनेकी बराबर गोली बनावे और एक २ गोली आम के अचारमें लपेट के प्रतिदिन प्रातःकाल और सांयकाल के समय

खिलावे मसूरकी दाल और लाल मिरच से परहेज करे इस दवाई से सब शरीर अच्छा हो जायगा परंतु अंगुली अच्छी न होगी जो यह औषधि प्रकृतिके अनुसार हो जाय तो अंगुली भी सीधी होजायगी बहुधा देखनेमें आया है कि इस रोग वाले मनुष्य बहुत भले चंगे देखे परंतु किसी न किसी जगह शरीर में शेष रहही जाता है वहुत से उपद्रव उत्पन्न होते हैं एक यह कि मनुष्य कोढी हो जाता है दूसरे यह कि सब शरीर पर सफेद दाग हो जाते हैं तीसरे नाक गलकर गिर जाती है चौथे गाठिया हो जाती है एक कारण यह है कि यह रोग महा गरम है ठंडी दवाइयों से अच्छा नहीं होता।

इस में एक डाक्टरकी राय है कि यह रोग कफ से होता है क्योंकि प्रत्यक्ष है कि रोगीके शरीर में छोटी २ फुंसियां रतू-बत दार जर्दी लिये होती है। वहुत से मनुष्यों का यह रोग ओषधियों के सेवन से जाता रहा और दो चार वर्ष के पीछे शरीरके निर्बल होजाने पर फिर होगया और घाव भी फिर हरे हो गये जब दवाई करी तो फिर जाता रहा इस रोगके वास्ते यह दवाई बहुत उत्तम है।

अन्य गोली।

भुना नीलाथोथा, मुरदासंग, सफेदा कासगरी। सफेद कत्था; ये सब चार चार माशे ले इन सबको नीबूके रसमें खरल करके लोहेकी कढाईमें डालकर नीमके सोटेसे घोटे और चने की बराबर गोलियां बनाकर दोनों समय एकएक गोली खिलावै खटाई और बादीकी चीजों से परहेज कराना चाहिये और जो इस से भी आराम न होतो ऐसी औषधि देवे कि जिस्से थोडासा मुख आजावे जिस्से सब शरीर के जोडों की पीडा दूर हे जावे और इस से आराम न होतो अधिक मुह आनेकी औषधि दें और नीचे लिखी औषधियों से घावको वफारा देवै।

नुसखा वफारेका

नरसलकी जड; रामरस, सोये के बीज, खुरासानी अजवायन साबन नरमाके पत्ते, शहतूत के पत्ते. इनसबको बराबरलेपानी में औटाकर घावों का वफारादे और रातको तेलका मर्दनकरे॥ अथवा भेडका दूध और गौका दूध चार चार तोले, शोरंजान् कडवा तीन माशे, रोगन गुल आधपाव इन सबको मिलाकर गरम कर मर्दन करे।

दूसरा वफारा।

जो पुरुषकी गुह्येन्द्रिय घावों के जोर से अथवा पट्टी बांधने से सूज जाय तो उसपर यह वफारा दे। त्रिफला छःमाशे पानी में औटा कर इन्द्री को बफारा देऔर इसी तरह दिनभर तीन दफ वफारा दे तो एक हीदिन मेंसब सूजनदूर होकर पहिलेकी तुल्यहो जाता है। जो मुख आजाय तो उसको अच्छा करनेके लिये यह दवा करे॥

नुसखा कुल्लोंका

कचनार की छाल, महुए की छाल, गोदनी की छाल सब एक एक छटांक,चमेली के पत्ते एक तोले, सफेद कत्था एक माशेइन सबको पानी में औटाके कुल्लाकरे

दूसरा प्रयोग॥

चमेली के पत्ते छटांक भर, कचनार की छाल छटांकभर, इन दोनों का पानी में औटा कर दोनों समय कुल्लेकरे॥

तीसरा प्रयोग॥

अकरकरा, माजूफल, सिंगरफ। सुहागा क च येचारों दवा पांच पांचमाशे इनसबको कूट कर पानीमें मिलाकर चार हिस्से करेफिर रात भर एक एक पहरके पीछे हुक्के में रखकर तमाखू कीतरह पीवे और रात भर जागता रहे फिर सबेरे ही ठंडपानी से स्नान करे और खानेके लिये मुसल्मान को मुर्गेका शोर

वा अर्थात् कुक्कुट के मांसका यूष और गेहूं की रोटी औरहिन्दू को मूंगकी दाल रोटी खिलाना चाहिये भोजन कराके रोगीको सुलादे इस इलाजके करने से गर्मी बहुत मालूम होती है और दस्त और वमन भी होती है परंतु एकही बार में घाव तकसूख जाते हैं ॥

चौथा प्रयोग ॥

सिंगरफ। माजुफल। अकर करा। नागौरी असगंध। काली मूसली, सफेद मूसली। गोखरू छोटे। इन सब का चूरण करके जंगली बेरके कोयले परडाल कर सब देह को धूनीदे इसतिरह सात दिन करने से यह रोग जड से जाता रहता है ॥

पांचवां प्रयोग ॥

भुनाहुआ नीला थोथा, बडी हर्डकी बक्कल, छोटी हर्डये स बदवा एक एक भाग; पीली कोडी चार भाग इन सबको पीस छानकर नीबू के रस में तीन दिन घोटे फिर इसकी चने की बराबर गोली बनावे फिर एक एक गोली, नित्य खाय; इसके ऊपर, किसी चीजका परहेज नहीहै।

छटा प्रयोग।

रसकपूर, चोबचीनी। वायची। ये तीनों छः छः माशे, तिवरसा गुड दो तोले इन सबको दही के तोड में खरलकरें और झाडी बेर के बराबर गोली बनाकर रोगीको दोनों समय एक एक गोली दही के संग लपेट कर खिलावै और खानेको दोनों समय मूंग की दाल रोटी देवै।

सातवां प्रयोग

कत्था सफेद, सम्भल खार, इलायची के बीज खडियामिट्टी ये सब समान भाग लेकर गुलाब जल में पीस कर ज्वारकेबरा

बर गोली बनावै और एक गोली नित्य बारह दिन तक खाय और जो अजीरण होय तो एक गोली बीचमें देकर खायऔर मूंग की दाल गेहूं की रोटी खाय परन्तु घी का अधिक सेवनकरे

उपदंश रोगी के दर्द का इलाज ।

जो उपदंश वाले की अस्थि संधियों में दरद होता हो तो पारा. खुरासानी अजवायन भिलावै की मिंगी. अजमोद, असगंद ये सब दवा तीन तीन माशे, गुड २८ माशे सबको कूट पीस कर झाडी बेर के बराबर गोली बनाकर एक एक गोली दोनों समय खाय और इस गोली को पानी से निगल जाय दांत न लगने दे. खानेको लालमिरच, खटाई, बादी करनेवाली वस्तु न खाय ॥

अन्य प्रयोग ।

पारा, अजवायन. कालीमूसली ये दवा छःमाशे; भिलाये तीन माशे, गुड चार तोला इन सबको कूट पीस कर ११ गोली बनावे और एक गोली नित्य दही के साथ खाय तो ग्यारह दिन में सबरोग जायऔर दूध चांवल खाने को दे तो ईश्वर की कृपासे बहुत शीघ्र आराम होजायगा ।

अन्य प्रयोग ।

मंदारकी लकडीका कोयला पीसकर साढेतीनमाशे और कच्ची खांड साडे तीन माशे.इन दोनोंको मिलाकर चौदह माशे घी में सानकर सात दिन सेवन करने से सातही दिनमें आराम होजाताहै इस दवा परमांस का पथ्य होता है ॥

अन्य प्रयोग ।

बडी हर्ड की छाल.तूतिया.पीली कौडी की राखये सबबराबरले नीबूका रस डालकर कढाईमें सोलह पहर तक घोट फिर इसकी काली मिरचके बराबर गोली बनावे औरएक गोलीनित्य १५ दिनखाय और थोडीसी गोली घिस कर कागज पर लगा

य घावोंपर लगावै और जो मुख आजायतो कचनारके काढेसे कुल्ले करै ॥

अन्य प्रयोग

तुलसी के हरेपत्ते एक-तोले तूतिया हरी १४ माशे इनको पीसकर चने की बराबर गोली बनाकर एक गोली गरम पानी के संग नित्य खाय मूंगकी दालकी खिचडी बिना घी डाले खाना इस दवा पर उचित है।

अन्य प्रयोग।

कचनार की छाल आधपाव, इन्द्रायन की जड आधपाव बबूल की फली आधपाव, छोटी कटाई जड पत्ते समेत आधपाव, पुराना गुड आधपाव इन सब को तीनसेर पानी में काढा करै जब चौथाई जल रहै तव वोतलमें छानकर भर ले फिर इस्मेंसे मात्रानुसार सात दिन पीवै तो निश्चय आराम होय इसमें परहेज कुछ नहीं है ॥

अन्य प्रयोग।

सिरसकी छाल, बबूलकी छाल, नीमकी छाल प्रत्येक सवा सेर इन सवको सात गुने पानी में काढा करे जब सवासेर जल बाकी रह जाय तब छानकर शीशी में भरले फिर इसमें से आध पाव रोज पीवै और खाने को चना की रोटी खाय तो पुरानी आतशक भी जाती रहती है।

अन्य प्रयोग।

जिस कपडे को रजस्वला स्त्री योनी में रखती है उस कपडे को रुधिर समेत जलाकर उसकी राखकरले और उसकी बराबर गुड मिलाकर वेर के बरावर गोली बनाकर एक गोली नित्य खाय और बिना नमक भात रोटी भोजन करै।

अन्य प्रयोग ।

सिंगरफ, अकरकरा, नीम का गोंद, माजूफल, सुहागा प्रत्येक १४ माशे इनको पीस सात पुडिया बनाले एक पुडिया चिलम में रख बेरी की आग से पिये तो आराम होय और इस से बमन होयतो कुछ डर नहीं। दिनभर में तीन बार पीवे और इसके गुलको पीसकर घावों पर बुरके। खाने को मोहन भोग मीठा खाय और जो मुंह आजाय तो चमेली के पत्तों का काढा करके कुल्ले करै ॥

अन्य प्रयोग ।

सिंगरफ दोमाशे, अफीम दोमाशे, पारा दो माशे, अजवायन पांच माशे, भिलाये सात माशे, पुराना गुड पांच माशे पहिले पारे और सिंगरफ को अदरख के रसमें दो दिन खरल करै फिर सब दवा बारीक पीसकर उसमें मिलावै ॥ और भिलावेकी टोपी दूर करके उन सब दवाओं के साथ घोट डाले फिर बेरके बराबर गोली बनावे और सात दिनतक एकगोली नित्य खाय और गुड शक्कर तेल लाल मिरच खटाई बादी करने वाली चीज का सेवन न करै ॥

यदि ऊपर लिखे हुए किसी उपाय से रोगी अच्छा न हो तो उसे असाध्य समझ कर त्याग देना चाहिये ॥

फुंसियोंके दूर करनेकी दवा ।

इस रोग में सब शरीर में छोटी २ फुंसियां सीतला के सदृश हो जाती हैं उसके वास्ते यह दवा करनी चाहिये सिंगरफ तीन माशे, रसकपूर छः माशे, अकरकरा एक तोला, कत्था एकतोला, छोटी इलायची एक तोला इन सबको पानके रसमें मिलाकर चने के बराबर गोलियां बनावे। और सवेरे ही एक गोली नित्य खाया करे और चनेकी रोटी घी और दही

भोजन करे। इक्कीस दिनके सेवन करने से सब रोग निश्चय जाता रहेगा ॥

दूसरी दवा।

रसकपूर, सिंगरफ, लौंग, सुहागा ये सब एक एक तोला इन सबको महीन कर सात पुडिया बनावे। फिर सवेरेहीएक पुडिया दही की मलाई में लपेटकर खिलावे दूध चांवल भोजन करावै और सब चीजों का परहेज है।

विरेचनकर्त्ता औषध।

जो किसी मनुष्य के शरीरमें काले वा नीले दाग पड गये हों तो पहिले तीन दिन खिचडी खिलाकर फिर यह जुल्लाव देना चाहिये। काला दाना नौ माशे, आधा भुना और आधा कच्चा कूटकर बराबरकी शक्कर मिलाकर तीन पुडिया बनावेऔर सवेरेही एक पुडिया गरम जल के संग खिलावै और प्यास लगे जब गरम जलपान करावै ॥

यदि कंठ का काक जिस कौआ वा काकलक भी कहते है बैठ गया होय तो यह विरेचन देवै पिस्तेकी मिंगी बादामकी मिंगी चिलगोजेकी मिंगी-पुरानादाख,जमालगोटाकीमिंगी इन सबको बराबर ले जलमें पीसकर जंगली बेरके बराबर गोली बनावै और गोली देनेसे पहिले तीनदिन तक अरहरकी दाल और चांवलों की खिचडी खिलावे फिर चौथे दिन दो गोली मलाईमें लपेट कर खवादे और ऊपरसे गरमजल पिलावे ॥ फिर दूसर दिन यह औषधि पिलावे ॥ बादना दो माशे रेशा खतमीछःमा शे। ईसब गोल छःमाशे मिश्री एक तोला इन सबको रात में भिगोदें और फिर प्रातःकाल मल छान कर पिलावे।

विरेचन के पीछे की गोली ।

मुर्दा संग एक तोले, गेरूडेढ तोले, सात बर्ष का पुराना गुड इन सबको पीस कर जंगली बेरके बराबर गोली बना कर एक गोली मलाई में लपेट कर सवेरेही खाय खटाई और वादीसे परहेज करे ।

सिंगरफके उपद्रवों का उपाय ।

आतशक वाले रोगी को यदि किसीने सिंगरफ बहुत खिलाया होय और इस कारण से उस का शरीर विगड गया होयतौ यह दवा देने योग्य है कुटकी कडवी एक तोला, आमकी विजली दो तोला, जमाल गोटा तीन तोला, सबको महीन पीस छान कर पुराने गुडमें मिला कर बारह पहर कूटे फिर जंगली वेरके बरावर गोली वनाकर खवावे और ऊपर से ताजा पानी पिलावैं जो दस्तहोजाय तौ उत्तमहै नहीं तो पहिले तीन दिन यह मुंजिस पिलावे ॥

मुंजिस का नुसखा ।

हरी सौंफ एक तोले, गेरू और मकोय एक तोले, मुनक्का १५ नग, खतमी एक तोला, खब्बाजी के बीज १ तोला, गुल कंद दो तोला इन औषधियों को रात को जल में भिगोदे सवेरेही औटाकर पिलावे और खिचडी खाय फिर चौथे दिन यह जुलाब देवे।

जुलाव का नुसखा ।

गुलाब के फूल दो तोले; खतमी के बीज एक तोले । गारीकून छःमाशे, सफेद निसोत छःमाशे; अरंड के बीज तीन तोले एलुआ एक तोले, सोंठ छःमाशे करतम के बीज दो तोले; शकमुनियां छःमाशे, सूखे आमले एक तोले; सनाय मकी दो तोले, विसफायज अर्थात् कंकाली एक तोले, कावली हरड एक तोले इन सब को पीस छान कर पानीके साथ घोट कर जंगली वेरके समान गोली बनावे इन में से एक गोली सवेरेही खवावै ॥ फिर

दोपहर पीछे मूंग का घाट पिलावे और सायंकाल को मूंगकी दाल की खिचडी खवावे इसी प्रकार से तीन जुलाव देवे जो इसी जुलाब के देनेसे आराम होजायतो उत्तम है नहींतो नीचे लिखा अर्क तैयार करके पिलावे।

अर्क की बिधि।

सोंफ पावसेर। सूखी मकोय पाबसेर, कावली हरड; छोटी हरड; सनाय मकई;वर्यारा; वायविडंग; पित पापडा, चिरायता; सिरफोंका; जीरा; ब्रह्म दंडी, नकछिकनी ये सब पाव पाव सेर; पुरानी सुपारी; सूखे आमले, वकायनकेवीज, बबूल की फली। मुंडी, कचनार की छाल ये सब आध आध सेर अमल तासकी फली का छिलका, मंहदी के पत्ते, लाल चंदन, झाऊ के पत्ते ये सब पाव पाव सेर इनसब को जौकुट करके नदी के जल में बारह पहर तक भिगोबे फिर इस्का आसब खींचे फिर पांच तोले अर्क में एक तोले शहत मिलाकर पीबे चालीस दिवस के सेवन करनेसे चार बर्षका बिगडा हुआ शरीर भी अच्छाहो जायगा और जो इससेभी आरामन होतो एक वडे मेंढे और बकरे का मांस दोनों को साथ पका कर खिलावे।

स्त्रीका इलाज।

जो किसी स्त्रीको यहरोग होकर जाता रहाहो और उसे गर्भ रहगयाहो और उस कालमें रोग फिर उखड आवे और ऐसी चिकित्सा करनीहो कि गर्भ भी न गिरने पावे और रोग भी जाता रहै तो इस औषधिको देना चाहिये मुर्दा संग, गेरू और चनै एक एक तोले; जस्त दो तोले इनको महीन पीसकर बारह बरष के पुराने गुडमें गोली बनावै और एक गोली मलाई में लपेट कर नित्य खवावे॥ तो सात दिन में रोग जाता रहेगा औरजो इस गोलीसे आराम नहोतो यह औषधि करनी चाहिये

दूसरा उपाय ।

कंघीके पत्ते दसतोले । सिंगरफ तीनमाशे इनदोनोंको महीन पीस कर तीन माशे की गोली बनावै फिर एक गोली चिलम में रख कर मिट्टी के हुक्के को ताजाकरके पिलावैंफिर दूसरेदिन हुक्के को ताजा न करे पहिले दिनका ही पानी रहने दे केवल नेचेको ही भिगोले इसी तरह सातदिन करनेसे रोग जाता रहेगा इस पर परहेज कुछ नहीं है । बालक पैदा हो जानेके पीछे वे सब उपाय काम में लाने चाहिये जो उपदंश रोगियों के लिये लिखे गये हैं । बालकभी पेटमें से उपदंश रोग युक्त आया होतो वहभी अपनी माताके दूधपानेसे अच्छाहो जायगा क्यों कि जो औषधि उसकी माता को दी जायगी उसका असर दूधके द्वारा बालक में भी प्राप्त होगा और जो दैवयोगसे आराम न होतो यह औषधि करैं ॥

बालक के उपदंश का उपाय ।

कटेरी दोमाशे वायविडंग दोमाशे । दाखतीनमाशे इनतीनों को पीस कर आधसेर जलमें औटावे जब दो तोले रहिजाय तब किसी काच के बरतन में रख छोडे और इसमें एक रत्ती लेकर गौ के दूध में मिलाकर पिलावै ॥

डाक्टरों की सम्मति ।

डाक्टरों की सम्मति है कि उपदंश दो प्रकार का होता है एक पैत्रिक, दूसरा शारीरिक ।

यह रोग प्रथम व्यभिचारिणी स्त्रियों के हुआ करता है फिर उस स्त्री के साथ संगम करने से एक महीने के भीतर ही पुरुषकी जननेंद्रिय पर एक समान लाल फुंसी पैदा होजाती है फिर यह फुंसी धीरे धीरे बडी होकर बीच में से फट जाती है और उसमें एक छोटासा घाव हो जाता है, इस घावके किनारे

कठोर होते है, फिर धीरे धीरे इस घाव में से पीव बहने लगताहै। इस दशा में रोगी स्वस्थ रहता है। यह इस रोगकी प्रथमावस्था है।

फिर छः सप्ताह से १२ सप्ताह के बीच में हाथ आदि स्थानों में तांवे के रंगके घाव दिखलाई देने लगते हैं। ये व्रण अनेक प्रकार के होतेहैं और कोई कोई भ्रमसे इसे बसंत रोग भी बतला देते हैं। कभी कभी दादकी तरह भी होजाते हैं। बगल, कपोलकोण, गुदा और पांवकी उंगलियों में गोल गोल दाग पैदा हो जाते हैं; कभी नखों में भी पीडा होने लगती है इस काल में थोडा वा बहुतज्वर हो जाता है, यहज्वरएक ज्वर अथवा सर्दी लगकरभी होता है।इस समय मुख, ओष्ठ; जिह्वा और गलेके भीतर घाव हो जाताहै; नेत्रों में भी भयानक रोग हो जाते हैं, कानों में दर्द होने लगता है. यह इस रोगकी द्वितीय अवस्था है।

तीन चार वर्ष में वा इससेभी अधिक कालमें पेशी, अस्थि और चर्म भी भेद को प्राप्त हो जाते हैं। यह शारीरक उपदंश की अवस्था है।

पैत्रिक में संतान अपने माता पिता के संसर्गसे इस रोगकी अधिकारी हो जाती है॥

पैत्रिक रोग में शारीरक उपदंश के और सब लक्षण तो दिखाई देते हैं परन्तु जननेंद्रिय पर पूर्वोक्त घाव नहीं होता है

जन्म समय में इस रोगके होने से बालक के हाथ पावों में किसी प्रकार का विकार हो जाताहै, अथवा दुबला पतलाबुरी दशा में होता है। ऐसे बालक के ऊपर नीचे के होठों में घाव ओष्ठ कोण में गड्ढा तथा ताप तिल्ली औरयकृत बढे हुएहोतेहैं

इस रोगी को आराम होने पर भी लगातार दो वर्ष तक चिकित्सक के मतानुसार औषधादि सेवन करना चाहिये,नहीं

तो यह रोग फिर बढजाता है और वंशपरंपरागत हो जाता है। इस रोग की मुख्य दो ही औषध हैं। एक मर्करी, दूसरा आयोडाइड आव पुटेसियम। प्रायः येदोनों औषध एकत्र व्यवहार में लाई जाती है।

सोजाक का वर्णन।

स्त्रीसंगम के थोडी देर पीछे ही या देर में यह रोग होता है रोग के आरंभ में बडा कष्ट होता है और स्त्रीसंगम के कुछघंटे पीछे रोगी की गुह्येन्द्रिय के मुंह पर एक प्रकार की चिमचिमाहट सी होती है फिर जलने के साथ दर्द होताहै,फिर पतली धात निकल जाती है,। इस दशा में पेशाबकी हाजत थोडी थोडी देर ठहर कर होती है, पेशाब करने में बडा दर्दहोता है और सीवन के आर पास एक प्रकार की खुजली दिलबिगाडने वाली होती है। पेशाब करने के पीछे संपूर्ण मूत्रमार्गमें नीचेसे ऊपर तक चबक मारती है। चडूढो और सीवन आदि परहाथ लगाने से कष्ट प्रतीत होता है।

ऐसी अवस्था में गुह्येन्द्रिय बहुत सूज जाती है।रात के समय गुह्येन्द्रिय खडी रहती है और उसमें झुकाव रहताहै इस दशा में दर्द की अधिकता रहती है इस दशाको अंग्रेजी में कौरडी कहते है। रोगी बहुधा इस दशाको कम करने लिये वा पेशाव करने को बिस्तर से उठता है, इस समय मबादवडी अधिकता से निकलता है; यह मवाद गाढा और हरापन लिये होता है। यह इस रोग की प्रथमावस्था है इसमें इलाज केलिये शीघ्रता करना उचित है। इलाज न कराने से ऊपर लिखेहुयेलक्षण दस बारह दिन तक जारी रहते हे फिर पेशाव करने की इच्छा और जलन कम होने लगती है,गुह्येन्द्रिय कीसूजन दर्द और खडापन कम होजाता है, मवाद का रंग सफेद और

वह अधिक गाढा होकर अधिकता से निकलने लगता है। यह दशा थोडे दिन तक रहती है और फिर लक्षणोंमें अंतरपडने लगता है, यहां तक कि जलन और कडापन जातारहताहै. मवाद साफ हो जाता है और रोगी पेशाव की हाजतको इतनी देर तक नहीं रोक सकता है जितना भला चंगा रोकसकताथा

डाक्टरी इलाज।

रोगी की प्रथमावस्थामें सीवन के इधर उधर जोकें लगाना चाहिये। फिर सेकना कूल्हे तक गरम पानी में बैठनाऔरकम खाना उचित है और लुआवदार शोर्वे आदि देना चाहियेतथा मिक्सचर आफ लैकवार पुटसी भी दिया जाय। सोने से पहिले उचित है कि मलमल के एक टुकडे से गुह्येन्द्रिय की सीवन पर बांधदेना चाहिये कि जिससे खडापन और दरद रुकजाय। और निद्रा लाने वाली एक दवा हाई अस्साइ एमस और आधा ग्रेन एकसैट्रकट आफविला डोनाके सदृश मूत्रनालीके छिद्रमेंरखी जावे। कोई कोई कहते है कि तीन ग्रेन कपूर; चालीस बूंद लाडनम और एक औन्स पानी सोते समय पीना चाहिये रोगी की दूसरी अवस्थामें अर्थात् जब जलन कम होने लगती है पिसी हुई कैन्यविस एक ड्राम बालसम कोपेवे के साथखूब मिला कर एक औन्स लुआवदार समग अरवी के साथ देवै।

प्रथमही एक दिनमें दोबार फिर तीन, चार और पांचबार देवे, परन्तु शर्त यह है कि आमाशय इसको ग्रहण करे। यहदवा थोडे ही दिन में इस बीमारी को रोक देती है। उचितहैकि इस दवा को बहुत दिनतक सेवन कराता रहै, लेकिन इसकी मात्रायें कम करदी जाय। इस रोगमें तेज दवाओंका देना वार्जितहै।

सुजाक की चिकित्सा।

यह रोग चार प्रकार से होताहै एक तो आतशक से, दूसरा

स्वप्नमें वीर्य स्खलित होने से; तीसरा वेश्या संगमसे और चौथा रजस्वला स्त्री के साथ संभोग से इस रोग के पैदा होते ही आठ दिन तो वहुत ही दुख होता है फिर दर्द कम होजाता है ॥

उपदंशजन्य सुजाक ।

जिस मनुष्य के उपदंश रोग के कारण लिंग नाल पर घाव हो गयेहों और वह तेल मिरच खटाई आदि का सेवन करा रहा हो उसके गरमी के कारण लिंगनाल के भीतर मूत्रमार्ग में घाव हो जाता है ऐसा होने पर पेशाव करते समय बडा कष्ट होता है इसी को सुजाक कहते हैं ।

स्वप्नमें वीर्य निकलने मे उत्पन्न सुजाक का यत्न ।

जिस मनुष्यके स्वप्नमें स्त्री समागम से वीर्य स्खलित होते होते निद्रा भंग होजाय तो वीर्य निकलनेसे रुक जाताहै औरसुजाक रोग को उत्पन्न करता है जिस मनुष्यको इस प्रकारसे सुजाक हुआ होतो यह दवा देना चाहिये ।

दोतोले अलसीको रातमें आधसेर जलमें भिगोवे और सवेरेही उसका लुआब उठाकर छानकर एक तोला कच्ची खांड मिलाकर पीवे इस में खटाई और लाल मिर्च का खाना बर्जित हैं ॥

दूसरी दवा ।

ग्वारपाठेके दोतोले गूदे में एक तोला भुनाहुआ शोरा मिलाकर प्रति दिन प्रातःकाल खायतो तीन दिनके खाने से पुरानी सुजाक जाती रहतीहै यह दबा सब तरह की सोजाकको फायदा करती है परन्तु खाने में लाल मिर्च नमक उरद की दाल से बचना चाहिये ॥

तीसरी दवा ॥

त्रिफला डेढ तोले लेकर रात को सेर भर पानी में जो कुट

कर भिगोदे फिर दूसरे दिन प्रातःकाल छान कर इस में नीला थोथा तीन माशे महीन पीस कर मिलावे फिर इसकी तीनदिन तक दिनमें तीन तीन बार पिचकारि लगावे तो बहुत जल्दी फायदा होगा ॥

अथवा ॥

काहू के बीज; गोखरू के बीज; खीराकेबीज प्रत्येक एक तोले सोंफ छः माशे इन सबको पानीमें पीस दो सेर जलमें छानलेऔर जब प्यास लगे इसेही पीवे इस तरह सात दिन सेवन करेतो सुजाक आदि सब लिंगेन्द्रियजन्य रोग जाते रहते हैं नमक मिर्च खटाई का परहेज करे ॥

बेश्या प्रसंगोत्पन्न सुजाक ॥

यह सुजाक इस प्रकार से होती है कि दैवात् किसी सोजाकबाली बेश्या के साथ सहवास का प्रसंग होजाय तो प्रथम ही मूत्रमें भुलसने कीसी जलन मालूम होती है यदि उसी समय उस से अलग होजायतो उत्तम है नहीं तो दो तीन दिन के पीछे मूत्र नहीं उतरता है और बडी कठिनता तथा पीडासे बूंद बूंद आताहै फिर पीव निकलने लगता है जो पीब की रंगत सफेद जरदी मिली होतो नीचे लिखी दवा देनी चाहिये ।

उक्त सुजाक की दवा ।

सिरसके बीज बिनोले की मिंगी । बकायन के बीज की मिंगी हरएक एक एक तोले लेकर बारीक पीसे और बरगद के दूध में मिलाकर जंगली बेर के बराबर गोली बनावे और एक गोली नित्य प्रातः समय खाकर ऊपर से गौका दूध पावसेर पीवे खट्टी और बातल वस्तुओं से परहेज करना चाहिये ।

अन्य दवा ॥

यदि पीवकी रंगत सुरखी लिये होय तो यह औषधि दे ॥

कवावचीनी। दालचीनी। गुलाव के फूल। सफेद मूसली। असगंध नागौरी,। सेलखडी ये दवा,छः छः माशे इनसबको महीन पीसकर एक तोले की मात्रा पावभर गौ के दूधके साथ खाय औ र खटाई बातकारक द्रव्य और लाल मिरच इनका परहेज करे॥ इक्कीस दिन तक इस दवा का सेवन करे तो यह रोग अवश्य जाता रहेगा॥

सुजाक का अन्य कारण।

एक सुजाक इस प्रकारसे भी होता है कि थोडी थोडी देरमें मनुष्य स्त्री से तीनचार बार संभोग करे और हर वार मूत्र करि सोरहे और व्यर्थ स्त्री से लिपटा रहे उस समय वीर्य की. थोडीसी बूंद लिंग के छिद्र में जम जातीहे और उसमें मदिराके सदृशगुणहे कि सबेरे तक घाव करदेती है यह अवस्था तो बुद्धिमानों की है और कोईरऐसे मूर्ख होते है कि थोडे काल में स्त्री से चार पांच बार संभोग करकेभी मूत्र नहीं करते और चिपटेही जातेहैं ऐसे लोगों के सुजाक अवश्य हो जाता है उनके पिचकारी लगाना चाहिये.

पिचकारी की विधि।

नीलाथोथा; पीली कौडी। विलायती नील ये सव दो दो तोले ले। इनको महीन पीस कर इस में से दो माशे आधसेर जल में मिला कर खूव हिलावे। फिर लिंग के छिद्र में यथा विधि पिचकारी देवे परंतु जहां तक होसके पिचकारी देना योग्य नहीं है॥ क्यों कि इस से कई एक हानि होती है एक तो यह कि अंडकोषों में जल उतर आता है॥ दूसरे यह कि लिंग का छिद्र चौडा होजाता है इस सवव से जहां तक होसके पिचकारी न दे॥

अन्य दवा।

कतीरा एक तोला, ताल मखाने एक तोले इन दोनों को वारीक पीस कर इसमें वरावर का बूरा मिला कर चार माशे तथा छः माशे की फक्की ले ऊपर से पाव भर गौ का दूध पीवे ॥ जो मनुष्य वेश्या के पास इसरीत से रहे कि संभोग से पहिले आलिंगन करे और पहिले मूत्र करिके उस से संभोग करे तो उस मनुष्य के कभी वह सुजाक का रोग नहीं होगा और जो दैवयोग से हो भी जाय तो जानले कि इस वेश्या के ही सुजाक था ऐसे सोजाक वाले को यह दवा दे।

दवाइन्द्रियजुलावकी।

शीतल चीनी, कलमी शोरा, सफेद जीरा, छोटी इलायची ये सव दवा एक एक तोले इन सव को पीस छान कर रक्खे और इसमें से छःमाशे प्रातःकाल खाकर ऊपर से सेर भर गौ का दूध पीवै तो दिन भर मूत्र आवैगा और जव प्यास लगे तव दूध की लस्सी पीवै और सायंकाल के समय धोवा मूंग की दाल और चांवल भोजन करे और दूसरे दिन यह दवा खानेको देवै॥

दूसरी दवा।

खारखस्क खीरा के बीज, मुंडी, ये दवा छःछः माशे लेकर रात्रि के समय पानी में भिगोदे, फिर प्रातःकाल मल छान कर पीवै और दही भात का भोजन करे और जो इस दवा से आराम न होय तो फिर ये दवा देवे।

तीसरी दवा।

कतीरा, गेरू, सेलखडी, शीतल चीनी, ये सब दवा छः छः माशे ले और मिश्री सफेद दो तोले ले इस सबको कूट छान कर छः माशे की मात्रा गौ के पाव भर दूध के संग खायतो फायदा वहुत जल्दी होगा और यह रोग रजस्वला स्त्री से सम्भोग

करने से भी होजाता है तो ऐसे रोगी को यह दवा देवे ।

रजस्वला से उत्पन्न सुजाक की दवा ।

वीह दाना तीन माशे लेकर रात को जल में भिगो दे फिर प्रातः काल उसका लुआव निकाल कर उसमें सवासेर दूध मिला कर फिर सेलखडी और ईसब गोल की भुसी छः छः माशे लेकर पहिले फांके फिर ऊपर उस लुआब को पीले और खाने को मूंगकी दाल रोटी खावे और एक सोजाक इस प्रकार सेभी होती है कि मनुष्य उस वेश्या से संगत करे कि जिसने बालक जना हो उस में दो कारण हैं एक तो यह कि उन दिनों में वह गरम वस्तु बहुत खाती है और दूसरा यह कि वह बालक को दूध नहीं पिलाती है दाई पिलाती है उस समय दूध की गर्मी और गरम वस्तुओं की गर्मी और शरीर का बुखार ये उस मनुष्य को हानि पहुंचा कर सोजाक रोग को पैदा करते हैं इस रोग वाले को यह दवा देनी चाहिये ॥

दवा ॥

बालंगू के बीज वीह दाना खीरा ककडी के बीज कुलफा के बीज कासनी के बीज हरी सौंफ सफेद मिश्री ये सब दवा छः छः माशे ले सबको पीस छान कर चार माशे नित्य खाया करे और इसके ऊपर यथोचित गौ का दूध पीवे और जो इस औषधि से आराम न होय तो यह औषधि देनी चाहिये ॥

दूसरी दवा ।

गौके बछडे का सींग पुरानी रुईमें लपेट कर बत्ती बनावे और कोरे दीपक में रखकर उसमें अंरंडी का तेल भरदेवे फिर इसे जलादे और उसके ऊपर एक कच्ची मिट्टीका पात्र रखकर काजल पाडले फिर उस काजल को दोनों वक्त आंखों में लगाया करे

खटाई और बादी से परहेज करै।

सब प्रकार की सुजाक की दवा।

कुल्फा के बीज पोस्त के बीज सफेद ककडी के बीजोंकी मिंगी तरबूज के बीजों की मिंगी ये सब पन्द्रह पन्द्रह माशे और छोटा गोखरू बबूल का गोंद कतीरा ये छः छः माशे ले इन सब को ईसबगोल के रस में पीसकर तीन माशे की गोली बनाले फिर एक गोली नित्य ग्यारह दिन तक सेवन करै तो सब प्रकार की सुजाक जाय।

पीयाबांसे के छोटे पेड को जला कर उसकी राख में कतीरा का पानी मिलाकर चने के बराबर गोली बनाले। और गुल खैराको रात को भिगोदे सवेरेही मलकर छानले फिरपहिले उस गोली को खाकर ऊपर से इस रसको पीवै तो सब प्रकार कीं सोजाक जाती रहती है।

अथवा।

हल्दी और आमले दोनों बराबर ले चूर्ण करै इस की बराबर खांड मिला कर एक तोला नित्य पानी के साथ फांके तो आठ दिन में सुजाक जाय।

अथवा।

सफेद रालको पीसकर उसमें बराबरकी मिश्री मिलाकर नौमा-शे नित्य खाय तो सुजाक जाय औरै पीव का निकलना बंद होय।

अथवा।

ढाककी कौंपल। सूखे ढाकका गोंद। ढाक की छाल। ढाक के फूल। इन सब को कूट छानकर बराबर की खांड मिला कर इस में से पौने चार माशे कच्चे दूध के साथ खायतो सब प्रकार की

सुजाक और पीव का निकलना बंद होय ॥

अथवा ।

महंदी के पत्ते । आंवले । जीरा सफेद । धनियां गोखरू ये सब औषधि एक एक तोले लेकर जौकुट कर फिर इसमें से एक एक तोले रात को पानी में भिगोदे । प्रातः काल मल छान ले और तीन माशे कतीरा पीस कर पीछे इसमें एक तोला खांड मिलाकर सात दिन पीने से सुजाक जाता रहता है ॥

अथवा ।

शंखा हूली का काढा करके पीने से भी सुजाक जाता रहता है

अथवा ।

कुलंगा के बीज ६ माशे लेकर आधसेर दूध में भिगोके रातको ओसमें धरदे फिर प्रातः काल छानकर उसमें थोडी खांड मिला कर पिये परंतु कुलंग के बीजों को पीसकर भिगोवै तो सब प्रकार का सोजाक जाता रहता है ॥

अथवा ॥

बबूल की कोंपल, गोखरू एकएक तोला लेकर इनका रस निकाल कर थोडा बूरा मिलाकर पीवेतो सबप्रकार का सोजाक जाता रहता हैं ।

प्रमेह रोग का वर्णन ।

इस रोग को हकीम लोग जिरियान कहते हैं ।

आयुर्वेद के जानने बालों ने इसे वीस प्रकार का लिखा है, जैसे—कफ से होने बाला दस प्रकार का । पित्त से होने वाला छः प्रकार का । और बात से होने वाला चार प्रकार का । इनके अलग अलग नाम ये हैं जैसे—इक्षुमेह, सुरामेह पिष्टमेह, लालामेह, सान्द्रमेह, उदकमेह, सिकतामेह शनैमेह शुक्र मेह और शीतमेह । ये दस प्रकार के प्रमेह कफकी अधि-

कता से होते हैं। क्षारिमेह, कालमेह, नीलमेह; हरिद्रामेह मंजिष्ठा मेह, और रक्तमेह, ये छः प्रकार के प्रमेह पित्त की अधिकता से होते हैं। वसामेह, मज्जा मेह; क्षौद्रमेह और हस्तिमेह, ये चार प्रकार के प्रमेह वात की अधिकता से होते हैं।

प्रमेह रोग का कारण।

अधिक दही खाने से, अधिक स्त्रीसंग करने से, कूए वा नदी का नया जल पीनेसे, जल के पासवाले पशु पक्षी अथवा और जानवर के मांस का यूष (शोर्वा) खाने से; अधिक दूध पीनेसे, नये चांवलों का भात खाने से, चीनी आदि किसी मिष्ट रससे युक्त आहार का सेवन करने से; अथवा कफको बढाने वाले किसी पदार्थ को खाने पीनेसे, प्रमेह रोग उत्पन्न होता है। बात पित्त और कफ तीनों दोष; मेद रक्त, मांस, स्नेह, मांसजल मज्जारस और धातु आदि शरीरस्थ दोष, पूर्वोक्त दही आदि के सेवन से दूषित होकर ऊपर कहे हुए बीसप्रकार के उत्कट और कष्टदायक प्रमेह रोगोंको उत्पन्न करते है।

इक्षुमेह के लक्षण।

इक्षुमेह नामवाले प्रमेह रोग में रोगी का पेशाव ईख के रस के समान अत्यन्त मीठे रस से युक्त होता है।

सुरामेह के लक्षण।

इस रोगमें मद्यकी गंध के समान उग्र गंधवाला पेशाव होता है इस पेशाव का ऊपर का भाग पतला और नीचे का भाग गाढा होता है।

पिष्टमेह के लक्षण।

इस रोगमें पेशाव पानी में घुली हुई मिट्टी के समान होता

है, पेशाब सादा होता है, जिस समय रोगी पेशाब करता है उस समय सब देह के रोमांच खडे होजाते हैं।

लालामेह के लक्षण।

इस रोग में पेशाब की धार के साथ ऐसे सूत से निकलते हैं जैसे मकडी का जाला होता है। अथवा जैसे बालक के मुख से राल टपकती है वैसीही राल टपकती है इसी को लालामेह कहते हैं।

सान्द्रमेह के लक्षण।

इस रोग मे पेशाव वासी फेनके सदृश गाढा होता है, इसी को सान्द्रमेह कहते हैं।

उदकमेह के लक्षण।

उदकमेह में पेशाब गाढा और साधारण रंगसे युक्त होता है पेशाब में किसी प्रकार की गंध नहीं आती है, जलके समान शब्द करता हुआ पेशाव निकलता है।

सिकतामेह के लक्षण।

इस रोग में पेशाब को रोकने की सामर्थ जाती रहती है, पानी का रंग मैला होता है और उसके साथ वालू रेत के से कण निकलते है; इन चिन्हों से युक्त पेशाब होने से उसे सिकता मेह कहते हैं।

शनैर्मेह के लक्षण।

जो पेशाब थोडा थोडा होता है और धीरे धीरे निकलता है ऐसे रोगको शनैर्मेह कहते हैं।

ऐसे रोगी का पेशाब वीर्य के समान होता है अथवा वीर्य भी मिला रहता है। वीर्यसा मालूम होने के कारण इस रोग को

शुक्रमेह कहते है ।

शीत मेह के लक्षण ।

इस रोग में पेशाब अत्यन्त मधुररस युक्त और अत्यन्त ठंडा होता है । ऐसा पेशाब होने से इस रोग को शीतमेह कहते हैं ।

क्षारमेह के लक्षण ।

इस रोग में पेशाब गंध वर्ण, रस और स्पर्शमें सर्वथा क्षार जलके समान होता है । इन लक्षणों से युक्त होने पर इस क्षार मेह कहते हैं ।

नीलमेह के लक्षण ।

इस रोग में पेशाब में नीली झलक मारती है, नीलकांति युक्त होने ही से इस रोग को नीलमेह कहते है ।

कालमेह के लक्षण ।

जो पेशाब कालीके समान काला होता है उसे कालमेह कहते है ।

हरिद्रामेह के लक्षण ।

जो पेशाब हलदी के रंग के समान होता है और जिसमें पेशाब करते समय जलन बहुत होती है, इन लक्षणों से युक्त रोग को हरिद्रामेह कहते हैं ।

मंजिष्ठा मेह के लक्षण ।

जिस रोग में पेशाब मजीठ के रंग के समान लाल होता है और कच्चे मांस के समान गंध युक्त धातु निकलती है इसी को मांजिष्ठा मेह कहते है ।

रक्त मेह के लक्षण ।

इस रोग में पेशाब लाल रंग का होता है गरम होता है कठिनता से निकलता है । इसी को बसामेह कहते हैं ।

और उसमें कच्चेमांसकीसी गंध आने लगती है। इसी को रक्त-मेह कहते हैं।

बसामेह के लक्षण।

इस रोग में पेशाव चर्बी के रंग के सदृश होता है इसमें चर्बीभी मिली होती है और पेशाव अधिक निकलता है।

मज्जामेह के लक्षण।

जिस रोग में मज्जा की आभा के समान अथवा मज्जा से मिला हुआ पेशाव बार बार होता है, उसे मज्जा मेह रोग कहते हैं।

चौद्रमेह के लक्षण।

इसी का दूसरा नाम मधुमेह है। इसमें रूक्षगुणयुक्त पेशाव होता है और मूत्र कषाय रस युक्त अथवा मिष्टरस युक्त निकलता है इसी को मधुमेह वा चौद्रमेह कहते हैं।

हस्तमेह के लक्षण।

जो मनुष्य मतवाले हाथी के मूत्रके समान झागदार पेशाव करता है और उसमें ललाई भी हो और वार बार अधिक परिमाणु में पेशाव करे। इसको हास्तिमेह कहते हैं।

साध्यमेह के पूर्व लक्षण।

मधुमेह रोगी का पेशाव जिस समय निर्मल हो रंग में साधारणता हो अथवा कटुतिक्त किसी रस से युक्त हो उस समय मधुमेही निरोग होजाता है।

मेह को साध्यासाध्य और याप्यत्व।

मेह, कफ और मांसादि की एक सी ही चिकित्सा होती है। इस लिए कफसे उत्पन्न इस प्रकार के प्रमेह रोग साध्य होते हैं अर्थात् सुचिकित्सा से आराम होजाता है। पित्ततथा मेदमांसादि

की चिकित्सा बिषम अर्थात् विपरीत होती है इस लिये हित से पैदा हुआ छःप्रकार का प्रमेह याप्य होता है अर्थात् आराम हो हो कर रोग फिर हो जाता है। मज्जादि गंभीर धातुओं में पहुंच जाने से बातज चार प्रकार के प्रमेह असाध्य होते हैं अर्थात् रोगी को आराम नहीं होता है।

असाध्य प्रमेह के लक्षण।

पूर्वोक्त अजीर्णआदि तथा अन्यान्य अशुभ उपद्रवोंसे युक्त होने पर अधिकतर धातु और मूत्र का स्राव होनेसे यथा प्रमेह रोग बहुत दिन का हो जाने से यह रोग असाध्य होता है। जब प्रमेह बहुत दिन का हो जाता है और उसकी किसी प्रकार की चिकित्सा नहीं की जाती है तो समय पाकर यह रोग मधुमेह में परिणत होजाताहै मधूमेहको किसी प्रकारसे भी आरामनहीं होता है यह निश्चय जान लेना चाहिये जिस को यह रोग पिता माता के बीजके दोष से पैदा हुआहै जो बाल्यावस्थाहीसे हुआ है वह रोग किसी प्रकार से भी अच्छा नहीं होता है। कुलपरंपरागत अथवा इस प्रकार की फुंसियों से युक्त प्रमेह रोग ग्रस्त मनुष्य का जीवन इस रोग से नष्ट होजाता है।

प्रमेह रोगका इलाज।

१—अर्बी गोंद कबाबचीनी और मिसरी हर एक आधा आधा तोला लेकर एक छटांक जलमें रात के समय भिगोदे प्रातःकाल छानकर इस जलको सेबन करे तो अत्यन्त कष्टदायक सब प्रकार का प्रमेह जाता रहता है।

२—आमले का रस आधी छटांक लेकर इस रस में आधा तोला शहत मिलाकर पीनेसे मेह का कष्ट कम होजाता है।

३—आमले का गूदा आधे तोले लेकर शहत के साथ

सेवन करने से भी प्रमेह रोग जाता रहता है।

(४) मूत्रेन्द्रिय के छिद्रमें कपूर रखनेसे पेशाब होकर दर्द कम होजाता है।

(५) पके हुए पेठे का जल आधपाव, जवाखार दो आना भर, विशुद्ध चीनी दोआना भर इन सबको मिलाकर सेवन करने से मूत्रकृच्छ्र रोग में पेशाव होकर रोगी की वेदना कम होजाती है।

[६] मिसरी के पाव भर शर्बत में एक छटांक कमला नीबू का रस मिलावै और इसमेंसे धीरे धीरे पान करावे, तो पेशावों के होने से रोगी की वेदना कम होजाती है।

[७] विशुद्ध चीनी में आरने उपलों की राख का पाव-भर जल मिलाकर पीने से रोगी रोगमुक्त होजाता है।

[८] आमले का गूदा आधे तोला, बकरी कादूध छटांक भर इन दोनों को मिलाकर सेवन करने से मूत्रकृच्छ्र जाता रहता है।

[९] जवाखार और विशुद्ध चीनी प्रत्येक दो आना भर मिलाकर शहत के साथ तीन चार दिन तक सेवन करने से मूत्रकृच्छ्र दूर होकर धारागति से पेशाब होने लगता है।

(१०) गोखरू के बीज, असगंध, गिलोय, आमला और सोंठ हर एक एक आना भर लेकर चूर्ण बनाकर शहत के साथ सेवन करने से मूत्रकृच्छ्र रोग जाता रहता है।

[११] मूंगे की भस्म एक रत्ती लेकर शहत के साथ मिलाकर सेवन करनेसे कफजन्य मूत्रकृच्छ्र रोग दूर होजाता है।

(१२) वरना की दो तोले छाल लेकर आधसेर जलमें औटावे, जब चौथाई शेष रहै तब उतार कर छानले, फिरइसमें

परिष्कृत शोरा छः रत्ती मिलाकर इस जल को दो बार पीवै, इससे पेशाब साफ होकर मूत्रकृच्छ्र जाता रहता है।

[१३] लोहेकी भस्म दो रत्ती शहतमें मिलाकर चाटनेसे मूत्रकृच्छ्र का कष्ट जाता रहता हैं। पेशाव साफ होजाता है और रोगी बलिष्ठ होता चला आता है।

(१४) पंचतृण में से हरएक को दो आने भर लेकर जौ कुट करके आध सेर जलमें औटाकर चौथाई शेष रहनेपर उतारले; ठंडा होने पर छानकर इसमें चार चार आना भर शहत और चीनी मिलाकर पान करे। इससे मूत्रकृच्छ्र का पेशावसाफ हो जाता है। और किसी तरहकी वेदना हो रही हो तोउसके भी शीघ्र शांत होने की संभावना है। यह दवा बहुत उत्तम हैं

(१५)कालेगन्नेकीजड; कुशाकीजड, भूमिकूष्मांड, औरसौंफ प्रत्येक आधा आधा तोला लेकर आधा सेर जल में औटावै जब चौथाई शेष रहै तब उतारले, और ठंडा होने पर छानकर इस क्वाथ को पीवे। इससे प्रमेह से उत्पन्न मूत्रकृच्छ्र जाता रहता है।

(१६) एक तोले कटेरी के रस में तीन माशे शहतमिला कर पीने से भी प्रमेह से पैदा हुए मूत्रकृच्छ्र में आराम होनेकी विशेष संभावना है।

(१७) गोखरू के एक छटांक क्वाथ में जवाखार दो वा तीन रत्ती मिलाकर पीने से निश्चयही पेशाव साफ हो जाता है और सुजाक का दरदभी कम हो जाता है।

(२८) गोखरू और कटेरी प्रत्येक एक तोला लेकरआध सेर जलमें औटावै, चौथाईशेष रहनेपर उतारकरछानले, ठंडाहोने पर इसमें बतासा डालकर पान करावे इससे कफ जनितसुजाक जाता रहता है।

(१६) पंचतृणको जड सब मिलाकर दो तोला' बकरी का दूध एक छटांक जल एक सेर इन सबको मिलाकर औटावे जब दूध शेप रहजाय तब उतारकर छानले; इसके पीने से लिंग के छिद्र में होकर रुधिर आता हो वा रुधिर का पेशाव होता हो तो शीघ्र आराम हो जाता है।

(२०) आधा तोला बीदाना अनार के रसके साथ मोती की भस्म चार रत्ती मिलाकर सेवन करने से निश्चय ही पेशाव कम हो जाते हैं और दरदभी घट जाता है।

(२१) बडी इलायची के बीजों का चूर्ण दो आना भर सुंठीचूर्ण दो आना भर इसको एक छटांक अनार के रसमें मिलाकर सेवन करने से निश्चयही पेशाब कम हो जाते हैं और कफ प्रधान बहुमूत्र रोग में इस दवा से विशेष उपकार होता है।

(२१ शुद्धकी हुई बंगभस्म दो रत्ती मधु तीन माशे इनको मिलाकर चाटने से बहुमूत्र रोग में पेशाव कम हो ही जाते है।

(२३) दो तोले आमले के रस में शहत मिलाकर दिनमें दो तीन बार सेवन करने से बहुमूत्र रोग में पेशावकम होजाताहै

हकीमी चिकित्सा।

किसी को आतशक के कारण से प्रमेह रोग होजाता है। इसमें चिकित्सा करने से कुछ आराम होजाता है परन्तु जडसे नहीं जाता है।

सुजाक से उत्पन्न प्रमेहकी चिकित्सा।

सुजाक से उत्पन्न हुए प्रमेह का यह लक्षणहै कि-मूत्रनाली के छिद्रमें होकर पीव निकला करताहै इसरोग पर यह दवा उत्तम है।

खरबूजे की मिंगी तीन तोले, खीरे के बीजों की मिंगी

डेढ़ तोले; घीया के बीजों की मिंगी; अजवायन खुरासानी, वंश लोचन; इसपंद के बीज, कुलफे के बीज; गेहूं का सत, बादाम की मिंगी, कतीरा, मुलहटी का सत, पोस्तके दाने, गेरू; अजमोद ये सब दवा सात सात माशे ले महीन पीसकर छान ले फिर बीहदाना सात माशे लेकर उसका लुआबनिकालकर उस पीसीहुई दवा में मिलाकर जंगली बेरके बराबर गोलीबनावै और गोखरू तथा सूखा धनियां छः छः माशे कूटकर पावसेर जलमें रातको भिगोदे और प्रातःकाल इस गोली को खाकर ऊपर से इस नितरे हुए जलको पीवै परन्तु गोली को दांत न लगावै साबतही निगल जावै तो प्रमेह जाय इसदवा पर खटाई तथ लाल मिर्चों से परहेज करना चाहिये।

दूसरा उपाय।

असली पावसेर वंशलोचन चार तोले; ईसबगोल सेलखड़ी, इन सबको महीन पीसकर बराबर की खांड मिलाकरएकहथेली भर नित्य सवेरेही खाकर ऊपर से पावभर गौकादूध पीवैतो प्रमेह जाय परन्तु गुड; खटाई तेल, इस पर कुपथ्य है।

अन्य प्रमेह।

प्रमेह में बीर्य बहुत पतला होकर बहा करता है और यहप्रमेह तीन प्रकार से होता है एकतो यह कि सदा पीकर बीर्य पानीके समान होकर बहा करता है इस प्रमेह बाले को यह दवादेनी चाहिये॥

पतले बीर्य का उपाय।

बर्गदकी डाढ़ी पावसेर लेकर इसको बर्गदही के पावसेर दूध में भिगोकर छाया में सुखाले और बबूल का गोंद, सालब-मिश्री; सकाकुल येसब दोदो तोले ले और मूसली सफेदऔर मूसली स्याह यह दोनों पांच तोले ले कूट छानकर बराबर

की कच्ची खांड मिलाकर इसमें से एक तोले नित्य सवेरे ही खाकर ऊपर से पावभर गौका दूधपीवे और खट्टी तथा वातल वस्तुओं को सेवन न करै तो सात दिन में निश्चय आराम हो जाता है।

दूसरी प्रकार का प्रमेह।

दूसरा प्रमेह यह है कि गर्मी पाकर वीर्य पिघल कर पीला-पन लिये हुए वहता है इस रोगवाले को यह दवा उचित है।

गर्मीके कारण पतले वीर्यका उपाय।

बबूलकी कच्ची फली, सेमर के कच्चे फूल, ढाककी कोंपल नया पैदा हुआ कच्चा छोटा आम, मुंडी कच्चेअंजीर, अनारकी मुंह मुंदी कली; जावित्री कच्ची ये सब औषधि एक एक तोलेले इन सबको महीन पीसकर सबसेआधी कच्चीखांड मिलाकरएक तोले प्रतिदिन प्रातःकाल गौके दूधके संग सेवन करने से प्रमेह जाता रहता है।

तीसरी प्रकारका प्रमेह।

तीसरे वात पित्त के विकार से प्रमेह हो जाता है इसके लिये यह दवा दे।

उक्त प्रमेहकी दवा।

उर्द का आटा आध सेर इमली के बीजोंका चूर्ण आधसेर सेलखडी तीन तोले इन सबको पीस छानकर इसमें तीन पाव कच्ची खांड मिलाकर इसमें से पांच तोले नित्य प्रातःकाल के समय खाकर गौका दूध पावसेर पीवै तो सात दिन में प्रमेह जाता रहता है। और कभी कभी रुधिर विकार से भी प्रमेह हो जाता है इसमें वासलीककी फस्द खोले और इन्द्रिय जुलावदेकर यह औषधि देनी चाहिये।

रक्तज प्रमेह की चिकित्सा।

भुने चनेका चून पावसेर, सीतलचीनी एकतोले सुफेद जीरा

छःमाशे शकरतीगाल छःमाशे इन सबको कूट छान कर इसमें तीन तोले कच्ची खांड मिला कर सवेरेही चारतोले फांकेऊपर से गौकापावभर दूध पीवे और यथोचित परहेज करे विंदु कुशाद की चिकित्सा जब आदमी के सोजाक पैदाहोताहैउस वक्त बहुत से मनुष्य औषधियों की बत्ती बनाकर जननेन्द्रिय के छिद्र में चला देते है इस लिये लिंग का छिद्र चौडा होजाताहै इस को विन्द कुशाद कहतेहैं इस रोगवाले मनुष्यको यहऔषधि देनी चाहिये ॥

गौ का घृत दो तोले, रसकपूर, सफेदा काशगरी सेलखडी ये दवा एक एक माशे नीला थोथा एक रत्ती पहिले घृत को खूब धोवे फिर सब औषधियोंको पीस छानकर घृतमें मिला कर मरहम बनाले और रुईकी महीन बत्ती पर इस मरहमको लपेट कर लिंग के छिद्रमें रक्खे तो आराम होय।

उपदंशके मेहकी चिकित्सा।

जो आतशकक्केकारण से प्रमेह होतो उसकी यह परीक्षा है कि इन्द्री के मुखपर एक छोटासा घाव होता है और वीर्य भी पतला सुर्खी लिये हुए बहता है क्योंकि एक तो प्रकृति की गर्मी दूसरे आतशक की गर्मी;तीसरे उन दवाइयों की गर्मी जो आतशक में दीनी गई इतने दोषों के मिलने से यह प्रमेह रोग होता है इसके वास्ते यह दवा देना चाहिये ॥

(दवा)

अकरकरा. सुपारीके फूल। मूसली सफेद। मौफला। मीठे इन्द्रजौ। गोखरूबडे। गिलोयसत। कौंचकेबीज,उटंगनकेबीज अजवायनके बीज अजमोद। शीतलचीनी। कुलीजन। शोरंजान मीठा। सालव मिश्रीसिकाकुल मिश्री। अलसी। सतावर। तबाखीर। बडी इलायची के बीज। दम्बुल अखवेन। येसबदवा

एक एक तोले ले सबको कूट छानकर सात तोले बूरा मिलाकर एक तोले नित्यप्रातःसमय खाय ऊपरसे पावभर गौका दूधपीवेतो ग्यारह दिनमें प्रमेहको निश्चय जडमूलसे नाश कर देती है ॥

और जो वीर्य स्याही लिये हुये वहताहो उस्के वास्ते ऐसी दवा देनी चाहिये जो प्रमेह और आतशक को गुणदायक हो ॥

नुसखा प्रमेह ।

अकरकरा गुजराती । हुलहुलके वीज । गोखरू छोटे, गोखरू वडे सुपारी केफूल । स्याह मूसली।सफेद मूसली।सेमर का मूसला मीठे इन्द्रजौ; गिलोयसत।लिसौडे व कौंचकेवीज।उटंगन केवीज तालमखाने । शीतल चीनी । मीठा सारेंजान ये सब दवा एक २ तोले । तज, कलमी विजोरे का सत, पठानी लोध ये नौ नौ माशे इन सबको कूट छानकर सबसे आधा बूरा मिला कर एक तोले नित्य गौके दूधके संग प्रातःसमय खायतो प्रमेह जाय और खटाई आदिसे परहज करे ॥

जो प्रमेह लाल मिर्च और खटाई तथा गरम अहार के अधिक खानेसे उत्पन्न होताहै उस्के वास्ते ये दवा देनी योग्यहै ॥

दवा

दोनों मूसली पांचतोले, कलौंजी स्याह पांच तोले सबको कूट छानकर वरावर का बूरा मिलाकर एक तोले पावभर गौके दूध संग प्रातःकाल खाया करै तो प्रमेह जाता रहताहै ॥

अथवा ॥

कुदरू गोंद पन्दरह तोले लेकर कूट छानकर इसमेंदसतोले कच्ची खांड मिलाकर नित्य सवेरेही एकतोले गौके दूधके संग खायतो यह प्रमेह रोगजाता रहता है ।

वीर्य के पतलेपनकी दवा ।

मूसली सफेद, खरबूजेकी गिरी; पांच पांच तोले, पेठा आधसेर, घीग्वार का गूदा आधपाव, कबावचीनी छःमाशे इन सबको पीसकर एक सेर कंदकी चाशनी करके इसमें सब दवा मिलाकर माजून बनाले इसमें से एक तोला नित्य सेवन करने से वीर्य पैदा होता है और गाढाभी हो जाता है ।

दूसरी दवा ।

एक सेर गाजरोंको छीलकर घी में भूनले फिर आधसेर कंद मिलाकर हलुआ बनाले इसमें से पांच तोले प्रतिदिन सेवन करने से वीर्य गाढा होता है और ताकतभी अधिक बढ़तीहै ।

तीसरी दवा ।

पावसेर छुहारे गौ के दूध में पकाकर पीसले और पावसेर गेहूं का निशास्ता और पाव सेर चनेका बेसन इनको भूनले फिर तीनपाव खांड और आधसेर घी डालकर सबका हलुआ बनावे फिर इसमें बादाम पावसेर-पिस्ता पावसेर-चिलगोजापाव सेर; अखरोट की गिरी आधपाव सबको बारीक करके हलुआ में मिलादे फिर इसमें से चार तोले प्रतिदिन सेवन करे तो वीर्य गाढ़ा हो जाता है और शक्तिभी बहुत बढ जाती है ।

चौथी दवा ।

मीठे आम का रस तीनसेर, खांड सफेद एक सेर, गौ का घी आधसेर; गौका दूध एक सेर; शहत पावसेर लाकर रखले तथा वहमन सफेद, वहमन सुर्ख, सोठ, समेल का मूसला-प्रत्येक एक तोला- बादामकी गिरी चारतोले; पीपल छः माशे मालव मिश्री चार तोले, सिंघाडा चार तोले, खोलंजान छःमाशेपिस्ता चार तोले इन सब को अलग अलग पीसकर रखले पहिलेबादाम, पिस्ता और सिंघाड मिला करघीमें भूनले फिर आमकारस

खांड शहत और दूध इनको कलईके बरतनमें मंदी आगपर पकावै फिर सब चीज डालकर हलुआ की रीतिसे भूनले फिर इस्में से दो तोले सेवन करने से वीर्य अधिक पैदा होता है पतला हो तो गाढा हो जाता है।

पांचवीं दवा।

बबूलकी छाल, फली, गोंद और कोंपल इनसबको बराबर ले कूट छानकर सबको बराबर खांड मिलाकर एक तोले प्रति दिन सेवन करने से पतला वीर्य गाढा हो जाताहै ॥

छटी दवा।

बरगद के फलको सुखाकर पीसले प्रमाण के अनुसार गौके पावभर दूध के साथ फांके तो वीर्य गाढा हो जाता है।

सातवीं दवा।

सालम मिश्री; दोनों मूसली सेमर का मूसला, धाडकी सोंठ यह सब डेढ डेढ तोले. शलजम के बीज, सोयाके बीज, गाजर के बीज. प्याज के बीज. मिर्च पीपल यह सब आठ आठमाशे, शहत पावसेर, लाल बूरा, पावसेर. प्रथमही शहत और बूरेकी चाशनी कर उसमें ऊपर लिखी हुई सब दवाओं को मिलाकर माजून बनाले फिर इसमें से एक तोले नित्य सेवन करने से जननेन्द्रिय प्रबल होजाती है बिगडा हुआ वीर्य सुधर जाता है। इस दवा के सेवन काल में खटाई वर्जित है ॥

आठवीं दवा।

सालब मिश्री पांच तोले। शका कुल मिश्रीतीनतोले: अकर करा। कुलीजन। समंदर सोख। बिलायेकी मिंगी। असगंध एक२ तोले पीपल मस्तंगी हालमके बीज, जायफल। सोंठ दोनों बहमन। दोनों तोदरी। छःछः माशे। छिलेहुए सफेद तिल, कों चकेबीजोंकीमिंगी। गाजरकेबीज एकमाशे जावित्री, केशर तीन

तीन माशे सबकी बराबर सफेद कंद ले और तिगुने शहतमें सब मिलाकर माजून बनावै फिर छःमाशे नित्यखाय तोवीर्य गाढाहो जाताहै ॥

नवीं दवा ।

रेग माही, इन्द्रजौ, सफेद पोस्त के दाने, नरकचूर; सफेदचन्दन, नारियल की गिरी, बादाम की मींगी अखरोट की मींगी; मुनक्का, काले तिल छिलेहुए ये सब दवा दो दो तोले प्याज के बीज, शलजम के बीज, कौंचके बीज की मींगी, हालमके बीज, माई, असवंद के बीज, गाजर; मस्तंगी; नागरमोथा अगर, तेजपात; बिजौरे का छिलका चीता, सो याके बीज, मूली के बीज; दोनों तोदरी, दोनों मूशली, ये सबदवा एक एक तोले सिलाजीत, अकरकरा; लौंग, जावत्री, जायफल, कालीमिर्च, दालचीनी, सब दवा नौ नौ माशे शहत औरसफेद बूरा सबसेदूना लेकर पाकबनावै फिर इस्मेंसे एक तोले नित्यसेवनकरे इसमाजून के समान गुह्येन्द्रिय को बलवान करने और वीर्य को गाढा करने में दूसरी कोई दवा नहीं है ॥

ध्वजभंग का वर्णन ।

जिस मनुष्य में स्त्री गमन की शक्ति नहीं होती है उसे क्लीववा नपुंसक कहते हैं । इस शक्तिके सर्वथा अभावका नाम क्लैव्य वा नपुंसकता है ।

नपुंसक के भेद ।

नपुंसक सात प्रकार का होता है यथा-भय, शोक अथवा मन के अनुसार कार्य न होने से प्रथम प्रकारका नपुंसक होता है । मनके मारे जाने से दूसरी प्रकार का नपुंसक होता है । पित्त के प्रकोपसे तीसरा । अत्यन्त स्त्रीसंसर्ग से चौथा । कोई भया-

नक लिंगरोग होने अथवा ब्रह्मचर्यादि व्रत के कारण वीर्य केस्तंभित हो जाने से छटा। और जन्मसे नपुंसक होना सातवां प्रकार नपुंसकता का है।

प्रथम प्रकार के लक्षण।

भय और शोक ये दो ऐसे कारण हैं जिससे देह भीतर ही भीतर घुन के खाये हुए काष्ठ की तरह होजाता है और कभी स्त्री समागमकी इच्छा ही नहीं होती है। तथा मनके अनुकूल स्त्री न होने से कामोत्पत्ति होने पर रमणोत्सुक मनुष्य का मन मर जाता है कुछ दिन तक ऐसे कारणों के होने से क्रम से उस मनुष्य की शिश्नेन्द्रिय पतित होजाती है। फिर सुन्दरी और मनोनुकूल स्त्री के प्राप्त होने पर भी रमण शक्ति का नाम मात्र भी नहीं रहता। इन सब कारणों से प्रथम प्रकार की नपुंसकता पैदा होती है।

दूसरे प्रकार के लक्षण।

दैवात् मनोऽनुकूल स्त्री न मिले, और जिसको मन न चाहता हो ऐसी स्त्री से संगम करना पडे तो दूसरी प्रकार की नपुंसकता होती है।इसी को मानासिक [मनसेसंबंध रखने वाली] अथवा मनोभिघातज [मनके मारेजाने से उत्पन्न] नपुंसकता कहते हैं।

तीसरी प्रकार के लक्षण।

प्रमाण से अधिक झोल आदि तथा नमकीन रसों के सेवन से किसी प्रकार के उष्णवीर्यवाले और गरम पदार्थों के सेवनसे पित्त अत्यन्त बढ जाता है इससे वीर्य की अत्यन्त क्षीणता हो जाती है. इसी हेतु से नपुंसकता पैदा हो जाती है; इस को पित्त से उत्पन्न हुई नपुंसकता कहते है।

चौथे प्रकार के लक्षण।

जोमनुष्य रतिक्रिया की अत्यन्त सामर्थ्य रखता हो, और इस कारण से अतिशय स्त्रीसंसर्ग करता रहै और किसी प्रकार का कोई बलकारक आहार वा औषध सेवन न करे तो उसका भी शुक्र अत्यन्त क्षीण हो जाता है और धीरे धीरे ध्वजभंग रोगपैदा हो जाता है, यह चौथी प्रकार की नपुंसकता है।

पांचवीं प्रकार के लक्षण।

कोई भयानक जननेन्द्रिय रोग के होने से वीर्यवाहिनी शिरा छिन्न हो जाती है, इस से छटी प्रकार की नपुंसकता होती है।

छटी प्रकार के लक्षण।

जो मनुष्य अत्यन्त बलवान होने पर भी ब्रह्मचर्य व्रत के धरण का अभ्यास कर रहा हो, उस समय काम की उत्पत्ति होने पर भी उसको रोकले और स्त्रीसंसर्ग में प्रवृत्त नहो। इस तरह काम शक्ति को रोकते रोकते वीर्य स्तंभित होजाताहै, यह छटी प्रकार की नपुंसकता होती है।

सातवीं प्रकारके लक्षण।

जो जन्म काल से ही नपुंसक होता है उस के रोग का सातवीं प्रकारकी नपुंसकता होती है।

साध्यासाध्य निर्णय।

किसी बिशेष कारण से किसी व्यक्तिकी वीर्य वाहिनी शिरा छिन्न होकर नपुंसकता उत्पन्न हो, अथवा जो जन्म से ही नपुंसक हो, ये दोनों प्रकार के नपुंसक किसी प्रकार की औषधादिसे अच्छे नहीं सकते हैं, इस लिये ये असाध्य होते हैं। इन के सिवाय अन्य प्रकार के नपुंसक अच्छी चिकित्सा से आरोग्य हो जाते है, इस लिये ये साध्य होते है। जिन जिन कारणों

से इन को नपुंसकता हुई है उन कारणों के विपरीत चिकित्सा करना उचित है।

ध्वजभंगकी चिकित्सा ॥

(१) गौ के पाव भर दूधमें तीन छुहारे औटा कर प्रतिदिन सेवन करने से रतिशक्ति बढ जाती है और ध्वजभंग को भी आराम हो जाता है।

(२) नागकेसर के फूलका अतर एक रत्ती प्रतिदिन सांयकाल के समय पान में रखकर खाय और इतना ही उपस्थ पर मर्दन करै और ऊपर पान बांध दे तो रतिशक्ति की वृद्धि होती है और अनेक प्रकारका ध्वजभंग जाता रहता है।

(३) वायु वा पित्त की अधिकताके कारण रतिशक्ति कम हो गई होतो पाव सेर गौ के दुग्ध के साथ एक तोला ईसवगोल पीस कर प्रतिदिन पान करे तो चार पांच दिन में ही उक्त रोग को आराम हो जाता है ॥

(४) परिष्कृत सुरा (Rectified Spirit) एकतोला लेकर उस में आध कुचले को चन्दन की तरह घिस कर गरम कर के उपस्थ के ऊपर लेपकी तरह लगावै ऊपर से पान वांध कर कपडे की पट्टी वांध दे। इस तरह रात भर रहने दे। तीन चार दिन इस तरह करने से ध्वजभंग रोगको आराम हो जाता है॥

(५) गोखरू के वीज, कमाच के बीज ताल मखाने, असगंध, सितावर, खरैटी, मुलहटी, इन सबको समान भाग लेकर चूर्णकरले,इनसबकेसमान गौके घीमें इनको भूनले। फिर सब चूर्ण से आठ गुना गौका दूध तथा दुगनी साफ चीनी का रस करके चासनी करले, इसमें उक्त चूर्णको डालकर मिलाले फिर झाडी वेरकी वरावर गोली वनावै। तदनंतर रोगी की आयु तथा बलकी विवेचना करके एक, दो अथवा तीन चार

तक इन गोलियोंको ठंड जलके साथ सेवन करावे। इस औषधके सेवन करने से अत्यन्त बलकी वृद्धि होती है तथा अनेक प्रकारके ध्वजभंग भी जाते रहते हैं।

(६) विदारीकंदको विदारीकंदके रसकी सात भावना देकर मटरके बराबर गोली बनावे। इसमें से प्रतिदिन एक गोली प्रातःकाल के समय ठंडे जलके साथ सेवन करै तो ध्वजभंगरोग जाता रहता है।

(७) सफेद सोंठ की जड १६ तोले लेकर सेमर की जड के रसमें तीन भावना दवै। फिर मोचरस का चूर्ण सोलह तोले शुधी हुई गधंक ३२ तोले, मिलाकर खूब पीसकर चूर्ण बनावे। फिर घी और शहत के साथ छःछः माशेकी गोलियां बनावे इन में से प्रतिदिन प्रातःकालके समय एक गोली घी और सहत के साथ सेवन करै। औषध सेवनके पीछे गोका थोडासा दूध पीलेया करे॥ इस से शरीर बलवान होजाता है और ध्वजभंगरोग भी जाता रहता है।

(८) दही चार सेर, परिष्कृत चीनी एक सेर शहत चार तोला गौका घी पावसेर, सोंठका चूर्ण तीन माशे; बडी इलायचीका चूर्ण तीन माशे; कालीमिरचका चूर्ण एक तोला, लोंगका चूर्ण एक तोला इन सब दवाओंको आपसमें अच्छीतरह मिलाले और एक साफ मोटे कपडेमें इसे छानकर रखले। फिर एक मिट्टी का घडा ले उसमें कस्तूरी चंदन और अगर की धूनीदे और कपूर की गंध से सुवासित करे। फिर इस पात्रमें उक्त दवा को भरकर अच्छी तरह ढक दे। इसको रसाल कहते हैं। इस को मात्रानुसार सेवन करने से शरीर बलिष्ठ और कामोद्दीपन होता है। तथा अनेक प्रकारका ध्वजभंग भी जाता रहता है।

९-मुलहटी लोध प्रियंगु प्रत्येक डेढ माशे लेकर इस में आधा सेर सिरस का तेल मिलावै। फिर इस तेलके उपस्थ में पसीने देवे। इस से अनेक प्रकार के ध्वजभंग को शीघ्र ही आराम हो जाता है।

हकीमी मत से नपुंसक होने का निदान।

मनुष्य के नपुंसक होने के कई कारण हैं एक तो यह कि वहहथरस [हाथसे जननेन्द्रियकामर्दन करकेवीर्य निकालना]करके नपुंसक बन बैठताहैइसके भी दो भेद हैं एक तो यह कि जाडे के दिनोंमें सोते समय रात्रिको यह काम करता है यह तो साध्य है इसकी चिकित्सा जल्दी हो सकती है और दूसरा यहकि कोई कोई पाखाने में या किसी मैदान में हथरस करते हैं एक हथरस करना ही बुरा है दूसरे वे मूर्ख इस कामको करके उसी वक्त पानी से धो डालते हैं गरम नसोंपर ठंडापानी पडा और ऊपर से हवा लगी इस सबब से नसें नष्ट हो जातीहैं कोईकोई मूर्ख नित्य नियम बांधकर ऐसा करते रहते हैं और कोई दस पांच दिन के अन्तर से करते हैं जब तक दो चार वर्षतरुणाई रहती है तब तक कुछ मालूम नहीं होता अंत में रोते पीटते दवा पूछते फिरते हैं।

उक्त नपुंसक की दवा।

हाथी दांत का चूरा एक तोला, मछली के दांत का चूरा एक तोला लोंग आठ तोला जायफल गुजराती एक नरगिस की नग एक जड इन सब को महीन पीसकर दोपोटली बनावे और आध पाव भेडका दूध हांडीमेंभर कर औटावे जबउस में से भाप उठने लगे तब उस भाप पर उन पोटलियों को गरम करके पेडू जांघ और जननेन्द्रिय को सेके फिर बंगला पान

बांध देवे और पानी न लगने दे और नीचे लिखी दवा खाने को दे ।

खानेकी दवा ।

चिलगोजे की मिंगी सफेद पोस्त के दाने काली मूसली, कुलीजन, लोंग, फूलदार, सालब, मिश्री जावित्री विदारीकंद तालमखाने; बीजबंद, सितावर, ब्रह्मदंडी, और तज, ये सब दवा चार चार तोले, पिटकव्वा नौ माशे । इन सब को महीन पीस कर घी में सान कर आध सेर शहत की चाशनी में मिलावै और इसमें से दो दो माशे दोनों समय खायाकरै तो चालीस दिन में आराम हो जायगा ॥

दूसरा लेप ।

सफेद कनेरकी जड गुजराती जायफल अफीम छोटीइलायची इलायची संबुल की जड पीपला मूल प्रत्येक छः छः माशे इन सब को महीन पीसकर एक तोले मीठे तेल में मिलाकर खरल करे जब मरहम के सदृश होजाय तब उपस्थ पर लगाकर ऊपर से बंगला पान गरम करके बांधे और जो इसके कारण से प्रमेह होजायतो नीचे लिखी दवा खाने को देवे ।

खाने की दवा ।

काली मूसली नागोरी असगंध धायके फूल भुने चने सोंठ उटंगन के बीज पिस्ते के फूल ताल मखाने ये सब एक एक तोले इन सब को महीन करिके बराबर का बूरा मिलाकर इसमें से एक तोले नित्य सेवन करे ऊपर से गौका पाव भरदूध पीवे खटाई और बादी से बचता रहै ।

यदि करमर्दन ये जननेन्द्रिय टेढी होगई होतो-
उसकी दवा यह है ।

अफीम, तीन माशे, जायफल, अकरकरा, दालचीनी,

ये सब दवा पांच पांच माशे, प्याज; और नरगिस एकएकतोले. सफेद कनेर की जड का छिलका १॥ तोले, इन सब को दो पहर तक शराब में घोट कर जननेन्द्रिय पर लगावे अथवाइस की गोली बनाकर रखलेलगाते समय शराब में घिसकर लगावे तो जननेन्द्रिय का टेढापन दूर हो जता है।

नपुंसक होने का दूसरा कारण।

कोई कोई लडकों के साथ कुमार्गगामी होने से नपुंसक हो जाते हैं और वे स्त्रीसंगम के काम के नहीं रहते उन की चिकित्सा नीचे लिखी रीति से करना चाहिये।

उक्त नपुंसक का इलाज।

संखिया, जमालगोटा, काले तिल, आक का दूध ये सब एक एक माशे लेकर महीन पीस थोडे से पानी में मिलाकर जननेन्द्रिय पर लेप करे और ऊपर से बंगला पान गरम करके बांध देवेजब छाला पडजाय तब धुला हुआ घी चुपडदे अथवा नीचे लिखा हुआ तेल लगावै।

वीरबहुट्टी, अकरकरा; सूखे केंचुए, घोडे का नख, कुलीजन थे सब एक एक तोले लेकर सबको जौकुट करके आतशी शीशी में भर पाताल यंत्र द्वारा खींच कर एक बूंद जननेन्द्रियपर मल कर ऊपर से बंगला पान बांध देवे तो चालीस दिन में आराम हो जायगा।

दूसरा लेप।

जायफल; जावत्री, छरीला, मनुष्य के कान का मैल, प्रत्येक छः छः माशे; गधेके अंडकोशों का रुधिर चार तोले। इन सब को दुआतशी शराब में इतनी देर तक घोटना चाहिये किपाव भर शराब को सोखले फिर इसकी जननेन्द्रिय पर मालिश करे।

तीसरा लेप ।

कडवे घीया की सिंगी दो तोले, सफेद चिरमिठी अकरकरा छः छः माशे, तेजवल, और पीपलीमूल प्रत्येक तीन माशे, इन सब को गौके घृत में तीन दिन तक घोटे, फिर इसकोजननेन्द्रिय पर लगाकर पान बांध दे इससे नपुंसकता दूर हो जाती है ।

चौथा लेप ।

जमाल गोटे को गधे की लीद के रस में औटाकर सफेद चिरमिठी, कुचला जलाहुआ, अकरकरा, सफेद कनेर की जड का छिलका प्रत्यक दोदो तोले, इन सब को पीस कर गौके दूध में इतना घोटे जो तीन सेर दूध सूख जावे।फिर यंत्रद्वारा खींच कर इस का लेप लिंगमणि को बचाकर जननेन्द्रिय पर करे ऊपर से पान बांधदे ॥ इस तरह करते रहनेसे नपुंसकता जाती रहती है ।

पांचवां लेप ॥

सफेद कनेर की जड, लाल कनेरकी जड, इनदोनोंका छिलका डेढ डेढ तोले, वडा जायफल एक,अफीम नौ माशे इन सबका चूर्ण करके वडे गोहकी चर्वी दो तोले मिलाकर एक दिनघोट कर गोली बनाले और शराबदु आतशीमें घिसके लिंगमणिको छोडकर संपूर्ण उपस्थ पर लगावे और ऊपरसे पान बांधे ॥

छटा लेप ॥

सफेद कनेरका छिलका आधपाव, सफेद चिरमिठी आधपाव, कडवा कूट २ तोले, जमालगोटा २ तोले, इन सबको चूर्ण कर १५ सेरगौके दूधमें मिलाकर पकावै।फिर इसका दहीजमावे फिर प्रातःकाल ४ सेर पानी मिला कर इसको रई से विलोकर

माखन निकाले और इसके मठे को पृथ्वीमें गाढदेनाचाहियेक्यों क्रियइ विष के समानहै और माखनको तपाकर रखले फिरइसमें गुह्येन्द्रिय पर लेपकरै ऊपरसे पान बांधे और एक रत्तीके प्रमाण पानमें धरके खाय तो पन्द्रह दिनमें आराम होजायगा ॥

यदि किसी मनुष्यने वालकपनमें विलोममार्गगमन कराया होय और जननेन्द्रिय पर भी मर्दन कराया हो और इसीकारण से नपुंसक हुआहो तो उसकी चिकित्सा नहीं होसक्ती औरजो कि पहिले उस नुसखेसे सेक करै जिसमें हाथीदांत का चूरा लिखाहै ।

उक्त रोग की दवा ।

गेहूंकामेंदा ५ तोला, वेसन ७ तोले पहिले इनको ५ तोले घीमें भूनले पीछे बादामकी मिंगी, पिस्ता की; मिंगी; चिलगोजे की मिंगी, नारियल की गिरी-खूबानी छः छः माशे सालव मिश्री १ तोले, लाल बहमन सफेद बहमन तीन तीन माशे, सकाकुल छःमाशे, अम्बर असहब, कलमी दालचीनी प्रत्येक तीन माशे इनसबको कूटपीस कर वेसन वा मेदा में मिलावै और दसतोले मिश्री तथा पांच तोले शहत इनको दस तोले गुलाब जल में चाशनी, करके उसमें सबदवा मिलाकर माजूमबनाले फिर उस में से दो तोले प्रतिदिन सेवन करे और खटाई और वादीकी चीजों से परहेज करै ॥

नपुंसक होने का अन्य कारण ।

नपुंसक होने का एक यहभी कारण है कि वहुतसे मनुष्य युवावस्थामें स्त्री से संभोग करते समय किसी के भयसे समागम का परित्याग कर उठ खडे होतेहैं । इस दशामें यदिवीर्य स्खलित

न हुआ हो और फिर थोडी देर पीछे स्त्री से सहवास हो तो इस तरह हवा लगने से जननेन्द्रिय की नसें ढीली हो जाती हैं।

उक्त नपुंसक का इलाज।

गुवारपाठे का रस १० तोले, मूंग का आटा १० तोले, इन दोनों को पृथक् २ घृत में भूने फिर छोटे बडे गोखरू पिस्ता तालमखाने; बादामकी मिंगी, ये सब दो दो तोले कूट छानकर बनाले और इसमें से दो तोले प्रतिदिन सेवन करे और इन्द्री पर यह दवा लगावे ॥

लेपकी विधि।

अकरकरा; सफेदकनेरकी जड, मालकांगनी-सोनामाखी, काले तिल; सिंगरफ; हरताल तबकिया, सफेद चिरमिठी मूली के बीज, शलगम के बीज. बीर बहुटी, शीतलचीनी, सिंहकीचरबी यह सब दवा एकतोले लेकर सबको जौकुटकरके आतशी शीशी में भरकर पाताल यंत्र के द्वारा तेल निकाले, और रातको सोते समय एक बूंद जननेंद्रिय पर मलकर ऊपर पान गरम कर के बांध देवे तो २१ दिन में नपुंसकता जाती रहेगी ॥

अन्य विधि।

अकरकरा, लौंग; केंचुए, आसबच, यह सब एक एक तोले बीरबहुटी ४ माशे, मुर्दासंग ४ माशे, रोहूमछली का पित्ता ४ नग; सिंगरफ ४ माशे; जमालगोटा ४ माशे, सांडकी चर्बी तीन तोले; मोम दो तोले, पारा एक तोले, इन सबको मिलाके खूब रगडे, जब मरहम के सदृश होजाय तो रातको गरम करके जननेंद्रिय पर लेप करे और पान गरम करके बांध देवे इस पर पानी न लगने दे ॥

अन्य विधि ।

धतूरेकी जडका छिलका । सफेद कनेरकी जडका छिलका आककी जडकी छाल, अकरकरा गुजराती. वीरवहुटी, गौ का दूध यह सब एक एक तोले लेकर पीसे और दो तोले तिलके तेल में पकावे जब औषधि, जलजाय तब तेलको छानले फिर जननेन्द्रिय पर मर्दन करै ऊपर पान गरम करके बांधे और पानी न लगने दे ।

नपुंसक होने का अन्य कारण ।

नपुंसक होने का एक यहभी कारण होता है कि बहुत से मनुष्य स्त्री को जननेन्द्रिय पर बिठाके खडे हो जातेहैं और बहुत से मनुष्य विपरीत रति में प्रवृत होते हैं इस प्रकार के संभोग करने से भी नपुंसक होजातेहैं क्योंकि उपस्थ में हड्डी नहीं होती नजाने मनुष्य क्या जानकर ऐसा अयोग्य काम करते है ।

उक्त नपुंसक का इलाज ।

बादामकी मिंगी ११ नग; ताजे पानी में पीसकर दो तोले शहत मिलाकर ग्यारह दिनतक पीवे तो नपुंसकता जाती रहतीहै

अन्य उपाय ।

सफेद कनेरकी जडका छिलकादो माशे मालकांगनी दोमाशे कौंचके वीज, सफेद प्याज के वीज, अकरकरा, असवंद यह सब चौदह २ माशे, इन सबको जौ कुट करके दस तोले तिल के तेलमें मिलाकर औटावै, जब दवाई जलने लगे तब छान कर रख छोडे फिर इसमें थोडासा रात्रि के समय जननेंद्रिय पर मलकर ऊपर पान गरम करके बांधे ॥

नपुंसक होने का अन्य कारण ॥

एकनपुंसक जन्मसेही होता है उसे संस्कृत में सहज नपुंसक

कहते है उसके कई भेद है एकतो यह कि मनुष्य माता के गर्भ से जब उत्पन्न होताहै तो उसकी इन्द्रियस्थान पर किसी प्रकार का कुछभी चिन्ह नहीं होता उसको संदली ख्वाजेसरा कहते है और दूसरेयह कि कुछ कुछ चिन्ह होताहै और उसको स्त्री भोग की इच्छाभी होती है और उसके संतान होती है ॥

तीसरे यह कि चिन्ह तो पूरा होता है परंतु उसमें प्रबलता नहीं होती बस इन तीनों की कोई चिकित्सा नहीं ॥ चौथे यह कि मूतने के समय जननेन्द्रिय में प्रबलता हो और मूत्र करके पीछे कुछ नहीं ऐसे नपुंसक की यह चिकित्सा करे।

दवा सेक।

बीर बहूटी, सूखे केंचुए, नागौरी असगंध, हल्दी, आमा हल्दी, भुने चने ये सब छः छः माशे ले इन सबको महीन पीसकर रोगन गुलमें चिकना करदो पोटली बनावै और किसी पात्र को आग पर रख कर उसपर पोटली गरम कर जांघ पेट और उपस्थ को खूब सेकै और फिर पोटली की दवा जननेन्द्रिय पर बांधदे।

दूसरी दवा।

अकरकरा दो माशे, बीरबहुटी दो माशे; लोंग बीस, बकरे की गरदन का मांस दस तोले इन सबको कूट पीसकर जननेंद्रियकी बराबर गोली बनावे; और उसको भूनकर इंद्रिय के चारों ओर चढावै और पानी न लगने दे ॥

तीसरी दवा।

सिंहकी चरबी, मालकांगनी; अकरकरा, सोंठ; जावित्री कुचला, तज; लोहबान कौडिया, लोंग, मीठा तेलिया, हरताल तबकिया, जमालगोटा, पारा, हाथी दांतका चूरा, गंधक आा-

मलासार, कटेरी सफेद, चिरमिठी, सूखे केंचूए, जायफल गुजराती, सफेद कनेरकी जड; अजवायन खुरासानी प्याज के बीज, असपंद, सफेद संखिया, अंडी के बीजोंकीमिंगी काली जीरी ये सब एक एक तोले मुर्गी के अंडोंकी जर्दीपांच नग इस सबको कूट कर आतशी शीशीमें भर कर पातालयंत्र के द्वारा तेल निकाल ले फिर इस में से एक बूंद तेल नित्य जननेन्द्रिय पर मर्दन करे और ऊपर से पान गरम करकेबांधे और पानी न लगने दे और खटाई तथा वादी करने वाली वस्तुओं का सेवन त्याग दे चालीस दिन तक इसी तरह करने से इस प्रकारकी नपुंसकता जाती रहती है।

खाने की दवा।

ग्वार पाठे का रस, गेहूंकी मैदा, बिनोलेकी मिंगी घृत, कंद ये सब सेर सेर भरले पहिले तीनों वस्तुओं को पृथक् २ घृतमें भूनकर कंदकी चासनी करके गोखरू; एक छटांक, जायफल पिस्ता, खोपरा, चिलगोजाकीमिंगी, अखरोटकी मिंगी, यह सब दवा पावसेर, इन सबको कूटकर उसमें मिलाकर हलुआ बना रक्खे फिर इसमें से पांच तोले प्रतिदिन सेवन करनेसे नपुंसकता जाती रहती है।

नपुंसकताका अन्य कारण।

अत्यन्त स्त्री संभोग वा वेश्यागमन से भी नपुंसकता हो जाती है उसके लिये नीचे लिखी हुई दवा देनी चाहिये।

कुलीजन दो तोले, सोंठ दो तोले, जायफल, रूमीमस्तंगी, दालचीनी, लोंग; नागरमोथा, अगर, यह सब दवा एक २ तोले इन सबको पीस छानकर तिगुने बूरेकी चाशनी में मिला कर माजून बनाले फिर इसमें से छः माशे प्रतिदिन सेवनकरने स्त्रीगमनकी विशेष इच्छा होगी। यदि वीर्य के पतला पड़जाने

के कारण से कामोद्दीपन न होता हो तो उसको यह दवा दे।

वीर्य को गाढा करनेवाली दवा।

ताल मखाने आध पाव ईसवगोल आध पाव इनको बरगद के दूध में भिगो कर छाया में सुखाले फिर चालीस छुहारेकी गुठली निकालकर उसमें ऊपर लिखी दवा भरकर गौके सेर भर दूध में औटावै जब खीर के सदृश गाढा होजाय तब उतार कर किसी घी के पात्र में रख छोडे फिर एक छुहारा नित्य ४० दिन तक खाय और दूध रोटी भोजन करै।

लेपकी दवा।

दक्षिणी अकरअकरा लौंग फूलदार बीरबहुट्टी निर्विसी सूखे केंचुए। सब एक २ तोलेले इन सबको पावसेर मीठे तेलमें मिला कर मिट्टी की हांडी में भरकर उसका मुंह बंद कर चूल्हे में गढा खोदकर उस में इस हांडी को दावकर ऊपर से सात दिनतक बरा बर रात दिन आग जलौव फिर आठवें दिन निकाले। और इस में से एक बूंद जननेन्द्रिय पर मल कर ऊपर से पान गरम करके बांधे और पानी न लगने दे।

अथ बाजीकरण।

नुसखा।

सिंगरफ १ तोले। सुहागा१ तोले। पारा छः माशे। इन चारों को महीन पीसके मुर्गी के अंडे की सफेदी में रक्खे फिर ढाई सेर ढाककी राख लेकर एक मिट्टीकी हांडी में आधी राखभरकर इस अंडे को उस राख पर रखकर आधी राख को ऊपरसे रखकर हांडी का मुख बंदकर मुलतानी मिट्टी में कपरछन कर लपेट कर सुखादे जब सूखजाय तब चूल्हे पर रखकर ढाककी लकडी की चार पहरआग उसके नीचे जलावे फिर शीतलहो जायतब सिंगर फ को निकाल ले फिर इसमें से एक रत्ती पान में रखकर सेवन

करने से कामोद्दीपन होता है इस दवा को जाडे के दिनों में सेवन करना उचित है।

दूसरा प्रयोग।

सिंगरफ, कपूर, लौंग, अफीम, उटंगन के बीज, इनको महीन पीस कर कागजी नीबूके रसमेंघोट कर मूंगके बराबर गोली बनाले फिर एक गोली खाकर ऊपर से पावभर गौ का दूध पीकर रमण करने से स्तंभन होता है।

तीसरा प्रयोग।

सूखा तमाखू, और लौंग दोनों बराबर ले महीन पीसके शहत में मिलाकर उर्दके बराबर गोलियां बनाले इनमें से एक गोली खाकर संभोग में प्रवृत्त होना चाहिये।

चौथा प्रयोग।

पोस्तके डोरे एक तोले पानीमें भिगोदे जब भीगजाय तब उसके नितरे जलमें गेहूं का आटा मांढ कर उसका एक गोला बनाकर गरम चूल्हे में दबादे जब सिककर लाल होजावे तब निकाल कर कूटले फिर थोडा घी बूरा मिलाकर मलीदा बनाले जब एक पहर दिन बाकी रहे तब उसे खाय यह अत्यन्त पौष्टिक और बलकारक है।

पांचवां प्रयोग।

थूहर का दूध और गौ का दूध इन दोनों को बराबर लेके मिलाकर चार पहर धूप में सुखावे फिर पांवके तलुआमें लेप कर स्त्री प्रसंग करे पांवको धरती में न धरे।

छटा प्रयोग।

कौंचकी जड एक पोरुए के बराबर ले के मुखमें रक्खे जब तक मुखमें रहेगी तब तक वीर्य स्खलित न होगा।

सातवां प्रयोग।

चचूंदर का अंडा चमडे के यंत्र में धर कमरमें बांधकर स्त्री संगम करे जब तक यंत्र कमर से न खुलेगा तब तक वीर्य स्खलित न होगा।

आठवां प्रयोग।

सिंगरफ़, मोचरस, अफीम, ये दो दो माशे; सुहागा एकमाशे इन सब को पीस कर काली मिर्च के बराबर गोली बनावे फिर एक गोली खाकर स्त्री सेवन करने से स्तंभन होता है।

नवां प्रयोग।

अजवायन, पांच माशे; घीया के बीजों की मिंगी छः माशे इसपंद नौमाशे, भांग के बीज आठ माशे, चनाखिल्ला सात माशे पोस्त की बोंडी दो नग इस सबको पीस छान कर पोस्त की बोंडी के रस में बेर के बराबर गोली बांध फिर एक गोली खाकर एक घंटे पीछे स्त्री सेवन करने से स्तंभन होता है।

दसवां प्रयोग।

खरगोश के पित्ते का रस जननेन्द्रिय पर मर्दन करना भी स्त्री को दासी बनालेता है।

ग्यारहवां प्रयोग।

सिंहकी चरबीको तिलके तेलमें मिलाकर उपस्थ पर मर्दनकरके स्त्री संगम करै तो कामोद्दीपन बहुत होता है।

बारहवां प्रयोग।

ऊंट के दोनों नेत्रों को भुजा पर बांध कर संभोग करने से वीर्य स्तंभन होता है।

तेरहवां प्रयोग।

ककरौंदेकीजडऔर कंघी इन दोनों को बराबर जलमें पीस इस का गुह्येन्द्रिय पर लेप करके संगम करनेसे स्त्री फिर दूसरे पुरुष की चाह न करेगी।

वाजी करण का प्रयोग।

वाजि घोडे को कहते हैं। जिन प्रयोग और उपायों के द्वारा पुरुषबलवान् और अमोघ सामर्थ्यवाला होकर घोडेकी तरह स्त्री संगम में समर्थ होताहै, जिन वस्तुओंके सेवनसे कामिनीगणोंका प्रियपात्रहो जाताहै और जिनसे शरीरकी वृद्धि होती है, उसी को वाजीकरण कहते हैं वाजीकरण औषधों के सेवनसे देह बडी कांतिमान् हो जाती है।

ब्रह्मचर्य्य की श्रेष्ठता।

ब्रह्मचर्य्य सेवनसे धर्म, यश और आयु बढती है, इस लोक और परलोक दोनों में ब्रह्मचर्य्यव्रत रसायनरूप और सर्वथा निर्मलहै। अपनी स्त्रीके साथसंतानोत्पत्तिके निमित्त संगमन निर्मल ब्रह्मचर्य्य कहलाता है।

जो अल्पसत्वबाले है,जो सांसारिक क्लेशों से पीडित है;और जो कामी हैं.उनकी शरीररक्षा के निमित्त बाजीकरण करना चाहिये।

व्यवायकाल।

जो समर्थ, युवावस्था में भरपूर, और निरंतर वाजीकरण औषधों का सेवन करता रहताहै उसको सब ऋतुओंमें अहर्निश स्त्री संगमका निषेध नहीं है।

स्निग्धको निरूहणादि।

जिसको बाजीकरण करना हो स्निग्ध और विशुद्ध करके प्रथम घी, तेल, मांसरस; दूध शर्करा और मधुसंयुक्त निरूहण और अनुबासन देना चाहिये। और दूध तथा मांसरका पथ्य देवै। तत्पश्चात् योगवित् वैद्य शुक्र और अपत्यवर्द्धक सब बाजीकरण योगों का प्रयोग करे।

अपत्यहीन की निंदा।

जो मनुष्य संतानरहित होता है वह छायाहीन, फलपुष्प रहित और एक शाखा वाले वृक्ष की तरह निंदित होता है।

अपत्यलाभ का महत्व।

संतान चलने में बार बार गिर पडने वाली; तोतली वाणी वाली, धूल में लिपटे हुए अंग वाली तथा मुख से लार आदि टपकने वाली इन गुणोंसे युक्त होने परभी हृदयमें आल्हादोत्पादक होती हैं। ऐसी संतान के संसार में दर्शन स्पर्शनादि विषयोंमें किस पदार्थकी तुलना हो सक्तीहै अर्थात् उक्त गुणविशिष्ट संतान भी सांसारिक सब पदार्थों से तुलनीय नहीं हो सकती है जिसके द्वारा यश, धर्म, मान, स्त्री और कुल की वृद्धि होती है। उसके साथ समानता करने के योग्य संसार में कौनसा पदार्थ है।

बाजीकरण के योग्य देह।

शरीर को संशोधित कर के जठराग्निके बलके अनुसार आगे आने वाले संपूर्ण वृष्ययोगों का प्रयोग करना चाहिये।

बाजीकरण प्रयोग।

सर, ईख, कुश, काश विदारी और बीरण [खस) इनकी जड कटेली की जड; जीवक; ऋषभक खरैटी, मैदा महामैदा, काकोली, क्षीरकाकोली, मुद्गपर्णी, माषपर्णी, सितावर; असगंध अतिबल कौंच, सांठ, भूम्यामलक, दुग्धिका, जीवंती, ऋद्धि रास्ना, गोखरू, मुलहटी और सालपर्णी प्रत्येक तीनपल, उरद एकआढक, इन सबको दो द्रोण जल में पकावै एक आढक शेष रहने पर उतार ले इस क्वाथ में एक आढक घी विदारीकन्द का रस एक आढक, आमले का रस एक आढक, ईखका रस एक आढक, दूध चार आढक तथा भूम्यामलक, कौंच काकोली क्षीरकाकोली, मुलहटी, काकोडुम्बर, पीपल, दाख, भूमिकूष्माण्ड,

खिजूर महुआ सितावर इनको पीसकर छानकर एक प्रस्थ मिला देवे और पाक विधानोक्त रीति से पकावै पाक होजाने पर घी को छानकर उसमें शर्कराएक प्रस्थ वंशलोचन एक प्रस्थ पीपल एक कुडव काली मिरच एक पल दालचीनी इलायची और नागकेशर प्रत्येक आधा पल और शहत दो कुडव इन को मिला देवै इस घृत में से प्रतिदिन एक पल सेवन करे और मांसरस तथा दूध का अनुपान करे। इस घृत का सेवन करने से घोडेऔर चिरोंटे के सदृश स्त्री संगम में प्रवृत्त हो सकता है।

अन्य चूर्ण।

बिदारी कंद पीपल शाली चांवल चिरोंजी ताल मखाना और केंचकी जड प्रत्येक एक कुडव, शहत एक कुडव; शर्करा आधातुला,ताजाघीआधा प्रस्थइनद्रव्यों को मिलाकर प्रतिदिनदो तोले सेवन करने से सौ स्त्रियों के साथ संभोग की शक्ति हो जाती है।

अन्य प्रयोग।

जो मनुष्य गेंहूं और केंचके बीजों को दूधमें पकाकर ठंडा करके खाले अथवा उरद घी और शहत मिलाकर खाय,। ऊपर से पहिले ब्याही हुई गौका दूध पान करे ऐसा करने से वह मनुष्य रात्रि भर स्वयं खेद को अप्राप्त हुए स्त्रियों को खेदित करता हुआ रति में प्रवृत्त रहता है।

अन्य प्रयोग।

बकरे के अंडों के साथ दूधको पकाकर उस दूधकी काले तिलों में बार बार भावना देवे। इन तिलों के खाने से मनुष्य गधे की तरह उन्मत्त हो जाता है।

जो सितावर को दूध और शर्करा के साथ सेवन करता है उसमें शत स्त्रीसंभोग की शक्ति बढजाती है और वह प्रथम समागम का सुख अनुभव करता है ।

अन्य प्रयोग ।

विदारीकंदके चूर्णको विदारीकंदके रससे ही बहुत वार भावना देकर उस चूर्ण को घी और शहत के साथ चाटने से शतस्त्रीगमन की सामर्थ्य हो जाती है ।

अन्य चूर्ण ।

पीपल और आमले का चूर्ण करके उसमें आमले के रसकी भावना दे और इसको शर्करा मधु और घी के साथ घोटकर ऊपर से दूधका अनुपान करे तो अस्सी वर्षका वृद्ध भी तरुण की तरह सामर्थ्यवान् होजाता है ।

अन्य प्रयोग ।

मुलहटी का चूर्ण एक कर्ष लेकर उसमें घी और शहत मिलाकर घोटे ऊपर से दूधका अनुपान करे उस मनुष्य की संगम शक्ति कभी प्रनष्ट नहीं होती है ।

अन्य प्रयोग ।

काकडासींगी के कल्क को दूध में मिला कर पान करै और शर्करा घृत और दूध के साथ अन्नका भोजन करै इससे संगम की अत्यन्त सामर्थ्य बढ जाती है ॥

अन्य प्रयोग ।

जो मनुष्य दूधके साथ क्षीरकाकोली को पकाकर घी और शहत के साथ पान करै ऊपरसे बहुत दिनकी व्याही हुई गौका दूध पीवे तो उसका शुक्र क्षीण नहीं होने पाता है ।

अन्य प्रयोग ॥

उक्त रीतिसे भूम्यामलक और शतावरी के चूर्णका प्रयोग करने से भी उक्त फल होता है ।

दही की मलाई का प्रयोग ।

चन्द्रमाके समान सफेद वस्त्रमार्जित दहीकी मलाई के साथ शर्करा मिला हुआ शाली चांवलों का भात खाने से वृद्ध भी तरुण के समान आचरण करने लगता हैं ।

अन्य प्रयोग ।

गोखरू, तालमखाना, उरद; कौंच के बीज, सितावर इस चूर्ण को दूधके साथ सेवन करने से वृद्ध भी शतस्त्री संभोग की सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है ।

पौष्टिक प्रयोग ॥

जो जो पदार्थ मधुर, स्निग्ध, वृंहण, बलवर्द्धक और मनमें हर्षोत्पादक हैं वे सबही वृष्य होते हैं ।

संभोग विधि ।

ऊपर कहे हुए पौष्टिक द्रव्यों के सेवन से दर्पित होकर आत्मवेग से उदीर्ण और स्त्रियों के गुणोंसे प्रहर्षित होकर स्त्री संगम में प्रवृत्त होना चाहिये ।

गठिया का इलाज ।

यह रोग उपदंश और सोजाक और ज्वरकेअंतमें हो जाया करता है उपदंश रोगमें पारा मिलाये सिंगरफ आदि के खाने से और शरीर को धूनी देने से अथवा सोजाक में शीतल ओषधियों के सेवन करनेसे गठिया हो जाती है और ज्वर में पासोया किया जावे और उस में वायु लगजाय तो सब रगों में जोडोंमें पीडा होजाती है अर्थात् दर्द हुआ करता है ऐसा होनेसे बहुधा तेल का मर्दन करते हैं परंतु ज्वरमें तेल मलने से सूजन

होती है इस लिये गठिया का इलाज उस समय करना चाहिये जब देह में कोई दूसरा रोग मालूम नहो इस की चिकित्सा इस रीति से करनी चाहिये ।

गठिया की दवा ।

मुर्गी के चालीस अंडोंको औटा कर उनकी सफेदी दूर कर के जर्दी को निकाल कर रक्खले फिर अकरकरा, दालचीनी, कायफल, लौंग ये सब दवा एक एक तोले समुद्र खार एक माशे इन सबको महीन पीस कर उक्त जर्दी में मिलाके एक हांडी में भरकर ऊपर से दो तोले मीठा तेल छिडक देवे और उस हांडी के पेंदे में एक छिद्र करके एक गढा खोद कर उसके ऊपर हांडी को रखै और उस हांडी के नीचे उस गढे में एक प्याला चीनी का रक्खे और हांडी के चारों ओर उपले लगा कर आग लगा देवे इस तरह से थोडी देर में उस छिद्र द्वारा तेल टपक टपक कर प्याले में आजावेगा फिर इस तेल का जोडों पर मर्दन करै और वायु न लगने दे इससे एक हफ्ते भर में बिलकुल दर्द जाता रहेगा यह दवा कितनी ही बार परीक्षा की हुई है ।

दूसरा प्रयोग ।

बबूल, अमलतास, और सहजना इन तीनों के सूखे हुए पत्ते दो दो तोले और सोये के बीज खुरासानी अजवायन, सोरंजान कडवा, गेरू, सेंधा नमक ये सब छः छः माशे इन सब को पीस कर छानलें और जोडों पर मालिश करावे ।

गठिया का अन्य कारण ।

गठिया रोग इस रीति से भी हो जाता है कि मनुष्य मार्ग में चलते चलते प्यास लगने पर पहिले हाथ पांव धोकर फिर छान कर पीता है और कभी कभी गरमी से व्याकुल होकर मार्ग के नदी नालों में खडा हो जाता है और सिरपर पानी डालता है

इस दशामें जिसकी प्रकृति निर्बल होती है तो उसी समय बीमार हो जाता है और अंत में उसको गठिया की बीमारी होजाती है फिर घोडे पर चढ कर चलने से हाथ पांवों पर सूजन हो आती है ऐसी बीमारी में नीचे लिखी हुइ औषध देनी चाहिये।

गठिया पर वफारा।

वेद अंजीर के पत्ते, खुरासानी अजवायन, सोये के बीज, टेसू के फूल, वायविडंग ये सब दवा एक एक तोले सेंधा नमक, खारी नमक ये दोनों छः छः माशे इन सबको पानी में औटा कर वफारादे और जो जोडों पर सूजन भी होतो वफारे के पीछे से यह औषधि मलनी चाहिये।

गठिया पर मर्दन।

भुने सूंगों का चून; छोटी माई, बडी माई दो दो तोले, काली जीरी, भांग सोंठ कायफल, अजवायन देशी, ये सब एक एक तोले इन सबको महीन पीस कर मले जो मनुष्य गरम जल से स्नान करते हैं उनको यह रोग कम होता है।

गठिया का अन्य कारण।

दो चार वर्ष पहिले कोई मनुष्य मकान की छत वृक्ष पहाड आदि ऊंची जगह से नीचे गिरपडा हो और समय पाकर सर्दी से वा पूर्वी वायु के लगनेसे चोटकी जगह फिर दरद होने लग जाता है और रोग बढकर गठिया होजाती है।

उक्त रोग की दवा।

अरंडका एक बीज नित्यप्रति खिलाकर नीचे लिखे तेल की मालिश करे।

तेल की विधि।

मालकांगनी दो तोले, कायफल, वकायन, सोंठ, जायफल; अकरकरा, लोंग, आंबाहल्दी, समुद्रखार, दारूहल्दी कु-

ला, बादाम की मिंगी; कंजा के बीज, कुलीजन, खिरमोर; काले धतूरे का रस, आकका दूध,सहजने की छाल, गोमाका अर्क; हरी मकोय का अर्क, इमली की छाल, भांगरे का रस ये सब दवा एक एक तोले,कडवा तेल, पन्द्रह तोले, अरंडीका तेल पांच तोले इन सबको मिला कर औटावे जब तेल मात्र रहजाय तब छान कर शीशी में भर रक्खे फिर इस तेल की मालिश करें तो दर्द बिलकुल जाता रहेगा।

दूसरा प्रयोग।

तिलका तेल पावसेर गरम करके उस में सफेद मोम एक तोले,बतख की चरबी एक तोले माल कांगनी दो तोले, सफेद संखिया छः माशे इन सबको तेल में डाल कर औटावें और खूब रगडें फिर छानकर संधियों और जोडोंपर मर्दन करें और खानेको मूंगकी धोवा दाल रोटी वा मांस देना चाहिये।

उपदंश की गठिया का इलाज।

जो गठिया आतशक के कारण होगई होतो पहिले विरेचन देकर नीचे लिखी हुई दवा देवे।

गठिया पर गोली।

मुरदासंग दो माशे, कंजा की मिंगी सात माशे, घी दो माशे, सफेद चूना छः रत्ती; इन सबको महीन पीस कर गुड में मिलाकर तीन गोलियां बनाले पहिले दिन एक गोली दे और भुनेगेहूं का पथ्य देवे दूसरे दिन गोली खिलावे और गेहूं की रोटी और मूंग की दाल भोजन करावे इसके सिवाय कुछ न देवे जो इस दवा से आराम होजाय तो और कोई पुष्टीकारक माजून बनाकर खिलावे और नीचे लिखे तेलका मर्दन करता रहे ॥

नुसखा तेलका।

खिलाये, सोंठ, सारंजान कडवा यतीनों दवा दोदो माशे इन सबको आधपाव (तेल) मीठेमें मिलाकर जलावै जब ये सब दवा जलजांय तब तेलको छानकर काच की शीशी में धररक्खे फिर इसतेल को रातके समय मर्दन करावे ऊपर से धतूरे के पत्ते गरम करके बांधदेवे इसी रीति से सात दिन तक करनेसे वे जोडों का दर्द जाता रहता है।

जांघ और पीठकी पीडा का इलाज।

बुंजीदा, चीता और सोंठप्रत्येक पांचमाशे शोरंजान अजखरकी जड. अजमोद की जडकी छिलका, सोंफकी जड की छाल प्रत्येक चारमाशे मुनक्का और मैथी दश दश माशे इनसब को औटाकर इस्में नौ माशे अंडीकातेल मिलाकर पीनेसे दस्त होंगे और दर्द भी बहुत जल्दी जाता रहैगा॥

अन्य दवा।

सोरंजान, सौंफ, सौंफकी जडका छिलका. अजमोद, अनेसू ये सब दवा पांच पांच माशे हंसराज, गांवजवां और बिल्लीलोटन प्रत्येक चार माशे, गुलाबके फूल सात माशे बडीहड छः माशे, सनाय मक्का सातमाशे. गुलाबका गुलकंद डेढ तोले इन सबको औटावे फिर इसको छानकर इस्में १ तोले तुरंजबीन घोटकर मिलाकर पीवे तो दस्त होंगे इस दवा के करने से दर्द बहुत जल्दी दूर हो जाता है।

कूल्हेके दरदका इलाज।

मस्तंगी और अनेसू पांच पांच माशे. सोंठ और अजखर की जड तीन तीन माशे, मजीठ चीता अजमोद मैथी चार माशे और सोंफ मुनक्का १५ दाने इन सबको औटाकर उसमें १ एक तोले अंडीका तेल मिलाकर प्रातःकाल पीवे इसके पीने से भी दस्त होंगे इसमें वैद्यके बताए हुए पथ्यसे रहना उचित है

सर्वांग वातज दरदका इलाज ।

महुआ तीन भाग; खाने का तमाखू १ भाग इन दोनों को पीसकर गरम करके जहां शरीरमेंदर्द होता हो वहां बांधदेयह दर्द गठिया का नहीं होता है इसको साधारण वादीका दर्द जानना चाहिये ।

अन्य प्रयोग ।

गठिया पर योगराज गूगल और माजून ,चोबचीनी भी बहुत गुणदायक है इनके सेवनकी यह विधि है कि जो गठिया थोडे दिन की हो तो केवल योगराज गूगल के सेवन से आराम हो जाता है और जो बहुत दिनका रोग हो तो उस रोगी को एक वक्त गूगल और दूसरे बक्त माजून चोबचीनी का सेवन करावे इस प्रकार के इलाज करने से बहुत दिनकी गाठिया को भी बहुत शीघ्र आराम हो जाता है बहुत से मूर्ख जर्राह और हकीम मिलाये आदि की गोली खिला देते हैं जिससे रोगीका मुंह आजाता है उस बक्त रोगी बडा दुख पाता है । इन गोलियों के देने से आराम तो हो जाता है परंतु उस रोगी के दांत किसी काम के नहीं रहते जल्द गिर जाते हैं इससे यह जन्मभर दुख पाता है इस लिये जहां तक हो सके मुख आनेकी दवा न देनी चाहिये ॥

साधारण दर्दका इलाज ।

जो छाती, पीठ हाथ पांव आदि में साधारण बादीका दरद हो तो यह काम करे कि बनप्सा का तेल; ५ पांच ताले आगपर धरके उसमें सफेद मोम दो तोले; कतीरा नौ माशे मिलावे और जहां दर्द होता हो वहां मर्दन करे तौ इसके लगाने से बहुत जल्दी आराम हो जाता है ॥

दूसरा उपाय ।

बनप्सा, सफेद चंदन, खतमी के बीज, नाखूना, जौ का

चून, गेहूका भुसी ये सब दवा बराबर लेकें कूट छानकर मोम रोगन में और बनप्सा के तेल में तथा गुलरोगन में मिलाकर पकावे जब रोगन मात्र रहजाय तब उतारकर जहां दरदहोता हो इसका मर्दन करने से बहुत जल्दी आराम होता है ।

तीसरा उपाय ।

खतमी के बीज, अलसी, मकोय के पत्तों का रस: अमलतास का गूदा इन सबको पीसकर छाती पर लेपकरने सेछाती का दरद जाता रहता है ॥

चौथा उपाय ।

मीठे तेल में थोडा मोम औटाकर लेप करने सेभी उक्तगुण करता है ।

पाचवां उपाय ।

बारहसिंगे का सींग, सोंठ और अरंडकी जड, इनको पानी में घिसकर लगानाभी लाभदायक है ॥

छटा उपाय ।

मीठे तेल में अफीम मिलाकर लगानाभी गुणकारक है ॥

सातवां उपाय ।

सोंठ और गेरू को घिसकर गुनगुना करके लेप करने से भी आराम हो जाता है ।

पथरी रोग का वर्णन ।

पथरी का रोग प्राय: कफके प्रकोप से हुआ करता है ।

पथरी के भेद ।

पथरी रोग चार प्रकार का होता है, तथा-बातज, पित्तज कफज और शुक्रज ।

पथरी रोगकी उत्पत्ति ।

वस्ति स्थान में रहने वाली वायु शुक्रके साथ मूत्रको अथवा

पित्तके साथ कफको अत्यंत सुखा देती है, तब धीरे २ वालूरेतके से कंकर पैदा हो जाते है इसीको पथरी रोग कहते है।

पथरी का पूर्वरूप ।

वस्तिस्थान में सूजन, वस्ति के पास बाह्य स्थानों में वेदना मूत्र में बकरे कीसी गंध, मूत्र का थोडा २ होना, ज्वर और आहार में अरुचि इन लक्षणों के होने से जाना जाता है कि पथरी रोग होने वाला है ॥

पथरी के सामान्य चिन्ह ।

नाभि के ओर पास; सीमन तथा नाभि और वस्ति के बीचमें शूलकीसी वेदना होती है। मूत्रकी धार छिन्न भिन्न होकर निकलती है। जब वायु के वेग से पथरी हट जाती है, तबगोमेदक मणिके समान ललाई लिये हुए पेशाब सुखपूर्वक होताहै। मूत्र के विपरीत मार्ग में प्रवृत्त होने से मूत्रनाली में घाव होजात है, उस समय पेशाब के साथ रुधिरभी निकलता है। पेशाब करने में घोर कष्ट होता है ।

पथरी के विशेष चिन्ह ।

वीर्य से उत्पन्न हुई पथरी के होतेही लिंगेन्द्रिय और अंडकोष के बीच में जो वेदना होती है उससे वीर्य की कमी होकर पथरी शर्करा वा रेत पैदा होजाती है। वायु के कारण इस शर्करा के टुकडे टुकडे होजाते है और वायु के अनुलोम में मूत्रके सात थोडी थोडी बाहर निकलती रहती है और वायु केप्रतिलोममें वहीं मूत्रमार्ग में रुक कर अनेक प्रकारके भयंकर रोगों को उत्पन्न करती है। जब पथरी रोग के साथ शर्करा और रेत होती है तब शरीर बडा सुस्त और ढीला होजाता है देह दुर्वल और कुक्षिस्थान में शूल कीसी वेदना होती है। प्यासकी अधिकता और वमन भी होती है।

बादी की पथरी के लक्षण ।

जब पथरी बादी के कारण होती है तब अत्यन्त दरद के कारण रोगी दांतों को पीसता हुआ कांपने लगता है। दद के मारे रोगी बेचैन रहता है तथा लिंगेद्रिय और नाभिको मल ता हुआ हाय हाय डकराता है अधो बायुके साथ मूत्र निकल पडता है और बूंद बूंद करके टपकता है ।

पित्त की अश्मरी के लक्षण ।

पित्तसे उत्पन्न हुए पथरी रोग में वस्तिस्थान में जलन होती है पेशाव करते समय ऐसा मालूम होता है कि जैसे कोई क्षार से जलाता है। हाथ लगाने से गरम मालूम होता है इस का आकार भिलावे की गुठली के समान होता है ।

कफकी पथरी के लक्षण ।

कफकी पथरी में बस्तिस्थान ठंडा और भारी होताहै और इस में सुई चुभने की सी बेदना होती है ।

बालकों की पथरी के लक्षण ।

बालकों के ऊपर लिखे हुए तीनों दोषों से ही पथरी हो जाया करती है बालकोंका वस्तिस्थान छोटा होता है इस लिये बालकों की पथरी औजारों से पकडकर सहज में निकाली जा सकती है ॥

बीर्यकी पथरी के लक्षण ।

वीर्य से जो पथरी रोग होता है वह प्रायः बडी उमर वाले आदमियों के ही हुआ करता है बालकों के नहीं होता, क्यों कि उस अवस्था में बीर्य पैदाही नहीं होता है । स्त्री संगमकी इच्छा होने पर जब बीर्य अपने स्थान को छोडकर चलदेता है और स्त्री संगम नहीं होने पाता तब बीर्य बाहर तो निकलने नहीं पाता उस समय बायु वीर्यको चारों ओर से खींचकर जननेन्द्रिय और अंडकोषों के बीच में इकट्ठा करके सुखादेती है । इसी को बीर्य

की पथरी कहते हैं उसके होने से वस्ति में सुई चुभने की सी वेदना मूत्र का थोडा थोडा होना और अंडकोषों में सूजन यह उपद्रव होते हैं ॥

बादी की पथरी की दवा।

पाखान भेद, शोरा खारी, नमक, अश्मंतक सितावर ब्राह्मी अतिबला श्योनाक खस कंतक रक्तचंदन अमर बेल शाकफल कटेरी गुंठतृण गोखरू जौ कुलथी बेर बेरनी और निर्मली इन सबका काढा करके इसमें क्षार मृत्तिका सेंधानमक शिलाजीत दोनों प्रकारका कसीस हींग और तूतिया। इनका चूर्ण मिलाकर पीनेसे बादी की पथरी जाती रहती है ॥

दूसरी दवा ॥

अरंड दोनों कटेरी गोखरू कालाईख इनकी जडको पीसकर मीठे दही के साथ पीनेसे पथरी टुकडे टुकडे होकर निकल जाती है ॥

पित्तकी पथरी का उपाय।

कुश, काश; खर; गुंठतृण, इत्कट, मोरट, पाखानभेद, दाभ बिदारीकंद, बाराहीकंद, चौलाई की जड, गोखरू, श्योनाक, पाठा रक्त चंदन कुरंटक और सोंठ इनके काढे में खीरा ककडी कसूम नीलकमल इन सबके बीज मुलहटी और शिलाजीत का कल्क डालकर घी पकावै इस घी के सेवन से पित्त की पथरी खंड खंड होकर निकल जाती है ॥

कफकी पथरी का उपाय।

जबाखार तीन माशे नारियल का फूल तीन माशे इन दोनों को जलाके पीसकर सेवन करने से एक सप्ताह में उत्कट पथरी रोग जाता रहता है ॥ *

पथरी के अन्य उपाय।

बरना की छाल, गोखरू के बीज, और सोंठ इन तीनों दवाओं को समान भाग मिलाकर दो तोले लेकर आध सेर जलमें औटावे, चौथाई शेष रहने पर उतार कर छानले, ठंडा होने पर दो माशे जवाखार और दो माशे पुराना गुड मिला- कर पीनेसे वादी की पथरी में विशेष उपकार होता है।

अन्य उपाय।

दो तोले बरना की छाल को आधसेर जलमें औटाकर चौथाई शेष रहने पर उतार कर ठंडा होने पर इसमें आधा तोला चीनी मिलाकर पीनेसे पथरी रोग में विशेष उपकार होता है।

अन्य उपाय।

सहजने की जड की छाल आधा तोला लेकर आधा सेर जल में औटावे, चौथाई शेष रहने पर उतार कर छानले, ठंडा होने पर इसको पीनेसे पथरी रोग में आराम होजाता है।

अन्य प्रयोग।

गोखरू के बीज दो आने भर लेकर पीसले, इसको शहत और बकरी के दूधमें मिलाकर पीनेसे पथरी रोग जाता र- हता है।

पथरी रोग पर पथ्य।

वमन विरेचनादि औषधियों का सेवन, उपवास, टबमें बैठ- कर स्नान करना, और कुलथी, पुराना शालीधान्य, पुराना मद्य, धन्वज देशके पशुपक्षियों के मांसकायूष पुराना कुम्हडा; कुम्ह डा के डंठल, गोखरू, अदरख, पाखानभेद, जवाखार, बांस का फूल, ये सब पथरी रोग पर पथ्य हैं।

पथरी पर कुपथ्य।

मूत्र और शुक्र के वेग को रोकना, खटाई का सेवन अफरा करने वाले भोजन पान; रूक्षगुणवाले खाने पीने के पदार्थ; पेट को भारी करने वाले आहार, विरुद्ध द्रव्य जैसे दूध और मछली मिलाकर खाना; इन सब को पथरी रोग में सर्वथा त्याग देना चाहिये।

तीसरा भाग समाप्त।

ओ३म् ।

परमात्मने नमः ।

जर्राहीप्रकाश ।

चौथाभाग ।

दांत के रोगों का इलाज

जो दांतो की जड में गरमी मालूम हो, और मुखमें ठंडा पानी भरने से रोगी को चैन पडे, तथा मसूडे लाल हो जांय और उनमें सूजन न होतो सिरका और गुलाब मुखमें रखना चाहिये; यदि दर्दकी अधिकता हो तो सिरके और गुलाब में कपूर भी मिला लेना चाहिये, इस रोगमें मुखमें गुलरोगन रखना भी लाभदायक है, जो दर्द बहुत ही होता हो तो गुलरोगन में अफीम मिलाकर लगाना उचित है ।

कफसे उत्पन्न दांत के दर्द का इलाज ।

जो दर्द कफके कारण से होता है, उसके यह लक्षण हैं कि सरदी के भीतरी वा बाहरी प्रयोग से दर्द बढ जाता है और गरमी से घट जाता है । इसमें पारा बा एलवा की गोली देकर कफ को दूर करना चाहिये; तथा पोदीना- सातरा और अकरकरा इन तीनों को-सिरके में औटाकर कुल्ले करना उचित है अकरकरा; पापडीनौन, सोंठ, चैना और पीपल इनको महीन पीसकर मसूडों पर मले, अथवा तिरियाके अरबा, वा तिरियाकुल अस्नान फलूनियां दांतों की जड पर लगावे, तथा नमक और बाजरा गरम करके जाबडों को सेकना भी गुणका रक्है, तिरियाकुल अस्नान बनाने की यह रीति है कि जुंदबे-

दस्तर; हींग कालीमिरच. सोंठ; बनफशा की जड. और अफीम इन सब दवाओं को समान भाग लेकर अच्छीतरह कूट छान कर शहत में मिला लेवे।

बादी के दर्द का इलाज।

सौंफ; अफीम और जीरा प्रत्येक साडेतीनमाशे लेकर पानी में औटावै और इसको मुखमें दांतों के पास भर भर कर कुल्ले करदे. समगुल बतम (एक प्रकारका गोंद) कालीमिरिच, किब्र की जड की छाल, और सोया इनको महीन पीसकर शहत में मिलाकर दांतों पर मले।

दांतों के कीडों का इलाज।

गंदना के बीज, खुरासानी अजवायन, और प्याज के बीज इनको महीन पीसकर मोम अथवा बकरी की चर्बी में मिलावै, फिर इसको आग पर रखकर इसके धूंए को नली द्वारा दांतों पर पहुंचावै; इस से कीडे मर कर गिर पडते हैं और दरद कम हो जाता है।

दांतों की रक्षाके दस नियम।

(१) अजीर्णकारक भोजन, बहुत भोजन दूध और मछली आदि विपरीति भोजन इत्यादि न करना (२) वमन कराने वाले द्रव्यों का अधिक सेवन न करना (३) सुपारी बादाम. अखरोट. आदि कठोर पदार्थों का दांतों से चबाना (४) मिठाई आदि अन्य कठोर वस्तुओं का त्याग (५) दांतो को खट्टा करनेवाले पदार्थों का त्याग (६) गरम के पीछे ठंडी और ठंडी पीछे के अत्यन्त गरम वस्तुओं का सेवन न करना (७) दांतों की प्रकृति के अनुसार हानि पहुंचाने वाले द्रव्यों का त्याग (८) भोजन करने के पीछे दांतोंको खूब साफ करना (९) प्रतिदिन प्रातःकाल पीलू जैतून आदि नरम और

कडवी लकडी की दांतन करना और इतना अधिक दांतों को न रिगडना कि जिससे मसूडे छिल जांय वा दांतोंकी चमक जाती रहै [१०] सोते समय दांतों पर तेल लगाना, गरम प्रकृति में गुलरोगन और ठंडी प्रकृति में बकायन वा मस्तगीका तेल चुपडना ।

दांतोंकी खटाई दूर करने का उपाय ।

खुर्फाकी पत्ती टहनी और तुलसी चबाने से दांतोंकी खटाई जाती रहती है । अगर खुर्फाकी पत्ती और टहनी न मिले, तो उसके बीजों को कूटकर पानी में भिगोकर काम में लावे । अथवा सातरा; तुलसी, शहत और नमक दांतों पर मलनाभी गुण दायक है ।

दांतोंकी चमक का उपाय ।

जो दांतोंकी चमक जाती रही हो तो हब्बुलगार फिटकरी और जराबंद तबील को महीन पीसकर दांतों पर मलै । अथवा गुलरोगन में कपूर और चंदन मिलाकर दांतों पर मलना गुण कारक है ।

दांतों की पोलका उपाय ।

किसी कारण से दांत पोले होगये हों अथवा उनपर हरापन कालापन वा पीलापन आजाय तो रसोत; नारदेन, नागरमोथा माजू और अकरकरा दांतों पर मलै तथा अधीरा, अनार के फूल, और फिटकरी, इनको सिरके में औटाकर कुल्ले करे ।

दांतों के मैल का वर्णन ।

जो दांतों को प्रतिदिन नहीं मांजते हैं उनके दांत पीले पड जाते हैं, इस पीलापन को धीरे धीरे खुरचकर नमक, समुद्रफेन, सीपीकीराख, जलाहुआ सीसा, और पहाडी गौ के सींग की राख इन सबका मंजन बनाकर दांतों पर लगाता रहै ।

दांतों के रंग बदल जाने का उपाय ।

जो दांतों का रंग पीला होगया होतो हरी मकोय का पानी और सिरका मिलाकर कुल्ले करे । फिर मतूर, जौ खितमी का आटा सिरकेमें मिलाकर दांतों पर लगावे । जो दांतों का रंग काला होतो किब्रकी जड, मंजरी, मस्तगी, और छरीला, कूट छानकर गुलरोगनमें मिलाकर काममें लावे ॥

दांतों के हिलने का उपाय ।

जो दांत बुढापे के कारण हिलने लगजाय तो उनका इलाज कुछ नहीं हो सकता है । और जो युवावस्था में तरीके नष्ट होने से दांत हिलने लग जाते हैं तो तर और चिकनी चीजें दांतों पर मलता रहे और गुलाव के फूल वंशलोचन.मसूर कस्तूरी, छोटी माई । इनको महीन पीसकर दांतो की जड में बुरकना चाहिये ॥

बच्चों के दांत निकलने का उपाय ।

जिस बच्चे के दांत निकलने को हों तो मसूडों पर कुतिया का दूध मलने से दांत जल्दी निकल आते हैं । जो दांत निकलने के समय दर्द की अधिकता हो तो हरी मकोय का पानी और गुलरोगन गरम करके उसको उंगली पर लगाकर बालक के मसूडों पर मलै । और जब दांत निकलने लगे तव फिर गर्दन, कानों, की जड और नीचे के जावडों पर चिकनाई लगाता रहे तथा तेल गुनगुना करके उसकी एक दो बूंद कानमें डाल दिया करै ।

मसूडों की सूजन का उपाय ।

जो मसूडे सूजगये हों तो मसूर, सूखा धनियां, अधीरा लालचंदन सुपारी और सिमाक को पानीमें औटाकर उसपानीसे कुल्ले करावै । सूजन के कम होजाने पर जो सूजनका असर बाकी रहे तो बादाम का तेल और गुलरोगन गरमपानीमें मिला

कर उससे कुल्ले करे। जो पित्त के कारण से सूजन होती है तो उंगली से दवाने पर गढा पड जाता है और उंगली हटाने पर ज्योंकी त्यों हो जाती है। इस में हरड का काढा देकर दस्त करावे। फिर अधीरा और मकोय के दाने सिरके में औटाकर कुल्ले करे॥

मसूडों के रुधिर का उपाय।

मसूडों से रुधिर बहता होतो जली हुई मसूर, वंशलोचन कीकर और माजू इन सब दवाओं को महीन पीसकर दांतोंपर रिगडे और जरूर शिवी वा जरूर तरीखी मसूडों पर बुरक देना चाहिये। जरूर शिवी के बनाने की यह रीति है कि फिटकरी को भूनकर सिरके में बुझाले फिर इससे दुगुना नमक और डेढ गुनी लाल फिटकरी पीसकर रखले इसी को जरूर शिवी कहते हैं जरूर तरीखी की विधि यह है कि तारीख नामक मछली को आग में डाल दे फिर इसकी राखको सूखे हुए गुलाबके फूलों में मिला कर पीसले॥

मसूडों को दृढ़ करने वाली दवा।

गुलाबके फूल, जुर्फ, बलूत का छिलका; और हब्बुल्लास प्रत्येक १४ माशे खनेब, नफ्लो, समाक, अकरकरा प्रत्येक १७॥ माशे इन सबको कूट छान कर मसूडों पर लगाने से मसूडे पक्के हो जाते हैं॥

आंख के रोगों का वर्णन।

यूनानी हकीमों ने आंखों में सात परदे और तीन रतूबतें मानी है। इन्हीं परदों और रतूबतों में जब कोई भीतरी वा बाहरी विकार पैदा होजाता है, तभी उसको आंख का रोग बोलते है।

परदों के नाम।

मुलतहिमा; करानियां, इनबिया, इनकबूतिया; शबकिया; मसामिया और सलबिया कोई कोई मुलतहिमा, शबकिया और अनकबूतिया इन तीनों को पर्दा नहीं मानते है, केवल चार ही परदे मानते है।

मुलताहिमा परदे के रोग।

यह परदा उन अजलों से मिला हुआ है जो आंख के ढेले को हिलाते है, तथा सफेद और चिकने मांससे भरा हुआ है, यह करानिया परदे को छोडकर आंख के सब भागों को घेरे हुए है। इस परदे में चौदह रोग होते हैं इन में से पांच अप्रधान और ६ प्रधान रोग हैं। प्रधान रोगों के नाम ये हैं, जैसे—रमद; तरफा; जफ़रा, सबल; इन्तफ़ाख; जसा; हुक्का दूका; और तूसा॥

रमद का वर्णन।

अरबी भाषा में रमद आंख दूखने को कहते हैं। यह बात याद रखनी चाहिये कि मुलताहिमा परदे पर जब सूजन आजाती है, तब उसे रमद बोलते है इसी का दूसरा नाम "रमद हकीकी" भी है क्योंकि रमद कभी उस ललाई के लिये भी बोला जाता है, जो आंख में धूल गिरने, धूआं लगने वा सूरज की गरमी के कारण होजाया करती है, परंतु इस में सूजन नहीं होती। रमद पांच प्रकार का होता है. यथा रक्तज, पित्तज, कफज, वातज वा रीह से उत्पन्न ।

रक्तज रमद के लक्षण।

आंख के इस रोग में सूजन की अधिकता, ललाई, फूलापन और खिचावट होती है, मैल अर्थात् गीढ का अधिक आना, रगों का मवाद से भरना कनपटियों में दर्द और धमक तथा रुधिर की अधिकता, ये सब रक्तज रमदके लक्षणहै।

रक्तज रमद का इलाज ।

किसी किसी हकीम का मत है कि जिस तरफ की आंख दुखती हो उस तरफ सरेरू रग की फस्द खोले और जो किसी कारण से फस्द न खोली जा सके तो गुद्दी पर पछने लगवा कर रुधिर निकाल दे;फिर हरड़ आलू पित्तपापडा और इमली का काढा पिलाकर कोष्ठको नरम करदे । तत्पश्चात् शियाफ अबियज को अंडे की सफेदी वा मैथी के लुआब वा स्त्री के दूध में घिसकर लगावै । रोग के आरंभ में उक्त शियाफ को पानी में घिसकर लगाना वार्जित है क्योंकि आंख में पानी पहुंचने से मल कच्चा रह जाता है, आंख के परदे मोटे होजाते हैं और परदे को हानि पहुंच जाती है ।

शियाफ अबियज के बनानेकी विधि।

जस्ते का सफेदा, समग अर्बी और कतीरा इन तीनोंको कूट छानकर ईसबगोल के लुआब अथवा अंडेकी सफेदीमें मिलाकर शियाफ (बत्ती) बनालेवे । कोई कोई यह कहते हैकि अफीम और अंजरूत भी थोडीसी मिला देनी चाहिये ।

पित्तज रमद का लक्षण ।

इसमें सूजन, फुलावट, खिचाव, लाली, चीपड निकलना, और आंसू बहना रक्तज रमद की अपेक्षा कम होताहै, परंतु दर्द जलन चुभन अधिक होती है ।

पित्तज रमद का इलाज ।

इस रोग में रक्तज रमदमें लिखा हुआ हरड आदि का काढा पिलाकर दस्त करावे । तथा कासनी के बीज का शीरा, पालक के बीज का शीरा, हरी मकोय, और हरे धनिये की पत्ती पीसकर आंखों पर लगावै, तथा बिहीदाना, ईसब गोल का लुआब, लडकी वाली स्त्री का दूध और अंडेकी सफेदी आंखमें

डाले, जिस समय दर्द अधिक होता हो उस समय शियाफकाफूरी (कपूर की बत्ती) और अफीम आंख पर लगावे ।

कफज रमद का वर्णन ।

कफज रमद के ये लक्षण हैं कि आंख बहुत फूल जाती है, बोझ अधिक मालूम देता है गीड और आंसू बहुत निकलते हैं, दोनों पलक आपसमें चिपट जाते हैं और लाली कम होती है ।

कफज रमद का इलाज ।

मलके दूर करने और रोकने के लिये एलुआ; रसोत; बूल अकाकिया और केशर इनको गुलाब जल में पीसकर माथे और पलक के ऊपर लेप करना चाहिये ।

मलको पकाने और निकालने के लिये धुली हुई मेथी का लुआब और अलसी का लूआब आंखों में डाले, औ दो तीन दिन पीछे जरूर अवियज आंख में लगावे । यह दवा प्रारंभ में लगाना उचित नहीं है अंत में लगाया जाता है ।

मेथी को धोने की रीति ।

मेथी को मीठे पानी में डालकर दो पहर तक रक्खीरहने दे, फिर उस पानी को निकाल कर मेथी से बीस गुनापानी डालकर औटावे, जब पानी आधा रहजाय तब लुआब बन जाता है ।

जरूर अवियज की रीति ।

अंजरूत को पीसकर गधी वा लडकी वाली स्त्रियोंके दूध में सानकर झाऊ की लकड़ियों पर रखकर ऐसे चूल्हे में रखदे जो ठंडा होने को हो । सूख जाने पर इसका चौथाई नशास्ता मिलाकर बारीक पीसले और रोगके अनुसार थोडी मिश्रीभी डाल लेवे ।

बातज रमद का लक्षण ।

इस रोग में आंखोंमें सूखापन भारापन और रंग में कालापन होता है आंखों में चुभन पलकों में ललाई और सिर में दर्द हुआ करता है ।

बातज रमद का इलाज ।

इस रोग में दिमागमें तरी पहुंचाने वाले उपाय करने चाहिये बनफसा का तेल और दूध नाक में सूंघे तथा विहीदाने का लुआब आंखमें डाले अथवा बाबूना बनफशा और अलसीका पानी नीलोफरके पानीमें मिलाकर आंख पर लेप करे और शियाफ दीनारंगू आंख पर लगावे ।

शियाफ दीनारगूं बनाने की रीति ।

सफेदा और चांदी का मैल प्रत्येक ३५ माशे अफीम आधा माशे कतीरा छः माशे और नशास्ता साडेतीन माशे इनको कूट पीसकर बत्ती बनालेवे ।

रीही रमद का लक्षण ।

इसमें आंख खिची रहती है भारापन और आंसू बिलकुल नहीं होते कभी कभी दरद के कारण लाली भी होजाती है ।

रीही रमद का इलाज ।

इस रोग में बाबूना अकलीलुल मलिक और दोना मरुआ को औटाकर इस पानी को आंख पर डाले और गेहूं की भुसी तथा बाजरे से सिकताव करे ।

अब आंखों के दुखने पर बहुत से हकीम और बैद्योंके परीक्षा किये हुये प्रयोग लिखे जाते हैं ।

आंख पर लेप ।

जो यह रोग गरमी से हुआ हो तो रसौत को लडकी की माता के दूध मे घिस कर आंख के भीतर और बाहर लगाना

उचित है जो आंख में दरद अधिक होता हो तो इस में थोडी सी अफीम भी मिला लेनी चाहिये।

जालीनूस की बनाई हुई गोली।

भुनी हुई फिटकरी साडे तीन तोले, हलदी सात माशे, और अफीम ५ माशे इनको पके हुए कागजी नीबू के रस में घोटकर लोहे के पात्र में भर मंदी मंदी आग पर पकावे; गाढा होने पर गोलियां बनालेवे आवश्यकता के समय इस गोली को पानी में घिसकर नेत्रों के ऊपर पतला लेप करे और पलकों के किनारे पर लगावे। यह प्रयोग परीक्षा किया हुआ है।

आंखोंपर बांधने की दवा।

गेहूं की मैदा, लोध और घी प्रत्येक चौदह माशे लेकर सबको सानकर चार गोली बना लेवे। इनमें से एक गोली ठीकरे पर रखकर आग पर रखदे। कुछ गरम होने पर आंख पर बांध दे। इस तरह चारों गोलियों के बांधने से विशेष लाभ की सम्भावना है।

आंख पर लगाने का लेप।

हरड का छिलका, सेंधानमक, गेरू और रसोत इन चारों को समान भाग लेकर जलके साथ पीसकर आंखों पर लेप करने से सब प्रकार के नेत्र रोग जाते रहते हैं।

अन्य प्रयोग।

नीबू के रसको लोहे के पात्र में डालकर घोटता रहे, जब कुछ गाढा हो जाय तब आंखों के ऊपर लगाने से दरद कम हो जाता है।

अन्य प्रयोग।

अफीम, फूली हुई फिटकरी और लोध प्रत्येक एक माशे इन सबको नीम के रस में पीसकर लोहेकी कढाई में गरम

करेक नेत्रों पर लेप करै तो आंखों का दुखना दूर होजाता है।

अन्य उपाय।

मुलहटी, गेरू, सेंधानमक, दारु हल्दी, और रसोत इन सबको समान भाग लेकर जलके साथ पीसकर आंखों पर लगाने से आंख दुखने का दरद जाता रहता है।

नेत्र रोग पर पोटली।

पठानी लोध; फूली हुई फिटकरी, रसौत; मुलहटी प्रत्येक एक माशे लेकर महीन पीसले और इसमें से एक माशे लेकर एक धुले हुए सफेद कपडे में पोटली बना लेवै। इस पोटली को गुवारपाठे के रस में अथवा पोस्त के डोरोंके पानीमें अथवा केवल जल में भिगो भिगोकर आंखों पर फेरने से नेत्रों का दरद जाता रहता है।

दूसरी पोटली।

जो हवा लगने के कारण नेत्रोंमे सुईचुभने की सी वेदना होती हो तो पठानी लोध को सेक कर महीन पीसकर कपडे में छानले और फिर घी में भूनले। फिर इसको कपडे में बांध कर गरम कर करके आंख पर सिकताव करै तो नेत्र शूल बंद हो जाता है।

तीसरी पोटली।

ग्वार पाठे का गूदा एक माशे और अफीम एक रत्ती इन दोनों को पीसकर एक पोटली में बांधले। और इसको पानी में भिगो भिगो कर आंखों पर फेरता रहे। इसमें से एक बूंद आंख के भीतर भी टपका देना लाभ कारक है।

चौथी पोटली।

पठानी लोध और भुनी फिटकरी एक एक माशे, अफीम; चार रत्ती; इमली की पत्ती चार माशे, इन सब को पीसकर

कपडे की पोटली में बांध आंखों पर फेरता रहे, तो इस से आंखों का दरद जाता रहता है।

पांचवीं पोटली।

इमली की पत्ती. सिरसकी पत्ती' हलदी और फिटकरी, इन चारों को दो दो माशे लेकर महीन पीसकर एक पोटली बना लेवे उस पोटली को पानी में भिगो भिगो कर बार बार आंखों पर फेरने से आंख दुखने का दरद बंद होजाता है।

छठी पोटली।

पोस्त का डोढा एक, अफीम एक रत्ती लोंग दो, भुनी हुई बेलगिरी चार माशे, चने के बराबर हलदी दो माशे इमली की पत्ती इन सब को कूट पीसकर पोटली बनाकर पानी में भिगो भिगो कर आंखों पर फेरे।

सांतवीं पोटली।

कपूर तीन माशे और पठानी लोध एक माशे पीसकर पोटली में बांध कर आधे घंटे तक पानी में भिगोदे फिर इस को बार बार आखों पर फेरे और कभी कभी एक बूंद आंख के भीतर भी टपका देवे।

आठवीं पोटली।

पठानी लोध फिटकरी मुरदासंग हलदी और सफेद जीरा प्रत्येक चार चार माशे: एक रत्ती अफीम; काली मिरच चार नीलाथोथा आधा रत्ती इन सब को कूट पीस पोटली बनाकर पानीमें भिगो भिगो कर नेत्रों में फेरना चाहिये

नवीं पोटली।

बडी हरड का बक्कल बहेडे का बक्कल आमला रसौत, गेरू, इमली की पत्ती, अफीम, फूली हुई फिटकरी और सफेद जीरा यह सब समान भाग लेकर कूट पीस कपडे में पोटली

बांधकर गुलाब जल अथवा पानीमें भिगो भिगोकर नेत्रों पर बार बार फेरने से दरद जाता रहता है ।

दसवीं पोटली ।

अफीम एक माशे, फूलीहुई फिटकरी दोमाशे, इमली की पत्ती एक माशे इन सब को महीन पीसकर कपडे की पोटली में बांध कर आंखों पर फेरने से बहुत गुणकारक हैं ।

ग्यारहवीं पोटली ।

सफेद जीरा, लोध और भुनी हुई फिटकरी इन सबको समान भाग लेकर महीन पीसकर ग्वार पाठे के रसके साथ घोट कर कपडेकी पोटली में बांधे और इस पोटली को पानीमें भिगो भिगोकर आंखों पर फेरता रहे तो बहुत लाभदायकहैं ।

बारहवीं पोटली ।

फूली हुई फिटकरी एक माशे और अलसी दो माशे इन दोनों को पीस कर कपडे की पोटली में बांध कर जलमें भिगो भिगो कर बार बार आंखों पर फेरने से आंखोंकी पीडाजाती रहती है ।

अन्य प्रयोग ।

जो गरमी के कारण आंख दुखने आई हो तोईसबगोलका लुआब लगाना भी गुणदायक हैं ।

अन्य उपाय ।

जिस दिन आंख दुखनी आवे उसीदिन धतूरे का रस कुछ गुन गुना करके कान में टपकाना चाहिये । यदि बाईं आंख दुखती होतो दाहिने कान में और दाहिनी आंखदुखती होतो बांए कान में टपकाना उचित है ।

बालकों की आंखका इलाज ।

जो किसी बालककी आंख दुखनी आगई हो तो नीम की

पत्तियों का रस बांई आंख दुखती हो तो दाहिने कान में और दाहिनी आंख दुखती हो तो बांये कान में टपकावे।

अन्य लेप ।

लोहे के पात्र में नीबू का रस डाल कर लोहे के दस्ते से इतना घोटे कि उसका रंग काला हो जाय, फिर आंखों के ओर पास उसका पतला पतला लेप करना चाहिये।

अन्य उपाय ।

केवल ग्वार पाठे का गूदा निकाल कर उसके रसको सोने के समय कान में टपकाना भी गुणकारक है।

गर्मी की आंखों का इलाज ।

हलदी को पानी में पीसकर ऊपर लिखी रीतिसे दाहिने वा बांये कान में टपकाना चाहिये।

दूसरा उपाय ।

बिहीदाने का लुआब और धनिये के पत्तों का रस लडकी की मा के दूध में मिलाकर छानले, फिर इसे आंखोंमें टपकाना उक्त गुण करता है।

तीसरा उपाय ।

गोंदीकी पत्तियों का रस कान में डालने से गरमीके कारण उत्पन्न हुई नेत्र पीडा जाती रहती है।

चौथा उपाय ।

आमला और लोध इन दोनों को गौ के घी में भूनकर ठंडे पानी में पीसले और इसका पतला पतला लेप आंखके आस पास लगावे। इस बातकी सावधानी रखनी चाहिये कि आंख के भीतर न जाने पावे।

पांचवां उपाय ।

गेरू, रसौत, छोटी हरड और बडी हरड का छिलका इन

को पानी में पीसकर आंखों के ओर पास लेपकरना उचितहै ।

छटा उपाय ।

सूखी इमली के बीजों को पानी में भिगो कर मसल कर छानले फिर इसमें तीन रत्ती अफीम और पांच रत्ती फिटकरी डालकर किसी लोहे के पात्र में भरकर आग में पकावै । जबरस गाढा होजाय तव इसको सीप में धरकर पतला पतला लेपआंखों पर करै। यदि इमली के बीज न मिलें तो पत्तों के रस को ही काम में लाना चाहिये ॥

सातवां उपाय ।

चोंसठ तोले पानी में चार तोले दारु हलदीको डालकरपकावै जब आठवां भाग शेष रहे तब उतार कर छानले। फिर इस में शहत मिलाकर आंखों पर डालने से सब प्रकार के आंख दूखने में लाभ पहुंचता है ।

आठवां उपाय ।

केवल सहजनै के पत्तों के रस में शहत मिला कर लगाने से वादी, पित्त, कफ; त्रिदोप से आई हुई आंख अच्छी हो जाती है ॥

नवां उपाय ॥

नेत्र बाला तगर कंजाकी वेल और गूलर इन सब की छाल को बकरीके दूध और जलमें पकावै। उसको पकने पर छान कर आंखों में टपकावे इस से आंखों का दरद जाता रहताहै ।

दसवां उपाय ।

मजीठ हलदी लाख किसमिस दोनो प्रकार की मुलहटी और कमल इनके काढे में चीनी मिलाकर ठंडा करले इसको आंखों में टपकाने से रक्त पित्त के कारण जो आंख दुखनी आई हो तो आराम हो जाता है ॥

❀ ग्यारहवां उपाय ❀

कसेरू और मुलहटी को पीसकर एक पतले कपडेमें रखकर पोटली बना लेवे। फिर इसको वर्षा के जल में भिगो भिगो कर आंखों में निचोडना चाहिये

बारहवां उपाय।

सफेद कमल; मुलहटी और हलदी इनको पीसकर एक पोटली बना लेवे। इसको स्त्री वा बकरी के चीनी डालें हुए दूध में भिगो भिगोकर आंखोंमें निचोडने से दाह वेदना ललाई और आसुओं का गिरना बंद होजाता है।

❀ तेरहवां उपाय ❀

सफेदलोध और मुलहटीको घीमें भूनकर महीनपीसकर पोटली बना लेवे। इस पोटली को स्त्री के दूधमें भिगो भिगो कर आंखों में टपकाने से पित्त रक्त और चोटसे उत्पन्न हुए नेत्र रोगमें आराम होजाता है॥

❀ चौदहवां उपाय ❀

सोंठ, त्रिफला, नीम, अडूसा और लोध इनका काढा करकेजब ठंडा होने से इसमें कुछ गरमाई शेष रहे तब आंख में टपकाने से कफ के कारण दुखती हुई आंख में आराम होजाता है।

पन्द्रहवां प्रयोग॥

सोंठ और बबूल का गोंद प्रत्येक साडे तीन माशे दोनों को कूट छानकर पानी के साथ पीसकर लेप करना चाहिये।

सोलहवां प्रयोग॥

अमचूर को लोहे के खरल में डालके लोहे के दस्तेसे थोडा थोडा पानी डालकर खूब घोट कर इस का पतला पतला लेप आंखों के ओर पास करना बहुत उपयोगी है॥

सत्रहवां प्रयोग ।

बडके पेडका दूध आंखों में आंजना नेत्र रोग में बहुत गुण कारक है ।

अठारहवां उपाय ।

सोंठ और नीम के पत्तों को समान भाग लेकर पानी के साथ पीसकर गोलियां बनाकर रखले । जब दरद होताहो तब पानी में घिसकर लेप कर देना चाहिये ॥

उन्नीसवां उपाय ।

काली मिरच और चूल्हे की जली हुई मिट्टी इन दोनों को चीनी के प्याले में घोटे । जब घोटते घोटते काला रंग पडजाय तब काजल की तरह आंखों में आंजे इससे नेत्रों की ललाई और बगल गंध जाती रहती है ।

बीसवां उपाय ।

अडूसे के पत्तों को पीसकर टिकिया बनाकर आंखों पर बांधने से तीन दिनमें बगल गंधादिक रोग जाते रहते हैं ।

इक्कीसवां उपाय ।

कपास की पत्तियों को पीसकर दही में मिलाकर आंखों पर लगाने से उक्त गुण होता है ।

बाईसवां उपाय ।

अनार की पत्तियों को पीसकर टिकिया बनाकर सोते समय आंखों पर बांधना भी उक्त गुण कारक है ।

तेईसवां उपाय ।

गोभी के पत्तों की टिकिया भी ऊपर लिखा गुण करती है ।

चौबीसवां उपाय ।

नागर मोथा; मुलहटी, आमला, मकोय खस, नील कमल के बीज, प्रत्येक तीन माशे, मिश्री दो तोले इन सबको कूट

छानकर इस में से सात माशे प्रति दिन सेवन करने से आंख छाती और पेट की जलन जाती रहती है।

पच्चीसवां उपाय।

धुली हुई मेथी का लुआब थोडे से कतीरे में मिलाकर आंख में टपकाने से पीडा शांत हो जाती है।

छब्बीसवां उपाय।

कटेरी के पत्ते पीसकर नेत्रों पर बांधने से और आंखों में उसीका रस निचोडनेसे आंखों में उपकार होता है।

सत्ताईसवां प्रयोग।

छिली हुई मुलहटीको कुछ कूट कर थोडे पानीमें पीसकर उसमें रुई भिगो कर नेत्रों पर रखने से नेत्रों की ललाई जाती रहती है

अट्ठाईसवां प्रयोग।

लोध दो भाग बडी हरड का वकल आधा भाग इन दोनों को अनारके पत्तों के रस के साथ पीसकर रुई भिगो कर आंखों पर तीन दिन तक लगाने से सब प्रकार का दर्द जाता रहता है

उन्तीसवां प्रयोग।

कच्ची आमी को कूट पर आंख पर बांधना भी गुण कारकहै

तीसवां प्रयोग।

बीस मुंडी निगलजानेसे एक बरस तक और चालीस मुंडी निगलजाने से दो बरस तक आंख दुखनी नहीं आती है।

इकत्तीसवां उपयोग।

जो आंख दुखनी न आई हो और गरमी के कारण खुजली चलती हो तो त्रिफला को कूटकर रातके समय पीनामें भिगोदे और प्रातः काल उस पीना को छानकर आंखों पर छींटे मारे।

बत्तीसवां प्रयोग।

सहजने के पत्तों का रस तांबे के पात्र में रखकर तांबे के

मूसले से रिगडे। फिर इसमें घी की धूनी देकर आंख में लगावे इससे सूजन, घर्ष, आंसू और वेदना दूर हो जाते है।

तेतीसवां प्रयोग।

कांसी के पात्र में तिलके जलके साथ मिट्टी के ठीकरे को घिसकर घृत में सने हुये नीम के पत्तों की धूनी देकर आंख में लगाने से घर्ष, शूल, आंसू और ललाई जाती रहती है।

चौंतीसवां प्रयोग।

लोहे के पात्र में दूध के साथ गूलरको घिसकर घृत में सने हुए शमीपत्रकी धूनी देकर आंख में लगावे। इससे दाह शूल, ललाई; आंसू और हर्ष जाते रहते है।

पैंतीसवां प्रयोग।

तालीस पत्र, चपला, तगर, लोह चूर्ण, रसौत, चमेली के फूल की कली, हीरा कसीस और सेंधा नमक इन सबको गोमूत्र में पीसकर तांवे के पात्र पर पोतकर सात दिन तक रहने दो सात दिन पीछे इस औषधको तांवे के पात्र से खुरच कर फिर गोमूत्र में पीसकर गोली बनावे। इन गोलियों को छाया में सुखाकर स्त्री के दूध में घिसकर आंख में लगावे। इससे घर्ष, आंसू गिरना सूजन और खुजली जाती रहती है।

छत्तीसवां प्रयोग।

कटेरी की छाल, मुलहटी और तांवे का चूर्ण इन सबको बकरीके दूधमें घिसकर घीमें सने हुए शमी और आमलेके पत्तों की धूनी देकर आंखमें लगाने से सूजन और दर्द जाता रहता है।

रतौंध का वर्णन।

आयुर्वेदिक विद्वानों का यह मत है कि सूर्यास्त के समय वातादिक सब दोष जहांके तहां ठहर कर दृष्टि को ढक लेतेहैं, इस लिये एक रोग पैदा हो जाता है जिसे रतौंध कहते हैं। और

दिन निकलने के समय वही दोष सूर्य की किरणों के कारण छिन्न भिन्न होकर दृष्टिके मार्गको छोड कर हट जाते है। उस लिये दिन में दिखाई देने लगता है।

हकीम लोग रतोंध रोग का यह कारण बताते हैं कि निकम्मी भाफ के परिमाणु चाहे दिमाग में उत्पन्न हो, चाहे आमाशय से उठकर दिमाग की तरफ चढे; तब रातमें दिखाई देना बंद हो जाता है। जो भाफ के परमाणु दिमाग में ही पैदा होतेहैं तो रतोंध एकहीदशा पर स्थित रहती है और जो आमाशय से चढ कर जाते हैं. तो जो आमाशय हलका होगा तो रतोंध कम होगी और जो आमाशय भारी होगा तो रतोंध अधिक होगी। दूसरी बात यह है कि आंखकी रतूवत और तरी रात की ठंडी हवा के कारण गाढी होकर देखने की शक्ति को ढक लेती है और सूर्य के प्रकाश से दिन की हवा के कारण वह रतूवत हलकी होकर दूर होजाती है और दृष्टि साफ हो जाती है।

रतोंध का इलाज।

जो भाफके परमाणु और रतूवत इकट्ठे होकर दृष्टिमंडलको रोक लेते हैं उनको साफ करने के लिये काली मिरच, नक छिकनी, जुन्दवेदस्तर और एलवा इनको पीसकर सुंघावे जिससे छींक आकर दिमाग साफ होजाय।

रतोंध का बफारा।

सोंफ, सोया, वावूना, कैसून; दोना मरुआ; नम्माम और तुतली इनको पानी में औटाकर इस पानी का आंखों में बफारादेवे।

दूसरा बफारा।

बकरी की कलेजी; सोंफ और पीपल इन तीनों को हांडीमें भर कर पानी के साथ औटावे और इस पानी का बफारा दे।

तीसरा बफारा ।

केवल बकरी की कलेजी को आग पर रखकर आखों को धूंआं देना भी विशेष लाभकारक है ।

भोजनके साथ हींग; पोदीना, राई, सातरा और अंजदान को अधिक सेवन करना भी गुणकारक है ।

आंखों में लगानेकी दवा ।

जंगली बकरी की कलेजी आग पर रखकर काली मिरच और सोंफ कूटकर उस पर डाले, जिससे कलेजी से उठीहुई तरी को यह दवा सोखलें । फिर इन दवाओं को कलेजी पर से उतार कर वारीक पीसकर रखले आवश्यकताके समय सुरमे की तरह आंख में लगावै ।

अन्य उपाय ।

बकरीकी कलेजी में जंगली बच और पीपल गाढदे और उस कलेजी को आग पर रखदे । ऐसा करने से जो पानी निकले उसको आंखमें लगावे यह नुसखा बहुत ही उत्तम है ।

दूसरा उपाय ।

सोंठ, काली मिरच और छोटी हरड इनको समान भाग लेकर गोली बनावे, आवश्यकता के समय पानी में घिसकर आंख में आंजे ।

तीसरा उपाय ।

काली मिरच, कवेला और पीपल इनको समान भाग ले क महीन पीसकर आखों में आंजे ।

हस्तामलक ११ योग ।

[१] प्याज का रस अथवा सिरस के पत्तों का रस आंख में आंजे [२] सेंधे नमककी सलाई आंखों में फेरे । [३] समुद्र फेनकी गुठली बकरी के मूत्र में घिसकर आंख में फेरे ।

[४] दही के तोड में थूक मिलाकर आंखोंमें टपकाना हितहै [५] पानी के साथ सोंठ घिसकर आंखों में लगाना गुणकारक है [६] थूक में काली मिरच घिसकर लगाना चाहिये। [७] रोहू मछली का पित्ता नेत्रों में लगावे। [८] कसोंदी के फूलों का रस लगानाभी उपकारक है [९] सहजने की नरम डालियों सत एक माशे शहत के साथ मिलाकर आंखों में लगानाभी गुणकारक है (१०) गधे का तत्काल निकला हुआ रुधिर आंख में लगावे [११] हुक्के के नहचेकी काली कीचड लगाना भी गुणकारक है।

पन्द्रहवां उपाय।

रसोत; गेरू और तालीसपत्र इनको महीन पीसकर घी शहत और गोबर के रस में मिलाकर रतोंध में आंजना हितकारक है।

सोलहवां उपाय।

दही में काली मिरच घिसकर आंखों में आंजने से रतोंध जाती रहती है।

सत्रहवां उपाय।

कंजा, कमल, सौनागेरू और कमलकेसर इनको गोबर के रस में पीसकर लम्बी सलाई बना लेवे, इसको आंखों में फेरने से रतोंध जाती रहती है।

अठारहवां उपाय।

रैणुका, पीपल, सुरमा और सेंधानमक इनको बकरी के दूध में पीसकर सलाई बनाकर आंखों में फेरने से रतोंधजाती रहती है।

उन्नीसवां उपाय।

शैलेय, त्रिकुटा, त्रिफला, हरताल; मेंसिल और समुन्द्रफैन

इन सबको बकरीके दूध में पीसकर बत्ती बनाकर आंखों में आंजने से रतौंध जाती रहती है।

वीसवां उपाय।

बकरी के यकृत अर्थात् कलेजी में पीपलों को रखकर आग पर ऐसी रीति से सेके कि जलने न पावे। फिर उस पीपल को जल में घिसकर आंखों में लगावे, इससे रतौंध जाती रहती है।

इक्कीसवां उपाय।

भैंसकी तिल्ली और कलेजी घी और तेल के साथ खाना भी हित है।

दिनौंध का वर्णन।

जिस रोग में दिन में दीखना बंद हो जाता है और रात में वा बादलवाले दिन दिखाई देने लगता है, उसे दिनौंध कहते हैं। इस रोग का यह कारण है कि गरमी के कारण से देखने वाली शक्ति कम हो जाती है और रात के समय सर्दी के कारण दर्शन शक्ति अपनी जगह पर आजाती है, इस लिये रात में दिखाई देने लगता है और दिनमें दीखना बंद हो जाता है।

दिनौंध का इलाज।

लडकी की माता का दूध, बनफ्सा का तेल, कद्दू का तेल नाक में डाले। रीवास का पानी, शर्बत नीलोफर, और बनफशा का शर्बत, उन्नाव का शर्बत पिलावे। ठंडे पानी में डुबकी लगाकर पानी के भीतर आंख खोले।

आंख में गिरी हुई वस्तु का वर्णन।

जब हवा के साथ उडकर धूल का कण, रेल का कोयला, तिनुका आदि कोई छोटी चीज आंख में गिर पडती है,

तब आंख में कड़का मारने लगता है, आंसू बहने लगते हैं, खुजली चलती है और पलकों के इधर उधर चलाने के साथ वह चीज भी आंख में इधर उधर घूमती है, इससे बड़ी बेचैनी होजाती है ।

उक्त दशा में कर्तव्य ।

जब आंख में कोई वस्तु गिर पड़ी हो तो उसको हाथ से न मलना चाहिये क्योंकि यदि आंख में कोई कठोर वा नौकीली वस्तु जैसे कांच का टुकडा वा लोहे का टुकडा पडा हो और हाथ से मली जाय तो ऐसा हो जाता है कि वह चीज आंख में घुसकर घाव पैदा कर देती हैं तब बडा कष्ट होता है ।

उक्त दशा में उपाय ।

(१) आंख को गरम पानी से धोकर उस में स्त्री का दूध डालना उचित है (२) पलक को उलट कर देखे कि वह वस्तु आंख में कहां पडी है, यदि दिखाई देती हो तो धुनी हुई रुई के फाये से, वा रूमाल के सिरेसे जैसे हो तैसे उस वस्तु को उठा लेना चाहिये, झट पट न उठे तो रुई के फाये को थोडी देर आंख में रक्खा रहने दे इस तरह करनेसे वह चीज उस रुई के फाये से चिपट जाती है, तब उसे निकाल ले ।

जो वह चीज बहुत भीतर घुस गई हो और इन उपायों से न निकल सके तो निशास्ता महीन पीसकर आंख में भर देवे और थोडी देर तक वहीं रहने दे थोडी देर में वह चीज निशास्ते में लग जायगी तब उसे रुई के फाये से बाहर निकाल ले ।

जब जौ वा गेहूं की बाल के ऊपर का तिनुका वा कांच का टुकडा वा और कोई ऐसी चीज आंख में गिर पडी हो तो उस यंत्रसे खींच लेना चाहिये जो इसी काम के लिये बनाया जाता है ।

निकालने के पीछे स्त्री का दूध वा अंडे की सफेदी आंख में डाल देनी चाहिये ।

आंख में जानवर गिरने का उपाय ।

जब आंख में कोई मच्छर वा और कोई उडने वाला छोटा जानवर पड जाता है तब बडा दरद होने लगता है; आंख बंद होजाती है, आंसू बहने लगते हैं, आंख मसलने से लाल हो जाती है ।

इस के निकालने की यह रीति है कि मुलतानी मिट्टी बहुत महीन पीसकर आंख में भरदे और एक घंटे तक आंख को बंद रक्खे जिस से वह जानवर उस में लगजावे, फिर रुई वा कपडे से निकाल लेवै ।

अथवा आंख को कपडा गरम कर करके सेके अथवा कपडे को मुख की भाफ से गरम कर कर के सेके फिर भीतर कपडा फेर कर जानवर को निकाल लेवै ।

आंख पर चोट लगने का वर्णन ।

आंख में किसी प्रकारकी चोट लगने से जो ललाई और सूजन उत्पन्न हो तो फस्द खोलना और हलके हलके क्वाथ वा मेवे के पानी देकर कोष्ठ को नरम कर देना उचित है । आवश्यकता हो तो गुद्दी पर पछनेभी लगवाना चाहिये । फिर दर्द को रोकने के लिये जर्दी मिली हुई अंडे की सफेदी गुल रोगन में मिलाकर आंख पर लगाना चाहिये ।

आंखके नीलापन का उपाय ।

दरद और सूजन तथा ललाई कम होजाने के पीछे चोट का चिन्ह अर्थात् नीलापन बाकी रहै तो धनियां, पोदीना, संगफिलफिल (एक पत्थर का टुकडा जो काली मिरचों में मिला करता है) और हरताल इनको पीसकर लेप करने से नीलापन दूर होजाता है ।

आंख में पत्थर आदिकी चोटका उपाय ।

जब तलवार वा पत्थर आदिकी चोट लगने से मुलतहिमा नामक पर्दा अपनी जगह से हट जाय, तब फस्द खोलना और दस्त कराना उचित है और जो रुधिर निकल आया हो तो रुधिर को साफ करके धुला हुआ शादनज और कपुर मिलाकर लगा देवे और पट्टी से बांध देवे। और जो रुधिर न निकला हो तो शुद्ध किया हुआ नीलाथोथा उस जगह भर दे और अंडेकी जरदी आंख के पलक के ऊपर लगादे ।

आंख के घाव का वर्णन ।

आंख के सब परदों में घाव हो सकता है परन्तु जो घाव मुलतहिमा, करनियां और इनबिया पर्दों में उत्पन्न होता है वह आंख से दिखलाई देता है तथा अन्य पर्दों के घाव दिखलाई नहीं देते उनमें केवल दर्द ही हुआ करता है। मुलतहिमा पर्दे के घाव की यह चिन्ह है कि आंखकी सफेदी में एक लाल बूंद दिखलाई देने लगती है अगर लाली सब सफेदी में फैल जाती है तो आंख का वह स्थान जहां घाव हुआ है औरजगह की अपेक्षा अधिक लाल दिखलाई देता है । दर्दकी अधिकता चमक और धमक ये उसके साथ होतेहैं ।

इनबिया पर्दे के घाव का यह चिन्ह है कि आंखकी स्याही के सामने एक लाल बिन्दु होता है ।

करनियां पर्दे के घाव का यह चिन्ह है कि आंखकी काली पुतली में एक सफेद दाग पैदा हो जाता है ।

आंख के घाव का इलाज ।

इस में फस्द खोलना और रोगी के बलके अनुसार रुधिर निकालना उचित है। हरड़ इमली और अमलतासादि ऐसीही वस्तुओं का काढा देकर कोष्ट को नरम करे और कई बार जुल्लाबभी देवे ।

जो यह नाककी तरफ वाले कोए के पास हो तो फिर ऊंचा सौना चाहिये जिस से आंख में से पीव नीचे को वहता रहै॥ कोए में इकट्ठा होकर उसे विगाडने न पावे। और जो घाव कान के कोए की तरफ हो तो उस तरफ करवट लेकर सोवे जिस तरफ घाव है और इस कोए की तकिये के ऊपर रक्खे जिससे पीव निकलता रहे। इस रोग में चिल्लाना, चीखना; वमन करना, सिरहाना नीचा रखना और गरिष्ट भोजन खाना हानिकारक है।

अन्य उपाय।

जो घाव गंभीर हो तथा जलन और दर्द भी होता हो तो सियाफ अवियज की अंडेकी वा स्त्रियों के दूध में घिसकरआंख में लगावे अथवा केवल स्त्री का दूध ही आंख में डालना लाभदायक है।

अगर घाव जल्दी न पके तो धुली हुई मैथी का लुआव या अलसी का लुआब या नाखूने का पानी [अकलीलुकमालिक] आंख में डाले। फिर घाव को साफ करने के लिये "शियाफ; अवार" और जरूर अंजरूत लगाना चाहिये।

जो पीव गाढा हो तो मेथी का लुआव और शहत लगाने से पतला होकर निकल जाता है।

घाव के साफ होने पर, शियाफे कुन्दरू लगाना उत्तम है इससे घाव भर जाता है फिर शियाफ अहमर लय्यन उसके पीछे शियाफ कौहल अगवर लगाना चाहिये। आवश्यकता हो तो इबके पीछे शियाफ़ अखजर लगाना बहुत लाभदायक है।

जरूरअंजरूतकी विधि।

नशास्ता २१ माशे, गधी के दूध में शुद्ध किया हुआ

अंजरूत ७ माशे; जस्त का सफेदा ७ माशे, इन सबको महीन पीसकर कपडे में छान कर काम में लावे।

शियाफ कुंदरकी विधि।

कुन्दर ३५ माशे, उश्क और अंजरूत आधा भाग; केसर ७ माशे इन सबको महीन पीसकर मेथी के लुआव में रिगडा बनाकर आंख में लगावे।

आंख की सफेदी का वर्णन।

यह सफेदी आंखकी स्याही के ऊपर हुआ करती है। इस रोग के तीन कारण है. उनमें से एक तो यह है कि घाव हो जाने से आंख कुछ समय तक बंद रहे जिससे निकम्मा मवाद आंख पर गिरता रहे और निर्बलताके कारण न निकल सके इससे काली पुतली पर सफेदी पड जाती है. यह इलाज करने से भी बिलकुल नहीं जाती है, घाव के बराबर रह जाती है। दूसरा कारण यह है कि जब आंख दुखनी आतीहै तब अच्छा इलाज न होनेके कारण आंख बंद रहती है और गाढा मवाद भीतरही भीतर रुककर सफेदी पैदा कर देता है। तीसरा कारण यह है कि सिर में अधिक दर्द होने से आंखमें भी दर्द होजाता है, इसमें आंख का बंद रखना अच्छा लगता है इस लिये भीतर का मवाद वा दूषित भाफ बाहर नहीं निकल सकते हैं इससे भी सफेदी हो जाती है

सफेदी का इलाज।

हलकी सफेदी को काटने के लिये लाले का पानी कन्तूरयून का रस शहत में मिलाकर लगाना चाहिये। जो सफेदी गाढी हो तो जला हुआ तांबा, खार नौसादर, इन्द्रानी नमक; समंदरफेन. जरूरमुश्क हजमसगीर आदि तेज दवा लगानी चाहिये।

जरूर मुश्क का नुसखा

कीकडा. काचकी चूडी; समुद्रफेन. गोहकी बीट, संगदान जजरीवा, बसरे का नीलाथोथा. शुतरमुर्ग के अंडे का छिलका रांग का सफेदा, तांवेका मैल; आवगीरये सामी, अनबिधे मोती- जला हुआ अकीक. सिल्वी का पत्थर. पीपली. सिफालेरंगीन, सौने का मैल, तूतियाहिंदी, नीलाथोथा. मूंगेकी जड; खडिया- मिट्टी. जला हुआ तांवा, तूतिया किरमानी; तूतिया महमूदी प्रत्येक सात माशे. नमक, वूरए अरमनी प्रत्येक तीन माशे. सो नामक्खी और चमगादडकी बीट प्रत्येक पौने दो माशे. आव- गीना सात माशे, और कस्तूरी डेढ माशे इन सब को महीन पीस कर काममें लावे ।

जरूर मुश्कका दूसरा नुसखा ।

गोहकीबीट. अनविधे मोती, मूंगकी जड, पापडीनमक, शुतर मुर्ग के अंडेका जला हुआ छिलका प्रत्येक साढे दश माशे. कंदूरयून साढे सत्रह माशे, नीला थोथा साढे तीन माशे, हिंदी छरीला पोने दो माशे, कस्तूरी दो रत्ती इनको पीसकर आंखों में बुरकनेके लिये कामसें लावे ।

परीक्षा की हुई दवा ।

चमगादड की बीट और शहत मिलाकर आंख में लगाना चाहिये । अथवा मुर्गे के अंडे के छिलके की राख और मिश्री दोनों को बराबर पीसकर आंख के भीतर बुरकदे,इससे सफेदी जाती रहती है ।

हजम सगीरकी विधि ।

मुर्गी के अंडे के छिलके को मीठे पानी में भिगोकर धूप में रखदे जब उसमें दुर्गंधि उठने लगे तब धीरे धीरे धोकर उस पानीको निकालकर दूसरा पानी डालकर फिरधूपमें रखदे इसी

तरह जब तक दुर्गंध उठती रहै तब तक इसी तरह करता रहै । फिर छिलकोंको निकालकर सुखाले और महीन पीसकर चीनी मिलाकर काम में लावे ।

मोरसर्ज का वर्णन ।

जब घाव या फुंसी के कारण करनिया परदा फटकर नीचे से इनबिया परदा निकल आता है उसी को मोरसर्ज कहते हैं।

मोरसर्ज का इलाज ।

मोरसर्ज का इलाज करने में इतनी शीघ्रता करना चाहिये कि करनियां के फटे हुये किनारे मोटे न होने पावें और उंचाई के दूर करने का उपाय करै । और आंख का बहना रोकने के लिये वे दवा लगावे जो खरदरी न हों । धुला हुआ सादनज चांदी का मैल, जली हुई सीह और जली हुई सीप आदिऐसी ही दवा उपयोगी होता है । इस रोग में सब से उत्तम दवा कोहले अक्सीरीन है ।

कोहले अकसीरीन की विधि ।

सुरमा और शादनज दोनों को समान भाग लेकर बारीक पसिकर आंख में भरदे ।

अन्य उपाय ।

ऊंचाई को दूर करने का यह उपाय है कि आंख के बराबर एक मोटी गद्दी बनाकर आंख के ऊपर रखकर पट्टी बांध दे । अथवा साढे सत्रहवा पेंतीस माशे काएक टुकडा सीसे कालेकर आंख पर रखकर पट्टी बांधे दे अथवा एक थैली में सुरमाभर कर रख देना भी अधिक गुणकारक है । इन उपायोंके करनेसे भीतर का परदा बाहर न निकल सकेगा ।

भेंडेपन का इलाज ।

एक वस्तुका दो दिखाई देना भेंडापन होता है । भेंडापन दो प्रकार का होता है. एक तो यह कि जन्म से ही होता है

इसका इलाजभी नहीं है और दूसरा जन्म लेनेके पीछे होताहै। जन्मसे पीछे होने वाला भेंडापन बहुधा बालकोंको हुआकरता है और कभी कभी वडी अवस्था में भी हो जाता है। बालक पनमें भेंडापन तीन कारणों से होताहै जैसे [१) मृगी रोग से (२) माता वा दूध पिलाने वालोंके दोष से और (३) किसी भयंकर शब्दसे। मृगी रोगसे होने का यह कारणहै कि आंखके पट्ठे खिंच जाते हैं और एक आंख ऊंची और दूसरी नीचीहो जाती है। दूध पिलाने वाली के दोष से इस तरह होता है कि वह बच्चेको एकही करवट लिटाकर दूध पिलाया करतीहै और बालक अपनी माता के मुखकी ओर वा दूसरे स्तनकीओर दृष्टि बांधकर बहुत देर तक इकटक देखा करताहै इससे नजर तिरछी होकर ठहर जाती है। भयंकर शब्द से इस तरह होता है कि यदि कोई अचानक बालकके पास चिल्लावे वा अन्य कोईबडा शब्द हो और बालक चोंकपडे और उस ओर आंख घुमाकर देखे तो इस तरहभी भेंडापन हो जाता है।

बालकों के भेंडेपन का इलाज।

इस में वे उपाय करने चाहिये जिस से वालक की आंख जिधर फिर गई है उस से दूसरी तरफ फिर जाय। एकतोयह है कि दूध पिलाने वाली बालक को दूसरी करवटसे लिटाकर दूध पिलाने लगे इस से सहज ही में आंख फिर जाती है क्यों कि बालक के रगके पट्ठे बहुत नरम होतेहैं।दूसरा उपाय यहहैकि जिस ओर को आंख फिर गई हो उस से दूसरी ओर एक लाल कपडा बांधदे जिस से बालक उस ओर को देखने लगे क्यों कि लाल वस्तु वालक को अधिक प्यारी मालूम होती है। तीसरा उपाय यह है कि बालक के मुख पर एक कपडा ढक कर उस कपडे में पुतली के साम्हने एक छेद करदे, इससे वालक उस छिद्र में होकर दीपकको देखेगा, इस तरह भी आंख सीधी हो

जाती है। जो मृगीरोग से हो तो धाय को वादी की वस्तुओं से बचावे।

युवावस्था का भेंडापन।

युवावस्था में भेंडापन तीन कारणों से हुआ करता एक है तो यह कि आंख को हिलाने वाले पट्ठों के खिंच जाने से आंखका ढेलाएकओरकोखिंचजाय यहबहुधा सरसामादिकठिन बीमारियों के पीछे हुआ करताहै, इसमें तरी पहुँचाने वाले तरेडे और तेल काम में लावे। और आंख में लडकाकी माका दूध वा गधीका दूध डाले। दूसरी प्रकार के भेंडेपनके चिन्ह तसन्नुज इस्तलाई के सदृश होते हैं इसमें मल निकालना, कुल्ले कराना, और अच्छे भोजन खाना हितकारक है। तीसरी यह कि गाढीबादी के कारण आंखकी रतूबतें और पर्दे अपनी जगह से हट जांय, इसमें आंख फडका करती है और आंसू भी बहने लगतेहैं।इस में दिमाग से मवाद को निकालने का उपायकरे, रिहाको निकालने के लिये गरम पानी से सेके। सोंफ के पानीमें ममीरापीस कर लेप करना चाहिये। इस में बमन बिरेचन द्वारा आमाशय को साफ करना भी हितकारक है।

पलक के बाल गिर जाने का वर्णन।

पलकों के बाल जब गिर जाते हैं तब सरेरू नसकीफस्त और मस्तक के पिछाडी पछने लगाना इन दोनों कामोंको करके नीचे लिखे उपाय काम में लावे।

पहिला उपाय।

आक के दूधमें रुई भिगोकर सुखाले और इसकी बत्ती बना कर मीठे तेल में काजल पाडकर आंखों में लगावे।

दूसरा उपाय।

धतूरे और भांगरे की पत्तियों के रस में रुई भिगोकर छाया में सुखाकर इसकी बत्ती से मीठे तेलमें काजल पाडकर लगावे।

तीसरा उपाय ।

पुराने ढोलकी खाल को कोयले की आगपर जलाकर राख करले इस राखको रुईके भीतर लपेट कर बत्ती बनाकर सरसों के तेलमें जलाकर काजल पाडकर आंखों में आंजै ।

चौथा उपाय ।

जलाहुआ तांबा, धुला हुआ शादनज, प्रत्येक साडे सत्रह माशे, काली मिरच, पीपल, केसर इन्द्रायन का गूदा प्रत्येक पौने दो माशे, जंगार, एलुआ, बूरए अरमनी प्रत्येक साडे तीन माशे, चांदी का मैल ७ माशे इन सबको पीस छानकर आंखमें लगावे, इससे आंसू नहीं बहते हैं और पलकों की जड दृढ हो जाती है ।

पांचवां उपाय ।

आककी जड की राखको पानी में मिलाकर आंखों के आर पास पतला पतला लेप करने से खुजली खुश्की और सूजन जाती रहती है ।

पलकोंके सफेद होजाने का इलाज ।

जंगली लालेको जैतूनके तेलमें या बकरीकी चर्बीमें या रीछ की चर्बीमें पीसकर पलकों पर लेप करे अथवा सीप जलाकर बकरी की अथवा रीछकी चर्बीमें मिलाकर लेप करने से पलक काले पड जाते हैं ।

खुजली की दवा ।

दो तोले जस्तको लोहेके पात्रमें पिघलाकर उस पर थोडा२ बथुए का रस टपकाता रहे नीचे आग जला रक्खे । ऐसा करने से सफेद होजाती है, इसको आंखों में लगाने से आंसू बहना आंखकी खुजली, ललाई, बाफना गलजाना और परवाल रोग जाते रहते हैं ।

अन्य दवा ।

चकचूंदड की आधी कच्ची और आधी पकी बीट लेकर शहत में मिलाकर लेप करने से पलकों का गिरजाना और वाफनी का गलना इनमें गुण करता है ।

अन्य उपाय ।

(१) सफेद बिसखपरा की जडको छाया में सुखाकर पानी में पीसकर लेप करे (२) मक्खी का सूखा हुआ सिर पानी में पीसकर लेपकरे । [३] सीपकी राख पिसी हुई आंखों में आंजे । (४) कटेरीके फलको पानीमें औटाकर उसका वफारा देवै । (५) कबूतर की बीट शहतमें मिलाकर लेप करता रहै । (६)सांपकी कांचली को जलाकर तिलके तेलमें मिलाकर लेप करे ।

अन्य उपाय ।

बबूल की सेरभर पत्ती लेकर पांचसेर पानी में औटावे जव चौथाई शेष रहै तब छानकर इस पानी को दोनों समय पलकों पर लगावे इससे वाफनी का गलना पलकों का गिरपडना और आंख के कोयों की ललाई जाती रहती है ।

अन्य उपयोग ।

१ गधे की लीदको सुखाकर उसका पाताल यंत्रद्वारा तेल खींचकर पलकों पर लगावे । (२) घीयाकी राख आंखों में आंजे ३ कपूर लीलाथोथा मिसरी और खपरिया इनको समान भाग लेकर पानी में घिसकर आखों पर लगावे ४ छुहारे की गुठली दस माशे बालछड सात माशे इनको पानी के साथ पीसकर आंखोंपर लगाने से पलकोंका झडना दूर होजाता है। ५ कुदरू गोंदको दीपक में धरकर जलावै और उसका काजल पाडकर आंखों में लगावे तो आंसू बहना नेत्रके घाव आंखों की बाफनी का गलना,खुजली,धुंध आंखके घाव अच्छे

होजाते हैं ६ कुंदरु गोंद को काजल के समान पीस कर आंखों में लगाने से आंख की ज्योति बढती है ॥

अन्य उपाय ।

पुराना कपडा अथवा रुई तीन बार हलदीमें रंगकर सुखाले फिर इसी तरह बिनौलों के गूदे में तीन बार भिगोकर सुखा ले फिर इस की बत्ती बनाकर सरसा के तेल में काजल पाडकर आंखों में लगावे ॥

तखय्युलात का वर्णन ।

इस रोग में हवा के भीतर रंगाविरंगी वस्तु दिखलाई देती है यह रोग चार प्रकार से होताहै यथा (१) सूक्ष्म और छोटी वस्तुओं का बडा दीखना अर्थात् दृष्टिका तीव्र होजाना; (२) आंखके परदे में चेचक आदि कोई रोग होकर बहुत सूक्ष्म चिन्ह पैदा करदे और दृष्टि को ढकदे, इस रोग में चिन्ह के आकार के सदृश ही वस्तुओंके आकार दिखाई देतेहै । (३) आंखकी तरी में अंतर पडने से और (४) कोई बाहरी कारण जैसे हवामें उडती हुई वस्तुओं का दिखाई देकर शीघ्र नष्ट हो जाना आंख के आगे भुनगे से उडते दिखाई देना आदि २ ।

उक्तरोग में इलाज ।

इस रोग में देहके मवाद को वमन विरेचन से निकालना उचित है ।

इस रोग के अन्य इलाज दृष्टि की निर्बलता और नजले के प्रकरण में विशेष रूपसे वर्णन किये जायेंगे ॥

आंख की खुजली का वर्णन ।

खारी रतूबतके आंखपर गिरनेसे खारी आंसू निकलाकरते हैं इससे आंखोंमें खुजली चल चल कर ललाई और जलनपैदा होजाती है और खुजाने से घाव भी होजाते हैं ॥

खुजली का इलाज ।

कासनी को कूटकर गुलरोगन में मिलाकर आंख पर लेप करे और हसरमी आंखपर लगावै जिसमे बिगडी हुई तरी निकल जाय । इसपर केवल रोटी अंजीर और मुनक्का खाना हित है आंखों में तरी पहुंचाना नदी के किनारों पर भ्रमण करना तर तेल लगाना तरी बढाने वाले शर्वत वा भोजनों का सेवन करना उचित है । मवाद निकल कर जब देह हलकी होजाय तब बासलीकून और कोहल गरीजी आंख में लगावे ।

बासलीकून के बनाने की रीति ।

चांदीका मैल समुद्रफैन प्रत्येक साडे बाईस माशे रांगकासफेदा तुरकी, नमक, काली मिरच नौसादर और पीपल प्रत्येक साडे चार माशे जला हुआ तांवा साडे इकत्तीस माशे लौंग और छार छबीला प्रत्येक पौनेदो माशे कपूर नौरत्ती तेजपात जुंदावेदस्तर वालछड सुरमा प्रत्येक साडे तीनँ माशे इन सबको पीसकर सुर्मा बनालेवै ।

कोहलगरीजी की विधि ।

सुरमाअस्पहानी जला हुआ साडे सत्रहमाशे रूपामक्खी सोना मक्खी शादनज अदसी धुला नीलाथोथा जला हुआ तांवा प्रत्येक सात माशे पीला हरड का छिलका पतरज काली मिरच पीपल नौसादर एलुआ रसौत मक्की केसर दरयाई कीकडा प्रत्येक साढे तीन माशे सोंठ पौने दो माशे कपूर साडे तीन रत्ती कस्तूरी तीन रत्ती लौंग एक माशे इन सब दवाओं को कूट पीसकर बहुत महीन करले ॥

अन्य उपाय ।

(१) माजूफल और जबाहरड इन दोनों को पीसकर आंखोंपर लेप करने से खुजली जाती रहती है; (२) आदमी के सिरके बालों की राख को महीन पीसकर आंखों में लगाने

से खुजली जाती रहती है। (३) अंडेका छिलका महीन पीसकर आंखोंमें लगानेसे उक्त गुण होताहै। (४) नीम के पत्तों को कपड मिट्टी करके जलाले फिर इस नीबू के रसमें घोटकर आंखों में लगानेसे खुजली जाती रहती है। (५) सीसेका काजल आंखों में लगावे।

बांसपर सीसे के टुकडे को रिगडने से जो स्याही पैदा होती है उसीको सीसे का काजल कहते हैं।

गुद्दे का वर्णन।

आंख के कोने में कडे मांस के उत्पन्न हो जाने को गुद्दा कहते हैं. इसके होने से आंसू और गीढ आदि आंखके मवाद उसी जगह रुक रुककर नासूर पैदा कर देते हैं। इसका इलाज यहहै कि शरीर कोशुद्ध करके मरहम जंगार वा शियाफजंगार लगाना चाहिये; अगर इससे अच्छा न हो तो नाखूनकी तरह काटकर उस पर, जरूर अजफर, बुरक दे जिससे बाकी बचा हुआ हिस्साभी दूर हो जाय! और काटने की जगहदरद होता हो तो अंडेकी जर्दी को गुल रोगन में मिलाकर लेप करेऔर घाव भरने के लिये मरहम लगावे। (शियाफजंगारकीविधि) समग अर्बी. रांग का सफेदा और जंगार प्रत्येक सात माशेइन तीनों को महीन पीसकर तुलसीमें सानले और सलाई बनाकर काम में लावे।

दृष्टिकी निर्बलता का वर्णन।

निरोग अवस्था में जैसा दिखाई देताथा वैसा न दीखना ही दृष्टिकी निर्बलता है। इसके होने के बहुत से कारण है,एकतो यह है कि ठंडी और दुष्ट प्रकृति आंखकी ज्योति को घटादेती है इसमें दिमाग को साफ करने के लिये दस्त करावे और बा सलीकून सुर्मा वा रोशनाई कबीर आंख में आंजे। दूसरा

मर्द दुष्ट प्रकृतिसे आंख छोटी पडजाय; देर में फिर अथवा और कोई ऐसा ही उपद्रव हो जाय। इसमें वटेर और मुर्गेका मांस भूनकर अथवा चने और दालचीनी के साथ रांधकर खाने को दे, चमेली वा बकायन का तेल नाक में डाले। गरम दवाईयों का बफारा दे। तथा शियाफ अफजर वा शियाफ अजखर आंख में लगावे।

शियाफ अजखरकी विधि।

पीली हरड, नीलाथोथा, सफेद मिरच समगअर्वी, प्रत्येक साडे दसमाशे, केशर साढे तीन माशे इन सब दवाओंको कूट छानकर हरी सोंफके रसमें मिलाकर सलाईबना लेवे।

शियाफ अखजरकी विधि।

जंगार साढे दस माशे, पीली फिटकरी फूली हुई २१ माशे पापडी नमक: समुद्र फेन लाल हरताल प्रत्येक साढे तीन माशे नौसादर पौने दो माशे हिंदी छरीला साढे चार माशे। इनमेंसे छरीलाको हरी तुलसी के रसमें मिलाले और बाकी सबदवाओं को कूट छान उसमें मिलाकर सलाई बना लेवे।

एक कारण यह है कि दोष युक्त गरम दुष्ट प्रकृति से दृष्टि निर्बल हो जाता है, इसमें आंख में फुलावट, गरमी और ललाई मालूम होती है।

जो रुधिर की अधिकता हो तो हरड का काढा देकर कोष्ठ को नरम करदे; तथा प्याज गंधना आदिबातकारक द्रव्यों का सेवन वर्जित है।

बरूद हसरमीकी विधि।

उक्त प्रकार के रोग में इस दवा को लगाने से आंसू बहने लग जाते हैं; नीलाथोथा महीन पीसकर खट्टे अंगूर के रस में भिगोकर छाया में सुखाले फिर दूसरी बार पीसकर आंख में

लगावे। नीलाथोथा के बाद करावादानों में लिखी हुई दवा भी मिला लेना चाहिये।

अब हम कुछ सुर्मे वा अन्य नुसखे लिखते हैं जो आंखों की ज्योति बढाने में लाभ कारकहैं, इनको रोगी की प्रकृति और दोष के अनुसार काम में लाना उचित है।

गुलमुंडी का शर्बत।

मुंडी के फूल पावसेर, लेकर रातको डेढ सेर पानी में भिगो दे और प्रातःकाल औटावे, जब तिहाई शेष रहे तब उतार कर छानले; इसमें तीन पाव बूरे की चाशनी करके रखले, इसको प्रति दिन चार तोले सेवन करने से आंखोंकी ज्योति ठीक रहती है, मस्तक को तरी पहुँचती है और ऊपर को गरमी नहीं चढने देती है।

सौंफ का प्रयोग।

सात माशे सौंफ को कूट छान कर समान भाग बूरा मिला कर प्रति दिन रात के समय फांक लिया करे तथा सौंफ का इत्र आंखों में लगाता रहे। इससे दृष्टि बढती है।

तिमिरनाशक घृत।

चार तोले जीवंती को ढाई सेर जलमें पकावै, चौथाई शेष रहने पर उतार कर छानले, फिर इस क्वाथमें दुगुना दूधआधसेर घी डालकर पकावे और इसमेंप्रपोंडरीक, काकोली, पीपल, लोध सेंधानमक, सोंफ, मुलहटी, दाख; मिश्री, देवदारु; त्रिफला प्रत्येक एक माशे डालकर पिया करे तो तिमिररोग जाता रहता है यह इस रोग पर उत्तम औषध है।

दूसरा प्रयोग।

दाख; चंदन, मजीठ काकोली, क्षीरकाकोली, जीवक, मिश्री सितावर; मेदा, प्रपोंडरीक, मुलहटी और नीलोफर प्रत्येक एक

तोले, आधसेर पुराना घी, और इतना ही दूध मिलाकर सबको पकावे. यहकाचरोग; तिमिररोग,आंखों में लाल डोरे पडजाना और सिरदरद को दूर करता है।

चमेली की गोली।

चमेलीके फूलोंकी डंडीमें समान भाग मिश्रीमिलाकरपीसले, इसको नेत्रोंमें लगाने से ज्योति बढती है।

खपरिया का प्रयोग।

छःमाशे खपरिया के टुकडे टुकडे करके नीबूके रसमें भिगो-ले फिर एक मिट्टी के पात्रमें रख उसका मुख बंद कर कपरौटी कर आरने कंडों में फूंकले; ठंडा होने पर पीसकर रखछोडे इसके लगाने से आंखों की ज्योति बढती है।

अन्य प्रयोग।

रीठे की गुठली के गूदे को नीबूके रसमें घोट कर गोली बनाले, प्रातःकाल इस गोली को थूक में घिसकर आंखों में लगाने से दृष्टि बढती है।

अन्य उपाय।

छोटी हरड और मिश्री दोनों को समानभाग पीसकर गोली बनाले इसको पानी में घिसकर आंखों में आंजनेसे ललाई जाती रहती है।

पटोलादि घृत।

परवल, नीमकी छाल कुटकी, दारु हलदी,नेत्रवाला, त्रि-फला, अडूसा, जवासा; त्रायमाण पितपापडा प्रत्येक चार तोले, आमला दो सेर; इन सबको ढाई सेर जल में औटावे, चौथाई शेष रहने पर उतार कर छानले, इस काढे में मोथा चिरायता मुलहटी, कूडा, नेत्रवाला रक्त चंदन और पीपल हर एक दो दो तोले पीसकर घृत का सेवन करनेसे नाककान औरमुखके रोग तथा विद्रधि; ज्वर; बिगडा हुआ घाव, विसर्प

अपची और कोढ तथा विशेष करके फूला धुंध, तथा अन्य दृष्टिरोग जाते रहते हैं।

सीसे की सलाई।

सीसे को आगमें गला गला कर त्रिफला के काढे भांगरे के रस; घी. बकरी के दूध; मुलहटी के रस, मेह के पानी और शहत में अलग अलग सात सात बार बुझाकर इसकी सलाई बनवा लेवे, इस सलाई को आंखों में फेरने से तिमिररोग, अर्म, स्राव; भिलभिलापन, खुजली; सुन्नता और लाल डोरे जाते रहते हैं।

अन्य उपाय।

(१) हिंगोट की मिंगी को पानी में रिगड कर आंखमें लगाना हित है; (२) निर्मली को पानी में घिसकर आंखों में लगाने से ज्योति बढती है; [३] सिरस के पत्तों के रस में एक कपड़े को तीन बार भिगो भिगो कर सुखाले फिर इस कपडे की बत्ती बनाकर चमेली के तेल में काजल पाडकर लगाना भी उक्त गुण करता है। [४] प्याज के रस में शहत मिलाकर लगाना भी दृष्टिवर्द्धक है।

दृष्टिवर्द्धक सुरमा।

काली मिरच सोलह, पीपल साठ, चमेलीकी कली पचास; तिलके फूल अस्सी, इन सबको खरल करके सुरमा बना आंखों में लगावे।

दूसरा प्रयोग।

काली मिरच एक माशे, बडी हरड का वक्कल दो माशे, हलदी छिली हुई तीन माशे; इनको गुलाबजल के साथ घोंट-कर सुरमा बनाकर लगावे।

तीसरा सुरमा ।

अखरोट दो हरड की गुठली तीन इन दोनों का जलाकर महीन पीसले और इसी में चार काली मिरच मिलाकर सुरमे की तरह महीन पीस कर आंखों में लगावे ।

अन्य सुरमा ।

नीम के फूलों को छाया में सुखाकर समान भाग कलमी शोरा मिला कर महीन पीस कर लगावे तो नेत्रों की ललाई जाती रहती है ।

अन्य सुरमा ।

रुई को आक के दूध में भिगोकर सुखाले फिर इसकी वत्ती बनाकर सरसों के तेल में काजल पाड कर कांसी की प्याली में रखकर पैसे लगे हुए नीम के घोंट से घोटे फिर सलाई द्वारा आंखों में लगावे ।

भास्करांजन ।

आठ तोले नीला थोथा लेकर बेरकी लकडियों में जलाकर पहिले बकरी के दूध में, फिर घी में फिर शहत में बुझावे फिर इसमें सोनामक्खी काली मिरच, अंजन कुटकी, तगर सेंधा नमक, लोध, मनसिल, हरड, पीपल, रसौत, समुद्रफेन और मुलहटी हरएक एक तोला इन सबको मूषकयंत्र में भरकर जला देवे । यह भास्करांजन प्रतिदिन लगाने से काचरोग ऐसे खो देता है जैसे सूर्य अंधकार का नाश कर देता है ।

दूसरा भास्करांजन ।

सीसा तीस भाग, गंधक पांच; तांबा और हरताल दो दो भाग, बंग एक भाग, सौवीरांजन तीन भाग इन सब को अंधमूसा यंत्र में भरकर फूंकले । यह अंजन नेत्रों को

निर्मल कर देता है और तिमिर रोग को दूर करने में दूसरे सूर्य के समान है।

दृष्टिवर्द्धक नीलाथोथा।

नीलेथोथे का एक टुकडा लेकर बारबार अग्नि में तपाकर गो मूत्र, गोबर का रस खट्टी कांजी स्त्री के स्तनों का दूध, घी, विष और शहत में बारबार बुझावे। इस नीलेथोथे का अंजन लगाने से दृष्टि गरुड के समान हो जाती है।

तिमिरनाशक सुरमा।

पाराऔर सीसा समान भाग।इन दोनों के बराबर सुरमा और सोलहवां भाग कपूर मिलाकर सबको बारीक पीसकर आखों में आंजने से तिमिर रोग जाता रहता है।

अन्य प्रयोग

लाल लाल चमकीले कपोलवाला गिद्ध जो अपने आप मौत से मरगया हो उसका सिर काटकर आरने ऊपलों की आग में जलाले फिर उसके समान घी और सुरमा मिलाकर मर्दन करके आखों में आंजे।इसके लगाने से गिद्धके समान तीव्र दृष्टि होजाती है।

अन्य गोली।

बहेडे का बीज,कालीमिरच,आमला, दालचीनी; नीलाथोथा, मुलहटी इनको जलमें पीसकर गोलीबनाकर छायामें सुखवाले इस से तिमिररोग बहुत जल्दी जाता रहता है।

अन्य सुरमा।

कालीमिरच, आमला, कमल, नीलाथोथा, सुर्मा, और सौना माखी इन सब को एक एक भाग बढाकरले और अंजन बनाकर आंखों में लगावे तो तिमिर अर्म,छेद,काचरोग और खुजली ये सब जाते रहते हैं।

दृष्टिबलकारक नस्य

तिल का तेल, बहेडे का तेल, भांगरे का रस और असन का क्वाथ इन सबको लोहे के पात्र में पकाकर सूंघने से दृष्टि बलवान् होजाती है ।

ढलके का वर्णन ।

जिस रोग में आंखों से पानी वहा करता है उसे ढलका कहते है इस रोग में फुंसी सूखी खुजली पलक में खुर खुरापन या बालों का उलटना कुछ भी नहीं होता है । कभी यह रोग इतना बढ जाता है कि आंसू वहा ही करते हैं ॥
और कभी इसके बढने से पुतली में सफेदी पैदा होजाती है ।

यह रोग दो कारणों से होता है एक जन्म से दूसरा पीछे किसी ऊपरी कारण से ।

जो जन्मसे होता है उसका तो इलाज ही नहीं हो सकता और जो बाहरी कारण से होता है उस में भी उस ढलके का इलाज नहीं हो सकता जो आंख के कोए में होने वाले मांस के अधिक काट देने से हो जाताहै ।

जो कोएका मांस सब का सब या बहुत सा कट गया हो तो जरूर अजरूर और शियाफ जाफरान आंखमें लगावै, तथा एलुआ, कुदरू गोंद, शियाफ मामीसा आदि वे दवा जो मांस पैदा करनेवाली हैं लगाना उचित है ।

शियाफ जाफरान के बनाने की विधि ।

केसर और बालछड प्रत्येक सात माशे, पीपल साढे तीन माशे, सफेद मिरच नौ रत्ती, नौसादर पौने दोमाशे, माजूफल साढे दस माशे, कपूर तीन रत्ती, इन सातों दवाओं को कूट छान कर गुलाब में गूंदकर सलाई बना लेवै ।

दूसरा भेद ।

इसका यह कारण है कि सिर और आंख माद्दे से भर गये हों और ग्रहण शक्ति तथा पाचक शक्ति निर्बल होगई हो इसमें दिमाग के साफ करने के लिये जुलावदेवे और माद्दे के साफ करने के पीछे शुधाहुआ नीलाथोथा और दूसरे सुरमे जो इस काम के योग्य हो आंख में लगावे ।

तरीसे उत्पन्न ढलके पर सुर्मा ।

नीलाथोथा और हरडकी छाल इन दोनों को अलग अलग खरल करके समान भाग ले और इनको खट्टे अंगूर के रसमें सानकर सुखाले और पीसकर रखले ।

तीसरा भेद ।

गर्मी के कारण से होता है इसमें आंख जल्दी जल्दी चलती है और आंसू गरम तथा पतले बहते हैं ।

चौथा भेद ।

यह सर्दी के कारण से होता है, एकतो यह कि बाहर से सिर में सरदी पहुंचने से आंसू बहने लगते हैं, जैसा कि जाडे के दिनों में प्रातःकाल के समय हवा लगने से आंखों में से पानी बहने लगता है दूसरा अधिक हंसने से भी आंखों में से पानी बहने लगता है ।

गरमी से उत्पन्न ढलके का इलाज ।

धुला हुआ शादनज, नीलाथोथा और सोनामक्खी प्रत्येक साढे तीन माशे. मोती और मूंगकी जड प्रत्येक पौने दो माशे शियाफ मामीसा और एलुआ प्रत्येक नौ रत्ती इनको कूटछान कर सुरमा बनाकर लगावे ।

ठंडे ढलके का इलाज ।

काली मिरच नमकसंग हरएक साडे तीन माशे. पीपल

सात माशे, समुद्रफेन पौने दो माशे, और इन सब दवाओं से तिगुना सुरमा डालकर सबको कूटछान कर अंजन बना लेवै।

आंखकी निर्वलता का उपाय।

पीली हरडकी गुठली की राख, नमकसंग और माजू इन तीनों को बराबर कूट पीसकर आंख में लगावे।

शियाफ अहमरकी विधि।

धुला हुआ सादना इक्कीस माशे; बबूल का गोंद साढे सत्रह माशे; जला हुआ तांवा और जला हुआ जंगाल प्रत्येक सात माशे, अफीम और एलुआ प्रत्येक पौने दो माशे, केसर और मुरमकी प्रत्येक आठ माशे इन सब को पीसकर सलाई बनाकर आंख में लगावे।

जो सर्दतर प्रकृति के कारण आंख से पानी बहता हो तो बासलीकून लगाना बहुत लाभदायक है। इसके बनाने की विधि पीछे लिख चुके हैं।

ढलके पर हरीतक्यादि बटी।

बडी हरड, बहेडा और आमला इन तीनोंकी गुठलियों की मिंगी निकालकर सबको समान भाग लेकर महीन पीसकर गोली बना लेवे। इसको पानी में घिसकर आंखों में लगानेसे आंखों की खुजली और पानी निकलना बंद हो जाता है।

दूसरी गोली।

सिरस के बीज; काली मिरच और बनफसा इन तीनों को समान भाग लेकर अलगअलग कूटछानकर शहत में मिलाकर आंखों लगाने से ढलका बंद हो जाता है।

तीसरा उपाय।

माजुफल, बालछड, छोटी हरड और बडी हरड का छिलका इन चारों को समान भाग लेकर पानी में पीसकर गोली बना

लेवे । इस गोली को पानी में घिसकर लगाने से ढलका बंद हो जाता है ।

चौथा उपाय ।

सफेद कत्था, समुद्रफेन, भुनी हुई फिटकरी, बडी हरडका छिलका, रसौत, अफीम, नीलाथोथा, इन सबको समान भाग लेकर पानी के साथ घोटकर बहुत महीन करले । इसको आंखमें लगाने से आंखकी खुजली, ललाई, पानी का बहना यह सब जाते रहते हैं ।

पांचवां उपाय ।

आबनूसकी लकडी को घिसकर आंखों में लगाने से भी पानी बहना बंद हो जाता है ।

वव्वालतीनका वर्णन ।

इस रोग में थोडी थोडी देर में आंसू निकल निकल कर बंद होजाते हैं । इसका यह कारण है कि ऊपर वाला पलक कुछ मोटा होकर गंदा होजाता है और उसके भीतर कुछ ऊंचा हो जाता है । इस ऊंचाई की रिगड से आंसू निकला करते हैं । यह रोग पलक के रोगों से संबंध रखता है । परंतु इसमें भी आंसू बहते हैं । इस लिये ढलके के साथही लिख दियाहै । इसका इलाज यह है कि देह को वमन विरेचन द्वारा शुद्ध करे । गरिष्ट और वादी करने वाले पदार्थों का सेवन त्यागदे । इस रोगमें कम खाना और पाचकशक्तिका बढाना उचित है।माद्दको निकालने के लिये मामीसा बूल और केसर का लेप पलक के ऊपर करना चाहिये पीछे सिकताब करे जब सफाई हो चुके तब बासलीकून और शियाफ अहमर लगाना उचित है ।

कुमना का वर्णन ।

आंख के दर्द के पीछे जो लाली रह जाती है, उसे कुमना

कहते हैं। इसकेतीन लक्षणहैं, एक तो यह कि गाढी रीह के कारण पलक में भारापन हो जाय और सोकर उठने पर रोगीको ऐसा मालूम हो कि आंख में धूल या मिट्टी पड गई है। इसका वर्णन पलक के रोगों में है।

दूसरा करनियां परदे के पीछे पीव इकट्ठा हो जाने से यह रोग हो जाता है। इस में मेथी और अलसी का लुआब आंख में डालकर मवाद को पकावे तथा कई वार गरम पानी से स्नान करे, पीछे रूपामक्खी पीसकर आंखमें लगावे।

तीसरा यह है कि मुलतहिमा परदे में ललाई हो. इस में आंख के दूखने के समान आंख में सूखापन उत्पन्न हो जाता है और बादी की भाफ के परमाणुओं के उठने से दृष्टि निर्बलहो जाती है और चीज ऐसी दिखलाई देने लगती है कि जैसे बादल और धूंये के भीतर आ गई है। आंख के परदों में ललाई और गदलापन हो जाता है. आंखों के चलाने फिराने में भारापन और सुस्ती होती है रोगी को अपनी आंख कुछ बडीमालूम होने लगती है। गरम पानी से धोने पर खुजली और भारापन कम हो जाता है।

कुमना का इलाज।

यारजात और अफ्तीमून के काढे के प्रयोग से माद्दा निकालना चाहिये और जरूर कुमना आंख में डाले। तथा मेथी नाखूना बाबूना आदि माद्दे को पतला करने वाली दवा औटाकर आंखों पर सिकताव करै।

जरूर कुमना के बनानेकी रीति।

पीपल, मामीरा प्रत्येक १२ रत्ती; एलुआ ६ रत्ती, पीली हरड समुद्रफेन, और रसौत प्रत्येक साडे तीन माशे इन सातों दवाओं को कूट पीस कर बारीक कपडे में छान कर काम में लावे।

इसीको कोई कोई हकीम सौंफके पानी में सानकर गोलियां बना लेते हैं और आवश्यकता के समय घिसकर आंखमें लगाते हैं।

कंजी आंखों का वर्णन।

जिस मनुष्यकी आंखों की पुतली बिल्ली की आंखों के समान सफेद होती हैं उन आंखों को कंजा कहते हैं। कंजापन दो तरह से होता है; एक जन्मसे, दूसरा जन्म लेनके पीछे जो जन्म से होता है उसका इलाज कुछ नहीं है सिवाय इसके कि उस लडके को काली गाय का दूध पिलाया जाय।

जन्म लेने के पीछे कंजपन के सात कारण हैं; जो कंजापन ठंडी प्रकृति से हुआ हो तो कडवे बादाम का तेल, वेद अंजीर का तेल, और रोगन गार नाक में सूंघना चाहिये। तथा शादनज, पीपल और पीली हरड आंख में लगावे। जो गरम प्रकृति होतो ठंडीदवा जैसे समग अर्बी और ठंडे तेल नाक मेंडाले और काला सुरमा तथा बंशलोचन आंख में लगाना भी गुणकारक है।

गुलरोगन नाक में डालना बहुत गुणकारकहै चाहे कंजापन ठंडी प्रकृति से हो, चाहे गरम से।

जो कंजापन बचपन में होता है वह युवावस्था में अपने आप जाता रहता है।

कंजेपन को दूर करने के लिये केसरका आंख में डालना बहुत ही गुणकारक है चाहे कंजापन किसी कारण से हो।

इन्द्रायण के ताजाफल में सलाई भीतर करके उस सलाईको फेरने से कंजापन दूर हो जाता है हकीमों ने यहां तक लिखाहै कि इससे बिल्ली की आंखभी काली होजाती हैं।

जो रोग खुश्की से होता है उसमें दिखलाई देना बिलकुल

बंद हो जाता है इसमें जहांतक बने तरी पहुंचाने का उपाय कर-
ना चाहिये ।

खुश्की के और नजले के कंजेपन में यह अंतर है कि इसमें आंख के सामने भुनगें आदि उडते हुए दिखाई नहीं देते । आंख का बनाना और पानी निकालनाभी कुछ लाभ नहीं पहुँचाता तथा आंख दुबली होजाती है । नजले के कंजेपन में इस के बिपरीत लक्षण होते हैं ।

कुमूर का वर्णन ।

जब कोई आदमी निरंतर किसी सफेद चमकीली वस्तुओं को देखता रहता है जैसे सूरज चांद वर्फ वा जलता हुआ लैम्प आदि । इस से दृष्टि धुंधली वा निर्बल होजाती है । कभी कभी बिलकुल मारी जाती है । इस रोग को कुमूर कहते हैं इसका इलाज यह है कि एक काला कपडा मुख पर लटकावे, काले कपडे पहन ले और आंख के नीचे काली पट्टियां बांधँ दे । स्त्री का दूध आंख में डाले, जिससे रूह गाढी होजाय, आंख के परदे नरम होजांय ।

अगर निरंतर वर्फ देखने से यह रोग हुआ हो तो कडवे बादाम कूट पीसकर आंख के ऊपर लेप करदे । और गरम पानी से सिकताव करना भी लाभदायक है । सलगम और लहसन के ताजे पत्ते; या इनके सूखे हुए छिलके, जूफाखुश्क अकलीलुलमलिक; और बाबूना इनको पानी में औटाकर वफारा दे अथवा चक्की के पत्थर को गरम करके उस पर निर्मल शराब डाल कर आंख को वफारा दे अथवा तांबे को गरम करके उस पर शराब डालकर बफारा देवे ।

सल्लुलऐन का वर्णन ।

इस रोग में आंख का ढेला दुबला पडजाता है; यहां तककि

पलक उससे मिल जाते हैं और कभी खुश्की के कारण दीखना बिलकुल बंद हो जाता है। जब यह रोग वृद्ध मनुष्यों के हुआ करता है, तब इसका इलाज कठिन होता है; तथापि जहांतक हो तरी पहुंचाने का यत्न करना चाहिये। जब यह जवान आदमियों के होता है तो बहुधा एक ही आंख में हुआ करता है। जो यह रोग मवाद की गांठ से हुआ हो तो गांठ के खोलने का उपाय करे फिर सिर में तरी पहुंचावे। अगर मवाद की गांठ से न हुआ हो तो केवल तरी पहुंचाना ही उचित है।

आंख के बाहर निकल आने का वर्णन।

इस रोग के तीन कारण हैं, एक तो यह है कि वादी के मवाद के आंख में इकट्ठा हो जाने से आंख का ढेला बाहर को निकल पडता है, इस में मवाद को निकालने वाली दवाऐं काम में लावे, फिर शियाफ़ सिमाक लगावे।

शियाफ़ सिमाक की विधि।

सिमाक को पानी में औटाकर छान ले और इस छने हुए पानी को फिर औटावे कि गाढा होजाय तब इसमें रांग का सफेदा एक भाग, कपूर चौथाई भाग, कतीरा छटा भाग मिलाकर सलाई बना लेवे।

दूसरा कारण यह है कि गला घुटना सिरदर्दकी अधिकता, वमन, बहुत बेगसे चिल्लाना। मलकारुकना, प्रसव वेदना, किंचना, श्वास रुकना, इन कारणों से आंखका ढेला बाहर निकल पडता है। इस दशा में सीसेका एक टुकडा वा एक थैली में बारीक सुरमा भर कर गुद्दी के ऊपर रक्खे और आंख के ऊपर कसकर पट्टी बांधदे और रोगी को सीधा सुलादे। तथा मवाद के रोकने वाले तेल जैसे अनारकी छाल अकाकिया, अंजीक और उसारे लहियत्तूस आंख पर लगावे।

बहुत ठंडे पानी से मुख धोना भी इस रोगमें लाभकारक है पर कभी केवल ठंडे पानी से मुख धोने से लाभ नहीं होता है तब ऐसा करै कि अनार के फूल, जैतून के पत्ते और खश-खाश के पत्ते पानी में औटा कर इस पानी को ठंडा करके मुख धोवै ।

तीसरा कारण यहहै कि आंखके जोडों के ढीले होने से आंख का ढेला बाहर तो नहीं निकलता पर बेचैनी और नि-र्बलता अधिक हो जाती है । इसमें आंखके बंधनों को सुस्त करने वाली रतूबतों के निकालनेके लिये अयारजात किवार देवे । फिर इमली के बीज की राख, गुलाब के फूल, कुदरू गोंद और बालछड आंख के ऊपर लगावे ।

मोतियाबिंद का वर्णन ।

एक रतूबत सिर से उतरकर आंखके तीसरें पर्दे के छेद में आकर करनियां परदे तथा रतूबत वैजिया के बीच में ठहर जाती है यही छेद प्रकाश के आने जानें का मार्ग है । जब इस छिद्र का जितना भाग उक्त रतूबत से बंद होजाता है, उतनी ही आंख की दृष्टि नष्ट होजाती है, और शेष खुले हुए भाग से यथावत् दिखलाई देता है । इस रोग के कारण और लक्षण बहुत सेहैं, पर वे सब विस्तार भय से यहां नहीं लिखे गये हैं ।

बचकी माजून ।

बच, हींग, सोंठ और सोंफ इन चारों को समान भाग लेकर कूट छानकर शुद्ध सहत में मिलाले, इसमें से प्रतिदिन प्रातःकाल ४। माशे सेवन करे ।

हबुज्जहबके बनाने की विधि ।

एलआ ३५ माशे, तुर्बुद २४॥ माशे, मस्तगी, गुलाबके

फूल प्रत्येक ८॥। माशे, केशर १॥। माशे, पीली हरड १७॥ माशे, सकमूनिया १२। माशे, इसका मात्रा ९ माशे है; इस नुसखेकी तोल में रोगी की दशा के अनुसार न्यूनता वा अधिकता करना हकीम की सम्मति पर निर्भर है।

अन्य उपाय।

दोना मरुआ, कलौंजी और चमेली सूंघना, तथा दोना-मरुआ का तेल सिर पर लगाना लाभदायक है।

अन्य उपाय।

(१) निर्मला शहत में पीसकर आंखों में लगावे, (२)प्याज का रस शहत में मिलाकर आंख में लगाना लाभदायक है। (३) गोंदी की मिंगी दो भाग अफीम एक भाग, इसको घिसकर आंख में आंजे। [४] नौसादर को बारीक पीसकर आंखों में आंजे। [५] हींग को शहत में घिसकर लगाना भी अच्छा है [६] सफेद चिरमिठी का रस और नीबूका रस दोनों मिलाकर प्रातःकाल नेत्रों में लगावे; [७] दस तोले इमली के पत्ते कांसी के पात्रमें पैसे लगे हुए नीम के दस्ते से घोटे, इसमें बेटेकी माका दूध डालता रहे। फिर आंख में लगावे। (८) सोंफको जलाकर बारीक पीस आंखमें लगावै, [९] अबाबील के सिर की राखशहत में मिलाकर लगाना भी लाभदायक है। [१०] भीमसेनी कपूर लडके की माता के दूध में घिसकर लगाना भी लाभदायक है। [११] निर्मली, हींग, फिटकरी, सफेदा, खपरिया और नीला थोथा। प्रत्येक १४ माशे; इन सबको महीन पीसकर दही के साथ घोटता रहे, जब आठ सेर दही उसमें सूख जाय तब गोली बनाकर आवश्यकता के समय स्त्रीके दूधमें घिसकर आंखों में लगावे।

परवाल का वर्णन ।

जब पलक में कोई ऐसा बाल उगे जो उलट कर आंखके भीतर चुभने लगे, तो उसे परवाल कहते हैं। इससे आंखकी रगें लाल हो जाती है; आंसूनिकलनेलगते हैं और खुजली चला करती है। तथा कोई बाल पलक के भीतर उगकर आंखों में चुभाकरता है, इसे भी पर बाल कहते हैं।

इस रोगका कारण दुर्गंधित तरी है, जिससे वहां मवाद इकट्ठा होने लगता है और नयाबाल जमजाता है. इस मवादको देह सेसाफ़ करने का उपाय करे।

इस का उपाय पांच प्रकार से किया जाता है तथा (१) दवा लगाना, [२] निकम्मेबाल को अच्छे बालों से चिपटा देना, (३) दाग देना, [४] सीं देना और [५] काटना।

[१] लगाने की दवा यह जैसे बासलीकून, रोशनाई कबीर, शियाफ़ अखजर, अहमर हाद।

(२) निकम्मे बाल को अच्छे बाल में लगाना-बबूल का गोंद और कतीरा पानी में भिगोकर उनका चेप उगली पर लगाकर निकम्मे और अच्छे बालों को चिपटा कर सुखादेवे।

(३) दागना-दागनेकी यह रीति है कि पलक को उलट कर भीतर के बालको चिमटी में उखाड़ कर उस जगह को एक औजार से दागदे।

यह औजार सुईके बराबर होता है, जो इसी कामके लियेबना या जाता है दागने के समय आंख को औजार की गरमी से बचाने के लिये आंखमें गुदा हुआ आटा भरदेना चाहिये। दागने के पीछे अंडेकी सफ़ेदी और गुलरोगन मिला-कर दागने की जगह पर लगा देना चाहिये। पहिले दागका चिन्ह और कष्ट जब तक रहे तबतक दूसरी बार न दागना चाहिये।

एक सब से अच्छा उपाय यह है कि वालको उखाडकर उस जगह पर थोडासा नौसादर रिगड देवे अथवा नदी के रहने वाले हरे मेंडक का रुधिर अथवा कुत्तेकी कलीलियों का रुधिर अथवा खुटक वढैया का पित्ता; चेंटियों के अंडे वा अंजीर का दूध। इनमें से जो मिल सके उस जगह पर लगा देवे। इस से नये वाल उगने नहीं पाते हैं। अथवा समुद्रफेन को ईसबगोल के लुआब में मिलाकर लगाने से वालोंकी जगह सुन्न पड जाती है।

नासूर का वर्णन।

यह रोग नाक के कोए की तरफ होता है। इस जगह जो मवाद इकट्ठा हो जाता है वह कभी नाककी तरफ फूट निकलता है और कभी पलककी खालको फाडकर बाहर निकल आता है, तथा पलकको दाबने से राध निकल पडती है। एक प्रकार का ऐसा नासूर होता है जिसमें पीव बाहर नहीं निकलती भीतरही भीतर दरद होता रहता है।

नासूर का इलाज।

घाव के इलाज के अनुसार देह को मवाद से साफ करके नासूर पर शियाफ गर्व लगाना चाहिये। इस दवा के लगानेसे पहिले घाव को रुई से पोंछकर साफ करलेना चहिये और सडे हुए मांस को अस्त्र से वा जंगारी मरहम से काटकर साफ कर दे। विना काटे दवा लगाने से कुछ लाभ न होगा। इससे आराम न हो तो नासूरकी जगह गरम लोहे से दागकर मरहम असफदाज लगा देना चाहिये।

शियाफगर्वकी रीति।

एलुआ. कुन्दरूगोंद; अंजरूत; दम्मुल अखवेन; अनार के फूल सुर्मा, फिटकरी, इन सबको एक एक भाग, जंगार चौथाई भाग। इनको पीस कूटकर गोली वना लेवे और आवश्य

क्ताके समय पानी में घोलकर दो तीन बूंद आंखमें टपकावे।

जब तक सूजन फूटी न हो तब तक मामीसा, केसर मुरं, एलुआ, जली हुई सीपी, इनमें से जो मिलजाय इसीको हरी कासनी के पानी में मिलाकर लेप करें।

अन्य उपाय।

(१) उरदको चबाकर नासूर पर लगाना गुणकारक है। (२) कुटी हुई मटरको शहत में मिलाकर लगाना [३) कुदरूगोंद को कबूतरकी बीट में मिलाकर लगाना [४ फिटकरी को पीसकर सुकवीनज को सिरके में मिलाकर लगाना चाहिये। इन दवाओं से मवाद पककर खालको फाड देता है और हड्डी को भी नहीं सडने देता है।

सूजन के पकने पर बूल और मौलसरी पीसकर नासूर के छेद में भर देना उत्तम है। अथवा पिसी हुई जंगार में बत्ती लपेट कर भर देवे।

अन्य उपाय।

[१] सीप, एलुआ और बूल इन तीनोंको मिलाकर पीले यह दवा नासूर में मुख होने से पहिले वा पीछे भी लगाई जाती है [२] तुतली के पत्तों को पानी में पीसकर उसमें बत्ती सान कर घाव में रखदे [३)सूखे हुए सिमाक का पानी टपकाना लाभदायक है।

बंद नासूरका उपाय।

जो नासूर का मुख बंद होजायऔर पीव न निकल सकता होतो कनूचके बीज कूटकर स्त्री वा गधीके दूध में पकाकरथोडी सी केसर डालकर नासूर पर रखने से उसका मुखखुल जाताहै अथवा मैदाकी रोटी का गूदा और कुदरू गोंद पीसकरकीकर के पानीमें सानकर लगाने से भी नासूर का मुख खुलजाता है

नासूर पर मुष्टियोग ।

[१] सेलखडी को अरंडके तेल में घोटकर उसमें बत्ती सानकर नासूर में भरे । [२] दीपककी कीचड कपडे पर लगा कर नासूर पर रक्खे (३) वथुए के पत्ते और तमाखूके फूल इनको घी में घोटकर नासूर पर लगावे (४) हुक्के के नहचे की कीचड और अफीम दोनों को समान भाग लेकर बत्ती बनाकर नासूर पररक्खे (५] समुद्रशोख को पानीमें घोटकर नासूर में भरे । [६) नीमके पत्ते और पेवंदी बेरके पत्तेपीस कर कपडे में छानकर लगावे । [७] सफेद कत्था और एलुआ इनको पीसकर नासूर पर रक्खे (८] कुत्ते की जीभ की राख मनुष्य के थूक में सानकर लगावे [९] गिलोय और हलदी दोनोंको कूटकर मीठेतेलमेंऔटाकरकपडेमें छानकरनासूर पर लगावे [१०] शहतको औटाकर समुद्रफेन मिलाकर उसमें रूईकी बत्ती भिगोकर नासूर पर रक्खे [११] बिनी हुई मसूर और अनार का छिलका दोनोंको समान भाग पीसकर लगावे [१२] रसौत, गेरू, जवाहरड और पोस्तके डोरे इनको पीसकर लगावे [१३] हीरा हींग को सिरके में घोटकर गुनगुना करके लगावे ।

मरहम असफदाज ।

चार तोले रोगनगुल में एक तोले मोम पिघलाकर इसमें इतना सफेदा मिलावे कि मिलकर एक गोलासा बनजाय फिर इसमें अंडे की सफेदी मिलादे । कभी कभी थोडासा कपूरभी मिला देते है । दूसरीविधि यह है कि केवल सफेदा सफेद मोम और रोगनगुल इनतीनों कोही मिलाकर मरहम बनालेतेहैं

तुरफा का वर्णन ।

इस रोगमें रुधिर की लाल; काली वा नीली बूंद मुलतहिमा

परदे पर पड़ जाती है। यह रोग तमांचे वा आंख पर चोट लगने से या माद्दे के भर जाने से, या रुधिर की गरमी से, या जोर से चिल्लाने से बहुत डोलने फिरने, वा श्वास रुकने से होजाता है।

तुरफेका इलाज।

प्रथम ही रुईका एक फोआ अंडेकी सफेदी और जर्दी में सानकर आंख पर बांधकर रोगी को सीधा सुलादे। जव दरद कम होजाय तब कबूतर के परका गरम गरम रुधिर आंखमें टपकादे। अथवा इस रुधिर में गिलेअरमनी, गेरू और खडियापानी में पीसकर मिलालेनाभी अच्छा है। रोग के घटनेपर कुदरूगोंद, वूल और उशक कबूतर के रुधिर में मिलाकर लगावे। अथवा मुनक्काके दाने निकालकर मकोयकी पत्ती, ताजा पनीर सेंधानमक मिलाकर आंखके ऊपर लेपकरे। कुन्दरकी धूनी देना भी लाभदायक है।

नाखूनाका वर्णन।

यह रोग आंखके बडे कोएकी तरफ पैदा होता है, कभी कभी छोटे कोएकी तरफ वा दोनों ओरसे होता है यहां तक कि पुतलीको भी ढकलेता है। इस रोग पर शियाफ बीजज, शियाफ दीनारगूं, और वासलीकून अकबर। ये दवाऐं काममें आती हैं।

शियाफ बीजज के बनानेकी रीति

सुरमा नीला और शादनज प्रत्येक ५ माशे, चांदी का मैल ७ माशे, छवीला, कुदरूगोंद और पीपल प्रत्येक ५ माशे। इन में से छरीला और कुदरूगोंद को शराब में घिसले और सब दवाओं को कूट पीसकर इसमें मिलाकर बत्ती बनालवे।

शियाफ दीनारगूंकी विधि।

सिंगरफ, तांबाजलाहुआ, हरताललाल, कुदरूगोंद; मिश्री और हिंदी छरीला, प्रत्येक एक भाग, मुर्र केसर और हलदी

प्रत्येक चौथाई भाग इन सबको पानीके साथ खरल करके बत्ती बनालेवे ।

अन्य गोली ।

सिरके और खिरनी के बीजोंकी मिंगी को सिरसके पत्तोंके रसमें खरल करके गोली बनालेवे और इसको स्त्रीके दूधमें घिस कर आंखमें लगानेसे फूली और जाला जाता रहता है।

दूसरी गोली ।

जवाहरड, पलासपापडा, सेंधानमक, लालचंदन इनकी गोली को पानी में घिसकर लगानेसे फुली और जाले जाते रहते हैं ।

तीसरी गोली ।

समुद्र फलकी मिंगी, रीठाकी मिंगी, खिरनीके बीजों की मिंगी इनको समान भाग लेकर नीबूके रसमें गोली बनाकर आंखोंमें लगाने से फूली, वाफनी गलजाना और मोतियाबिंद को आराम हो जाता है ।

चौथी गोली ।

लालचंदन और फूली हुई फिटकरी इन दोनोंको समान भाग लेकर ग्वारपाठे में खरल करके गोली बनालेवे और आवश्यकता के समय पानीमें घिसकर आंखमें लगावे ।

पांचवीं गोली ।

साबुन छः तोले; नीलाथोथा और राल प्रत्येक साडेतीन माशे इन में से साबुन के छोटे छोटे टुकडे करके लोहेके पात्रमें रख आगपर लगावे । फिर नीलाथोथा पीसकर मिलादे। पीछे राळको पीसकर मिलादे । इसको आगके ऊपर ही लोहेकेदस्ते से घोटता रहै. जब काला पडजाय तब उतार कर रखले । इसमें से एक खसखसके दाने के बराबर सीपीमें रिगड कर आंख में लगावे इस तरह तीसरे दिनतक लगाता रहै इससे नाखूना सफेदी और नजलेका पानी सबको आराम होजाता है।

छटी गोली।

हलदी, दालचीनी, आंवाहलदी, प्रत्येक १४ माशे, नीमके पत्ते २ तोले इनको छः महिनेके बछडेके मूत्रमें दोपहर खरल कर के गोली बनाले और छायामें सुखाकर रखले। आवश्यकताके समय गुलाबजल में घिसकर लगावे।

सातवीं गोली।

हलदी की एक गांठमें छेदकरके गेहूंकी रोटी के बीचमें रखकर तवेपर डालकर पकावे। जब रोटी जलजाय तब हलदीको निकालकर फिटकरीके साथ घिसकर आंखमें लगावें।

मुष्टियोग।

(१) स्त्रीके दूध में मिश्री पीसकर लगानेसे बालकों की फुली जाती रहती है (२) सोंठ; फिटकरी और सेंधानमक इनको समान भाग लेकर लगाने से फुली और जाला जाता रहताहै (३) गधी के खुरकी राख को पीसकर आंखमें लगानेसे जाला जाता रहता है। (४) तेजपात को पीसकर आंखों में लगानेसे जाला दूर होता है। (५) कलमी शोरेको महीन पीसकर बहुतही थोडी हलदी मिलाकर आंखोंमें आंजनेसे नाखूना और जाले जाते रहते हैं (६) विसखपरे की जड और सफेदा पीसकर लगानसे नाखूना जाता रहता है। (७) आंवलेका काढा छानकर प्रतिदिन दो तीन बार आंखमें टपकाने से जाला दूर होजाता है (८) हरीचूडीको नीबूके रसमें घोटकर आंखोंमें लगाना भी लाभदायक है (९) नौसादर और फिटकरी इन दोनोंको महीन पीसकर आंखोंमें लगानेसे जाला, फुली और रतोंध जाते रहते हैं (१०) प्याजके रसमें कपडेको भिगोकर सुखाले फिर इसकी बत्ती बनाकर मीठे तेलमें काजल पाडकर लगानेसे जाला जाता रहता है।

इतिश्री जर्राहीप्रकाश समाप्त।